गुरुदत्त



उपन्यास साहित्य

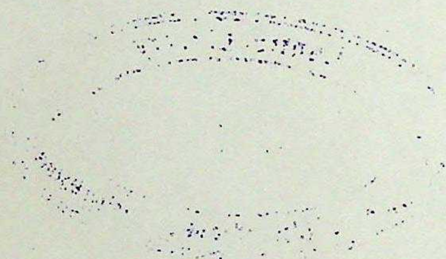
# स्वार्थ



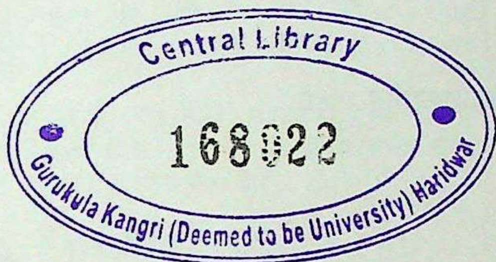


# स्वार्थ

(उपन्यास)



# स्वार्थ




गुरुदत्त




हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली–110 026

मूल्य : 30.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली-110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110 032

सेठ रामलोक टंडन दुकान से लौटकर घर की बैठक में बैठे ही थे कि उन्हें अपने पांव दबाने वाले नन्दन की याद आ गयी। नन्दन उस समय बैठक में उपस्थित हुआ करता था और सेठ जी के पांव दबाया करता था। पांव दबाते हुए वह घर तथा मुहल्ले की दिन भर की बातें बताया करता था। आज वह वहां नहीं था। नित्य से यह विलक्षण अनुभव कर सेठ जी अपनी पत्नी सुमति को आवाज देने लगे।

अन्त:पुर से एक चौदह-पन्द्रह वर्ष की लड़की पिता की आवाज़ सुन आयी और पिताजी के आवाज देने का कारण समझ उठी, 'पिताजी ! नन्दन माताजी के साथ गया है।'

'कहां गया है ?'

'मैं क्या जानूं, मैं तो वहां गयी नहीं ?'

'तुम क्यों नहीं गयीं ?'

लड़की ने उत्तर नहीं दिया, परन्तु उसका मुख लाल हो गया और वह भूमि की ओर देखने लगी।

दिल्ली कश्मीरी गेट 'मदरसा रोड' पर एक मकान की बैठक में बैठे सेठ साहब अपनी लड़की से पूछ रहे थे, लड़की उत्तर न दे लाल मुख होती दिखाई दी। इस पर सेठ जी को स्मरण आ गया। कुछ दिन हुए उनकी पत्नी सुमति ने कहा था लड़की सज्ञान हो गयी है और इसके विवाह का प्रबन्ध होना चाहिये। पर सेठ जी ने यह कहने के स्थान कि लड़की के लिये कोई श्रेष्ठ घर वह देखेंगे, यह पूछा था, 'कितना कुछ इसके विवाह पर व्यय करने का विचार रखती हो ?'

पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा था, 'इसका विचार तो आपको अपनी सामर्थ्यानुसार करना चाहिये।'

'और लड़की के ससुराल वालों की तिजोरी में स्थान देख कर नहीं ? कितने में वह भर सकेगी ?'

'उसे तो आपका धन स्वयं छोटा-बड़ा कर लेगा।'

'धन तिजोरी को छोटा-बड़ा कैसे कर लेगा ? धन निर्जीव वस्तु

है, यह स्वयं सेव कैसे कर सकेगा ! यह तो हमारे यहां का दिया दाज अपने लिये वहां स्थान ढूंढेगा। इस पर भी स्थान तो तुम्हारा दामाद और समधिन ही बनायेंगे। हां, बनायेंगे यहां वाली वस्तुओं के लिये।'

उस दिन पत्नी चुप कर गयी थी। आज वह लड़की को लाल मुख होते देख सेठ रामलोक समझ गया कि लड़की की मां लड़की के प्रस्तावित वर वालों का घर-बार देखने गयी है। इस कारण बात बदल सेठ जी ने कह दिया, 'अच्छा, मोहिनी को कहो, हमारे लिये शर्बत बना लाये। आज गर्मी अधिक हो रही है और प्यास मिटने में ही नहीं आती।'

लड़की ने कुछ उत्तर नहीं दिया और भीतर चली गयी। सेठ जी बैठक घर में बिछी दरी पर आ गये और फिर कालीन तथा दीवार के साथ लगे तकिये का आश्रय ले लेट गये। दुकान पर बहुत काम रहा था और वहां आराम करने तथा कुछ खाने-पीने की सुध नहीं रही थी। जब दुकान बन्द करने का समय आया तो सेठ जी को घर की याद आ गयी और वह विचार कर कि घर पर चल कर केवड़े का शर्बत लेंगे तथा नन्दन से पांव दबवाने का स्वाद लेंगे, अपनी विक्टोरिया गाड़ी में सवार हो घर को चल पड़े थे।

मार्ग में सूखे गले से शर्बत को याद करते हुए और नन्दन से पांव दबाने के स्वाद को स्मरण करते हुए, चांदनी चौक से चल कर मदरसा रोड पर अपनी बड़ी-सी हवेली में आ पहुंचे। गाड़ी को तबेले में जा रखने के लिये कोचवान को कह वह बैठक घर पहुंचे तो नन्दन नदारद था। उसके विषय में पूछने के लिये पत्नी को आवाज दी तो आ गयी लड़की और उसने बताया कि उसकी मां घर पर नहीं है, न ही नन्दन है। इस पर सेठ जी ने घर की सेविका मोहिनी के हाथ शर्बत भेजने के लिये कह दिया।

राधा बिना उत्तर दिये भीतर गयी। सेठ जी तकिये का आश्रय लिये लेटे तो आंखों में थकावट आने लगी। पहले भी वे सो भी जाया करते थे, परन्तु गर्मी की ऋतु में ठण्डा शर्बत और सर्दी की ऋतु में बादाम तथा चाय लेने के उपरान्त सोया करते थे। पन्द्रह बीस मिनट गहरी नींद खुर्राटे भरते और फिर अचेत होते। परन्तु आज सहायक उपचार न होने के कारण नींद तो आयी

परन्तु गहरी नहीं ।


परिणामस्वरूप सेठ जी ने अभी दो खुर्राटे ही भरे थे कि उनको ऐसा अनुभव हुआ कि कोई दबे पांव चुपचाप भीतर से निकला है और बैठक में से निकल मकान से बाहर की ओर जा रहा है।

सेठ जी समझे कि मोहिनी शर्बत लायी है। उन्होंने आधी नींद में ही आवाज दे दी, 'हां, तो शर्बत लायी हो ?'

परन्तु दबे पांव जाते हुए व्यक्ति ने उत्तर नहीं दिया और लम्बे पग भरता हुआ द्वार की ओर लपका।

इससे सेठ जी सतर्क हो तकिये से सिर ऊंचा कर पूछने लगे, 'कौन ?' वह व्यक्ति इस समय मकान से निकल गया था।

नन्दन चौकीदारी भी करता था और सेठ जी के पांव दबाने की सेवा भी। अभिप्राय यह कि इस समय घर का चौकीदार भी नहीं था जो इस चोरों की भांति चुपचाप खिसकते हुए व्यक्ति को रोक कर पूछता कि वह कौन है और भीतर क्या कर रहा था।

इस समय राधा एक चांदी की तश्तरी में चांदी के जग में शर्बत और साथ ही एक चांदी का खाली कटोरा लिये हुए आ पहुंची।

सेठ जी अभी भी द्वार की ओर, जिधर वह व्यक्ति हल्के पांव रखता हुआ निकल गया था, देख रहे थे। लड़की को सामने चांदी की ट्रे पर शर्बत से भरा जग और कटोरा लिये खड़े देख वह पूछने लगे, 'और यह कौन था ?'

'कौन ?' लड़की ने उत्तर देने के स्थान पर पूछ लिया।

'एक लड़का लगा है। सफेद वस्त्र, पंजाबी पायजामा और उस पर सफेद कुर्त्ता पहने था। सिर से नंगा और पांव में सफेद कैन्वस का जूता पहने था।

'मैंने तो नहीं देखा,' लड़की कहते-कहते गालों से कानों तक लाल हो गयी।

'तो वह चोर था ?' अनायास सेठ जी के मुख से निकल गया, 'परन्तु वह कुछ उठा कर ले जाता तो दिखाई नहीं दिया ?'

राधा चुप रही। सेठ जी ने ट्रे लेकर अपने सामने भूमि पर रख ली और कहा, 'परन्तु राधा ! तुम लाल मुख किस कारण हो रही हो ?'

'पिताजी ! आज गर्मी बहुत अधिक है ।'

सेठ जी को लड़की के उत्तर से संतोष नहीं हुआ । उन्होंने कह दिया, 'गर्मी अधिक है तो अपने लिये भी कटोरा ले आओ और शर्बत पी ठण्डी हो जाओ ।'

'मैं भीतर अपने लिये बना रख आयी हूं ।' लड़की ने कहा और भीतर को जाने लगी । इस पर सेठ जी ने कहा, 'अपना कटोरा यहां उठा लाओ । घर में तुम ही तो अकेली हो और तो कोई भी दिखाई नहीं दे रहा ।'

लड़की ने उत्तर नहीं दिया और सेठ जी कटोरे में जग से शर्बत डाल पीने लगे ।

पाँच मिनट लगे लड़की को बाहर आने में । तब तक सेठ जी एक कटोरा शर्बत पी, दूसरा कटोरा भर कर पीने लग गये थे ।

राधा हाथ में एक अन्य चांदी के कटोरे में शर्बत डाले हुए वहां लेकर आ गयी ।

'बहुत देर लगा दी है आने में ?' सेठ जी ने पूछा ।

'मैं जरा मुख हाथ धोने लगी थी । तनिक ठण्डा हो जाना चाहती थी । गर्मी से रंग-बेरंग हो रही थी ।'

'परन्तु भीतर से कौन निकला था ? घर का कोई सेवक प्रतीत नहीं होता था ।' सेठ जी लड़की के अब शान्त व्यवहार से उत्तर की आकांक्षा रखते थे ।

लड़की ने कहा, 'पिताजी ! मेरा विचार है कि वह जाने वाला शान्ता मौसी का लड़का होगा । वह आया हुआ था और मेरे कमरे में बैठा पुस्तकें देख रहा था ।

'हां ! कुछ वैसे ही प्रतीत होता था । पर तुम्हारे कमरे में पुस्तकें क्यों देख रहा था ?'

'वह आया तो था, जब माताजी घर पर थीं । मैं उसे अपने कमरे में छोड़ आपके आने की आशा में शर्बत बनाने चली गयी थी । मेरा विचार था कि चला गया होगा । परन्तु आपने जो उसका हुलिया बताया था, वह उसका ही था । वह सफेद कुर्त्ता तथा पायजामा पहने था और उसके पांव में टैनिस शू थे ।'

इस सफाई पर सेठ जी का समाधान नहीं हुआ । इस पर भी व्यापारी स्वभावानुसार मौन हो मन-ही-मन विचार करने लगे कि वह लड़की के कमरे में क्या कर रहा था और फिर लड़की का

मुख लाल क्यों हो रहा था। वह गर्मी के कारण था अथवा लज्जा के कारण ? परन्तु इन बातों का उत्तर वह लड़की से पाने की आशा नहीं करते थे। वह मन-ही-मन इन उठ रहे प्रश्नों का उत्तर विचार करने लगे थे।

लड़की पिता के समीप बैठ शर्बत पी चित्त को स्थिर कर रही थी। शर्बत समाप्त हुआ, पर नन्दन और उसकी पत्नी सुमति नहीं लौटे। सुमति कहां गयी थी, लड़की ने बताया नहीं था। कदाचित् वह जानती नहीं थी कि वह कहां गयी है। सेठ जी का विचार था कि वह लड़की के विचारित ससुराल को गयी होगी और वहाँ अपनी शान दिखाने के लिये सेवक को साथ ले गयी होगी।

शर्बत पी सेठ जी ने कटोरा ट्रे में रखा और अब पुनः आराम करने के लिये तकिये पर सिर रखे लेट गये; परन्तु मन में सफेद परिधान में शान्ता जैसी मौसी के लड़के के विषय में विचार करते हुए अपनी स्वाभाविक नींद नहीं ले सके।

अनेकानेक, अच्छी-बुरी कल्पनाएं मन में दिमाग को गर्म कर रही थीं और शर्बत की ठण्डक को विलीन कर रही थीं।

राधा उठी और खाली बर्तन उठा कर भीतर ले गयी।

आधा घंटा भर अपनी कल्पनाओं और शंकाओं में डोलते हुए सेठ रामलोक सो नहीं सके।

इस समय बैठक का द्वार खुला और राधा की मां बैठक घर मे आयी। उसके साथ नन्दन और सेविका मोहिनी भी थे।

'कहां गयी थीं ?' सेठ जी ने पूछा।

'साधु आश्रम कश्मीरी गेट पर।'

'वहां क्या था आज ?'

'ऋषिकेश वाले ब्रह्मानन्द जी आये हुए हैं। नन्दन समाचार लाया था कि उनका प्रवचन सायं छः बजे से आठ बजे तक होगा।'

इतनी गर्मी में दो घंटा भर वहां बैठी रही हो ?'

'वहां तो ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी और फिर व्याख्यान की मधुरता में सब कुछ भूल गयी थी। बाहर की गर्मी-सर्दी की, भला अध्यात्म की निर्मलता और शीतलता से क्या तुलना है ?'

'पर यहां तो बहुत गर्मी हो रही थी और उस गर्मी में राधा की गालें कानों तक लाल हो रही थीं।'

'उसके कमरे में बिजली का पंखा तो लगा है ?'



'पर खस-खस की टट्टियां नहीं लगीं। इस कारण वह बेचारी असह्य गर्मी अनुभव करती प्रतीत हो रही थी।'

अभी तक नन्दन व मोहिनी सेठानी की आज्ञा सुनने के लिये वहीं बैठक घर में खड़े थे। इस पर सुमति ने मोहिनी को कह दिया, 'चलो, भोजन तैयार करो और नन्दन ! तुम देखो, कोचवान को घोड़े के दाने के लिये पैसे मिले हैं या नहीं ?'

इस प्रकार बैठक सेवकों से रहित देख कर पत्नी ने पूछा, 'तो कुछ विशेष बात हुई है ?'

'हां, तभी तो कह रहा हूं कि तुम राधा को साथ ले जाने के स्थान पर मोहिनी को ले गयी थीं।'

सुमति ने बताया, 'राधा से मिलने शान्ता बहन का लड़का संतोष आया हुआ था। मैंने राधा को कहा कि उसको शर्बत पानी पिलाये और फिर उसको कहे कि कल मध्याह्न के समय अपनी मां को मुझसे मिलने के लिये भेज दे।'

'परन्तु उसको अकेले में क्यों छोड़ गयी थीं। वह कुछ मुझसे चोरी-चोरी कर रहा लग रहा था।'

'क्या लग रहा था ?'

'उसके व्यवहार से कुछ अनुभव हो रहा है। मैं आंखें मूंद लेटा हुआ था कि वह बहुत हल्के-हल्के पग उठाता हुआ, चुपचाप, आहट किये बिना जिससे मुझे पता न चले कि कोई घर में आया हुआ है, यहां से गया था।'

'मैं समझती हूं कि वह आपकी नींद खराब न करने के विचार से चुपचाप और बिना आहट किये गया होगा।'

'इतना समझदार मानती हो उसे ?'

'हां, उसके व्यवहार से तो यही समझ आया है कि वह बहुत ही समझदार लड़का है। मुझे बहुत प्यारा लग रहा है।'

'तो तुम उससे प्यार कर सकती थीं। राधा को इस काम के लिए क्यों छोड़ गयी थीं ?'

'इसलिये कि मेरा विवाह तो हो चुका है। उसे हुए सोलह वर्ष हो चुके हैं। अब तो राधा का विवाह होना है। मैं देखना चाहती थी कि उसे भी वह प्यारा लगा है अथवा नहीं।

'कल शान्ता बहन ने ही कहा था कि संतोष राधा से विवाह

की इच्छा करता है। इस पर मैंने कहा था कि यदि राधा भी यह इच्छा करने लगेगी तो विवाह हो जायेंगा।'

'इसी कारण वह आज आया था। मुझे आपकी बात स्मरण आ गयी थी। याद है आपकी पहली पत्नी की मृत्यु के उपरान्त क्या हुआ था?'

सेठ रामलोक गम्भीर हो स्मरण करने लगे। एकाएक उनका मुख खिल उठा और बोला, 'हां, कूचा पातीराम की बात है। तुम हमारे पड़ोस में रहती थीं। मैंने तुम्हें ही कहा था, सुमति! मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं। इस पर तुमने कहा था, मेरी मां से बात करो।

'मैं तुम्हारी मां को मिलने जा पहुंचा। उसका कहना था कि लड़की को राजी कर लो तो विवाह हो जायेगा।

'मैंने कहा था, 'उसे मिला दो।

'तुम्हारी मां ने मुझे अपने घर बुलाने के स्थान तुम्हें मुझसे मिलने भेज दिया। बस विवाह हो गया था।'

अब सुमति ने कह दिया, बस यही बात प्रतीत होती है। शान्ता ने संतोष को यहां भेजा तो दोनों को परस्पर भली-भांति निश्चय कर लेने के लिये मैं घर के दोनों सेवकों को लेकर साधु आश्रम चली गयी थी।'

सेठ रामलोक गम्भीर विचार में मग्न हो गया। वह विचार करने लगा था कि जब सुमति विवाह से पूर्व उससे मिलने आयी थी तो उसने कैसा व्यवहार किया था।

सुमति ने आगे कहा, 'आखिर मैं जब आप से पहली भेंट के बाद घर गयी थी तो मां ने पूछा था, क्या कहता था? मैं कुछ उत्तर नहीं दे सकी थी, परन्तु मेरा मुख लाल हुआ देख मां ने पूछा था, 'तो तुम्हारा विवाह सेठ के लड़के से कर दिया जाये?'

'मैंने उत्तर नहीं दिया था और लाल मुख हो अपने कमरे में चली गयी थी। मैं उस समय विचार कर रही थी कि आप कितने धनी व्यक्ति हैं।'

सेठ रामलोक ने पूछा, 'और राधा ने भी देखा है कि संतोष कितना धनी व्यक्ति है?'

'यह तो संतोष ने देखा होगा, आप लड़की के विवाह पर और पीछे भी लड़की की ससुराल वालों को क्या कुछ देने वाले हैं।

जल ऊंचाई से नीचे को जाता है। सागर का जल गंगोतरी को नहीं जाता।'



'भली औरत ! यदि न जाता होता तो गंगोत्री जल विहीन हो चुकी होती। लाखों वर्षों से गंगा बह रही है और गंगोत्री जल शून्य नहीं हुई।'

इसका अर्थ सुमति नहीं समझी। वह पति का मुख देखती रह गयी।

पति ने समझाया, 'गंगोतरी पर निरन्तर जल पहुंच रहा है। तभी तो गंगा का स्रोत जल से भरा रहता है। परन्तु वहां जल तपस्या से भर जाता है। तपस्या सूर्य भगवान करता है और सागर से जल खैंच आकाश में ले जाता है। वहां से भी सूर्य के बल से ही मानसून हवाए चलने लगती हैं और वह जल को आकाश में उड़ाती हुई हिमालय पर वर्षा और हिम के रूप में गिरा देती हैं। वही जल फिर पतित पावनी गंगा को मिल जाता है।'

'पर मेरी मां ने कहा था, देखो, सेठ के लड़के को पसन्द करना। लाखों की आसामी है। हाथ से निकलने न पाये।'

'और तुमने मुझसे इसी कारण विवाह किया था ?'

'आपने मुझे देखने की लालसा प्रकट की तो मैं आपके मकान और आपकी दौलत को देख रही थी।'

सेठ गम्भीर विचार में मग्न हो गये।

एकाएक उसे स्वामी ब्रह्मानन्द की बात स्मरण हो आयी। उसने पूछ लिया, 'और स्वामी जी महाराज ने क्या उपदेश दिया था।'

'उन्होंने एक वेद मंत्र सुना कर उसकी व्याख्या की थी। दो घंटा भर उसकी व्याख्या करते रहे थे। बहुत आनन्द आया है। व्याख्यान के उपरान्त सब श्रोतागण स्वामी जी के चरण स्पर्श करने को उमड़ पड़े थे। इससे पंक्ति बंध गयी थी। दो पंक्तियां बन गयी थीं। एक पुरुषों की और दूसरी स्त्रियों की। स्त्रियों की पंक्ति में मैं और मोहिनी खड़ी हो गयीं। हमें तो शीघ्र अवकाश मिल गया था। नन्दन को पन्द्रह मिनट लगे। इस कारण मुझे लौटने में देर हो गयी।

'और क्या उपदेश दिया था ? जिसमें दो घंटे लग गये थे ?'

'यही कि पूर्ण जगत् परमात्मा का बनाया हुआ है। इस कारण इसका भोग लालच से रहित होकर करना चाहिये, जिससे परमात्मा की सम्पत्ति सबके प्रयोग के लिये उपलब्ध हो सके।'

'तो यह कोई नयी बात थी, जो दो घंटा भर वहां सुनती रही थीं ?'

'बात तो पुरानी ही है। परन्तु स्वामी जी का कहने का ढंग बहुत रोचक था। उनकी वाणी की मिठास अद्वितीय थी। बस, वह कहने लगे तो हम सब मंत्र-मुग्ध सुनते ही रह गये। श्रोतागणों में एक भी नहीं था जो बीच में उठ पड़ा हो।'

'परन्तु देवी ! परमात्मा भी तो अपनी सम्पत्ति बिना परिश्रम किये नहीं देता। सम्पत्ति को भूमि में छुपा कर रखे रहता है। किसान को हल चला, जल से सिचाई कर और गुड़ाई इत्यादि करने पर अनाज मिलता है। उसे भी परिश्रम से काट और छांट करना पड़ता है। तब उसका दाम मिलता है। गेहूं को क्रय करने वाला भी जब उसे पीस, गूंथ, पका नहीं लेता, तब तक खा नहीं सकता।'

'हां ! यह तो मैं जानती हूं। इसके लिय हम औरतें जो परिश्रम करती हैं, वह सब मैंने किया है। तभी तो आज लाखों की सम्पत्ति राधा को दिलाने की सिफारिश कर रही हूं।''

'क्या परिश्रम किया हैं तुमने इस अधिकार को पाने के लिये ?'

'पहली ही भेंट में जो परिश्रम किया था, वह आपको पसन्द आया था। इसी कारण तो मुझे आप भूषणों और जरीदार बस्त्रों से लाद कर अपने घर में ले आये हैं।'

रामलोक तब की बात स्मरण कर रहा था। वह बहुत सस्ता काल था। सोना पन्द्रह रुपये तोला था, चांदी छः आने तोला थी। जरीदारी बनारसी साड़ी बीस रुपये की मिल जाती थी। इस पर भी उसकी मां ने जो कुछ सुमति को पहिनाया था उस सब का मूल्य दस पन्द्रह हजार आंका गया था।

सुमति सब अच्छे वस्त्र तथा आभूषण अपने सन्दूक में ताला लगा कर रखती थी। अपनी सास के सम्मुख वह सादे वस्त्र पहन दी जाती थी। सास पूछती थी, 'आभूषण कहां हैं ?'

'सुमति कहती, संदूक में रख लिये हैं।'

'और पहनोगी नहीं ?'

'जो आप देंगी वह पहनूंगी। वे पुराने हो गये हैं। 'मां हंस पड़ती और उसे नये अभूषण और जरीदार वस्त्र ले देती।

इस प्रकार सुमति धीरे-धीरे सब कुछ अपने अधिकार में करती जाती थी जो उसकी सास के पास था।

सास विचार करती थी कि यह घर की सम्पत्ति एक संदूक में रहे अथवा दूसरे संदूक में, इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है ? यही बात उसकी मां ने तब कही थी जब उसने सुमति को नये अभूषण और वस्त्र पहिनाये थे। जब तक मां के संदूक मे वस्त्र और भूषण थे तब तक, जब भी सुमति मांगती वह देती रही थी। जब मां के संदूक में सब कुछ समाप्त हो गया और सब सुमति के संदूक में चला गया तो पुत्र ने मां से पूछा था, 'मां ! अब तुम को पहनने की आवश्यकता होगी तो कहां से-पहनोगी ?'

'मां का कहना था, 'तुम्हारे पिता से कहूंगी, वह और ला देंगे। यदि वे नहीं लायेंगे तो तुम्हारी बहू के मांग कर पहन लूंगी और फिर उसे ही रखने के लिये दे दूंगी।'

परन्तु सेठ रामलोक को राधा और संतोष कुमार में तथा अपने में अन्तर प्रतीत हो रहा था। उसने कह दिया, 'देखो सुमति ! तब कई बार ऐसा हुआ था कि मां को कभी किसी विवाहादि पर जाना होता था तो तुमसे दो भूषण लेकर पहन लिया करती थीं, परन्तु जो कुछ राधा ले जायेगी, वह तुमको मांगने पर भी नहीं मिलेगा। उस समय तो तुम्हारा संदूक और मां का सन्दूक एक घर ही में था और अब जो कुछ राधा ले जायेगी वह दूसरे घर में चला जायेगा। वहां से तुम्हें आवश्यकता पड़ने पर मिलेगा नहीं।

'यह ठीक है कि राधा का कोई भाई नहीं और कोई देवरानी नहीं आयेगी, परन्तु मां की भांति तुम्हें भी तो आवश्यकता पड़ सकती है। तब क्या करोगी ?'

'देखिये जी !' सुमति ने कह दिया, 'यह तब विचार करूंगी जब राधा का विवाह कहां होता है यह पता चल जाये और राधा का घरवाला विवाह के उपरान्त कहां रहना चाहता है। मैं तो राधा के घरवाले को इस घर में ही रखने की बात विचार कर रही हूं।'

'मैं समझता हूं कि संतोष तुम्हारे घर में नहीं आयेगा !'

'यही तो देखना है।'

'अच्छा देखो।'

बात समाप्त हो गयी और सुमति लड़की से पूछने चली गयी कि मौसी के लड़के संतोष से क्या बात हुई है।

शान्ता सुमति की मां-जाई बहन नहीं थी। वह सहेली थी। संतोष के पिता का देहान्त हो गया, जब वह अभी बालकमात्र ही था, संतोष और उसकी मां का सुमति के घर में आना-जाना था, परन्तु संतोष और राधा के परस्पर विवाह की चर्चा नहीं चली थी।

संतोष कुमार ने एम० ए० पास किया और हिन्दुस्तान की सरकार के केन्द्रीय कार्यालय में नौकर हो गया। कार्यालय में परिश्रम से काम करता हुआ दो वर्ष में ही वह सुपरिण्टेन्डेण्ट हो गया। अब उसके मन में विचार आया कि विवाह होना चाहिये। इस विचार के आते ही उसने मां से पूछा, 'मां ! मेरा विवाह नहीं करोगी ?'

मां ने कह दिया, 'तुम्हारे योग्य कोई पत्नी ढूंढ रही हूं।'

'पर एक तो मुझे दिखाई दे रही है। सेठ रामलोक जी की लड़की राधा दसवीं श्रेणी में पढ़ रही है। इतना काफी है। शेष मैं पढ़ा लूंगा।'

'शेष का क्या मतलब ?' शान्ता ने पूछ लिया।

'यही जो मैं पढ़ा हूं।'

'परन्तु बेटा ! वह बहुत ही धनवान की लड़की है। वह मुझे और मेरे लड़के को पसन्द नहीं कर सकती।'

'तो ऐसा करो, उसकी मां से पूछ लो। मौसी तो मुझे बहुत पसन्द करती है।'

'हां परन्तु एक लड़के के रूप में, दामाद के रूप में पसन्द भी नहीं कर सकती है।'

'तुम उसके मन की बात जानती हो क्या ?'

'यह संसार की गति है।'

'मां ! तुम मौसी से पता करो और कहो कि लड़की से पूछ कर बताये। मैं लड़की से पसन्द किया जाऊंगा।'

शान्ता ने बहुत ही संकोच करते हुए सुमति से कहा। सुमति

को अपने विवाह की बात स्मरण आ गयी। उसको जब सेठ रामलोक ने विवाह के विषय में कहा था तो उसने कहा था कि मेरी मां से मिल लो। सुमति को संदेह हुआ कि ऐसी ही बात इन दोनों में भी हो सकती है।'

इस कारण उसने कह दिया, 'अच्छा, मैं लड़की से पूछ कर बताऊंगी।'

सुमति ने उसी दिन राधा से पूछा तो राधा ने कहा, 'मां! विवाह तो करूंगी। सारी उम्र कुंवारी नहीं बैठी रहूंगी। परन्तु विवाह किससे करूंगी यह अभी विचार नहीं किया।'

सुमति ने संतोष कुमार का नाम लिया। राधा ने कहा, 'तो यह उसने तुमसे कहा है?'

'नहीं, उसकी मां ने कहा है।'

'तो उसकी मां से कहो कि वह मुझसे मिल ले। मैं उससे दो तीन बातें पूछ कर ही विवाह का निश्चय करूंगी।'

इस पर भेंट करा दी गयी लड़के और लड़की में। भेंट के समय क्या बात होगी, न जानते हुए यह भेंट सेवकों के सामने करानी उचित प्रतीत नहीं हुई। विवाह न हो सकने पर सेवक मन में क्या विचार करेंगे, यही विचार कर, वह स्वयं घर की सेविका मोहिनी और चौकीदार नन्दन को साथ ले स्वामी ब्रह्मानन्द का प्रवचन सुनसे चली गयीं। जाते समय राधा से कह गयी, 'देखो राधा! संतोष कुमार तुमसे मिलने आ रहा है। तुम उससे बात कर कुछ निर्णय कर लेना। साथ ही तुम्हारे पिताजी के दुकान से आने के समय तक मैं आ जाऊंगी। यदि किसी कारण वहां देरी हो गयी तो उनको शर्बत पिला देना।'

## दो

अपने पति को यह कह दिया कि वह राधा से पता करती है, सुमति राधा के कमरे में जा पहुंची। यह समय राधा के स्कूल का काम करने का था। परन्तु राधा आराम कुर्सी पर बैठी पलंग पर टांग रखे सो रही थी। मां ने कुर्सी समीप की तो उसकी आवाज से वह जाग पड़ी। मां ने पूछा, 'क्यों क्या बात

है ? लेट क्यों रही हो ?'

'मां ! शान्ता मौसी का लड़का जाया था। उससे बहुत बातें हुई हैं।' इतना कहते-कहते राधा का मुख लाल हो गया। उसने मुख नीचे कर लिया। मां ने पूछा, 'पर बातें क्या हुई हैं ? तुमने कहा था कि तुम उससे कुछ पूछना चाहती हो ?'

'मां ! पूछने का समय ही नहीं मिला। जब उसने कहा कि वह मुझसे विवाह करना चाहता है तो मैं मान गयी। इस पर वह मुझसे प्यार करने लगा। फिर हमने परस्पर विवाह कर लिया। वह पिताजी के आने पर ही गया है। मां ! उससे हुई बात पर विचार करती हुई लेटी थी कि नींद आ गयी थी।'

'क्या बात हुई है ?'

'यह हमने निश्चय कर लिया है कि हमारा विवाह हो गया है।'

सुमति ने आशंकित हो पूछा, 'कैसे विवाह कर लिया। विवाह में तो बारात चढ़ती है, बाजे बजते हैं, पण्डित विवाह संस्कार कराता है।'

'मां ! यह काम तुम लोगों का है। अब तुम यह पूरा करा लो।'

यह सुमति की योजना में नहीं था। यद्यपि सेठ जी ने इसकी आशंका प्रकट की थी, परन्तु निश्चयात्मक नहीं था। इस पर भी मां ने लड़की को वह कुछ नहीं कहा जो वह अपने पति से कह कर आयी थी। उसने कहा, 'पर अब विवाह शीघ्र हो जाना चाहिये।'

'वह तो कहते थे कि कल ही हो तो ठीक है।'

'यह तुम्हारे पिताजी से निश्चय करूंगी। परन्तु तुमने यह भी तो निश्चय करना था कि विवाह के उपरान्त तुम कहां रहोगी। हमारा तो लड़का भी तुम हो और लड़की भी तुम ही हो।'

'मां ! ये सब बातें पीछे होती रहेंगी। आज तो इस प्रकार की बातों का अवसर ही नहीं मिला।'

'तो वह कब मिलने आयेगा ?'

'वह कहते थे कि कल कार्यालय से आयेगा और पिताजी से दिन मुहूर्त्त निश्चय कर जाएगा।'

'तब ठीक है। अब वह मिले तो तनिक संयम से रहना चाहिये। उससे कहना कि तुम इस घर में ही रहोगी। उसकी मां

भी यहां आकर रह सकती है। हमारा मकान इतना बड़ा है कि तुम्हारे बाल-बच्चे भी यहां रह सकेंगे।



इसमें उत्तर देने को कुछ नहीं था। इस कारण राधा चुप रही। सुमति वहां से उठ रसोई घर में चली गयी।

सेठ रामलोक के जमाने के व्यवहार से यह कुछ नहीं चाहता था। अपने सुमति से विवाह की बात वह भिन्न मानता था। वह स्वयं पहली पत्नी की मृत्यु पर दूसरे विवाह में सुमति की लालसा करने लगा था परन्तु संतोष का तो पहली बार ही विवाह का प्रस्ताव था। वह स्वयं अपने पहले विवाह की बात स्मरण करने लगा था। उस विवाह के उपरान्त तो वह पत्नी के पास जाने से डरता था। उसे ज्ञान नहीं था कि पत्नी से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये। विवाह के एक मास उपरान्त ही उसके पत्नी के सम्बन्ध स्वाभाविक हुए थे।

सेठ रामलोक का पहला विवाह दो वर्ष के लगभग रहा था। उसकी पत्नी गर्भवती हुई थी और प्रसव के कुछ दिन उपरान्त ही उसका देहान्त हो गया। लड़का हुआ था परन्तु मृत।

अभी पत्नी के देहान्त को तेरह दिन भी नहीं हुए थे कि वह पड़ोस की लड़की सुमति को घर लाने की लालसा करने लगा। उसने एक दिन सुमति को गली में कहीं से आते देखा तो मार्ग रोक पूछने लगा कि उससे विवाह करोगी। कदाचित सुमति भी यही विचार कर रही थी। उसने कहा था—मां से बात करो।

वह बात हुई तो उसे बातचीत में ही सुमति की मां ने कहा था कि लड़की से पूछना पड़ेगा।

सुमति की मां विधवा थी। वह लड़की के दहेज पर कुछ अधिक नहीं दे सकती थी। उसने एक धनी मानी के घर में लड़की का मार्ग बनते देख लड़की से लड़के को पृथक् में बात करने की स्वीकृत दे दी।

परन्तु रामलोक विचार कर रहा था कि राधा के विषय में ऐसी कोई बात नहीं थी। राधा विधवा मां की लड़की नहीं है। उसका पिता लाखों की सम्पत्ति का स्वामी है। अब प्रस्तावित लड़का विधवा मां का पुत्र है और प्रस्ताव उस पिता विहीन और तीन सौ रुपये वेतन पाने वाले की ओर से आया है।

वह समझ रहा था कि उसकी पत्नी ने अपने उदाहरण पर

ठीक नहीं किया। लड़की यह बताते हुए कि मौसी शान्ता का लड़का आया था, कानों तक लाल हो उठी थी।

दोनों बातों में भेद समझ वह परिणामों में भी भेद समझ रहा था। अब बिखर गये घी को एकत्रित करने के लिये वह विचार कर रहा था कि अब क्या हो ?

यदि संतोष कुमार का पिता होता तो वह उसी समय उससे मिल कर विवाह निश्चय कर आता। उसे संतोष कुमार की मां से मि ाना और वह भी रात के आठ बजे उचित प्रतीत नहीं हुआ।

वह चाहता था कि सुमति को अपनी सहेली शान्ता के घर तुरन्त भेजे और कुछ निश्चय कर आये। परन्तु सुमति के भी इस समय जाने में असुविधा थी।

इन्हीं विचारों की उलझन में फंसा हुआ था कि भोजन का संदेश मोहिनी लेकर आयी। 'सेठ जी ! भोजन तैयार है।'

भोजन करते हुए मोहिनी सामने थी। इस कारण पत्नी लड़की के विषय में कुछ भी बात नहीं कर सकी। साथ ही राधा भी वहां बैठी भोजन कर रही थी।

बात रात सोने के समय हुई। सेठ ने पत्नी से कहा, 'यह ठीक नहीं हुआ। मेरी यह योजना नहीं थी।'

'यह योजना तो मेरी भी नहीं थी। मैं राधा से ऐसी आशा नहीं रखती थी। वह दसवीं श्रेणी में पढ़ती है, कुछ तो दुनिया की समझ रखती होगी, परन्तु उसने स्वीकार किया है कि संतोष उससे विवाह कर गया है। इस कारण मैं यह इच्छा करती हूं कि कल प्रातःकाल लड़के के दफ्तर जाने से पहले ही शान्ता से मिल सब कुछ निश्‍चय कर आऊं।'

'लड़का कल सायंकाल आप से मिलने की बात कह गया है। परन्तु मैं स्वयं शान्ता से मिलकर बात करना चाहती हूं।'

'ठीक है। याद है तुम विवाह के उपरान्त रजस्वला नहीं हुई थीं। अर्थात् हमारी पहली भेंट का ही परिणाम था कि तुम्हें गर्भ स्थित हो गया था। मुझे भय है कि राधा को भी यही बात न हो जाये।'

पति-पत्नी का भय यथार्थ ही था। इस कारण पत्नी दूसरे दिन बहुत प्रातःकाल ही अपनी सहेली शान्ता के घर पर जा पहुंची। लड़का अभी सोकर उठा ही था। मां लड़के को चाय

देकर अपने घर की बैठक में बैठी थी।



शान्ता ने सुमति को देख कर कह दिया, 'तुमने ठीक किया है जो आ गयी हो। लड़का तो कहता है कि वह राधा को पसन्द नहीं करता और उससे विवाह नहीं करेगा।

यह सुन सुमति का मुख विवर्ण हो गया। उसने कहा, 'मैं विवाह का मुहूर्त निश्चय करने आयी थी। लड़की ने तो बताया है कि संतोष उसे पसन्द आ गया है और विवाह के लिए इच्छुक है।

'मुझे उसने इससे उलट बात बतायी है।'

सुमति बता नहीं सकी कि वह राधा से वास्तविक विवाह तो कर ही चुका है। उसने पूछ लिया, 'लड़की पढ़ी लिखी है। सुन्दर और गौरवर्णीय है। वह और क्या चाहता है ?'

'कहो तो मैं उसे बुला कर तुमसे बात करवा दूं ?'

'हां !' सुमति ने लड़के से मिलना स्वीकार कर लिया।

मां ने संतोष को आवाज दे दी। वह हाथ में चाय का प्याला पकड़े हुए बैठक घर में आ गया और राधा की मां को बैठे देख बोला, 'मौसी ! आप आ गयी हो तो ठीक ही किया है। मैं कल राधा से मिलने आपके घर गया था। वहां आप नहीं थीं। राधा मिली थीऔर मैंने उससे मिलने के उपरान्त यह निश्चय किया है कि मेरा विवाह उससे नहीं होगा।'

'क्यों ? क्या दोष देखा है तुमने राधा में ?'

'मौसी ! तुम बुरा न मानो तो कह दूं। वह छिनार है। मुझे देखते ही मुझ पर ऐसे लपकी कि मैं चकित रह गया। वह लड़कों से मिलने और उनको फंसा लेने की विद्या बहुत भली-भांति जानती है।'

'तो तुम उसे छोड़ वहां से चले क्यों नहीं आये ? तुमने उसे अपनी पत्नी किसलिये बनाया है ?'

'वह तो मौसी ! तुम जानती हो कि यह सम्भव नहीं था। मैं भी हाड़-चाम का बना हूं। उसके आकषर्ण को मैं सहन नहीं कर सका। परन्तु मेरा अनुभव है कि वह मुझसे पहले कइयों से वही व्यवहार कर चुकी है।'

'मैं तो तुमसे उसके विवाह की तारीख निश्चय करने आयी थी।'

अब संतोष गम्भीर विचार में डूब गया। दो तीन मिनट तक

दोनों सखियां लड़के के कहने की प्रतीक्षा करती रहीं।

आखिर संतोष कुमार ने कहा, 'मौसी ! यह बताओ ! विवाह के अवसर पर क्या कुछ अपने दामाद को देने का विचार रखती हो?'

'मैं तो यह प्रस्ताव लेकर आयी हूं कि तुम सेठ जी के उत्तराधिकारी हो सकोगे। सेठ जी के दिल्ली में आठ मकान व थोक कपड़े का व्यापार है और बैंक में भी रुपये हैं। तुम उस सब के मालिक होवोगे, राधा का कोई भाई नहीं। तुम ही सेठ जी के लड़के का स्थान पाओगे।'

सतोष कुमार यह सुन गंभीर हो गया। उसने कहा, 'मौसी ! तुम्हारी बात विचारणीय है। विवाह पूर्व से यदि सेठजी कुछ लिखत-पढ़त कर दें तो मैं मान सकता हूं।'

इसपर संतोष की मा शान्ता ने कह दिया, 'बेटा ! इस लिखत-पढ़त की क्या आवश्यकता है। मुझे तो बहन और बहन के घर-वाले के कह देने पर भी विश्वास है।'

'पर मां !' संतोष ने कहा, 'विवाह तुम्हारा नहीं होना। विवाह मेरा होना है। मैं लड़की के दोष देख आया हूं। उनको छुपाना भी तो मुझको होगा, तुम को नहीं। उसका पहली ही भेंट में मुझपर लपकना उसके स्वभाव को बताता है। उसके इस स्वभाव को भी बदलना पड़ेगा।'

सुमति ने बात बनी जान कह दिया, 'यह सब तो हम करने ही वाले हैं। इस कारण लिखत-पढ़त भी हो जाएगी। बताओ, कब बारात लेकर हमारे घर आ सकोगे?'

'मौसी !' उत्तर संतोष कुमार ने ही दिया, 'जिस दिन लिखत करोगे, उसके दूसरे दिन मैं अपने मित्रों और सम्बन्धियों के साथ दूल्हा बन आ जाऊंगा।'

'तब ठीक है। तुम आज सायं आठ बजे हमारे घर आ जाना और सब प्रबन्ध तुम्हारे कहे अनुसार हो जाएगा। मेरी इच्छा है कि विवाह इस रविवार सायंकाल हो जाए।'

'ठीक है मौसी ! मैं भी यही चाहता हूं। राधा की बुद्धि कुमार्ग पर लगी होने के कारण मुझे शीघ्रातिशीघ्र यत्न करना पड़ेगा। उसकी पुरानी मित्रता की घटक उसके मन से दूर करनी पड़ेगी।'

इस प्रकार निश्चय कर सुमति घर आयी। सेठ रामलोक उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। सुमति आई तो पति-पत्नी दोनों पृथक् कमरे में चले गए और सुमति ने सब बात बता दी।

'महा बेईमान है।'

'मैं ऐसा नहीं समझती। मैं तो केवल यह समझी हूं कि कुछ थोड़ा सा लोभी है। आपके पास उसके लोभ को तृप्त करने के साधन हैं। उसको तृप्त कर दीजिए तो इस भूल का प्रतिकार हो जाएगा।'

रामलोक हंस पड़ा। वह बोला, 'मैं वकील से मिलकर सब प्रबन्ध करा दूंगा।'

इस विषय में बात उसी सायंकाल जब सेठ जी दुकान से घर आए तो संतोष कुमार से हो गयी। सेठ जी ने वकील के द्वारा लिखा हिब्बानामा का मजमून सुना दिया। संतोष कुमार और उसकी मां शान्ता सर्वथा संतुष्ट विवाह की तिथि निश्चय कर घर लौट गये। जाने से पूर्व संतोष ने कहा, 'यह लिखित रजिस्टर्ड कर मुझे दो-तीन दिन में मिल जानी चाहिए।'

रामलोक बोला, 'मैंने सब प्रबन्ध किया हुआ है। तुम निश्चिन्त हो अपने मित्रों और सम्बन्धियों को अगले रविवार विवाह का निमंत्रण भेज दो। रजिस्टर्ड हिब्बानामा वीरवार को दिखा दूंगा, परन्तु दूंगा विवाह वेदी से उठते समय। तुम्हारी बारात के प्रबन्ध के लिए कुछ नकद पहले ही मिल जाएगा और शेष वेदी से उठते समय मिल जाएगा।'

मां पुत्र अति प्रसन्न घर लौट गए।

परन्तु अगले दिन पासा पलटा। रामलोक के पास उनका वकील रमण दुकान खुलते ही आया और पूछने लगा, 'सेठजी! क्या विचार किया है?'

सेठजी ने कहा, 'वकील साहब! मेरे कोई लड़का नहीं है और मैं दामाद को ही लड़का बनाने की सोच रहा हूं। वैसे तो हम व्यापारियों के मुख से निकली बात पर ही उसे विश्वास करना चाहिए था। पर वह दफ्तर का बाबू हम व्यापारियों के चलन को नहीं जानता। इस कारण वह लिखत-पढ़त कराना चाहता है।'

वकील साहब ने कहा, 'मैं भी तो आपकी बिरादरी में हूं।

इस कारण मैं इस लड़के से अच्छा एक लड़का बताऊं तो आप इस लोभी लड़के को छोड़ नहीं सकते क्या ?'

'परन्तु विवाह इस रविवार को होना चाहिए।'

'उससे पहले भी हो सकता है। मुझे आपके होने वाले दामाद की बात पसन्द नहीं आयी। मैं उससे अच्छा वर आपको बता सकता हूं।'

'कौन है ?'

'रमण एडवोकेट का लड़का है। इसी वर्ष एम० ए० कर वकालत पास की है। और अभी पिछले सप्ताह ही उसने वकालत आरम्भ की है। मैं लड़के को और उसकी मां को राजी कर आया हूं।'

एक व्यापारी को निश्चय करने में देर नहीं लगी। सेठजी ने कह दिया, 'तो आप लिखा-पढ़ी कर लें।'

'सेठजी! इसकी आवश्यकता नहीं। मुझे एक व्यापारी के कथन मात्र पर विश्वास है। साथ ही लड़का होनहार है। वह शीघ्र ही नगर में चोटी का वकील बनने वाला है। वह अपनी दस उंगलियों की कमाई में विश्वास रखता है।

'तो फिर ऐसा करें,' सेठजी ने कह दिया, 'आज सायंकाल लड़के को लेकर हमारे घर आ जाइए और मैं शकुन मात्र उस समय दे दूंगा। बात पक्की रही और मैं कल ही निमंत्रण पत्र छपवाने भेज दूंगा। विवाह इस रविवार को होगा।'

रमण कुमार ने उठते हुए कहा, 'तो मैं अपने चार-पांच सम्बन्धियों को लेकर आपके घर आऊंगा, जिससे शकुनमात्र कुछ उनके सम्मुख दे दीजिएगा।'

वकील साहब अपने घर प्रबन्ध करने चले गए और सेठजी ने दुकान मुन्शी के हवाले की और स्वयं घर जा पहुंचे तो राधा स्कूल गयी हुई थी। सेठजी ने बात अपनी पत्नी को कही तो वह अनिश्चित मन पति का मुख देखती रह गयी। एक बात पर वह प्रसन्न थी कि वकील साहब ने लेने-देने की बात नहीं की थी। उसने केवल यह कहा था कि वह सायंकाल अपने पांच-दस सम्बन्धियों को लेकर आएगा और शकुनमात्र कुछ दे दें, जिससे सम्बन्धियों के सम्मुख बात पक्की समझ ली जाए। उसने कहा, 'मैं समझती हूं कि यह ठीक ही हो रहा है। आप चाय-पानी का

प्रबन्ध का ठेका किसी होटल वाले को दे दीजिए । इस बैठक घर में ही सगाई की रसम पूरी हो जाएगी ।'

सेठजी ने अपने कुछ सम्बन्धियों को सेवक नन्दन के हाथ लिखित निमंत्रण भेज दिया और होटल वालों से घर पर चालीस-पचास लोगों के लिए चाय-पानी का प्रबन्ध करा लिया ।

सायं संतोष कुमार पुनः राधा से मिलने आया और सेठजी की बैठक में बीस-पच्चीस व्यक्तियों को बैठे देख विस्मय करने लगा कि क्या हो रहा है ? सेठजी उस समय भीतर कुछ प्रबन्ध देख रहे थे ।

वह उन एकत्रित हुओं में से एक से पूछने लगा, 'आज यहां क्या है ?'

वकील रमण कुमार को सन्देह हुआ कि यह वही लड़का है जिससे सेठजी अपनी लड़की का विवाह करने का विचार कर रहे थे । उसने संतोष कुमार को अपने पास बैठा पूछ लिया, 'आपका नाम जान सकता हूं क्या ?'

'जी कुछ चोरी नहीं । मैं संतोष कुमार हूं । सेठजी से मिलने आया हूं ।'

रमण अब समझ गया । उसने कहा, 'इस समय तो सेठजी को फुर्सत नहीं होगी । आप एक घंटा उपरान्त आयें तो सेठजी से मिल सकेंगे ।'

'आप सब लोग किसलिए एकत्रित हो रहे हैं ?'

'मुझे और मेरे कुछ मित्रों को सेठजी ने चाय पर आमंत्रित किया है ।'

'वह कहां हैं ?'

'हैं तो भीतर ही । परन्तु मैं समझता हूं कि आपको यदि सेठजी से मिलना है तो दो घंटे के उपरान्त आइएगा । इस समय उनको अवकाश नहीं होगा ।'

विवश संतोष कुमार लौट गया । चाय-पानी की बात वह समझ नहीं सका था ।

सेठजी शकुन के लिए मिठाई, फल एवं तिलक देने के लिए केसर ले बाहर आ गए । रमण कुमार ने सेठजी को बताया नहीं कि संतोष कुमार आया था । उसने सेठजी के बाहर आते ही रसम पूरी की । सेठजी ने एक सौ एक रुपये लड़के के हाथ में

देकर तिलक दे दिया। साथ ही एक सौ एक वकील साहब को, एक सौ एक उनकी पत्नी को तथा सब आये सम्बन्धियों को ग्यारह-ग्यारह रुपये दिए।

आधे घंटे में रीति-रिवाज पालन कर और खाना-पीना कर वकील साहब अपने सम्बन्धियों की बधाईयों के बीच घर लौट गए।

लगभग दो घंटे बाद संतोष कुमार अपनी मां के साथ सेठजी से मिलने आया। वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि उस दिन, चौथे प्रहर उनके घर में किस उपलक्ष में लोग एकत्रित हो रहे थे। परन्तु जब मां-पुत्र आए तो घर पर नन्दन और सेविका ही थे। नन्दन ने बताया, 'सेठजी और सेठानी जी तथा लड़की भी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के दर्शन करने साधु आश्रम में गए हुए हैं।'

'कब तक लौटने को कह गए हैं?'

कह रहे थे कि साधु आश्रम में ही रात का खाना लेंगे और रात देरी से घर आयेंगे।'

निराश मां-पुत्र लौट गए। उस दिन संतोष कुमार निमंत्रण पत्र का प्रलेख बनाकर लाया था। परन्तु सेठजी तथा घर का कोई भी प्राणी घर पर न होने से वह निराश लौटा।

अगले दिन शान्ता अकेली सुमति से मिलने आयी तो सुमति ने उसे बैठक घर में बैठा मोहिनी को कहा, 'बहनजी के लिए मिठाई ले आओ।'

जब तक मिठाई आयी, सुमति ने बताया, 'बहन जी ! आपको यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कल राधा की सगाई का शकुन नगर के एक प्रमुख वकील रमण कुमार के लड़के को दे दिया है।'

शान्ता अवाक् मुख देखती रह गयी। इस समय मोहिनी एक ट्रे में दो प्याले चाय और साथ ही एक प्लेट में बहुत-सी मिठाई रखे हुए ले आयी।

शान्ता का मन स्थिर हुआ तो वह समझी कि दो दिन पूर्व जो उसके लड़के ने लिखत-पढ़त की बात की थी, इसने ही सब कुछ समाप्त कर दिया है। वह अपने चित्त को स्थिर कर बोली, 'परन्तु बहनजी ! आपने लड़की के शकुन के समय स्मरण भी नहीं

किया ?'

'हां, पता चला था कि जब राधा की ससुराल वाले आए हुए थे तो संतोष आया था। मैं उस समय भीतर थी और राधा के पिता चाय-पानी का प्रबन्ध देख रहे थे। जब तक हम बाहर आए संतोष कुमार जा चुका था। सब निश्चय इतना एकाएक हुआ कि हम अपने सब सम्बन्धियों को बुला भी नहीं सके।

'हां, लड़की के विवाह के समय तो हम सबको आमंत्रित करेंगे ही।' सुमति ने मिठाई की प्लेट उठा सहेली की ओर करते हुए कहा, 'देखो! यह घंटे वाले की दुकान से मंगवाई है। बहुत स्वादिष्ट है।'

आखिर शान्ता ने मिठाई की टुकड़ी उठाते हुए कहा, 'संतोष को बहुत निराशा होगी।'

'वह अब एक अच्छे स्थान पर नौकरी पा गया है। उसे बीवी मिल ही जाएगी। राधा के पिता कहते थे कि यदि विवाह के समय किसी प्रकार की आर्थिक सहायता की आवश्यकता होगी तो वह प्रसन्नता से सहायता करेंगे। वह संतोष को अपना लड़का ही मानते हैं।'

इन बातों से शान्ता का चित्त प्रसन्न नहीं हुआ। वह चुप-चाप चाय लेती रही और मिठाई खाती रही।

राधा लड़के में अदला-बदली होती देख भौंचक्की रह गयी थी। पिछले दिन जब उसने रमण के पुत्र श्रवण को तिलक दिया था तो वह झिझकी थी, परन्तु देखने में इस नये प्राणी को संतोष से सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट देख वह चुपचाप तिलक लगा भीतर चली गयी थी।

जब वकील साहब के घर वाले शकुन ले चले गए तो मां, लड़की को प्रश्न पूछने का अवसर न देने के लिए उसे और उसके पिता को लेकर साधु आश्रम को चली गयी। वहां उस समय स्वामी ब्रह्मानन्द जी का प्रवचन हुआ करता था। प्रवचन के उपरान्त सेठजी पत्नी और लड़की को लेकर एक अच्छे होटल में चले गए। वहां से साढ़े दस बजे रात को घर पहुंचे तो राधा ने कह दिया, 'मैं आज पढ़ाई नहीं कर सकी!'

मां ने कह दिया, 'उसकी अब आवश्यकता नहीं रहेगी। तुम अब अपने पति से पढ़ा करोगी।'

'पर मां !' वह मौसी शान्ता के लड़के से अपना विवाह होने की बात कहने वाली थी कि मां ने कह दिया, 'देखो राधा ! अब सो जाओ। यह लड़का संतोष कुमार से बहुत श्रेष्ठ है। श्रवण जी से विवाह होने पर तुम सुखी रहोगी।'

'परन्तु मां !' संतोष जी मुझसे जो कर्म कर गया था ?'

'बस, इसीलिए तो उसको अस्वीकार किया है। वह कर्म विवाह संस्कार के उपरान्त होना चाहिए था। उसने गाड़ी को घोड़े के आगे लगानी चाही थी। सेठजी ने उसे अस्वीकार कर दिया है।'

'और मैं अब पति बदलूंगी ?'

'उस कर्म से पति नहीं होता। पति बनने के लिए कुछ वचन देने होते हैं और उनके पालन के लिए अग्नि को जला शपथ लेनी होती है। संतोष ने बिना वचन के तुम्हें प्राप्त किया था। यह गलत था। इसके लिए तुम्हें भी अग्नि की पवित्र लपटों के सामने वचन देना था।'

'कैसे ?'

'यह कल बताऊंगी। अब सो जाओ। और संतोष कुमार को वैसे ही मानो जैसे पहले माना करती थीं अर्थात् वह मौसी का लड़का होने से भाई ही है।'

राधा उस समय तो चुप कर गयी। परन्तु रात भर विचार करती रही कि जो कार्य संतोष ने उसके साथ किया है वह विवाह क्यों नहीं ? और यदि वह विवाह है तो फिर एक विवाह के रहते दूसरा विवाह कैसे होगा ?

इसी उलझन में फंसी हुई वह रात बहुत देर तक सो नहीं सकी। पीछे जब उसको नींद आयी तो दिन के आठ बजे तक सोती ही रही। जब वह उठी तो उसे पता चला कि बैठक घर में शान्ता मौसी बैठी उसकी मां से बात कर रही है। इस कारण वह मौसी के चले जाने पर मां की उससे हुई बात का परिणाम जानने की लालसा करने लगी।

उसे उठा जान मोहिनी उसकी नींद खुलाने के लिए एक प्याला चाय बना कर ले आयी।

'बेटी !' मोहिनी ने कहा, 'बहुत देर तक सोयी हो ?'

राधा ने कहा, 'रात पिताजी ऐम्पायर होटल में खाना

खिलाने ले गए थे। वहां भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था। खूब पेट भरकर खाया था। इस कारण बहुत गहरी नींद आयी है।

'बेटी! अब ठीक हुआ है। परसों बहन जी ने बताया था कि संतोष से सगाई करने का विचार है। मुझे वह लड़का पसन्द नहीं था। इस कारण मैंने भी बहनजी से कहा था कि यह ठीक नहीं हो रहा। कल इस नए लड़के को देखा तो चित प्रसन्न हो गया है।'

राधा चाय लेती हुई मोहिनी की बात सुनती रही। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

जब तक वह चाय पीकर शौच स्नानादि से निपटी, शान्ता जा चुकी थी। सेठजी भी अल्पाहार ले दुकान को चले गए थे।

## तीन

सेठजी के चले जाने के उपरान्त मां लड़की के स्नानादि से निवृत्त होने की प्रतीक्षा करती रही। वह जब वस्त्र बदलकर आयी तो मां को प्रतीक्षा करते देख राधा ने कहा, 'मां! आज तो घर पर ही दस बज गए हैं और स्कूल में गैर-हाजिरी लग चुकी होगी।'

'अब स्कूल जाने की आवश्यकता नहीं। चलो अल्पाहार लो। मोहिनी ने पीठी वाली पूरी बनाई हैं और साथ में राई वाला घिये का अचार है। पीछे खीर भी है।'

लड़की मां के साथ रसोईघर में जा बैठी।

यह सन् १९१६ की कथा है। उस समय तक दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी बन चुकी थी। एक विशाल देश की राजधानी होने के नाते यह नगरी दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रही थी। दिल्ली यू० पी० के पश्चिमी जिलों और पंजाब के दक्षिणी जिलों में व्यापार का केन्द्र तो पहले से ही था। सेठ रामलोक का व्यापार भी उन्नति कर रहा था। रामलोक यह समझ रहा था कि हिन्दुस्तान की राजधानी बनने के कारण दिल्ली कुछ ही वर्षों में एक महान् नगरी बन जाएगी, जिसकी तुलना बम्बई और कलकत्ता से होने लगेगी।

मां बेटी जब अल्पाहार लेने लगीं तो राधा ने ही बात आरम्भ की। उसने पूछ लिया, 'मां ! शान्ता मौसी अभी आयी हुई थी। क्या कहती थी ?

'वह तो लड़के के विवाह के मुहूर्त के विषय में बात करने से पूर्व ही मैंने उसे बता दिया कि कल हमने तुम्हारी सगाई एक वकील के पुत्र से कर दी है।

'वह पहले तो विस्मय प्रकट करती रही परन्तु मैंने उसे आश्वासन दिया है कि जब वह अपने लड़के का विवाह करेगी तो तुम्हारे पिता उसकी आर्थिक सहायता कर देंगे।

'देखो राधा ! तुमसे कुकर्म कर वह समझा था कि उसने तुम्हें अपने साथ बांध लिया है और इस कारण वह तुमसे विवाह का दाम मांगने लगा था। उसने कहला भेजा था कि दस हजार रुपये विवाह से पूर्व उसे मिलने चाहिएं और विवाह करते ही उसे अपनी पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाने का हिब्बानामा दे दें।

'बस, इसी बात ने तुम्हारे पिता के विचार को बदला है। उन्होंने यत्न किया और वकील रमण कुमार जी के पुत्र श्रवण कुमार से बिना किसी प्रकार का लेन-देन किए तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध किया है। रमण कुमार स्वयं एक धनी परिवार का घटक है और अच्छी खासी आमदनी कर रहा है। उसका लड़का भी पिता के छोटे-मोटे मुकद्दमे लेने लगा है। वकील साहब का विचार है कि शीघ्र ही श्रवण एक बहुत बड़ा वकील बन जाएगा।

'तुम्हारे पिताजी ने तुमको इन वकील साहब के घर भेजना उचित समझा है।

'तुम अब संतोष कुमार को भूल जाओ। उसकी बात कभी भी किसी से कहना नहीं। कहने पर पति अप्रसन्न भी हो सकते हैं। कोई भी पति यह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी से किसी दूसरे पुरुष का सम्बन्ध हो।'

'पर मां ! सम्बन्ध तो हुआ है ?'

'कल होटल में क्या खाया था ?'

'चिकन सूप था और ग्रिल्ड चिकन थी।'

'स्वादिष्ट था न ?'

'हां मां ! इसी कारण तो रात जब नींद आयी तो प्रातः

आठ बजे ही जाग खुली थी ।

'परन्तु अब हम पूरी और खीर खा रहे हैं। उसको भूल गयी हो ?'

'भूली तो नहीं । स्मरण तो अब भी है ।'

'परन्तु तुम उसे मांग तो नहीं रहीं ?'

'यह इस कारण कि पूरी खीर भी स्वाद है ।'

'इस कारण रात के खाने को भूलकर हम यह ले रहे हैं ।'

'परन्तु मां ! फिर किसी होटल में नहीं जा सकते क्या ?'

'हां, परन्तु वह इस कारण कि मोहिनी, जिसने पूरी खीर बनायी है वह हमारे होटल में जाने को बुरा नहीं मानती । परन्तु उस कर्म को एक पति किसी दूसरे से पसन्द नहीं करता । वह इसे बुरा मानता है ।'

'तो यह इन नये पति देव को नहीं बताना चाहिए ।'

'मैं निरामिष और आमिष भोजन की बात तो एक उदाहरण के रूप में दे रही हूं । मैं उस कर्म की बात कर रही हूँ जो संतोष उसदिन तुमसे कर गया है । उसका उल्लेख इन वकील साहब से नहीं करना । तुम्हारा पति उस कर्म को दूसरे के साथ पसन्द नहीं करेगा । कोई भी पति अपनी पत्नी से किसी दूसरे व्यक्ति का सम्बन्ध पसन्द नहीं करता । आखिर भोजन की बात तो भूली भी जा सकती है परन्तु इस कर्म की बात कोई भी पति नहीं भूलता । जानती हो क्यों ?'

'क्यों ?'

'यह इस कारण कि इस कर्म से पत्नी के पेट में बच्चा बनता है। और कभी किसी पति को पता चले कि उसकी पत्नी का बच्चा किसी दूसरे पुरुष का है तो वह बच्चे और बच्चे की मां को घर से निकाल देता है । कोई भी पुरुष किसी दूसरे बच्चे की अपने बच्चे की तरह पालना नहीं कर सकता ।'

राधा इन सब बातों पर विचार कर रही थी और मन में संकल्प कर रही थी कि उसे अब शान्ता मौसी के लड़के को भूल जाना चाहिए ।

वह उस दिन स्कूल नहीं गयी । उसकी मां ने उसे कह दिया कि अब उसे मोहिनी के साथ घर का काम सीखना चाहिए ।

वास्तव में सुमति ने अपने पति से कहा था कि विवाह एक

सप्ताह के भीतर हो जाना चाहिए। कहीं संतोष का बीज राधा के पेट में पड़ गया और विवाह से पूर्व पता चला तो गड़बड़ हो जाएगी। इस कारण वह समझती थी कि एक सप्ताह के भीतर ही विवाह हो जाए तो ठीक है।

उसी सायंकाल वकील रमण कुमार के घर पर विवाह की तैयारी होने लगी।

श्रवण कुमार की एक बड़ी बहन थी नंदिनी ! वह भाई की सगाई के कारण मां के घर में आयी हुई थी। अत: मां बेटी पृथक् कमरे में बैठ वस्त्रों तथा भूषणों की सूची बनाने लगीं। और पिता पुत्र बारात में ले जाने के लिए सम्बन्धियों तथा परिचितों की सूची बनाने लगे। इस बात में रात के दस बज गए। सब भोजन के लिए बैठे तो श्रवण की बहन ने बताया, 'मैंने और मां ने विवाह पर वस्त्र आभूषणों की सूची बनायी है। कुछ घर में है और कुछ बाजार से बने बनाये खरीदने पड़ेंगे।'

मां ने कहा है, 'मैं तुम्हारे पिताजी से यही कह रही हूं कि वे भी हमारी तैयारी में सहायता करें।'

इस प्रकार विवाह की तैयारी होने लगी। परन्तु अगले दिन श्रवण कुमार लम्बा मुख लिए हुए घर पहुंचा। उस समय नंदिनी का पति जो सरकारी कार्यालय में सुपरिन्टेन्डैण्ट था, वह भी कार्यालय से लौट वहां आ बैठा था।

नंदिनी और उसका पति तो चाय पर बैठे हुए थे। रमण और उसका लड़का श्रवण कचहरी से आए तो चाय के लिए कोठी के ड्राइंग रूम में बैठते ही पुत्र ने अपनी जेब से एक पत्र निकाल पिता के हाथ में पकड़ा दिया। पिता ने पढ़ा तो उसे लपेटकर जेब में रखते हुए कहा, 'इसको हवालात में बंद करवाना पड़ेगा।'

हवालात की बात नंदिनी के पति ने सुनी तो पूछ लिया, 'पिताजी ! क्या बात है ?'

रमण ने कहा, 'बात यह है कि इसकी मंगेतर का विवाह इस पत्र लिखने वाले से होने वाला था। उसने लड़की के पिता से कहा कि लड़की का कोई भाई नहीं है, इस कारण लड़की का पिता उसे अपना उत्तराधिकारी मान ले। उसे इस प्रयोजन का हिब्बानामा लिख दे तो वह शादी करेगा। इसपर लड़की के

पिता ने श्रवण से विवाह का प्रस्ताव किया है । मैंने बिना किसी लेन-देन के विवाह स्वीकार किया तो सगाई हो गयी । अब यह लड़का लिख रहा है कि इसका श्रवण की मंगेतर से सम्बन्ध बन चुका है । इस कारण श्रवण उसकी झूठन को स्वीकार न करे ।'

'और आप क्या समझते हैं कि दोनों में सम्बन्ध नहीं बना था ?'

'यह मैं कैसे जान सकता हूं ?'

'तो लड़की की परीक्षा करवा लें ।'

'और श्रवण की भी परीक्षा क्यों न करवाई जाए कि इसका सम्बन्ध किसी लड़की से रहा है अथवा नहीं ।'

'परन्तु पिताजी ! दोनों में आप कुछ अन्तर नहीं मानते ?'

'क्या अन्तर है ?'

'अन्तर यह है कि लड़की के गर्भ ठहर सकता है और लड़के के गर्भ नहीं ठहरता ।'

'देखो भूषण !' यह नंदिनी के पति का नाम था. 'गर्भ ठहर गया होगा तो बच्चा पैदा होने तक प्रतीक्षा कर ली जाएगी । असल बात है कि लड़की सुन्दर है, सुशील है, दसवीं श्रेणी में पढ़ती है । पिता लाखों का स्वामी है और यदि श्रवण ने थोड़े से पांव दबा दिये तो दस-बीस लाख अनायास ही मिल सकेगा ।

'इससे किसी गैर के एक लड़के का क्या, दस-बीस का भी पालन हो सकेगा । और सबको देने के उपरान्त भी बहुत कुछ बच जाएगा । मैं समझता हूं कि यह व्यापार घाटे का नहीं है । मुख्य बात यह है कि लड़की कैसी है ?'

अब श्रवण कुमार ने कह दिया, 'यह पत्र कचहरी में मुझे कोई दे गया था । मैंने इसे पढ़ कर आपसे राय करने के लिए जेब में रख लिया था ।'

'क्या राय करना चाहते हो ?'

'यही कि इसकी पिटाई कराऊं अथवा इसको हथकड़ी लगवाऊं ?'

इसपर भूषणदेव बोल उठा, 'यह कौन है ?'

'केन्द्रीय सरकार के गृह विभाग में है । पत्र में तो इसने अपना पता नहीं लिखा, परन्तु मैं इसके विषय में जानता हूं ।'

रमण कुमार ने बताया, 'मुझे लड़की के पिता ने बताया है

कि लड़के ने लड़की से भेंट करते हुए इसका भोग भी किया प्रतीत होता है यद्यपि वह विश्वास से नहीं कहा जा सकता। परन्तु इसने यह कुकर्म इस कारण किया है जिससे उनपर दबाव डाल मुंह मांगा दहेज देने के लिए तैयार कर सके।

'यह सब जानते हुए भी मैंने विवाह स्वीकार किया है और एक सप्ताह में ही विवाह करने का विचार बना लिया है।'

भूषण ने श्रवण को कह दिया कि इसका नाम और कार्यालय लिखकर दे दे तो वह इसका उचित प्रवन्ध कर देगा।

रमण ने कहा, 'सायंकाल मैं सेठजी से मिलने जाऊंगा और सब लिख लाऊंगा।'

भूषण का कहना था, 'लड़की सुन्दर है और बलात्कार करने का मुकद्दमा चल सकता है। परन्तु इससे सेठजी की और फिर आपकी भी बदनामी होगी। मैं इसको इसके कुकृत्य का दूसरा ही दण्ड दिलाना चाहता हूं।'

'क्या ?'

'इसके विषय में अधिकारियों से मिलकर बतलाऊंगा।'

रात को श्रवण की मां ने श्रवण से पूछा, 'लड़की तो दूषित हो गयी है। इससे मैं इस सम्बन्ध पर पुनः विचार करने लगी हूं। तुम क्या समझते हो ?'

'मां ! मैंने विचार कर लिया है। लड़की के पिता ने सब बात बता दी थी और उसने अपना सन्देह भी बता दिया था। इसपर भी मैं माना हूं। यह इस कारण कि सुन्दर लड़की कुछ दोष वाली भी होगी तो रूपहीन तथा निर्धन से अच्छी ही होगी।

'लड़की में एक गुण भी है। वह यह कि पिता की सम्पत्ति की वह ही उत्तराधिकारी है। अधिक-से-अधिक यह होगा कि यदि गर्भ स्थित हो चुका होगा तो यह बच्चा यतीमखाने में पलेगा।'

मां चुप कर गयी। पति ने कुछ विचार कर पत्नी को कह दिया, 'मैं वकालत का काम करता-करता बूढ़ा हो गया हूं। चीफ कोर्ट में भी मुकद्दमे लेता हूं, परन्तु अभी तक एक सवा लाख से अधिक जमा नहीं कर सका। लड़की का पिता बीस लाख से अधिक सम्पत्ति का स्वामी है। यह तो मेरे पोते-परपोते भी लगे रहें तो एकत्रित नहीं कर सकेंगे।'

श्रवण की मां का मुख बंद हो गया। [illegible] की [illegible] सुन उसके मुख में भी पानी आने लगा।

अगले दिन भूषण देव सायंकाल कार्यालय से आया तो उसने बताया, 'मैं संतोष कुमार के विभाग के सैक्रेटरी से मिला हूं। वह कहता था कि वह लड़के को सीधा कर देगा। एक दो दिन में उसका परिणाम पता चल जायेगा।'

शुक्रवार के दिन सेठ जी के मकान के द्वार पर मिठाइयां और मट्ठियां बनाने के लिये लग गये। दो भट्टियां जल रही थीं और लगभग छः सात सौ व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध भी होना था। इस दिन मध्याह्न के समय ही सेठ जी दुकान से घर आ गये थे। ज्यूं ही वे घर में पांव रखने लगे कि शान्ता और उसका लड़का हाथ जोड़ सामने खड़े हो गये। सेठ जी ने कहा, 'संतोष ! तुमको निमंत्रण आज मिल जायेगा। विवाह पर जरूर आना।'

'परन्तु भैया !' शान्ता ने कह दिया, 'यह कुछ और ही कहने आया है।'

'क्या ?'

'पुलिस इसकी खोज करती हुई कार्यालय में गयी थी।'

'क्यों ?'

'यह तो इसे पता नहीं। परन्तु इसके अफसर ने कहा है कि कोई भूषण देव निर्माण विभाग में सुपरिन्टेन्डैण्ट है। उससे क्षमा मांगो तो पुलिस से बच सकते हो।'

'तो मैं क्या करूं ?'

'वह भूषण राधा का ननदोई है।'

'तो फिर…?'

'आप उससे इसकी सिफारिश कर दें तो यह छूट जायेगा।'

'परन्तु शान्ता बहिन ! मैं इसके कार्यालय के काम में हस्त-क्षेप कैसे और क्यों करूं ?'

'इसलिये कि आप इसे अपना लड़का कहते हैं।'

'लड़का तो यह बिना लिखत पढ़त के है। परन्तु यह तो कहता है जब तक लिखकर रजिस्ट्री नहीं हो जाती तब तक यह लड़का है, इसको विश्वास नही होता।'

'यह मूर्ख है भैया ! आप तो बड़े हैं और समझदार हैं। इसे

क्षमा कर दें।'

'मैंने तो क्षमा कर दिया है, परन्तु यह भूषण देव कौन है मैं नहीं जानता। रात को राधा का श्वसुर आयेगा तो उससे पता करूंगा कि कौन है उसका और क्या सम्बन्ध है इस मामले में ?'

संतोष और उसकी मां टुकुर-टुकुर मुख देखते रह गये। संतोष कुमार बोला, 'मैं यदि कार्यालय में गया तो वहां पुलिस बैठी है और मुझे पकड़ कर हवालात में डाल देगी।

'पुलिस के हाथ में वारण्ट तो हैं, परन्तु वह मुझे तब देंगे जब मैं पकड़ा जाऊंगा। मैं पकड़ा गया तो पुलिस मार पीट कर मुझसे कुछ का कुछ लिखा लेगी।'

'संतोष ! मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं परन्तु जब तक यह पता न चले कि मुआमला क्या है तब तक मैं क्या मदद करूं, समझ नहीं सकता।'

'सेठ जी ! यदि आप कष्ट करें तो राधा बहन के श्वसुर के पास चलिये। वहां सब रहस्य खुल जायेगा। मुझे सन्देह है कि किसी प्रकार का झूठा मुकद्दमा किया गया है।'

'परन्तु रमणजी का तुमसे क्या सम्बन्ध है ? वह तो सरकारी नौकर भी नहीं हैं।'

'रमण जी का दामाद ही यह भूषण है। उसका हमारे विभाग के सेक्रेटरी से बहुत मेल जोल है। यदि रमण जी सहायता करने को तैयार हो जायें तो मेरा बचाव हो सकता है।'

'अच्छा, मैं भोजन कर लूं। फिर वकील साहब की कोठी पर तुम्हें ले चलता हूं। तुम स्वयं ही उनसे बात कर लेना। भूख हो तो तुम भी भोजन कर सकते हो ?'

'सेठ जी ! यह तो हमारा चाय पीने का समय है।'

'तो ठीक है। आओ बैठक में बैठ जाओ। तुम्हारे लिये चाय और मिठाई आ जायेगी। मैं भीतर भोजन करके आता हूं।'

सेठ जी संतोष कुमार और उसकी मां को बैठक घर में छोड़ स्वयं भीतर चले गये। उस समय राधा की ननद और सास लड़की को 'सुरमा, सुहाग पिटारी' देने आयी हुई थीं। सेठ जी ने राधा के ननदोई का नाम पूछा। राधा की सास ने बताया, 'भूषण देव !'

सेठ जी ने कहा, 'बाहर संतोष कुमार, जिससे राधा का

विवाह होता-होता रुका था, आया हुआ है और कहता है कि उसके वारण्ट हैं। वह पुलिस को चकमा देकर चला आया है। भूषण देव जी ने वारण्ट निकलवाये हैं। वह मेरी सिफारिश के लिये आया है।'

राधा की सास कृष्णा हंस पड़ी। इस पर सेठ जी प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे। कृष्णा ने बताया, 'रात इस संतोष कुमार की कुछ बात हो रही थी। ठीक-ठीक तो भूषण जी ही बता सकेंगे। वह रात हमारी कोठी पर मिल सकेगा। वहां उनसे ही बात पता चलेगी कि किस प्रकार उसकी उनसे सहायता हो सकती है।'

'तब ठीक है। संतोष इस समय तो कहीं लापता हो जायेगा। मैं रात उसे लेकर कोठी पर आऊंगा।'

'परन्तु भाई साहब!' कृष्णा का कहना था, 'आप उसकी सिफारिश क्यों करेंगें? आपका उसने क्या भला किया है? उसने आपकी लड़की को बदनाम कर दिया है। उसने एक पत्र श्रवण को भी लिखा है कि उसकी होने वाली पत्नी उसकी जूठन है।'

यह सुन सेठ जी का मुख क्रोध से लाल हो गया।

## चार

राधा की ससुराल की स्त्रियां लड़की को शकुन दे जाने लगीं तो सेठ रामलोक ने कह दिया, 'संतोष गरीब घर का लड़का है। अगर श्रवण जी से क्षमा मांग ले तो उसे क्षमा कर देना चाहिये।'

'आप पहले भूषण जी से मिल लें। संतोष को साथ लाने की आवश्यकता नहीं। भूषण जी बहुत ही दयावान हैं। वह आपके कहने पर उसे क्षमा कर देंगे, परन्तु उससे कुछ लिखा पढ़ी कराने की आवश्यकता होगी।'

सेठ जी समझ गये कि संतोष कुटिल व्यक्ति है। इस कारण वह विचार करने लगा कि इसकी सहायता करनी चाहिये अथवा नहीं?

कृष्णा और नंदिनी चली गयीं। सुमति ने कहा, 'विवाह तक तो इसे नहीं छुड़ाना चाहिये। इसे हवालात में रहने देना चाहिये

इसके दिमाग में स्वार्थ का भूत सवार है। वह [illegible] धन के लोभ में स्वयं ही अपना अहित कर रहा है।'

'मैं सब समझ गया हूं। इसने बहुत नालायकी की है कि राधा के साथ में अपने सम्बन्ध का रहस्य उसकी ससुराल वालों को कह कर विवाह में विघ्न डालना चाहता है।

'परन्तु देवी! मैंने यह सब बात पहले ही वकील साहब को बता दी थी। मैं कुछ भी लुकाव छुपाव करना नहीं चाहता था। वकील साहब इस बदमाश की करतूत को जानते हैं। इस कारण इसकी चुगली से विवाह पर तो प्रभाव नहीं हो सकता, परन्तु मैं समझता हूं कि इस पर मुकद्दमा तो ठीक उपाय नहीं है।'

'तो ठीक उपाय क्या है?' सुमति का प्रश्न था।

'ठीक उपाय तो रात को भूषण जी से ही पता करूँगा।'

'तो ऐसा करिए। इसे साथ मत ले जाइये। पहले स्वयं उनसे मिल कर बात कर लीजिये। पीछे इसको उनके सामने ले जाइयेगा।'

इस प्रकार बात निश्चय हो गयी। भोजन के उपरान्त राम लोक ने संतोष से कहा, 'देखो संतोष! राधा की ननद भीतर आयी हुई थी। उसके पति का नाम ही भूषण देव है और वह सरकारी दफ्तर में एक अफसर है। परन्तु वह नहीं जानती कि तुम्हारा दफ्तर में क्या मामला है।

'तुम ऐसा करो कि तीन चार दिन के लिये कहीं लापता हो जाओ और तब तक मैं सब बात पता कर मुकदमा रफा दफा कराने का यत्न करूंगा।'

शान्ता ने पूछा, 'कहां लापता हो जाये?'

'मेरा विचार है कि यह हरिद्वार चला जाये। वहां अपनी धर्मशाला है। वहां इसको सब जानते हैं। इसे वहां चले जाना चाहिये। दफ्तर में डाक्टरी सर्टिफिकेट भेज छुट्टी मांग लेनी चाहिये।'

संतोष कुमार वहां से किसी डाक्टर की खोज में निकल गया। उसकी मां घर को चली गयी। घर पर पुलिस बैठी थी। वह घर पहुंची तो पुलिस वाले ने पूछा, 'संतोष कहां है?'

शान्ता ने कह दिया, 'मैं नहीं जानती। वह प्रातः कार्यालय को गया था।'

पुलिस वाले ने मां की रिपोर्ट लिखी और नीचे हस्ताक्षर करवा चल दिया।

रात के समय सेठ रामलोक रमण कुमार की कोठी पर पहुंचे। नंदिनी ने संतोष की सब बात बता रखी थी। इस कारण सेठ जी को आते देख रमण, उसका लड़का श्रवण और भूषण देव सब हंसने लगे। समीप ही नंदिनी भी बैठी थी। उसकी गोदी में उसका लड़का था। वह भी हंस रही थी।

'तो इस लड़की ने मेरे आने का उद्देश्य बता दिया हुआ है।'

उत्तर भूषण ने दिया, 'सेठ जी ! संतोष ने पत्र भेजा है कि वह आपकी लड़की को बरातियों के सामने बदनाम करेगा और विवाह में विघ्न डालेगा।'

'वह बदमाश है। उसे दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु यह पुलिस में क्या मामला है?'

'वह सब झूठा मामला है। परन्तु पुलिस उसमें अपने ढंग से चलती है और मैं समझता हूं कि वह पुलिस का पेट भर नहीं सकेगा। इस कारण वह पुलिस के आरोप में फंस जायेगा और मामला छः मास तक चलेगा। सम्भव यह प्रतीत होता है कि उसे छः से सात वर्ष का कठोर दण्ड मिलेगा।'

'उसको बचाया नहीं जा सकता क्या?'

'क्यों बचाया जाये?'

'इस कारण कि प्रायश्चित और पश्चात्ताप करने वाले को भगवान् भी क्षमा कर देता है।'

'तो वह प्रायश्चित करेगा?'

'बताइए, क्या प्रायश्चित करे?'

भूषण ने कुछ विचार कर कहा, 'पहली बात तो यह कि वह विवाह में उपस्थित न हो सके, इसके लिए उसे विवाह तक दिल्ली से गुम हो जाना चाहिये। यदि वह शादी में दिखाई दिया तो हवालात में बन्द कर दिया जायेगा।'

'मैं उसे कह दूंगा कि वह वहां न आये।'

'हां और दूसरे, वह सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दे। जो आरोप उस पर लगे हैं उनको झूठा सिद्ध किये बिना वह सरकारी नौकरी में नहीं रह सकेगा। यह वह कर नहीं सकेगा।'

'तो खाये पियेगा कहां से?'

'वह किसी दुकान अथवा प्राइवेट कारोबार में नौकरी कर ले।'

'यह वह कर सकेगा। उसको किसी दुकान पर सेवा-कार्य मिल जायेगा।'

'तीसरी बात यह है कि जिन-जिनको उसने पत्र लिख राधा को बदनाम किया है, उनके सामने नाक से लकीरें निकाल क्षमा याचना करे। यह भी दोनों परिवारों के सामने।'

'कौन से दो परिवार?'

'अपनी मां के सामने और राधा के माता-पिता तथा ससुराल वालों के सामने। वह माने कि उसने पत्र में झूठी बात लिखी थी। ऐसे ही उसे लिखकर भी देना होगा।'

'और कुछ?' रामलोक ने पूछा।

'सेठ जी! यह भी आपकी शिफारिश के कारण है। अन्यथा ठीक प्रायश्चित तो छः सात वर्ष जेल में कठोर दण्ड भोगना है।'

इसके उपरान्त सेठ जी ने मेडन होटल वालों से खाना खिलाने के प्रबन्ध की सूचना दे दी। उन्होंने बताया, 'खाना तैयार तो हलवाई करेंगे, परन्तु सर्विस होटल वाले करेंगे।'

रमण कुमार प्रबन्ध से सन्तुष्ट था। सेठ जी रात के नौ बजे के लगभग अपने घर पहुंचे तो शान्ता वहां बैठी थी। उसने बताया, 'पुलिस उसे पकड़कर ले गई है। जब हम यहां से निकले तो वह डाक्टर के पास चला गया था। घर पर पुलिस बैठी थी। मेरे इस कहने पर कि वह यहां पर नहीं आया, पुलिस मुझसे कुछ लिखाकर चली गयी। परन्तु वह वहीं छुपकर उसकी प्रतीक्षा करती रही। वह आया तो पकड़ लिया गया। मैं उसके साथ पुलिस थाने में गयी थी। थानेदार को अपने कान की बालियां और हाथ की चूड़ियां दे आयी हूं इस पर उसने कहा है कि वह पीटा नहीं जायेगा। पुलिस उसे कल मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित करेगी और पन्द्रह दिन का रिमाण्ड ले लेगी। प्रतिदिन का एक सौ रुपया दिया जाये तो उसकी पिटाई नहीं होगी। जिस दिन रुपया नहीं मिलेगा, उसकी पिटाई होगी और उसके बयान लिये जायेंगे।'

सेठ साहब ने कुछ विचार कर कह दिया, 'तो ऐसा करो, कल प्रातःकाल मेरी चिट्ठी लेकर वकील साहब के पास चली

जाना और उनसे कहना कि संतोष के मुकद्दमे की पैरवी करें और सब खर्चा उन्हें देना।

'देखो शान्ता बहन ! मैं तुम्हें एक हजार रुपये अभी देता हूं। तुम वकील साहब को दे देना और कहना कि पुलिस वाले से तुम्हारा फैसला करा दें।'

'तो वह मेरा मुकद्दमा करेंगे ?'

'हां ! लड़के को कहना कि कचहरी में ही सबके सम्मुख श्रवण कुमार के पांव पकड़ ले। यह उस अपराध के लिए है जो उसने किया है।'

'क्या अपराध किया है ?'

'यह वह स्वयं जानता है। उसे मेरा यह सन्देश दे देना और कहना कि वह श्रवण कुमार से मुआफी मांग ले।'

अगला दिन शनिवार था। पुलिस अभियुक्त को हथकड़ी लगाकर मैजिस्ट्रेट के सम्मुख ले गयी और जब श्रवण कुमार ने अपने वकालत नामे पर उससे हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो वह मां के कहे अनुसार कोर्ट में ही उसके पांव पकड़ कर रोने लगा।

श्रवण कुमार ने कहा, 'संतोष जी ! उठो और देखो कि मैं क्या करता हूं। अगर तुमने यह क्षमा सत्य हृदय से मांगी है तो तुम्हें मैं बचा दूंगा।'

'पुलिस को दो सप्ताह की रिमाण्ड मिली तो चांदनी चौक कोतवाली के थानेदार को शान्ता ने एक लिफाफा दे दिया और कह दिया, 'लड़के की सेहत का ध्यान रखियेगा।'

श्रवण कुमार और राधा का विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। वकील साहब के बराती सब प्रकार से सन्तुष्ट हो गये। सबको भोजन के पश्चात् पांच-पांच रुपये का एक नोट विदाई में दिया गया। इस प्रकार बहुत ही हंसी और प्रसन्नता में उसी रात बारह बजे के लगभग लड़की विदा कर दी गयी।

अगले दिन सोकर उठे तो श्रवण कुमार ने पत्नी से पूछ लिया, 'उस बदमाश के बच्चे से अधिक स्वाद मिला था या यहां अधिक मिला है ?'

'राधा को विदित नहीं था कि उसके पति को संतोष से सम्बन्ध का ज्ञान है। इस कारण वह टुकुर-टुकुर मुख देखती रह

गयी। इस पर श्रवण कुमार ने उसे बात समझायी और कहा, 'उसने धमकी दी थी कि बारात में अपने तुम्हारे साथ सम्बन्ध की घोषणा कर तुम्हें और हमें बदनाम करेगा। इस कारण हमने उसे हवालात में बन्द करवा रखा है।

'वह अब क्षमा याचना करता है और कहता है कि वह तुम्हारा नाम भी कभी नहीं लेगा। तुम्हें अपनी बहन मानेगा और प्रति वर्ष तुमसे रक्षा बन्धन के समय राखी बंधवाया करेगा।

'इन शर्तों के साथ मैं उसे छुड़वाने का यत्न कर रहा हूं। परन्तु तुम्हें तो मैंने अपना प्रश्न का अर्थ समझाने के लिए बताया है। मैं बस यह जानना चाहता हूं कि उसके साथ सम्बन्ध का अधिक आनन्द आता था अथवा अब आया है?'

एक बुद्धिशील लड़की की भांति सब समझ गयी। इस कारण पति का प्रश्न सुन बोली, 'रात सोने से पहले आपकी माता जी ने बादामों वाला दूध पीने को दिया था। फिर यह पलंग, इस पर फूलों का विछौना और उनकी सुगन्ध उस दिन से विलक्षण ही अनुभव हो रहे हैं। उस दिन लगभग एक घंटा भर वह मुझे फुसलाता रहा। जब मैं तैयार हुई तो फिर माँ के लौट आने के भय से दो चार मिनट में ही मुझे छुट्टी देकर इधर-उधर की बातें करने लगा था। मैं प्रतिक्षण डर रही थी कि माता जी अथवा पिताजी आ जायेंगे। इस हड़बड़ी में और उस चोरी किये जाते कर्म में पकड़े जाने के भय में कुछ पता नहीं चला कि स्वाद क्या होता है और बेस्वाद क्या होता है।'

श्रवण कुमार हंस पड़ा और बोला, 'बस, यही समाज में संस्कारों का फल है। वह चोरी थी और हम जो कर रहे थे, इसकी हमें अपने दोनों परिवारों ने स्वीकृति दे रखी है। रात छः सौ से ऊपर बरातियों ने विवाह संस्कार होता देखा था। सबकी स्वीकृति थी कि हम दोनों एक ही कमरे में सो सकते हैं। बस, यही गृहस्थी का रस है।'

'मैं समझ गयी हूं।'

'हां देखो! संतोष की माता जी ने मुझे मेरी फीस पांच सौ रुपये दी है। वह मैंने अपने विवाह में खर्च कर दी है। उसके व्यय करने में मुझे संकोच नहीं हुआ। उसको मैंने अपनी आय में लिखा है और उस पर टैक्स भी दूंगा। इस कारण उस रुपये को

खर्च करते हुए मेरा मन डरता नहीं। परन्तु यदि वह रुपये मैं किसी की जेब से निकालता तो उसका एक-एक पैसा खर्च करते समय मन में भय रहता कि इसको मैं नहीं लिख सकता। इसे मैं किसी के सामने व्यय नहीं कर सकता। यही बात पत्नी की है। तुम समाज के नियम से और सरकारी कानून से मेरी पत्नी हो, और जो कुछ हम कर रहे हैं वह चोरी नहीं। सब जानते हैं और ऐसा करना हमारा हक समझते हैं।'

'जी, मैं समझ गयी हूं।'

'देखो! एक बात और है।'

'क्या?'

'तुम रजस्वला कब हुई थीं?'

'जी! इस मास की दूसरी तारीख को।'

'आज तीस तारीख है। यदि तुम इस मास की पहली तारीख तक रजस्वला न हुई तो सन्देह हो जायेगा कि तुम्हारा गर्भ संतोष का है अथवा मेरा है।

'तब मैं बच्चा होने के बाद जानने का यत्न करूंगा कि बच्चा मेरा है अथवा उसका। यदि समझ में आया कि बच्चा संतोष कुमार का है तो उसे यतीम खाने में भरती करवा दूंगा और मैं अपनी भूमि में अपना बीज डालने का यत्न करूंगा।'

'तो क्या प्रथम भेंट में ही यह हो सकता है।'

'हां, प्रायः हो जाता है। परन्तु हम मनुष्य हैं। भूल करते हैं तो उसका सुधार भी जानते हैं। यही मैं तुमको करने का अवसर देना चाहता हूं।'

संतोष के मुकद्दमे में पुलिस को मिले रिमाण्ड के दिनों में ही श्रवण कुमार राधा को लेकर शिमला चला गया। उन दिनों भारत सरकार वहां चली जाया करती थी। पीछे दिल्ली में कुछ थोड़े से ही लोग रह जाया करते थे। इस कारण शिमले में बहुत चहल-पहल हो रही थी। दस दिन वहां रहकर पति पत्नी लौटे तो राधा मां से मिलने गयी। सुमति के पास शान्ता भी बैठी थी। सुमति ने शान्ता के सामने ही पूछ लिया, 'आओ राधा! सुनाओ कैसे हैं श्रवण कुमार!'

'वह तो विलक्षण ही हैं।'

'होना ही चाहिये। वह तुम्हारे पति जो हैं।' मां ने मुस्कुरा

'परन्तु मां ! एक संतोष भैया हैं। उन्होंने पति बनने का यत्न तो किया ही था।'

'वह भूल कर बैठा था। तुमने भी भूल की थी। उसे तुम भैया कहा करती थीं, और फिर उससे सम्बन्ध बना बैठीं।'

'मां ! भूल तुम्हारी थी। तुम उस समय घर से सबको लेकर चली क्यों गयी थीं ?'

'मैं समझ रही थी कि तुम उसे सन्मार्ग दिखा सकोगी।'

'मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आया था कि क्या हो रहा है ? वह मेरे समीप आकर बैठा और उसने मुझे कुछ कहा। उसके पश्चात् जो कुछ हुआ, वह खेल-खेल में ही हुआ।'

'मां ! इसके उपरान्त तो मैं यह समझी थी कि मेरी सगाई हो गयी है। वह भाई के स्थान मेरा पति बन गया है। परन्तु जब दो दिन उपरान्त पिता जी ने इस नये जीव को तिलक लगाने को कहा तो एक बार तो मेरा दिमाग चक्कर खाने लगा था। पीछे मैं समझ गयी थी कि वह सब पागलपन था।'

शान्ता लड़की को इस प्रकार अपनी मनःस्थिति का दर्शन कराते देख चकित रह गयी। वह अपने विवाह के उपरान्त के दिन को स्मरण कर रही थी। संतोष के पिता से उसका विवाह उस अवस्था में हुआ था जब वह अभी ग्यारह वर्ष की थी। वह विवाह का न तो अर्थ समझती थी, न ही उसमें किसी प्रकार का रस ले सकी थी।

संतोष तो विवाह के छः वर्ष उपरान्त हुआ था। संतोष के जन्म के समय उसे भारी कष्ट हुआ था। संतोष के जन्म के एक वर्ष के भीतर ही संतोष के पिता का देहान्त हो गया था। तब से उसका जीवन घोर संघर्षपूर्ण रहा था।

उन दिनों सेठ रामलोक अभी अविवाहित था और वह उसके पिता की सहायता से जीवनयापन करती थी। परन्तु पिता की सहायता निस्वार्थ नहीं होती थी। वह यदा कदा उसे पत्नी के रूप में प्रयोग करता रहता था और उसकी आर्थिक सहायता करता था।

रामलोक का पिता बैकुण्ठनाथ उसे कहा करता था कि संसार स्वार्थ की धुरी पर घूम रहा है। वह एक गाड़ी के चक्के की

भांति स्वार्थ के अरों से बंधा हुआ चल रहा है।

आज शान्ता अपनी और बैकुण्ठनाथ की मनःस्थिति पर अवलोकन कर रही थी। वह जीवनयापन के लिये सेठ बैकुण्ठनाथ के पास जाती थी और सेठ समझता था कि सहायता तो करनी ही है और इस सहायता का प्रतिकार जो कुछ मिले उसे प्राप्त करना उसका अधिकार है।

बैकुण्ठनाथ का देहान्त हुआ था जब संतोष दस वर्ष का था और सेठ रामलोक के घर राधा का जन्म हो चुका था। रामलोक को शान्ता के अपने पिता के सम्बन्ध का ज्ञान था। इस कारण वह संतोष की माता की सहायता करता रहता था।

रमण कुमार ऐडवोकेट भी ऐसा ही मानता था कि दुनिया स्वार्थ की धुरी पर घूम रही है। यद्यपि उसने कहा नहीं था, इस पर भी उसकी दृष्टि सेठ साहब की सम्पत्ति पर थी।

श्रवण कुमार शिमला से लौटा तो रमण कुमार भ्रमण का विवरण जान पूछने लगा, 'कितना रुपया व्यय कर आये हो?'

'पिताजी! दस दिन में डेढ़ हजार व्यय हो गया है।'

'और तुम्हारे विवाह पर भी तो दस हजार व्यय हुआ है। अब इस गड़ढ़े को भरना भी चाहिये। मैं समझता हूं कि तुमको सायंकाल अपनी पत्नी को लेने के लिये अपनी ससुराल जाना चाहिये और वहां पहुंच अपने श्वसुर के पांव दबाने चाहियें।'

'परन्तु पिताजी! श्वसुर के पांव दबाने की क्या आवश्यकता है? उनके पांव दबाने से अधिक तो उनकी लड़की को प्रसन्न रखने की आवश्यकता है।'

'नहीं वह व्यर्थ है। धन सेठ जी कि तिजोरी में है और लड़की का उस घर पर कुछ भी हक हकूक नहीं है। तुम तो वकालत पढ़े हो। इतना तो तुमको ज्ञान होना ही चाहिये।'

श्रमण कुमार पिता का मुख देखता रह गया। रमण कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा, 'नदी में पानी और वेग रहना चाहिये। पीछे से जल आयेगा नहीं तो नदी सूख जायेगी।'

'पिताजी! यह बात नहीं कि मैं कानून भूल गया हूं। न ही यह बात है कि कहीं धन दिखाई दे तो मैं उसकी लालसा नहीं करता। मैं तो यह कह रहा हूं कि यह उपाय फूहर है। इससे तो मन की हीन अवस्था प्रकट हो जायेगी।'

'तो तुम समझते हो कि तुम्हारा श्वसुर बहुत उच्च मानसिक अवस्था वाला है ?

'देखो, वह तो उस संतोष कुमार के नाम अपनी पूर्ण सम्पत्ति लिख देने के लिये तैयार हो रहा था। मैंने ही उसे सुझाव दिया था कि वह इतना कुछ दिये बिना ही एक अच्छे दामाद को पा सकेगा। बस, मेरे कहते ही उसकी बुद्धि का कांटा बदल गया था। इसी से मैं कहता हूं कि वह अति हीन मन का प्राणी है।'

श्रमण कुमार समझ गया और वह मन में योजना बनाने लगा था कि किस प्रकार राधा के पिता को प्रसन्न कर सकेगा ?

सायंकाल वह सेठ जी के घर पर मदरसा रोड पर जा पहुंचा। सेठ जी अभी दुकान से नहीं आये थे। उसका स्वागत सुमति और राधा ने किया। मोहिनी ठण्डा शर्बत बना ले आयी। राधा भीतर गयी और एक तश्तरी में नमकीन मट्ठी और दाल भुजिया ले आयी।

'सुनाओ बेटा', सुमति ने पूछ लिया, 'शिमले का प्रयास कैसा रहा है ?'

'माताजी ! बहुत अच्छा रहा है। दस दिन वहां कैसे व्यतीत हुए हैं उसका पता ही नहीं चला। अभी वहां रहने का दिल करता था, परन्तु यहां दिल्ली में काम होने से आना पड़ा। वह संतोष कुमार का भी तो मुकद्दमा देखना है।'

'हां उसके विषय में क्या होगा ?'

'हमारे जीजा जी छुड़ाने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने कुछ ऐसा प्रबन्ध किया है कि यदि वह स्वयं सरकारी सेवा कार्य से त्याग पत्र दे दे तो सरकार मुकद्दमा वापस ले लेगी।'

'तब तो वह भूखा मर जायेगा।'

'मैंने तो सुना है कि पहले भी उसकी मां की परवरिश सेठ जी करते थे।

'वह तो हमारा नित्य का काम है। परन्तु एक विश्वविद्यालय का स्नातक मां को मिलने वाली दान-दक्षिणा पर प्रसन्न नहीं रह सकता।'

'तो उसको अपना सेवा-कार्य बदल लेना चाहिये। उसने अपने कार्यालय में बहुत खराबी की है। यदि वह स्वयं त्यागपत्र देकर चला नहीं आयेगा तो मुकद्दमा चलेगा और वह छः वर्ष की

कैद का दण्ड पा जायेगा।

'उसकी मां को चाहिये कि उसे हमारे पिताजी के घर भेज दे उसे मुन्शीगिरी सिखा देंगे और फिर किसी वकील के साथ लगा देगें। वह नौकरी से अधिक धन पैदा करने लगेगा।'

इस समय सेठ जी आ गये और बैठक घर में ही बैठ गये।

'पिताजी! बहुत थक गये प्रतीत होते हैं।' श्रवण ने कह दिया।

सेठ जी ने कहा, 'इसे थकावट नहीं कहते। यह तो दस घंटे गद्दी पर बैठे-बैठे रगों का रक्त जम जाता है। इसी कारण नन्दन से पांव दबवाता हूं तो रक्त चलने लगता है।'

'तो मैं एक सुझाव देता हूं।'

'क्या?'

'आपके दुकान बंद करने के समय मैं आपकी दुकान पर पहुंच जाया करूंगा। वहां से आपको कुदसिया बाग तक घुमाने ले जाया करूंगा। इससे शरीर में फुरती आ जाया करेगी और फिर शरीर की थकावट भी टलने लगेगी।'

'तो उस समय तुमको काम नहीं रहता?'

'वह मेरा क्लब जाने का समय होता है। क्लब जाने से आपकी सेवा करना अधिक हितकारी होगा।'

'क्लब की बात तो सुनी है। वहां क्या होता है?'

'एक दिन मेरे साथ चल कर देखिये। थोड़ा मनोरंजन भी हो जायेगा।'

'वहां कैसे जा सकते हैं?'

'मेरे साथ मेरे मेहमान के रूप में चल सकते हैं। वैसे आप सदस्य भी बन सकते हैं। परन्तु पहले दो चार दिन वहां चल कर देखिये, फिर इच्छा होगी तो सदस्य भी बन सकेंगे।'

'हां यह ठीक है। परन्तु इन्हीं कपड़ों से मैं वहां जा सकूंगा क्या?'

'आपके कपड़े तो ठीक ही हैं। चूड़ीदार पायजामा, अचकन और टोपी। यही तो दिखाई देते हैं। इस पौशाक में अन्य लोग भी आते हैं। हां, वस्त्र धुले हुए होना चाहिये।'

'इसका प्रबन्ध तो हो सकता है। यह नन्दन एक जोड़ा पौशाक लेकर दुकान पर आ जायेगा। मैं वह पहनकर चल सकूंगा।'

'तो कल मैं आपको साथ ले चलने के लिये आऊंगा । वहां तो आप भी घोड़ा गाड़ी में ही चलेंगे । गाड़ी क्लब के बाहर खड़ी रहेगी । दो घंटा वहां लोगों से मिल-जुल कर आ जाया करेंगे ।'

'ठीक है, कल आ जाना । तनिक क्लब की जिन्दगी का भी दर्शन हो जायेगा ।'

श्रवण को पिता ने तो पांव दबाने को कहा था, परन्तु पुत्र पिता से अधिक दूर की बात विचार कर रहा था । इस कारण उसे पिता की राय पसन्द नहीं आयी ।

नन्दन आया और सेठ जी की टांगें दबाने लगा । राधा पति को अपने कमरे में ले गयी । वहां उसने बताया कि संतोष की माताजी आजकल हमारे घर में रहती हैं ?'

'क्यों ?'

'वह कहती हैं कि घर में अकेली रहने से डर लगता है ।'

'मैं कल संतोष को हवालात में मिलने जाऊंगा और यदि वह मेरी बात मान गया तो परसों छूट कर आ जायेगा ।'

'उसे मान जाना चाहिये । हवालात में व्यर्थ जीवन गंवाने से बाहर रहना अधिक ठीक रहेगा ।'

'तुम बताओ ।' श्रवण ने बात बदल दी ।

'मैं प्रसन्न हूं ।'

'मैं यह नहीं पूछ रहा, मैं तुम्हें अपने घर ले चलने आया हूं ।'

'मां कहती थीं, दो चार दिन यहां ही रह जाऊं ।'

'मगर मैं तो रंडवा अनुभव करने लगूंगा ।'

'पर मेरे विवाह से पहले आप क्या थे ?'

'अविवाहित ! वह तो अब हूं नहीं । विवाहित जीवन का आनन्द प्राप्त कर चुका हूं । इससे अब पत्नी विहीन होने से रंडवा अनुभव करूंगा ।'

'तब मैं चलूंगी । मां कहेगी तो कह दूंगी, कल दिन के समय फिर आ जाऊंगी ।'

'हां, यह ठीक है । मैं तुम्हें भी एक दिन क्लब ले चलने का विचार रखता हूं ।'

'मुझे वहां जाते लज्जा लगती है ।'

'लज्जा किस बात की ?'

'मेरी एक सहेली का भाई क्लब जाता है और वह अपने भाई की बात बताया करती है।'

'ओह ! तो तुम सेठ जी से अधिक ज्ञान रखती हो। मैं भी तुम्हें वहां का सदस्य बनाना नहीं चाहता। कभी-कभार वहां का दर्शन कराने ले जाया करूंगा, जिससे तुम समझोगी कि मैं उन लोगों से अच्छा हूं।'

'तब ठीक है।'

अब मोहिनी आयी और इनको कह गयी कि भोजन तैयार है।

श्रवण कुमार और राधा भोजनालय में पहुंचे तो श्रवण कुमार ने देखा कि संतोष की मां वहां पहले ही बैठी थी। सेठ तथा सेठानी तो लड़की और दामाद के साथ ही वहां पहुंचे थे।

शान्ता ने श्रवण कुमार को देख कहा, 'लड़के कीपे शी इस मंगलवार के दिन है।'

'हां मौसी ! मुझे स्मरण है। मैं कल हवालात में उससे मिलने जा रहा हूं और यदि उसने मेरी बात मानी तो मंगल के दिन वह घर आ सकेगा।'

'तो मुझे साथ ले चलो ! मैं उसे मनाने के लिये प्रेरणा दे सकूंगी।'

'नहीं मौसी ! तुम्हारे वहां जाने की आवश्यकता नहीं। थाना औरतों के जाने का स्थान नहीं है।'

सेठ जी ने कहा, 'कचहरी में गर्मी की छुट्टियां कब से होंगी ?'

'अगस्त पन्द्रह से अक्तूबर पहली तक।

'और उन छुट्टियों में दिल्ली में ही रहोगे।'

'पिछले वर्ष मैं मंसूरी गया था। इस बार मैं राधा के साथ कश्मीर जाने का विचार कर रहा हूं।'

'यह ठीक है। जब घूम सकें घूमना चाहिये। मेरा मतलब है बाल बच्चे होने से पहले घूम फिर लेना चाहिये।'

'और आप भी चलिये। आप तो बाल बच्चों से छुट्टी पा गये हैं।'

'मैं इससे उलट समझता हूं। पहले हमारे एक बच्चा राधा थी और अब दो बच्चे हैं राधा और श्रवण !'

'तब तो पिताजी ! आपको बच्चों के साथ ही चलना चाहिये।'

'और दुकान तथा कारोबार ?'

'उससे छुट्टी नहीं हो सकती ?'



'हां तो सकती है, परन्तु भय मोल लेना होगा।'

'क्या ?'

'दुकान के सेवक चोरी भी कर सकते हैं।'

'तो आपका कोई विश्वस्त सेवक नहीं है जो आपसे धोखा न करे ?'

'एक है तो। बहुत पुराना सेवक है। इस पर भी मन डरता है।'

'तो उसकी परीक्षा करनीं चाहिये। उसे चार्ज दे आइये और आकर चार्ज ले लीजिये।'

सेठ रामलोक विचार करने लगा। भोजन परोसा गया था और सब खाने लगे थे। घर दामाद आया था, इस कारण मोहिनी ने मीट का पुलाव बनाया था। साथ में साग, चटनी आचार भी था।

रात जब राधा के साथ श्रवण जाने लगा तो सेठ जी ने अपनी घोड़ा गाड़ी पर उनको जाने के लिये कह दिया। जाने के समय श्रवण ने कहा, 'मैं कल ठीक साढ़े सात बजे दुकान पर आऊंगा और आपको क्लब ले चलूंगा।'

'ठीक है। मैं तैयार रहूंगा।'

रमण और श्रवण की मां कृष्णा पुत्र और वधु के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब ये कोठी पर पहुंचे तो पिता ने पूछ लिया, 'भोजन करोगे अथवा कर आये हो ?'

'खूब पेट भर आये हैं। मटन पुलाव था। इनकी सेविका मोहिनी बहुत बढ़िया खाना बनाती है।'

'तो सेठ जी मांस खा लेते हैं ?'

खूब स्वाद से, राधा की माताजी भी खा रही थीं।'

'तब ठीक है।' रमण कुमार ने कह दिया।

'मैं कल राधा के पिता को क्लब ले चलने का निमंत्रण दे आया हूं।'

'ओह ! बहुत लम्बी-लम्बी छलांगें लगाते हुए चलने लगे हो।'

'तो फिर हम भोजन करें।' मां ने बात बदलकर पूछ लिया।

'हां मां ! अब तो रात के दस बज रहे हैं।'

'अच्छा आराम करो।' पिता ने कह दिया, 'हां यदि रसोई

घर में चलो तो तुम्हें भी कॉफी पीने के लिये मिल जायेगी ।'

'हां यह ठीक है ।' राधा ने कहा, 'हमारा भी खाना हजम हो जायेगा।'

सास श्वसुर, बहू और लड़का रसोई घर में जा पहुंचे ।

सेठ जी के घर में फर्श पर बैठ कर भोजन किया जाता । था यहां मेज कुर्सी लगी थी । राधा शिमला में मेज कुर्सी पर बैठ खाती आयी थी । इसमें उसको सुख अनुभव हुआ था ।

श्रवण का छोटा भाई भी था मोहन ! वह रुड़की में इन्जीनियरिंग पढ़ता था । उसका पत्र आया था । पिता ने बताया, मोहन का पत्र आया था कि वह कालेज के कुछ लड़कों के साथ मंसूरी और फिर मंसूरी से पैदल शिमला जा रहा है ।'

'कितने लड़के जा रहे हैं ?'

'यह तो उसने लिखा नहीं । हां, यह है कि तीन सौ रुपये खर्च 'के लिये भेज दें ।'

'और आप भेज रहे हैं ?'

'हां ! कल मनीआर्डर करा दूंगा ।'

'मैं सेठ जी को कश्मीर की सैर का निमंत्रण दे आया हूं ।'

'यह ठीक है । छुट्टियों में दार्जिलिंग जाने का विचार कर रहा हूं ।'

'वह तो बहुत दूर है ।'

'रेल में ही जाना होगा । पैदल तो जा नहीं रहा ।'

इस प्रकार बातें चलती रहीं ।

अगले दिन श्रवण कुमार हवालात में संतोष कुमार से मिलने गया । वहां उसने कहा, कि 'मुझे भूषण देव जी ने कहा है यदि तुम सरकारी काम से त्याग पत्र दे दो तो गवर्नमेंट तुम्हारे विरुद्ध मुआमला वापिस ले लेगी ।'

संतोष कुमार हंस पड़ा और बोला, 'यह सब बदमाशी भूषण जी की ही है । मेरा दोष उतना ही है जितना हमारे विभाग के सैक्रेटरी का है । वास्तव में मुकद्दमा उस पर होना चाहिये ।'

'तो तुम त्याग-पत्र देना नहीं चाहते ।'

'आप लिख कर ले आइये, मैं हस्ताक्षर कर दूंगा । जबरदस्त का सौ भी सवा सौ होता है ।'

'हां, यह तो है ही । इसी से पहले जबरदस्त बनने का यत्न

करना चाहिये। तब तुम्हारा एक सौ भी सवा सौ हो जायेगा।'

'श्रवण जी! वही करने जा रहा हूं। इस कारण मैं त्याग पत्र देना स्वीकार कर रहा हूं।'

'तब ठीक है। मैं एक त्यागपत्र टाइप कर अपने साथ लाया हूं। यदि तुम उस पर हस्ताक्षर कर दो तो मंगल के दिन सरकार तुम्हारे विरुद्ध मुकद्दमा वापिस ले लेगी।'

संतोष ने कहा, 'लाइये, मैं हस्ताक्षर कर देता हूं।'

श्रवण कुमार ने अपने ब्रीफकेस में से एक टाइप किया कागज निकाला और वह संतोष के सामने कर दिया। संतोष ने पढ़ा। केवल अढ़ाई पंक्तियां ही थीं। लिखा था, 'अपने पारिवारिक कारणों से मैं सरकारी सेवा से मुक्ति की प्रार्थना करता हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे आज ही सेवा कार्य से छुट्टी मिल जाये। बहुत आभारी रहूंगा।'

संतोष ने श्रवण से कलम ली और नीचे हस्ताक्षर कर दिये।

श्रवण कुमार ने वह अर्जी अपने ब्रीफकेस में रखी और संतोष को कहा, 'मुझे पूरी आशा है कि मंगल के दिन तुम्हें अदालत में ही छोड़ दिया जायेगा। उसके उपरान्त क्या करने का विचार है?'

'यह अभी कैसे बता सकता हूं?' संतोष कुमार ने कहा।

उसी दिन सायंकाल ठीक साढ़े सात बजे श्रवण कुमार सेठजी की दुकान पर पहुंच गया। सेठजी धुले वस्त्र पहने उसके साथ जाने को तैयार बैठे थे। दुकान के बाहर सेठ जी की विक्टोरिया गाड़ी खड़ी थी। ससुर दामाद दोनों दुकान से निकले और गाड़ी में बैठे। श्रवण ने कोचवान को कह दिया, 'कश्मीरी गेट से बाहर सिविल लाइन्स को चलना है।

गाड़ी चली तो रामलोक ने कहा, 'रात राधा की मां ने तुम्हारा विचार बताया कि हमें भी कश्मीर सैर को चलना चाहिए। वह कह रही थी कि राधा के विवाह के उपरान्त वह हलकी-फुलकी अनुभव करती है। इस कारण वह भी चाहती है कुछ दुनिया की सैर करनी चाहिए। वह तो कह रही थी कि हमें अब काम-काज बन्द कर सब कुछ नकद बैंक में जमा कराकर अब सेवा मुक्त की भांति विचारना चाहिए।

'अभी मैंने उसकी इस बात को नो स्वीकार नहीं किया। हां,

इतना हमने निश्चय कर लिया है कि हम तुम्हारे साथ कश्मीर जायेंगे। मैंने अपने मुंशी को काम-काज पीछे देखने के लिए कह दिया है। कुछ ही दिनों में सब कारोबार गिनगिनकर उसके हवाले कर दूंगा और फिर चलने के लिए तैयार हो जाऊंगा।

'यह तो बहुत ही अच्छा कर रहे हैं। डेढ़ महीना हमें घूमने में लगेगा। आप भूमण्डल की सर्वश्रेष्ठ वादी के दर्शन कर सकेंगे।'

श्रवण कुमार समझ गया था कि उसके पिता का अनुमान कि उसका ससुर सीधा, सरलचित्त व्यक्ति है सर्वथा ठीक है। यद्यपि पिता ने कहा था कि उसके पांव दबाकर उसको प्रसन्न कर उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बन जाये, परन्तु उसे वह योजना पसंद नहीं आयी थी। उसने पांव दबाने के स्थान सेठ जी के पूर्ण शरीर और मन को सुख पहुंचाने की योजना बना ली।

वे ठीक आठ बजे क्लब में पहुंचे। श्रवण लॉन में लगी मेज कुर्सियों में से एक खाली स्थान पर सेठ जी को ले गया। वहां पहुंचते ही उसका एक परिचित मुकुन्दलाल जो समीप की मेज पर एक स्त्री के पास बैठा था, उठकर उसके पास आकर बोला, 'मिस्टर श्रवण! सुना है विवाह कर लिया है और हमें याद भी नहीं किया?'

श्रवण कुमार ने उसके उल्हाने का उत्तर देने के स्थान सेठजी से उसका परिचय कराने लगा, 'यह देखिए! यह है सेठ रामलोक, मेरी सत्नी के पिताजी! नगर के पांच दस चोटी के धनी व्यक्तियों में से एक हैं। मैं इन्हें क्लब में लाया हूं, जिससे इनका परिचय अपने कुछ मित्रों से करा सकूं।'

'तब ठीक है।' मुकन्द लाल ने कहा, 'तो आइये! उस मेज पर आ जाइये। मैं अन्य मित्रों को भी वहां ही एकत्र कर लेता हूं। यह मिस सरोज भी तो आयी हुई हैं।'

मुकन्द ने इन दोनों को अपनी मेज की ओर ले जाते हुए उस औरत की ओर संकेत कर दिया जो वहाँ बैठी थी।

सेठजी ने देखा कि वह लड़की पाउडर रूज, लिपस्टिक लगाये और आंखों तथा भवों पर स्याही लगाये हुए है। उसने पंजाबी ढंग की पोशाक पहनी हुई थी। सिर पर बहुत बारीक ओढ़नी थी। ओढ़नी इतनी बारीक थी कि उसके बाल एक-एक उसमें से दिखाई दे रहे थे।

सेठ जी उस मेज के समीप पहुंचे तो इसके पूर्व कि मुकन्द

लाल किसी कुर्सी पर बैठे उसने मिस सरोज का परिचय सेठ जी से करा दिया, 'यह हैं मिस सरोज। यह भी इस क्लब की सदस्य हैं। आप अमृतसर के एक धनीमानी परिवार की घटक हैं, परन्तु रहती दिल्ली में हैं। और यह है सेठ रामलोक जी, श्रवण कुमार के श्वसुर। इनकी लड़की की शादी अभी आठ दस दिन हुए हुई है।'

मुकन्द लाल ने सेठ जी को उस कुर्सी पर बैठा दिया जो सरोज के साथ ही रखी थी और अपने तथा श्रवण के लिए दूसरी मेजों से कुर्सियां घसीटकर बैठ गये। मुकन्द लाल ने कुछ अन्तर पर खड़े बेयरे को संकेत से बुलाया और कह दिया, 'सोफ्ट ड्रिंक्स चार के लिए।'

बैयरे ने हाथ में पकड़ी स्लिप आगे कर दी और मुकन्द लाल ने उस पर पैंसिल से लिख दिया और अपने हस्ताक्षर कर दिये।

बैयरा के जाते ही मिस सरोज ने मुस्कुराते हुए बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, 'आप अपनी लड़की को साथ नहीं लाये ?'

सेठ जी ने उत्तर दिया, 'वह अब मिसेज श्रवण कुमार है और इनके ही चार्ज में है।'

'ओह ! मिस्टर श्रवण ! बीवी को कैदखाने में बन्द कर रखा है ?'

'सरोज जी ! वह अभी आपके सम्मुख बच्ची है। इस समय पन्द्रह वर्ष की होगी। इससे उसे आप जैसी अनुभवी औरतों के सामने आते शर्म अनुभव होती है। मैंने भी उसे क्लब में लाने से पूर्व उसे कहा है पहले एक दो बच्चे पैदा करले, पीछे ही इस स्वर्ग के दर्शन कर सकोगी।'

'ओह !' बात सरोज ने ही की, 'कब तक वह प्रसव करने वाली है ?'

'सब यथासमय ही होगा।' श्रवण का उत्तर था।

'और मिस सरोज ने बच्चों के निर्माण के लिए अभी प्रयत्न भी आरम्भ किया मालूम नहीं होता।' रामलोक ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया।

'यह गाय बछड़ियों का काम मुझसे नहीं हो सकता। मेरी मां का देहान्त प्रसव करते-करते हो गया था। इससे भयभीत मैंने

मैंने विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है ।'

सेठ जी को उत्तर देने का अवसर नहीं मिला । उस समय दो जोड़े श्रवणकुमार को देख वहां ही आ गए । वे भी कुर्सियां खिसका समीप बैठ गए । उनमें से एक ने कह दिया, 'क्लब के गेट में दाखिल होते ही मिस सरोज की सुगन्धि आने लगी थी और मैं सूंघता-सूंघता इधर आ पहुंचा हूं ।'

सरोज बोली, 'वैसे तो मैं जब दिल्ली आती हूं, सब नगर वाले मेरी खुशबू से मेरे दर्शन करने आने लगते हैं ।'

इस समय बैरा चार व्यक्तियों के लिए चार गिलास सोफ्ट-ड्रिंक के ट्रे पर रखे हुए लेकर आ गया ।

श्रवण ने बैरे को कहा, 'भाई जल्दी से चार ड्रिंक्स और ले आओ ।'

बैरा लम्बे-लम्बे पग भरता हुआ क्लब की इमारत की ओर चला गया । सरोज ने इन नए आने वालों से पूछ लिया, 'इन मछलियों को कहां से पकड़ लाए हैं ?'

'इनको 'ब्रीडिंग ग्राऊण्ड' से । ये दिल्ली में अभी दो दिन हुए आई हैं और दोनों बहनें हैं । कांगड़ा की रहने वाली हैं ।'

'मैंने यह नहीं पूछा,' सरोज ने कह दिया, 'मेरा सवाल तो इतने मात्र से है कि आपको कहां मिल गई हैं ये ?'

उस व्यक्ति ने मुस्कुरा कर कहा, 'बाजार में चलते-फिरते । हम इनको दो दिन से दिल्ली की सैर करा रहे हैं ।'

उन लड़कियों में से एक ने बैठते हुए मिस सरोज से पूछ लिया, 'आप अपने बच्चों को क्लब में नहीं लातीं ?'

सब हंसने लगे ।

सरोज ने भी हंसते हुए कहा, 'देखो बेटी ! मैं अपने विषय में तब बताऊंगी जब पहले तुम अपना नाम धाम बताओगी ।'

उसी लड़की ने कहा, 'मौसी ! मैं अपने माता पिता की लड़की हूं । यह मेरी जुड़वां बहन है । कुछ दिन हुए हमारे मन में आया कि गांव से बाहर की दुनिया देखनी चाहिए । अतः मां से चोरी-चोरी हम निकल पड़ीं । दिल्ली में हमें आए आज पांच दिन ही हुए हैं । हम फतहपुरी में रायल होटल में ठहरी हुई हैं और दो दिन हुए हमें ये सज्जन जो अपना नाम श्यामबिहारी कहते हैं चांदनी चौक की एक दुकान पर मिल गए । इन्होंने पूछ

लिया, 'आपके माता पिता कहां हैं ।' मैंने बताया, 'अपने गांव में हैं। हम दिल्ली की सैर के लिए आई हैं । परन्तु अभी कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं मिला। इस पर इन्होंने मार्गदर्शक बनना स्वीकार कर लिया और दो दिन से यह और इनके मित्र रामनिवास हमें दिल्ली की सैर करा रहे हैं । आज इस समय हमें इस क्लब में ले आए हैं ।'

सरोज हंस पड़ी और बोली, 'मेरी शुभ कामना तुम्हारे साथ है । तुम दोनों मुझे अपनी मां बना लो तो मेरे घर में दो बच्चे हो गए मानने लगूंगी ।'

सब हंसने लगे। बात श्यामबिहारी ने ही की। उसने पूछा, 'मां बनने के काम की मजदूरी क्या लेंगी ?'

'यह मैं बनने वाली लड़कियों से पृथक् में बात करूंगी। इसका आपके साथ कोई सम्बन्ध नहीं ।'

बैरा चार गिलास ड्रिक्स के और ले आया । अब श्रवणकुमार ने कह दिया, 'देखो, डिनर आठ आदमियों के लिए आधे घण्टे में लग जाना चाहिए ।'

अभी वह शर्बत की भांति पेय लिया ही जा रहा था कि एक लड़की ने कहा, 'यह शर्बत उतना स्वादिष्ट नहीं जितना कल एक होटल में पीने को मिला था ।'

'कैसा मिला था ?' सरोज ने पूछ लिया। उत्तर श्यामबिहारी ने दिया, 'कल रात हम इनको मेडन होटल में ले गए थे ।'

'यह उसमे अधिक तेज है । इसी कारण इन देहाती लड़कियों को मजा नहीं आया।' सरोज ने लड़की को कह दिया, 'यह मीठा कम है, परन्तु इसकी मिठास पन्द्रह मिनट बाद अनुभव करोगी ।'

रामलोक इनकी नोक-झोंक सुनता रहा । वह समझ गया था कि ये दोनों लड़कियां भी बदमाश हैं और सरोज भी यही व्यवसाय करती है ।

छः

अभी सौफ्ट ड्रिंक्स ली ही जा रही थी कि सरोज ने अपने पर्स में से नयी ताश निकालकर सामने रख दी। श्यामबिहारी ने अपने साथ बैठी लड़की से पूछ लिया, 'बहिन खेलोगी ?'

सरोज हंस पड़ी। उसने पूछ लिया, 'तो यह बहिन है ?'

'हां मेरी प्रेमिका दूसरी है। यह उसकी बहिन है। इस कारण मेरी भी बहिन हुई।'

'तब ठीक है। और रामनिवास जी ! यह आपकी प्रेमिका है क्या ?'

'आप तो बहुत ही समझदार हैं। यह दूसरी मेरी बहिन है।'

श्यामबिहारी ने सरोज से कह दिया, 'मैं खेल तो सकता हूं, परन्तु शर्त यह है कि खेल नकद होगा ?'

'हां यह तो है ही। क्यों मुकुन्द जी ! एक-आध बाजी लगा दी जाए ?'

मुकुन्द बिहारी ने कह दिया, 'क्यों सेठ जी ! आपकी भी रुचि है इस काम में ?'

सेठ रामलोक ने कह दिया, 'हमारा तो नित्य का काम है। सट्टा बाजार में हम हर रोज यही करते रहते हैं।'

इस पर मुकुन्द बिहारी ने कह दिया, 'जितना-जितना हम हारने के लिए तैयार हैं वह मेज पर पहले रख दिया जाए। जब जिसकी पूंजी समाप्त हो जाए, वह खेल से बाहर हो जाए।'

'यही ठीक है।' सेठ जी ने जेब से एक सौ रुपए का एक नोट निकाल कर मेज पर रख दिया। श्रवण परेशानी में श्वसुर का मुख देखने लगा तो रामलोक ने एक सौ रुपए का दूसरा नोट निकाल दामाद के सामने भी रख दिया।

सरोज ने अपनी पर्स में से बीस रुपए निकाल अपने सामने रख दिए तो श्यामबिहारी ने और रामनिवास ने पचास-पचास रुपए निकाल अपने-अपने सामने और अपनी प्रेमिकाओं के सामने रख दिये। मुकुन्द बिहारी ने भी पचास रुपए निकाल रख दिए। सरोज ने ताश फेंटी और फिर सब को पत्ता उठाने को कहा। सबने पत्ते उठाए। जिसका पत्ता सबसे भारी था, उसे ताश बांटनी थी। रामलोक का चिड़िए का इक्का निकला। अतः ताश

वह बांटने लगा।



तीन-तीन पत्ते बांटे गए और सब अपने-अपने पत्तों का निरीक्षण करने लगे। सरोज ने कहा, 'दस रुपए।'

सबने स्वीकार किया तो पत्ते मिलाए गए। बाजी में सेठ साहब की जीत हुई। सबने अपने-अपने रुपयों में से दस-दस रुपए सेठ जी के सामने रख दिए। इस प्रकार सेठ जी के सामने एक सौ पचास रुपए हो गए।

अब पुनः सेठ जी ने ताश फेंटी और पत्ते बांट दिए। सब देखकर चकित रह गए कि सेठ जी की ही जीत हुई। सब के सामने रुपए कम होने लगे।

बीच में एक बार श्रवण की जीत भी हुई और फिर सेठ साहब जीतने लगे छः 'डील' में ही सबके रुपये सेठ साहब के सामन आ गए। सेठ जी के सामने चार सौ चालीस रुपए हो गए। श्रवण के सामने साठ रुपए थे और अन्य सब के सामने मेज खाली हो गई थी।

रामलोक ने पूछा, 'तो अब बस अथवा कुछ और चलेगा ?'

सरोज ने ताश डिब्बे में बन्द कर दिए। इस पर रामलोक ने अपने सामने के सब रुपए श्रवण के सामने रखते हुए कहा, 'इसे अभी रखो। खाने का बिल आने दो फिर विचार करेंगे।'

सरोज ने कहा, 'मैं कई दिन से जीत रही थी। इस कारण आज भी जीतने की आशा कर रही थी, परन्तु सेठ जी ने मेरी जीत के मार्ग में लकीर खींच दी है। यदि यह चाहें तो मैं इनको अपने होटल में रात का निमन्त्रण दे सकती हूं।'

'बीबी, नहीं। तुम्हारी भाभी घर पर मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। मैं उसे निराश नहीं कर सकता।'

'क्या आयु होगी उनकी ?' सरोज ने पूछ लिया।

'हैं तो बत्तीस तैंतीस वर्ष की, परन्तु मुझे बहुत प्रिय हैं।'

सब खिलखिलाकर हंसने लगे। सरोज का मुख इस अस्वीकृति के कारण लज्जा से लाल हो गया था।

इस समय बैरा अपने एक साथी के साथ प्लेटें उठाए आ पहुंचा। श्रवणकुमार ने अपने सामने से रुपए उठा जेब में रखते हुए कहा, 'अब ठीक है ?'

'क्या ठीक है ?'

'मैं विचार कर रहा था कि अमृत विवाह के उपलक्ष में

आज का खाना मेरी ओर से होना चाहिए। परन्तु सेठ जी ने अपनी जेब से कर दिया है।'

सरोज हंस पड़ी। और बोली, 'श्रवण जी का भाग्य उदय की ओर है।'

भोजन परोसा गया। ग्रिल्ड चिकन, वैजीटैवल्स और बटर स्लाईसिज थी। इसके साथ व्हिस्की की वोतल और सोडावाटर की बोतल थी।

खाना पीना होने लगा। सेठ रामलोक शराब नहीं ले रहा था। श्रवणकुमार ने शराव ली, परन्तु बहुत कम। सवसे अधिक सरोज ने ली। उस अकेली ने चौथाई वोतल खाली की।

खाने के उपरान्त बिल आया दो सौ बीस। श्रवण ने बीस रुपए टिप के साथ दो सौ चालीस रुपए दिए तो सेठ जी उठ खड़े हुए। श्रवण भी बोला, हम जा रहे हैं।'

मुकुन्दलाल सरोज को, जो इतनी पी गई थी कि टांगों पर खड़ी नहीं हो सकती थी, को आश्रय देकर उठाकर क्लब के एक कमरे की ओर ले गया। अन्य सभी क्लब के बाहर निकल गए।

घोड़ा गाड़ी में बैठ सेठ जी ने श्रवण से कहा, 'देखो बेटा! मेरा मन एक दिन में ही भर गया है। मुझे यह स्थान पसन्द नहीं आया। और देखो! राधा को यहां कभी नहीं लाना।'

श्रवण ने कहा, 'पर पिता जी! आप तो जीतते रहे हैं।'

ये तीन सौ रुपए का जीत कोई जीत है? इतने तो हम नित्य दान-दक्षिणा में दे देते हैं। आज मैंने पांच सौ तोला सोना खरीदा है। खरीदने के उपरान्त भाव आठ आने बढ़ गया और मैं समझता हूं कल तक और बढ़ेगा। तब मैं बेच दूंगा। मैं आशा करता हूं कि उस सौदे में पांच सौ की बचत होगी।

'मैं तो और भी खरीदने वाला था, मगर कोई बेचने वाला ही नहीं मिला। यह सट्टे की आय दुकान की आय से पृथक् है। आज मैंने दुकान पर दस हजार रुपए का माल बेचा है और उसमें दो सौ रुपए का मुझे लाभ हुआ है। दुकान का नित्य का खर्च बीस रुपए का है। शेष मेरी आय ही है।'

क्लब से रमणकुमार की कोठी मदरसा रोड के मार्ग पर ही थी। वहां श्रवण को उतार रामलोक मदरसा रोड पर

जा पहुंचा। सुमति पति की प्रतीक्षा कर रही थी। सेठ जी ने कह दिया, 'भोजन आज तुम्हारे दामाद के साथ ले आया हूं।'

'तो नित्य ऐसा ही होगा?'

'नहीं, मैं श्रवण को कह आया हूं कि मुझे क्लब पसन्द नहीं। उसे भी वहां नहीं जाना चाहिए। वह गंदी नाली है। उसमें डुबकी लेने से तो जन्म-जन्मान्तर तक भी प्रायश्चित करने से शुद्ध नहीं हो सकेगा।'

'तो उसके साथ कश्मीर भी नहीं जाएंगे?'

'मैं देखूंगा कि वह मेरी बात मानकर क्लब जाना छोड़ता है अथवा नहीं और साथ ही कश्मीर में भी कोई क्लब जैसा कार्यक्रम तो नहीं है। यदि उचित समझ आया तभी वहां जाने का कार्यक्रम बना दूंगा। वैसे मैंने अपने मुंशी रामनाथ को तैयार कर लिया है कि वह दुकान का काम पीछे करे।

'जी तो करता है कि तनिक देश में घूमें फिरें, परन्तु यदि देश ही गंदी नाली बना हुआ है तो फिर घर पर रहना ही ठीक होगा।'

मंगल के दिन शान्ती कचहरी में पुत्र का मुकदमा सुनने गई। उसे श्रवणकुमार ने बताया था कि उसके लड़के का नौकरी से त्याग-पत्र स्वीकार हो गया है और सरकार ने उसके विरुद्ध मुकदमा वापिस लेना स्वीकार कर लिया है। अब वह मुकदमा पेश होते ही छोड़ दिया जाएगा। इस कारण शान्ता लड़के को घर लाकर उसके भविष्य के विषय में सेठ जी से विचार करना चाहती थी।

हुआ भी वैसा ही। संतोषकुमार को मेजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित करते ही सरकारी वकील ने एक अर्जी उपस्थित कर दी। उसने कहा, 'सरकार ने संतोषकुमार के विरुद्ध मुकदमा वापिस ले लिया है।'

इस अर्जी के पढ़ते ही मैजिस्ट्रेट ने संतोषकुमार को छोड़ने की आज्ञा दे दी और मुकदमा दाखिल दफ्तर कर दिया।

जब पुलिस ने उसको छोड़ा तो मां ने उसे गले से लगाकर कहा, 'चलो, घर चलकर स्नानादि कर सेठ जी से विचार करेंगे। वे इस समय घर पर आ गए होंगे।'

'मां!' संतोषकुमार ने कहा, 'मैं घर नहीं जाऊंगा।'

'तो कहां जाओगे ?'



'मुझे एक स्वामी जी का पता चला है। वह बहुत बड़े योगी हैं और मनुष्य में ऐसी शक्ति उत्पन्न कर देते हैं कि वह चाहे तो आसमान के सितारे उखाड़कर पृथ्वी पर ला सकता है।'

मां हंस पड़ी। वह समझी कि सोलह-सत्रह दिन तक हवालात में रहते हुए लड़के का दिमाग हिल गया है। अदालत में ही झगड़ा न करने के विचार से उसने कहा, 'ठीक है, उस स्वामी से मिलना चाहिए और उससे आसमान के सितारे जमीन पर लाने की विद्या सीखनी चाहिए। परन्तु मैं तो यह कह रही हूं कि तुम सत्रह दिन हवालात जैसी गंदी जगह में रहे हो। इस कारण घर चलकर स्नानादि से शुद्ध होकर नए वस्त्र पहनो और फिर खा-पीकर उस व्यक्ति से मिलने जाना चाहिए। शुद्ध पवित्र होकर वहां जाओगे तो शीघ्र ही वह तुम्हें कल्याण का मार्ग बता देंगे। और फिर मुझे भी वहां ले चलोगे तो मेरा भी कल्याण हो सकेगा।'

संतोष मान गया कि वह घर चलेगा।

हवालात में एक दिन संतोषकुमार को एक साधु मिला था। संतोष ने उससे पूछा था, 'महात्मा जी ! आप यहां कैसे आ गए हैं ?'

साधु ने कहा, 'पुलिस ने मुझे भूल से पकड़ लिया है। किसी साधु ने किसी लड़की का अपहरण किया होगा। मैं चांदनी चौक में घूम रहा था। लडकी के पिता को संदेह हुआ कि मैं ही वह साधु हूं ! इस कारण मुझे पकड़ पुलिस यहां ले आई है।'

'तो अब क्या करेंगे ?'

'मैं छूटने का उपाय कर रहा हूं। मैं अभी अपने गुरु जी से सम्पर्क बनाऊंगा और जब उनको मेरी अवस्था का ज्ञान होगा, मुझे वह छुड़ा लेंगे।'

'परन्तु उनसे सम्पर्क कैसे बनाएंगे ?'

'हमारे गुरु जी सर्वज्ञ हैं। जब मैं उनका चिंतन करूंगा तो तुरन्त उनका ध्यान मेरी ओर चला जाएगा और उनको मेरी जानकारी हो जाएगी।'

'तो कब उनका चिंतन करेंगे ?' संतोष ने मुस्कुराकर पूछा। वह इसे साधु की गप्प समझ रहा था।

साधु ने कहा, 'गुरु जी समाधि में हैं। मैं उनकी समाधि टूटने

की प्रतीक्षा कर रहा हूं। इसमें एक-आध घण्टा अभी और लगेगा।'

संतोष साधु की बात पर विस्मित रह गया। अभी भी उसको साधु पर विश्वास नहीं आ रहा था। परन्तु उसके विस्मय का पारावार नहीं रहा। जब लगभग एक घण्टे के बाद साधु ने बताया, 'गुरुजी को मेरी अवस्था का ज्ञान हो गया है और उन्होंने मेरे एक गुरु भाई को मुझे छुड़ाने के लिए भेज दिया है। वह अब आने ही वाला है।'

इसके पन्द्रह-बीस मिनट पश्चात् कोतवाली का एक सिपाही आया और साधु से बोला, 'चलिए महाराज ! थानेदार साहब बुला रहे हैं। आपको छोड़ दिया गया है।'

संतोष तो अवाक् रह गया। जब साधु चलने लगा तो संतोष ने उसके पैर पकड़ लिए और कहा, 'महाराज ! मुझे भी अपने गुरुजी का पता बताइए। मैं भी उनका चेला बनूंगा।'

'परन्तु तुम्हारा तो मुकदमा चलने वाला है। तुम कैसे छूटोगे ?'

'महाराज ! मेरे छूटने का प्रबन्ध भी हो रहा है। अगली पेशी पर मैं छूट जाऊंगा।'

'तब ठीक है। कश्मीरी गेट के बाहर जमना पर साधु आश्रम में आ जाना। हमारे गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी हैं। उनसे मिल लेना।'

जब श्रवणकुमार संतोष से त्याग-पत्र पर हस्ताक्षर कराने आया था तो संतोष ने कहा था कि वह छूटने के बाद ही बताएगा कि वह क्या करेगा। इस समय उसके मस्तिष्क में साधु की बातें घूम रही थीं।

हवालात के कुछ दिनों ने उसके दिमाग को हिला-सा दिया था। इस कारण वह वास्तव में साधु बनने की सोचने लगा था परन्तु वह श्रवण को बताना नहीं चाहता था कि उसके मन में क्या है।

मां हवालात से लेकर उसे सेठ जी के घर जा पहुंची। उस समय सेठ जी मध्याह्न का भोजन करने घर आए हुए थे। जब से राधा का विवाह हुआ था, सेठ जी ने अपनी दिन-चर्या बदल दी थी। उन्होंने प्रातः का अल्पाहार हल्का कर दिया था। और

एक बजे के लगभग घर आकर मध्याह्न का भोजन घर पर लेना आरम्भ कर दिया था।

सेठ जी ने संतोषकुमार को मां के साथ आते देखा तो पूछ लिया, 'तो आ गए हो ?'

'जी ! आपकी कृपा का फल भोग रहा हूं।'

'वह तो तुम अपनी करनी का भोग रहे थे। तुमने श्रवण को धमकी दी थी कि तुम विवाह के समय उसकी पत्नी को वदनाम करने वहां पहुंचोगे। इसी धमकी का निवारण करने के लिए उसके बहनोई ने तुम्हें हवालात में भिजवा दिया था।'

'परन्तु सेठ जी !' संतोष कुमार ने कहा, 'मेरे विरुद्ध झूठा मुकद्दमा बना दिया गया था। इस जाल से छूटने का मुझे भारी दाम देना पड़ा है। एक तो मां ने दो सहस्र से ऊपर पुलिस को दिया है। दूसरे, मुझे अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ा है। त्याग-पत्र के मंजूर होने पर ही मुकद्दमा वापिस लिया गया है।'

'यह सब मैं जानता हूं। परन्तु तुमने एक निरीह बालिका को वासनाभिभूत कर उससे दुराचार किया था। यह सब तो उसका फल है। शेष तुम्हारे हवालात में सुख-सुविधा और वहां से छूटने की योजना तो मेरी ही है।

'देखो संतोष ! स्नानादि से अवकाश पाकर भोजन के लिये आ जाओ। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं।'

संतोष उठ कर गुसलखाने में चला गया।

संतोष कुमार ने सेठ जी को नहीं बताया कि उसका भावी कार्यक्रम क्या है। सेठ जी ने भोजन करते समय कहा था, 'भोजन के उपरान्त मेरे साथ दुकान पर चलो तो मैं तुम्हें काम पर लगा दूंगा।

'सेठ जी ! मैं कुछ दिन आराम करना चाहता हूं। मेरा चित अभी स्थिर नहीं। चित स्थिर होते ही जिस काम पर जहां आप कहेंगे जा पहुंचूंगा।'

सेठ जी के पुनः दुकान पर जाने के बाद संतोष ने कहा, 'मां ! मैं एक व्यक्ति से मिलने जा रहा हूं। सायंकाल तक लौट आऊंगा।'

इतना कह संतोष साधु आश्रम पर जा पहुंचा। वहां वह हवालात वाला साधु उसे मिल गया। वह आश्रम के द्वार के पास

ही बैठा हुआ था। संतोष ने साधु को देख कहा, 'ईश्वर का धन्यवाद है कि आप द्वार पर ही मिल गये हैं। मैं विचार कर रहा था कि आपको कैसे ढूंढ़ूंगा। मुझे तो आपका नाम भी ज्ञात नहीं था।'

साधु मुस्कराया और बोला, 'मुझे गुरु जी ने तुम्हारी प्रतीक्षा करने यहां बैठाया हुआ है। उनको विदित था कि तुम उनसे मिलने आ रहे हो। इस कारण मुझे यहां बैठा रखा है।

'चलो गुरु जी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

इस पर संतोष कुमार उस साधु के साथ चल पड़ा। एक कुटिया में श्री ब्रह्मानन्द गिरि बैठे थे। वह संतोष कुमार को देख मुस्कराये और कहा, 'देखो संतोष! तुम में एक बात विशेष जान कर हम तुमसे मिलने की इच्छा कर रहे थे।'

संतोष कुमार ने ब्रह्मानन्द जी के चरण स्पर्श किये और हाथ जोड़ सामने बैठ गया।

ब्रह्मानन्द ने कहा, 'हम रात की गाड़ी से हरिद्वार और फिर वहां से ऋषिकेश जा रहे हैं। यदि तुम्हें कुछ सीखना है तो मां को बताये बिना हमारे साथ चल देना चाहिये।'

'यह नित्यानन्द हमारा सामान लेकर रेल के स्टेशन पर जा रहा है। तुम भी इसके साथ चले जाओ और इसके साथ ही वहां रहो। यह ही तुम्हारा टिकट खरीद लेगा। हम रात के नौ बजे वहां पहुंचेंगे और तुमको अपने साथ ले चलेंगे।

'तुम्हारे पाप तो बहुत हैं। उनसे मुक्त होने का यत्न करो।'

'स्वामी जी!' सन्तोष कुमार ने कहा, 'मैंने अपने विचार से कोई पाप नहीं किया।'

'इसका विचार चल कर करेंगे। अभी इतना बता देता हूं कि हम तुम्हारे अन्दर एक उन्नत आत्मा को देख रहे हैं। वह कीचड़ में गिर जाने के कारण गंदी हो रही है। वह कीचड़ अभी बाहर-बाहर ही है। यह उस आत्मा का स्वभाव नहीं बना, परन्तु इस विषय में पीछे बात करेंगे। अब तुम इसके साथ जा सकते हो।'

यह सब कुछ संतोष कुमार को विचित्र प्रतीत हुआ था। वह तो ब्रह्मानन्द को ढूंढना एक दुस्तर कार्य समझता था और यहां उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी।

आश्रम के द्वार पर किसी सेठ की घोड़ा गाड़ी खड़ी थी।

नित्यानन्द ने एक बड़ा सन्दूक और तीन सूटकेस उसमें रखे और स्वयं संतोष कुमार के साथ गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी में ही संतोष कुमार ने पूछना आरम्भ कर दिया, 'तो स्वामी जी को आपने बताया था कि मैं उनसे मिलने आ रहा हूं ?'

'नहीं, तुम्हारे विषय में मेरी उनसे बात नहीं हुई। मैं तो तुम्हें भूल ही गया था। आज बारह बजे के लगभग स्वामी जी ने मुझे बुलाया और कहा कि मुझे स्टेशन पर जाना होगा और उनका तथा जोशीमठ के शंकराचार्य जी का एक सन्दूक तथा कुछ अन्य बक्से स्टेशन पर ऋषिकेश के लिये बुक कराने होंगे।

'जब वहां मैं सामान बटोर रहा था तो स्वामी जी ने अपनी कुटिया से निकल कहा, 'देखो नित्यानन्द ! इस सामान के साथ एक प्राणी को भी ले जाना होगा। वह भटकता हुआ इधर ही आ रहा है।'

'गुरु जी ने आगे मुझे कहा, 'तुम अभी द्वार पर जाकर उसकी प्रतीक्षा करो। वह आये तो उसको लेकर हमारे पास आना। उसे हम तुम्हारे साथ भेजना चाहते हैं। यदि वह तैयार होगा तो सामान के साथ उसे भी ले जाना।'

'बस इतनी ही बात हुई थी और मैं आश्रम के द्वार पर जा तुम्हारी प्रतीक्षा करने लगा था।'

संतोष कुमार ने कहा, 'स्वामी जी कहते थे कि मैंने बहुत पाप किये हैं। वह मेरे विषय में क्या जानते हैं ?'

'यह तो गुरु जी ही बता सकेंगे। मैं तो तुम्हारे विषय में कुछ नहीं जानता और मैंने उनको कुछ नहीं बताया।'

बात समाप्त हो गयी और संतोष कुमार कुछ न समझता हुआ नित्यानन्द के साथ स्टेशन पर जा पहुंचा।

सेठ जी तो भोजन कर दुकान पर चले गये थे और राधा की मां तथा शान्ता पृथक् कमरे में संतोष के विषय में विचार कर रही थीं।

सायंकाल चाय के समय तक संतोष नहीं लौटा तो वे विचार करने लगीं कि कहां गया होगा। मां ने बताया, 'उसके अपने मित्र । कदाचित् वह अपने छूटने का समाचार देने उनके पास गया है।'

प्रतीक्षा रात के भोजन तक की गयी। जब उस समय तक

भी वह नहीं आया तो मां को चिन्ता लगने लगी। भोजन के समय राधा और श्रवण भी आये हुए थे।

शान्ता ने सब के सामने ही बता दिया, 'संतोष मध्याहन भोजन के उपरान्त का गया हुआ अभी तक नहीं आया।'

श्रवण का कहना था, 'वह आवारा हो रहा है, कहीं मनो-रंजन के लिये चला गया होगा।'

'कहां गया होगा ?' शान्ता का प्रश्न था।

'कहीं खेल तमाशा देखने।'

'वह आज तक रात के समय घर से बाहर कभी नहीं गया।'

श्रवण कुमार चुप रहा।

भोजन के समय कश्मीर जाने का कार्यक्रम बनता रहा। भोजन के उपरान्त श्रवण कुमार ने अपनी सास से कहा, 'माता जी ! राधा तीन चार दिन के लिये यहां आयी है। इस कारण मैं इसे यहां छोड़ कर जा रहा हूं।'

सुमति ने कह दिया, 'ठीक है। विवाह के उपरान्त आज पहली रात है जब यह यहां रह रही है।'

श्रवण कुमार चला गया। राधा वहां ही रह गयी। राधा का अपना कमरा खाली पड़ा था। वह उस में गयी तो मां उसके पीछे-पीछे चली आई। मां ने पूछा, 'पति से लड़कर आयी हो ?'

'नहीं मां ! मैं आज प्रातःकाल रजस्वला हुई हूं और उन्होंने कहा है कि मुझे तीन चार दिन मां के घर चले जाना चाहिये। उन्होंने बताया है कि इन दिनों मुझे उनसे पृथक् रहना चाहिये।'

'तब ठीक है।' सुमति के मन से बड़ा बोझ उतर गया। वह नहीं जानती थी कि संतोष ने जो उससे कर्म किया था, उसका परिणाम क्या होगा। वह सन्तुष्ट अपने सोने के कमरे में चली गयी। वह इस चिन्ता से मुक्त हुई, अति प्रसन्न और हल्की अनु-भव करने लगी थी।

उसने सेठ जी को भी यह समाचार दिया तो वह हंस पड़े और बोले, 'तुम से राधा का इतिहास बदलता जा रहा है।'

राधा के रजस्वला होने के समाचार से रमण कुमार के परिवार में भी संतोष अनुभव किया जा रहा था। श्रवण की माता कृष्णा ने बताया कि एक बात तो ठीक ही हुई है। वह यह कि वह अब शुद्ध हमारे घर का प्राणी निर्माण करेगी, परन्तु, वह

सन्तान उत्पन्न भी कर सकेगी अथवा नहीं, यह संशय बढ़ता हुआ है।

रमण ने कृष्णा से पूछा, 'तुम विवाह के कितने वर्ष उपरान्त गर्भ धारण कर सकी थीं ?'

कृष्णा आंखें मूंद विचार करने लगी। वह बोली, 'श्रमण इस समय तेईस वर्ष का है और मैं इस समय उन्तालीस वर्ष की हूं। इसका अर्थ हुआ कि श्रवण के जन्म के समय मेरी आयु सोलह वर्ष की थी। मेरा विवाह तो रजस्वला होने से पहले ही हुआ था। कदाचित् उस समय मैं ग्यारह वर्ष की थी।'

'अर्थात् विवाह के पांच-छः वर्ष उपरान्त। रजस्वला होने के भी लगभग तीन वर्ष बाद गर्भ स्थित हुआ होगा।'

'और वह अभी साढ़े चौदह वर्ष की है। इस कारण अभी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। जब वह सोलह सत्रह वर्ष की होगी तब इस विषय में विचार करेंगे।'

इस वार्तालाप से कृष्णा को अपना भय निर्मूल प्रतीत हुआ।

यही बात राधा और श्रवण में हुई। चार दिन तक रह कर आयी तो पति ने कहा, 'कुछ लड़कियां पहली बार ही पति की संगत में जाने पर गर्भ धारण कर लेती हैं। तुम उनमें प्रतीत नहीं होतीं।'

'तो यह अच्छी बात है अथवा बुरी ?' राधा का प्रश्न था।

श्रवण विचार करने लगा। वह कह नहीं सका कि यह अच्छी बात है अथवा नहीं। उसने कहा, 'आखिर बच्चा तो होना ही चाहिये।'

'इसमें मैं क्या कह सकती हूं ? जब दो-तीन वर्ष तक नहीं होगा तो लेडी डाक्टर से पता करियेगा।'

श्रवण वचार करने लगा कि यदि यह औरत बांझ सिद्ध हुई तो वह क्या करेगा। यदि इसे छोड़ दूसरा विवाह करेगा तो सेठ जी अपनी सम्पत्ति में से उसे कुछ नहीं देंगे। तब इस विवाह का उद्देश्य ही व्यर्थ हो जायेगा।

श्रवण कुमार ने सेठ जी के घर पर संतोष कुमार के लापता हो जाने का समाचार सुना था। वह उसने पिता को बताया तो उसने कह दिया, 'यह लोभ करने का परिणाम है।'

'परन्तु पिताजी ! वह तो हमारे मन में भी है। तो क्या

हमारा भी कुछ वैसा ही परिणाम होगा ?

रमण कुमार विचार करने लगा कि श्रवण ठीक ही कहता है। उसमें और संतोष कुमार में अन्तर केवल इतना ही है कि जहां संतोष लोभ को होने से रोक नहीं सका था और वह अपने व्यवहार पर नियंत्रण रख सका है। इतना विचार कर उसने पुत्र को कहा, 'हां, लोभ तो मेरे मन में भी था। जब मैंने सेठ जी को संतोष के बदले तुम्हारा नाम बताया था तो उसकी धन सम्पदा पर मेरी दृष्टि थी। अन्तर केवल यह था कि मैं अपने स्वार्थ को लुभायमान शब्दों में लपेट कर प्रस्तुत कर सका था। सेठ जी ने पूछा था कि क्या वे अपनी जायदाद आपके नाम लिख दें ? मैंने कहा था, 'लिखने की आवश्यकता नहीं, मैं एक व्यापारी के कथन पर विश्वास रखता हूं।

'इसका स्पष्ट अर्थ यही था कि मेरी दृष्टि भी उनकी लाखों की सम्पत्ति पर तो है और मैं उन पर विश्वास करता हूं कि वह अपना वचन पालन करेंगे।'

इस पर श्रवण कुमार ने कह दिया, 'तो हम में और संतोष कुमार में अन्तरात्मा के भावों में अन्तर नहीं। केवल उसके प्रकट करने में अन्तर है।'

'हां संसार में यही सर्वश्रेष्ठ गुण है। जो व्यक्ति अपने मन के भावों को छुपाने अथवा उन पर सुनहरी मुलम्मा चढ़ाने में सफल हो जाता है वह भला व्यक्ति समझा जाता है।'

श्रवण की यह जीवन-मीमांसा सुन्दर एवं सुखद तो प्रतीत हुई, पर संतोषजनक नहीं लगी।

संतोष का उसकी मां तथा सेठ जी को कोई समाचार नहीं मिला। शान्ता कुछ दिन तक तो चिन्तित और शोकग्रस्त रही, परन्तु धीरे-धीरे वह सेठ जी के घर में रहती हुई सुख-सुविधा का जीवन व्यतीत करने से संतोष अनुभव करने लगी।

अगस्त की पन्द्रह तारीख को कचहरी बन्द हुई तो श्रवण, राधा, रामलोक और सुमति कश्मीर जाने को तैयार हो गये। जहां सेठ जी ने, दुकान अपने मुंशी के हाथ में दे दी, वहां सुमति ने घर शान्ता के हाथ में दे दिया।

उन दिनों कश्मीर जाने का सुलभ मार्ग पंजाब के गुजरात नगर से मनिहाल दर्रे में से था। एक दूसरा मार्ग भी था। वह

रावलपिण्डी तथा मेरी होकर था। यह मार्ग इतना सुन्दर नहीं था जितना मनिहाल वाला था। अतः इसी मार्ग से जाना स्वीकार किया गया।

छोटे-छोटे पड़ाव करते हुए और मार्ग में डेरों में रहते हुए, गुजरात से पन्द्रह दिन में वे श्रीनगर पहुंचे। वहां पहुंच सब एक हाऊस बोट में ठहर गये।

डेढ़ महीना श्रीनगर तथा कश्मीर के अन्य सुन्दर स्थानों पर भ्रमण करने के उपरान्त ये लोग दिल्ली वापिस आ पहुंचे। आने पर पहली बात जो कृष्णा को पता चली वह राधा के रजस्वला न होने की थी। इस सूचना पर राधा ने देखा कि उसकी सास के मुख पर प्रसन्नता व्याप्त हो गयी है।

सुमति ने कश्मीर भ्रमण में घूमने खाने-पीने की व्यवस्था ऐसी बना रखी थी कि दिल्ली आने पर राधा में छद्री का उत्पात नहीं हुआ। श्रवण की माता को यह स्थिति अत्यन्त ही सुखकारक समझ आयी।

रमण कुमार ने श्रवण को पृथक् में बैठ कर पूछ लिया, 'सैर का आनन्द भी आया है अथवा नहीं?

श्रवण ने कहा, 'पिताजी!' आनन्द एक ऐसी वस्तु है जिसका नापने का पैमाना किसी ने नहीं बनाया। मैं बस इतना ही कह सकता हूं मैं जो कुछ आशा करता था उससे कुछ अधिक ही हुआ है।

'मेरा अनुमान था कि एक प्रौढ़ावस्था दम्पति के सहयात्री होने के कारण बहुत कुछ अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ेगा।

श्रवण ने मुस्कुराते हुए कहा, 'पिताजी! जो कुछ मैं चाहता था, वह प्राप्त हो जाता था। कहीं जाने का कार्यक्रम होता, दिन चढ़ने पर उसके साधन प्रस्तुत हो जाते थे।

'पूर्ण भ्रमण में सेठ जी इस प्रकार कार्य करतेरहे मानो वह कश्मीर में पहले कई बार भ्रमण कर चुके हैं और भ्रमण की सब आवश्यकताओं और सुविधाओं के विषय में वह जानते हैं।

'एक रात हमने निश्चय किया कि अगले दिन गुलमर्ग जाना चाहिये तो प्रातः स्नान करने के समय, हमारे हाऊस बोट के बाहर टट्टू कुली, खेमे और मार्ग में खाने-पीने का सामान तैयार था।

'चार टट्टू, उनके मालिक, दो चार खेमे रहने के लिये और एकखेमा खाना बनाने के लिये, इस प्रकार सारा कुछ देख मैंने सेठ जी से पूछा, 'यह सब आपने प्रबन्ध किया है ?'



'सेठ जी ने कहा, 'हां, देखो कुछ कमी रह गयी है क्या ?'

'मैंने कहा, 'इतना कुछ करने पर क्या कमी रहेगी ?' और हुआ भी वैसा ही। दो दिन वहां जाने में, दो दिन आने में और चार दिन वहां रहने के लिये सब कुछ पहले ही प्रबन्ध किया हुआ था।

'वहां एक अंग्रेजी ढंग का होटल था। उसमें हमने एक समय भोजन भी किया, परन्तु हमारे अपने प्रबन्ध से वह घटिया सिद्ध हुआ।'

'भोजन बनाता कौन था ?'

'वहां पहुंचते ही हाऊस बोट के अतिरिक्त हमने एक पाचक और दो सेवक रख लिये थे। एक सेवक जो कश्मीर भर में यात्रियों की सेवा में घूम फिर चुका था, हमारे पथ प्रदर्शन के लिये था।

'मैं तो विस्मय करता था कि वह कुशल सेवक सेठ जी ने कैसे ढूंढ लिया है ?'

रमण कुमार को उस विवरण से संतोष नहीं हुआ। वह यह समझा कि श्रवण पहली बार ही कश्मीर गया है, इस कारण वह उस सुन्दर और आनन्ददायक स्थान के सब भोगों से अनभिज्ञ होते हुए अपना संतोष प्रकट कर रहा है।

इस पर उसने कहा, 'मैं पांच बार कश्मीर जा चुका हूं और प्रत्येक बार पहले से अधिक आनन्द का अनुभव करता रहा हूं।'

'वह तो पिताजी ! अगली बार जाकर पता चलेगा कि इस बार किस बात की कमी रह गयी थी।'

'और कितना व्यय कर आये हो ?'

'मैं अपने दो हजार रुपये लेकर चला था। और प्रातः जब मैंने अपनी जेब को देखा तो पूरी की पूरी राशि जेब में ही थी।'

'और तुम्हारी पत्नी क्या खर्च कर आयी है ?'

'यह मैंने पूछा नहीं। जाते समय उसके पिता ने उसे दस-दस के नोटों में पांच सौ रुपये दिये थे। मैंने अभी तक पूछा नहीं कि वह उसमें से कुछ खर्च कर आयी है अथवा वहां से कुछ वापस ले

आयी है । चलने से पूर्व वह दो दिन तक सामान खरीदती रही थी । मैंने उससे पूछा नहीं कि कितना व्यय कर आयी है ?'

'और वहां तुमने अपने पास से कुछ व्यय नहीं किया ?'

'सामान तो मैं भी खरीद कर लाया हूं । बहिन के लिये, जीजाजी के लिये, और उनके दोनों छुटकुओं के लिये । परन्तु उन पर मेरा कुछ भी खर्च नहीं हुआ ।'

'तब तो बहुत कष्ट में रहे प्रतीत होते हो ?'

'कैसे ?'

'इसका अभिप्राय यही है कि तुम घूमने फिरने और खाने-पीने में स्वतंत्र नहीं रहे ।'

'मुझे कुछ ऐसा अनुभव नहीं हुआ । घूमने फिरने के लिये हम, मेरा मतलब है, राधा और मैं पृथक् भी जाते थे और सेठ जी के साथ भी । जो कुछ मैं अथवा राधा खर्च करती भी थी, वह रात सोने से पहले हमें मिल जाया करता था ।'

'मैंने एक दिन राधा से कहा भी था कि तुम्हारे पिताजी को हमारा साथ होने से बहुत कुछ खर्च करना पड़ रहा है ।

'इस पर वह कहने लगी, 'वे पिताजी जो हैं ।'

'मेरा कहना था, 'हमें अपना खर्चा स्वयं करना चाहिये ।'

'उसने कह दिया, तो दे दीजिये । मैं तो कह नहीं सकती । मैंने तो जब से होश संभाली है तब से माता-पिता मुझ पर व्यय करते रहे हैं । अब कैसे उनको कह सकती हूं कि मेरा खर्चा ले लें । मैं तो उस सबका पसंगा पर भी नहीं दे सकती ।'

## सात

दिल्ली लौटने पर सुमति ने शान्ता से संतोष के विषय में पूछा तो शान्ता ने कह दिया, 'उसकी कोई सूचना नहीं मिली । बड़ा स्वार्थी जीव निकला है । उसे अपनी मां का भी ध्यान नहीं आया । वह तो यह भी भूल गया कि मैंने किस प्रकार उसका पालन-पोषण किया है ।'

सेठ जी ने कहा, 'मैं समझता हूं कि शान्ता बहन का लड़का साधु हो गया है ।'

[illegible] कुछ देर विचारकर वह पूछने लगी, 'कुछ संकेत मिला है इसका ?'

'संकेत तो नहीं मिला। इस पर भी मेरी गणना इस प्रकार है। उसने आत्म-हत्या नहीं की। यह इसलिए कहता हूं कि स्वार्थी लोग आत्महत्या नहीं किया करते। आत्महत्या करने के लिए भी भारी त्याग करना पड़ता है और स्वार्थी लोग त्याग कभी नहीं कर सकते।

'वह मारा भी नहीं गया। ऐसा मेरा अनुमान है। इस अंग्रेजी राज्य में हत्यायें बहुत कम होती हैं। हत्यारे को हत्या करने के लिए बहुत बड़ा प्रलोभन होना चाहिए। संतोष की हत्या करने का कुछ प्रलोभन नहीं है। अकिंचन की कोई हत्या क्यों करेगा ?

'यदि वह भूखा होता तो इस घर में जहां उसे सदा खाने को मिलता है अवश्य वापस लौट आता। इस कारण मेरा ज्ञान यही बताता है कि वह साधु हो गया है। साधु को हरामखोरी करने का अवसर हिन्दू समाज देता ही है।'

'परन्तु वह दिल्ली में नहीं है। यहां से वह बदनाम होकर भागा है। यहां से भाग वह हरिद्वार गया होगा।'

'तो भैया ! उसे ढूंढना चाहिए।'

'मैं तो इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं करता। हां, तुम चाहो तो उसको ढूंढ़ सकती हो।'

'कैसे ?'

'स्वय हरिद्वार इत्यादि तीर्थों में जाकर। इसमें दुगना लाभ होगा। तीर्थ-यात्रा का पुण्य भी प्राप्त होगा और यदि वह कहीं मिल गया तो उसके प्राप्त करने का संतोष भी मिलेगा। यदि लज्जा के कारण साधु बन छुपा फिरता है तो तुम्हारे साथ चला आयेगा।'

'परन्तु भैया ! मैं तो साधुनी बन नहीं रही। मेरे तो घूमने-फिरने और खाने-पीने का खर्चा होगा।'

'हां, इसमें मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं। देखो, एक सौ रुपए महीने का प्रबन्ध मैं कर दूंगा। यदि कहीं विशेष आने-जाने में खर्च अधिक होगा तो लिखकर मंगवा लेना।'

'तो ऐसा करो। मेरे भेजने का प्रबन्ध कर दो। मैं उस भटकते जीव को सन्मार्ग दिखाना चाहती हूं।'

बात हो गई और शान्ता हरिद्वार जाने की तयारी करने लगी। सुमति ने पति से पूछ लिया, 'आप खुले हाथों धन बांट रहे हैं। क्या यह कष्ट देने लगा है ?'

'नहीं देवी ! यह कष्ट नहीं दे रहा। बांटकर अब सुख अनुभव होने लगा है। देखो हम कश्मीर गए और कश्मीर में छः हजार रुपए खर्च कर आए हैं। यदि अधिक नहीं तो तीन हजार तो लड़की और दामाद पर व्यय हुए हैं। इतना खर्च कर मुझे जो संतोष और सुख प्राप्त हुआ है वह इस खर्च से बहुत अधिक है।

'मैं तो धन का सुख इसी बात में समझत हूं कि उसको अपने ढंग पर व्यय करूं। इसी से कहता हूं कि मुझे यह सुख देने लगा है।'

'परन्तु इस संतोष के लौट आने से क्या सुख प्राप्त होगा ?'

'जब वह लौट आएगा तब जो अनुभव करूंगा, वह तब ही बता सकूंगा। अभी तो उसकी मां के मुख पर संतोष देखकर ही चित्त प्रसन्न हुआ है।'

सुमति सेठ जी के इस कथन का अभिप्राय न समझती हुई भी चुप रही।

यह बात तो सेठ जी को भ्रमण में ही पता चल गई थी कि राधा के गर्भ स्थित हो गया है। इससे वह अपार संतोष अनुभव करते थे। यह भी उसके कश्मीर भ्रमण पर व्यय किए धन से सुख और संतोष का कारण था।

दिन व्यतीत होने लगे थे। शान्ता खर्चा ले हरिद्वार चली गई थी। वहां वह रामलोक धर्मशाला में ही ठहरी थी। यह धर्मशाला सेठ जी के पिता ने बनवाई थी और अपने लड़के के नाम पर चालू की थी।

छः मास व्यतीत हुए तो शान्ता का पत्र आया। उसने लिखा था, मैंने हरिद्वार, ऋषिकेश, रुद्रप्रयाग, विष्णु प्रयाग, जोशीमठ, उत्तरकाशी आदि सब स्थान ढूंढ़ लिए हैं। अभी तक संतोष की खैर-खोज नहीं मिली।'

सेठ जी ने धर्मशाला के मुंशी के पास छः सौ रुपया और भेज दिया, साथ ही शान्ता को लिख भेजा कि सुख की खोज अनन्त है। इस पर भी इसका अन्त न भी मिले तो भी खोज स्वयं सुखकारक होती है। इसलिए यदि खोज से सफल नहीं हुई

तो अभी इसमें लगी रहो।'



राधा को न तो गर्भ स्थिति के दिनों में कुछ विशेष कष्ट हुआ न ही प्रसव के समय में। प्रसव हस्पतालमें कराया गया और वह सर्वथा स्वस्थ तथा पहले से अधिक निखरे सौन्दर्य को लिये हुए हस्पताल से लौटी। श्रवण कुमार और उसकी मां कृष्णा राधा को घर लायीं तो श्रवण कुमार ने कह दिया, 'मां! यह तो ऐसी लग रही है मानो किसी पहाड़ी स्थान की सैर कर आयी है।'

राधा पति की बात सुन मुस्कुरा रही थी।

हस्पताल से कृष्णा बहू को लेकर सिविल लाइन्स वाली कोठी में आयी थी। सायंकाल सेठ जी और राधा की मां लड़की तथा नवजात शिशु को मिलने आये।

उस समय नंदिनी और उसका पति भूषण देव तथा उनके दोनों बच्चे भी आये हुए से। सेठ जी तथा राधा की मां आई तो नंदिनी ने उनको बधाई दे दी। उसने कहा, 'मौसी! बहुत-बहुत बधाई हो। मैं तो पहले ही कह रही थी कि भाभी के लड़का होगा। अब बताइये, इसका नामकरण संस्करण कब करेंगे?'

उत्तर सुमति ने दिया! उसका कहना था, 'राधा के पिता जब से कश्मीर से लौटे हैं तब से कह रहे थे कि लड़का होगा और वह उसका नाम विष्णु स्वरूप रखेंगे। इन्होंने कहा है कि इस लड़के क नाम एक बंगला जहां इसका पिता कहे बनवा देंगे।

सब हंसने लगे। भूषण देव ने पूछ लिया, 'कितना रुपया लगाना चाहते हैं उस बंगले पर?'

अब उत्तर रामलोक ने दिया। उसने कहा, 'कश्मीर से लौट कर इस अज्ञात नामा पर मैंने सोने का व्यापार किया हुआ है। तब से मैं निरंतर सोना के नाम खरीद और बेच रहा हूं। और प्रत्येकसौदे में लाभ हो रहा है। पिछले नौ महीने में इसमें तीन लाख का लाभ हो चुका है। वह सब तो इस पर व्यय करूंगा ही।'

'परन्तु सेठ जी!' भूषण ने कहा, 'यह लाभ युरोप में युद्ध के कारण हुआ है और युद्ध एक दो महीने में समाप्त होने वाला है इस कारण अब इस सट्टे के काम को समेट ले। नहीं तो सब पैदा किया उसी में विलीन हो जायेगा।'

'देखो भाई! यह मेरा अनुमान लिख लो, यह युद्ध आरम्भ

हुआ था सन् १९१४ में और अब है सन् १९१८ और अभी यह दो वर्ष और चलेगा।'

'परन्तु युद्ध लड़ेगा कौन? फ्रांस तो दम तोड़ रहा है। इंगलैण्ड को खजाने का तला दिखाई देने लगा है। भारत से खरीदे माल का भी वे दाम नहीं दे रहे। सेना को भोजन देने के लिये भी उनके पास दाम नहीं रहे। शास्त्रास्त्र की तो बात ही दूसरी है। मैं समझता हूं कि इस दिसम्बर के महीने में युद्ध बंदी का ऐलान हो जायेगा। और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान छोड़ना पड़ेगा।'

'और फिर यहां किस का राज्य होगा?' सेठ जी का प्रश्न था।

'निजाम हैदराबाद का।' 'भूषण का कहना था, 'टर्की के सुलतान ने जर्मनी का पक्ष लिया है और निजाम हैदराबाद उसका सम्बन्धी है। वह उसे हिन्दुस्तान की सल्तनत दिलवा देगा।'

सेठ जी हंस पड़े। हंसते हुए बोले, तब तो मुझे यह काम बंद करना चाहिये। और अपनी सब जायदाद बेच कर सोना ले लेना चाहिये।'

'इससे क्या होगा?'

'उसे भूमि में गाड़ दूंगा और जब निजाम का राज्य चला जायेगा तो निकाल लूंगा और मालामाल हो जाऊंगा।'

भूषण ने कह दिया, 'दिल बहलाने को यह ख्याल अच्छा है। सेठ जी! पहले मुसलमान राज्य आया था, वह सात सौ वर्ष तक रहा था अब वह कयामत तक रहेगा।'

'जो मर जायेगा, कयामत उनके लिये होगी। मैं तो अभी सत्तर-अस्सी वर्ष तक जीने की आशा करता हूं और यह निजाम इतनी देर तक राज्य नहीं कर सकेगा।

'पता है पहले मुसलमानों का राज्य इतने काल तक क्यों रहा था?'

'क्यों रहा था?' भूषण का प्रश्न था।

'यह इस कारण कि हिन्दू भागवत पुराण की कथा कराने लगे थे। भागवत पुराण का अवतार ग्यारह हजार औरतों को रखने वाले माना जाता है। हजारों शाहजहां के बराबर वह अकेला ही था। ऐसे देवता को मानने वाले ही गुलाम रहते हैं। अब ऐसा नहीं है। अब लाखों हिन्दू विशेषतया स्वामी दयानन्द के शिष्य

लाटों तथा पोपों की बात नहीं चलने देंगे और मुसलमान यहां राज्य नहीं कर सकेंगे।'

सब सेठ जी के स्वामी दयानन्द के शिष्यों की बात सुन कर हंस पड़े। सुमति को समझ आया रमण के कि परिवार के लोग उसके पति को मुर्ख समझ रहे हैं। उसे यह बात बहुत बुरी लगी। परन्तु वह कुछ कह नहीं सकी। इस कारण सेठ जी नें ज्यूं ही अपनी बात समाप्त की, उसने राधा से पूछ लिया, 'राधा! अब हमारे घर कब आओगी?'

'मां! अभी चालीस दिन तो मैं यहीं रहूंगी। पीछे तुम लेने आओगी तो आऊंगी। यहां माता जी कहती हैं कि बच्चे के चालीस दिन के होने तक उसे घर से बाहर नहीं ले जा सकते।'

'तो फिर हम चलते हैं। मेरा विचार है कि इसका नाम-करण तो इसके अढ़ाई मास का होने पर करेंगे।'

'परन्तु पिताजी ने तो इसका नाम रख दिया है?' राधा ने कहा।

'वह तो नाम का प्रस्ताव है। नाम तो पण्डित जी वेद-मंत्र बोल कर रखेंगे।' राधा की सास ने कह दिया।

इस पर श्रवण ने सेठ जी को कहा, 'पिताजी! मुझे एक साधु दिखाई दिया है, जिसकी सूरत शक्ल संतोष कुमार की सी थी।'

'सेठ जी के कान खड़े हो गये। उन्होंने पूछ लिया, 'कहाँ देखा था?'

'मैं कचहरी से निकला था कि एक साधु-आश्रम की ओर से आता दिखाई दिया था। मुझे सूरत देखी भाली प्रतीत हुई तो मैं चलता-चलता खड़ा हो। उसे देखने लगा, परन्तु वह चलता गया। उसने मेरी ओर देखा भी नहीं। मुझे ऐसा लग रहा है कि वह संतोष था।'

'अच्छा, फिर देखोगे तो उसकी बांह पकड़ कर रोक लेना और पता करना। यदि वह सत्य अर्थों में साधु बना है तो झूठ नहीं बोलेगा।'

श्रवण कुमार चुप रहा। सेठ और सुमति वहां से चले आये।

मार्ग में सेठ विचार करता रहा कि वह स्वयं साधु आश्रम में जाये और पता करे। उसे पता नहीं था कि संतोष की मां इस समय कहां है। यदि पता होता तो उसे बुला लेता और मां पुत्र

में साक्षात्कार करा देता ।


रात सोते समय सुमति ने कहा, 'मैं कल प्रातःकाल ही साधु आश्रम में जाऊंगी और पता करना चाहूंगी। मुझे भय है कि उस साधू ने श्रवण कुमार को देखा है और जानबूझ कर उसे पहचाना नहीं ।'

अगले दिन आश्रम में जा पहुंची । आश्रम का अध्यक्ष एक साधु विमलानन्द था । सुमति उसे पहिचानती थी। वह स्वामी ब्रह्मानन्द के दिल्ली प्रवचन पर कई बार पहले भी आश्रम में आ चुकी थी ।

सुमति सीधी उसकी कुटिया में चली गई । विमलानन्द वहां बैठा आश्रम के सेवकों से आश्रम का प्रबन्ध कार्य करा रहा था ।

विमलानन्द ने एक स्त्री को कुटिया के द्वार पर खड़े देखा तो पूछ लिया, 'माता जी ! कैसे आयी हैं ?'

'मैं एक युवक साधु को ढूंढ रही हूं । साधु बनने से पूर्व का उसका नाम मुझे ज्ञात है, परन्तु संन्यास आश्रम का नाम ज्ञात नहीं । रूप से पहिचानती हूं ।'

'क्या काम है उससे ?'

'वह मेरी बहन का लड़का है । जब से वह घर से गया है, उसने मां को किसी प्रकार की सूचना नहीं दी और वह बेचारी उसको देश भर के साधु आश्रमों में ढूंढ रही है ।'

'माता जी !' विमलानन्द ने कहा, 'इतने मात्र से तो मैं कुछ बता नहीं सकता । कोई इसी आश्रम में साधु दीक्षित हुआ तो रजिस्टर देख बता सकता हूं । पिछले दस वर्ष में इस आश्रम में किसी ने भी सन्यास की दीक्षा नहीं ली । आप आश्रम द्वार पर बैठ देखा करिए । कहीं वह दिखाई दे जाए तो उसको पकड़ लीजिएगा ।'

सुमति को भी यही उचित प्रतीत हुआ । वह विमलानन्द की कुटिया से लौट आश्रम के फाटक पर आ एक पेड़ के नीचे खड़ी हो गई ।

प्रातः सात बजे की बैठी-बैठी दिन के ग्यारह बज गए । आश्रम के साधु आश्रम में आते-जाते रहे, परन्तु उसे कोई दिखाई नहीं दिया जो संतोष कुमार की रूप रेखा वाला हो ।

ग्यारह बजे वह बैठी-बैठी थक गयी तो घर लौट आयी ।

उन दिनों सेठ जी ने दुकान का बहुत-सा काम अपने मुंशी के हाथ में दे रखा था। स्वयं वह केवल देखभाल किया करते थे। जब से राधा के गर्भ स्थित हुआ था सेठजी कारोबार से अधिक और अधिक उपराम होने लगे थे। उन्होंने दुकान का कारोबार भी सीमित कर दिया था।

सट्टे में, विशेष रूप में सोने की खरीद और बिक्री में वह अभी भी रुचि ले रहे थे। इस व्यापार में, जब से सोने का मूल्य बढ़ने लगा था, वह खरीद और बेचने में लगे हुए थे। युद्ध के कारण सोने का भाव निरन्तर बढ़ रहा था और उनको पर्याप्त लाभ हो रहा था।

पिछले छः मास में उन्होंने इस व्यापार में तीन लाख रुपये से ऊपर लाभ प्राप्त किया था। राधा के लड़का उत्पन्न होते ही सेठजी ने मन की यह बात पत्नी को बता दी थी कि वह इस लाभ के धन मे राधा के लड़के के नाम जायदाद क्रय करेंगे।

यही बात उन्होंने रात रमण कुमार की कोठी पर बतायी थी और इसपर सबने सेठजी की हंसी उड़ाई थी।

समाचार पत्रों से रमण के परिवार वालों की बात ही ठीक प्रतीत होती थी, परन्तु सेठजी की अन्तरात्मा कहती थी कि जर्मनी की जीत नहीं हो सकती। क्यों अंग्रेजों की ही जीत होगी, वह बता नहीं सकते थे।

उन दिनों हिन्दी का एक दैनिक समाचार पत्र वीर अर्जुन निकला करता था। सेठजी वही पढ़ा करते थे। पत्र के सम्पादक इन्द्र विद्यावाचस्पति निष्ठावान देशभक्त थे। इसपर भी वह कांग्रेस के विचारों के नहीं थे। इस अखबार में छपे लेखों से सेठजी यही समझा करते थे कि यद्यपि उस पत्र का सम्पादक विजय अंग्रेजों की चाहता है, परन्तु वह आशंका अंग्रेजों की हार की ही किया करता है।

उस दिन सेठजी के दुकान पर जाने के समय सुमति साधु आश्रम को गयी हुई थी। इस कारण वे अल्पाहार अकेले में ही ले दुकान पर आए थे। मुंशी दुकान का काम काज देख ही रहा था। ग्राहक आ रहे थे और मुँशी उनसे लेखा-जोखा कर रहा था। सेठजी अपने विचारों की उधेड़-बुन में लगे हुए थे।

दोपहर बारह बजे तो सेठजी को घर की याद आ गयी और

वह दुकान से निकल घर को चल पड़े। अपनी घोड़ा-गाड़ी में आ ही रहे थे कि उन्हें सड़क के किनारे एक साधु सड़क पर लाल किले से फतेहपुरी मस्जिद की ओर जाता दिखाई दिया। सेठजी ने गाड़ी खड़ी करवाई और कोचवान को उस साधु की ओर उंगली कर कहा, 'उस साधु के पास जाओ और उसको कहो कि आज मध्याह्न का भोजन हमारे घर पर करे।'

जब तक कोचवान गाड़ी रोक उस साधु के पास पहुंचे, वह भीड़ में विलीन हो गया था। पांच मिनट तक कोचवान साधु को ढूंढ़ता रहा, फिर गाड़ी को लौट आया।

उस साधु को देखकर सेठजी के मन में भी संतोष का विचार उत्पन्न हुआ था। परन्तु उसकी चाल में अन्तर था। इस कारण सेठजी के मन में संशय बना हुआ था। यदि वह साधु कोचवान को मिल जाता और उसके साथ गाड़ी पर आ जाता तो निर्णयात्मक बात हो जाती। वह कभी चांदनी चौक से किसी गली में घुस गया प्रतीत होता था।

## आठ

सेठजी घर पहुंचे तो सुमति भी निराश वहां आ पहुंची। सुमति ने बैठक घर में पहुंचते ही कहा, 'सन्तोष नहीं मिला।'

सेठजी ने बताया, 'श्रवण कुमार ने जिस साधु के विषय में बताया था, वह दिखाई तो दिया है परन्तु वह भीड़ में कहीं विलीन हो गया था, मुझे मिल नहीं सका।'

'मैं सायंकाल फिर जाऊंगी और देखूंगी।'

'मैं समझता हूं कि यह खोज सफल नहीं होगी।'

'परन्तु बहन शान्ता का विचार आता है। उसके विचार से ही मैं उसके लड़के को ढूंढ़ने चल पड़ी थी।'

सेठजी ने कुछ विचार कर कहा, 'जिन दिनों सन्तोष कुमार घर से गया था, स्वामी ब्रह्मानन्द साधु आश्रम में ठहरे हुए थे। इस कारण सम्भव है कि सन्तोष उनके पास ही गया हो। अतः पता करना चाहिए कि स्वामी जी कहां हैं। मुझे कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि वह उन स्वामी जी के मोह जाल में फंसा हुआ

उनके पीछे-पीछे भाग रहा है।'

सुमति को स्मरण हो आया कि जिस दिन सन्तोष मुकद्दमे से मुक्त हुआ था, उसी दिन स्वामी ब्रह्मानन्द दिल्ली से गये थे। सेठजी के इस अनुमान पर सुमति फड़क उठी। उसने कहा, 'मैं अब समझी हूं कि आप क्यों उत्तरोत्तर उन्नति कर रहे हैं। आपके अनुमान भी विधाता के लेख से ही प्रतीत होते हैं।'

'मैं आज सायंकाल जाऊंगी और पता करूंगी कि स्वामी ब्रह्मानन्द जी कहां है। यदि उनका पता चल गया तो सन्तोष का भी पता मिल जाने की आशा है।'

सुमति ने बताया कि जिस दिन सन्तोष छूटा था, उसी दिन प्रातः स्वामी जी ने आश्रमवासियों के सम्मुख उपदेश देते हुए कहा था कि वे रात दिल्ली से बाहर जा रहे हैं। मैं घर आयी थी तो शान्ता बहन कचहरी से सन्तोष को लेकर आयी थी।

'इससे मैं कहती हूं कि आपका यह अनुमान भी ठीक ही प्रतीत होता है। आज स्वामी ब्रह्मानन्द जी का पता करने का यत्न करूंगी।'

भोजन के पश्चात् कुछ विश्राम कर सेठजी जब दुकान पर चले गए तो सुमति भी साधू आश्रम में जा पहुंची। वह आश्रम के अध्यक्ष विमलानन्द से पुनः मिली तो उसने व्यंगात्मक भाव से कह दिया, 'तो माई ! फिर आ गई हो ?'

'हां महाराज !' सुमति ने भी मुस्कुराते हुए कहा, 'अब एक बात पूछने आयी हूं।'

'हां, पूछो ?'

'स्वामी ब्रह्मानन्द जी आजकल कहां हैं ?'

'उनसे क्या काम है ?'

'वे पुनः यहां कब आयेंगे ?'

'संन्यासियों का कुछ ठिकाना नहीं होता। जब भी मन आये, जहां चाहे चल देते हैं। वैसे सुना है कि उनका निवास प्रायः जोशीमठ पर होता है। मगर आजकल वे ऋषिकेश गंगा पार स्वर्गाश्रम और लक्ष्मण झूले के बीच अपना आश्रम बनवा रहे हैं। उनके दो शिष्य आजकल दिल्ली में आए हुए हैं। वे उस आश्रम के लिए धन एकत्रित कर रहे हैं।'

'और वे शिष्य कहां ठहरे हुए हैं ?'

'ठहरे तो यहीं आश्रम में ही हैं, परन्तु दो दिन से धन एकत्रित करने में लगे हुए हैं। दिन भर तो इसी काम में लगे रहे हैं।'

'तो रात को किस समय आ जाते हैं ?'

'कह नहीं सकता।'

'अच्छा महाराज ! तो आप उनसे कहें कि एक स्वामी ब्रह्मानन्द की भक्तिनी भी आश्रम को कुछ दान देना चाहती है। तीस नम्बर मदरसा रोड पर एक सुमति देवी को वह मिलें तो अपनी सामर्थ्यानुसार वह भी कुछ देना चाहेगी।'

विमलानन्द चुप रहा। सुमति अगले दिन पुनः आकर पूछने का संकल्प कर वहां से चली आयी।

रात के समय जब सेठ और सेठानी मिले तो सुमति ने अपनी कार-गुजारी बतायी। सेठजी हंस पड़े और बोले, 'उद्योग धंधे के सचिव का टेलिफोन आया था और वह कह रहे थे कि एक स्वामी ब्रह्मानन्द ऋषिकेश में आश्रम बना रहे हैं। उसके लिए मुझे कुछ देना चाहिए। मैंने दस हजार रुपये देना मंजूर किया है और उनको स्वामी जी के नाम पर एक चैक इस रकम का भेज दिया है।'

इस पर सुमति भी हंसने लगी। सुमति का कहना था, 'मैं समझती हूं कल सन्तोष मिल जाएगा। निश्चय ही स्वामी जी के लिए चन्दा एकत्रित करने आये शिष्यों में एक है।'

'तो ऐसा करो कल ब्रह्म मुहूर्त में ही मेरे साथ वहां चलो और उस भगोड़े को सोये हुए ही पकड़ लें।'

'पर मैं विचार करती हूं कि उसे वापस गृहस्थ में आने की प्रेरणा देना कहां तक ठीक होगी।'

'मेरे मन में भी यही विचार आया है। परन्तु हम उसे वापस गृहस्थ में आने की प्रेरणा नहीं देंगे। हम तो यह यत्न कर रहे हैं कि सन्तोष की मां के चित्त को शान्ति मिले और वह उसको स्वस्थ तथा प्रसन्न देख निश्चिन्त हो अपनी वृद्धावस्था व्यतीत कर सके।

अगले दिन पति-पत्नी सूर्योदय से पहले ही साधु आश्रम में जा पहुंचे। दोनों विमलानन्द की कुटिया को चल दिए।

विमलानन्द स्नान कर अपनी कुटिया में अपनी पूजा पर

बैठने ही वाला था । उसने प्रातःकाल घुसमुसे प्रकाश में सुमति को पहचाना तो चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, 'माता जी ! आपका इस समय आना भी व्यर्थ हुआ है । स्वामी ब्रह्मानन्द के दोनों शिष्य रात आठ बजे यहां आए थे और रात दस बजे की गाड़ी से कलकत्ता चले गए हैं । वे कह रहे थे कि दिल्ली से वह चालीस हजार रुपये एकत्रित कर सके हैं । उनको तीन लाख की आवश्यकता है ।

सेठ और सेठानी भौंचक्क विमलानन्द का मुख देखते रह गए । सेठजी को एक बात सूझी । उन्होंने कहा, 'इन ब्रह्मानन्द जी के शिष्य का नाम क्या है ?'

'किसलिए पूछ रहे हैं ?'

'मैंने भी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के आश्रम के लिए दस हजार रुपये का चैक दिया था । इस विषय में कुछ उनसे बात करनी थी ।'

विमलानन्द ने बताया, 'उनके नाम नित्यानन्द और सर्वदानन्द हैं । परन्तु चैक तो उन्होंने ऋषिकेश भेज दिए होंगे ।'

'तब ठीक है । मैं ऋषिकेश अपने आदमी को भेज दूंगा । स्वामी ब्रह्मानन्द जी का पता क्या है ?'

'वह स्वर्गाश्रम में ठहरे हुए हैं । वहां आजकल वेदान्त की कथा किया करते हैं ।'

'स्वामी जी ! बहुत बहुत धन्यवाद है ।' इतना कह सेठजी और सुमति आश्रम से बाहर की ओर चल पड़े ।

मार्ग में सेठजी ने कहा, 'मेरा मन कहता है कि इन दोनों में एक अवश्य सन्तोष कुमार है । परन्तु अभी उस भगोड़े के दर्शन प्राप्त नहीं हो सकते । न तो शान्ता बहिन को मालूम है कि वह आजकल कहां है, न ही यह निश्चय है कि दोनों शिष्यों में से कोई सन्तोष है ।'

सेठजी ने उसी दिन हरिद्वार अपनी धर्मशाला के मुंशी को पत्र लिख दिया कि शान्ता बहिन वहां आये अथवा उसका पता विदित हो तो सूचित कर दे कि वह दिल्ली चली आये । उनकी खोज का लक्ष्य यहां देखा गया है ।

राधा का बच्चा चालीस दिन का हुआ तो उसके बाबा ने उसका नामकरण संस्कार किया । नवग्रह पूजा की गयी और नाम

 स्वा०-६

रखा गया । इस अवसर पर सेठ रामलाल जी और सुमति भी वहां गए थे । सेठजी ने पांच तोले की एक सोने की चैन बच्चे के गले में डालकर कहा, 'मैं इसके नाम पर आधा एकड़ भूमि पर बनी एक कोठी की खरीद कर रहा हूं । उसकी रजिस्ट्री कल होगी और बच्चे का सरपरस्त श्रवण कुमार होगा । इस कारण श्रवण कुमार को कल कोर्ट में रजिस्ट्री कराने के लिए पहुंच जाना चाहिए ।'

'कितने बजे पहुंचना होगा ?'

'मैं वसीका नवीस के साथ वहां ग्यारह बजे पहुंच जाऊंगा और पन्द्रह-बीस मिनट में ही सब लिखा-पढ़ी हो जाएगी ।'

राधा की सास ने पूछ लिया, 'कितने की मिल रही है ?'

'बीस हजार रुपए । कोठी तो खस्ता हालत में है । भूमि ही ली गई समझिए । उसपर मैं एक नई कोठी बनवा दूंगा । रजिस्ट्री होते ही इमारत का काम आरम्भ करवा दूंगा ।'

श्रवण कुमार इस बात से प्रसन्न था कि अपने बच्चे का सरपरस्त वह ही बन रहा है ।

भूषण देव भी वहां आया हुआ था । उसने कह दिया, 'यह तो आपने ठीक ही किया है कि लड़के की सम्पत्ति का सरपरस्त श्रवण को बना दिया है ।'

सेठ जी का कहना था । 'भूषण जी ! यह तो एक कोठी की ही बात है । श्रवण को तो मैं अपनी पूर्ण सम्पत्ति का स्वामी बनाने वाला हूं । परन्तु वह मेरे मरने के उपरान्त होगा ।'

इस पर भूषण देव ने हंसते हुए कह दिया,' पपन्तु सेठ जी ! आप तो अभी साठ-सत्तर वर्ष तक जियेंगे, तब तक श्रवण प्रतीक्षा कर सकेगा क्या ?'

'प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं । मेरा जो कुछ भी है, इन्हीं के लिये तो है । कश्मीर भ्रमण पर भी सब कुछ मैंने ही किया था । अब लड़के का नामकरण संस्कार का सब खर्च मैं दे रहा हूं । हम समझते हैं कि यह श्रवण मेरी सम्पत्ति में भागीदार तो अभी भी है । अन्तर केवल यह है, उस सम्पत्ति का मैनेजर एक कुशल कारिंदा परमात्मा ने नियत किया हुआ है । वह वेतन तो डबल लेता है परन्तु प्रबन्ध इतना अच्छा कर रहा है कि सम्पत्ति उत्तरोतर उन्नति कर रही है ।'

'परन्तु,' बात भूषण सेठ ने ही चलाई, 'वह कारिन्दा उस सम्पत्ति में से दान-दक्षिणा भी कर रहा है। उसने कुछ दिन हुए दस हजार रुपये ऋषिकेश में किसी आश्रम के लिये दिये हैं।'

'यह तो मैं श्रवण के भावी जन्म की सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर रहा हूं।'

'अगला जन्म किसने देखा है?' भूषण ने मुस्कुराते हुए कहा !

'मुझे तो दिखाई दे रहा है।'

'कहां दिखाई दे रहा है?'

'यह बताने को आज्ञा नहीं। जिसने यह विधान किया हुआ है कि मनुष्य को भावी जन्म का ज्ञान न हो, उसी ने मना कर रखा है कि श्रवण जी के लिये जो कुछ यहां अब किया जा रहा है उसे न बताया जाये।'

'तब वह छलिया, मेरा मतलब है परमात्मा, श्रवण के नाम पर आपकी लिखाई सम्पत्ति अपने किसी अन्य भक्त को भी दे सकता है।'

'उसके घर में इस प्रकार अन्याय नहीं होता।'

'क्या प्रमाण है? अनेकों भूखे नंगे इस संसार में घूमते हैं जिनके पूर्व जन्म का संचित न जाने किन-किन में बांटा जा चुका है। कम-से-कम आपकी यह कोठी विष्णु के लिये है तो श्रवण की इससे क्या? अपने जीवन काल में यह इस कोठी की देखभाल करेगा परन्तु उसके मरने पर विष्णु चाहे तो इसे जूए में भी हार सकता है।'

'कौन कह सकता है कि श्रवण कुमार अपने पुत्र से सब कुछ ब्याज सहित वापस लेने के लिये जूए में जीतने वालो के घर में ही पुत्र नहीं बन जायेगा।'

'देखिये सेठ जी!' रमण ने अब बातों में हस्तक्षेप करते हुए कह दिया, 'हमारे कचहरी में तो सब कुछ प्रत्यक्ष रूप में लिया-दिया जाता है। जब किसी जायदाद का किसी के पक्ष में फैसला किया जाता है तो कानून धाराएं लिख दी जाती हैं कि क्यों वह जायदाद उसको दी जा रही है।'

'पर परमात्मा के घर में तो अंधेर प्रतीत होता है। कोई नहीं जानता कि रामलोक मिट्टी को हाथ लगाता है तो मिट्टी

सोना  कहां जाता है ?

सेठ ने मुस्कुरा कर कहा, 'मैं जानता हूं कि क्यों हो जाती है। वहां आपकी कचहरी से अधिक न्याय होता है। वहां किसी के विरुद्ध झूठे मुकद्दमे नहीं किये जा सकते'।

झूठे मुकद्दमे की बात सुन सब हंसने लगे। एकाएक भूषण ने बताया, 'कुछ दिन हुए दो युवक साधु हमारे सैक्रेटरी के घर आये थे और ऋशिकेश में किसी इमारत के लिये धन मांग रहे थे। मैंने ही सैक्रेटरी को सुझाव दिया था कि सेठ जी को कहा जाये तो वह इसमें अंजुली भर-भर कर दान दे। अतः इनकी दुकान पर टेलीफून किया गया और इन्होंने दस हजार रुपये का चैक भेज दिया था।'

'और आप जानते थे कि उन साधुओं में संतोष कुमार था ?' सेठ जी ने पूछा।

'निश्चय से तो नहीं कह सकता। मुझे संदेह हुआ था। अब मैंने सेठ जी का नाम सैक्रेटरी साहब को कहा तो उनमें से एक जो दूसरे से कम वयस् का था, बोला उठा, 'हां, उनको टेलीफून कर दीजिये, वह अवश्य अच्छी-खासी रकम दे सकेंगे।' इससे मुझे शक होता है कि वह सेठ जी की दयालुता का अनुभव रखता है। मैंने उससे पूछा था, 'महाराज ! सेठ जी के विषय में आप क्या और कैसे जानते हैं ?'

'वह कहने लगा, 'हम बहुत कुछ जानते हैं। यह परमात्मा की कृपा से होता है।'

# द्वितीय परिच्छेद

संतोष कुमार कुछ भी न समझता हुआ परन्तु सम्मोहन में बंधा हुआ नित्यानन्द के साथ विक्टोरिया गाड़ी में बैठा दिल्ली के रेलवे स्टेशन को आ पहुंचा था। नित्यानन्द ने जो कुछ स्वामी ब्रह्मानन्द के विषय में बताया था वह उसके मस्तिष्क में हलचल मचा रहा था। वह उत्सुकता से स्वामी ब्रह्मानन्द जी के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा कर रहा था।

नित्यानन्द ने स्वामी जी के लिये और उनके साथ जाने वाले दो व्यक्तियों के लिये फर्स्ट क्लास का हरिद्वार का टिकट खरीदा। टिकट खरीद कर ये सामान बुक कराने चले गये।

सामान बुक हुआ तो वे दोनों वेटिंग रूप में जा बैठे।

शाम हुई तो नित्यानन्द अपने और संतोष के लिये स्टेशन के बाहर से पूरी साग-भाजी ले आया। दोनों ने पेट भर खाया।

रात के नौ बजे स्वामी जी आठ दस आश्रमवासियों के साथ आये और नित्यानन्द उनको प्लेटफार्म पर खड़ी गाड़ी पर ले गया।

गाड़ी के चलते ही स्वामी ब्रह्मानन्द ने संतोष से बात करनी आरम्भ कर दी। उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें अपने साथ हरिद्वार, ऋषिकेश और फिर वहां से जोशीमठ ले जा रहा हूं। वहां तुम्हारे मन और बुद्धि पर जमी संसार की मिट्टी झाड़ने का यत्न करूंगा। मेरा अनुमान है कि तुम चार-पांच महीने में शुद्ध कुन्दन के समान हो जाओगे।'

'कुछ तपस्या करनी पड़ेगी, परन्तु इस निर्मलता पर तुम अपने को कृत-कृत्य मानने लगोगे। तब अपनी आत्मा को परमात्मा की ओर लगाना होगा, इसमें कुछ वर्ष लगेंगे। तब तुम मेरे समान हो जाओगे। मैं अपने मुक्त किये जाने की प्रतीक्षा कर रहा हूं।'

'स्वामी जी !' आखिर संतोष ने मुख खोला, 'आप मुझे कब से जानते हैं ?'

मैंने तुम्हें वर्तमान शरीर में तो आज ही देखा है। आज मध्याह्न के समय जब नित्यानन्द हमारे साथ जाने वाला सामान बांध रहा था तो मैंने तनिक अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। तब मुझे पता चला कि तुम मुझसे मिलने चले आ रहे हो। मैंने तुम्हारी ओर ध्यान दिया तो तुम्हें पहिचान गया। तुम पूर्वजन्म के देखे भाले हो।

'तब तुम्हारा जन्म पैरिस में एक स्त्री के शरीर में हुआ था। तुम पैरिस में वेश्या-वृत्ति करता थीं। मैं वहां के एक गिरजा-घर के पादरी का छोटा भाई था। उस पादरी के ढीले चरित्र के कारण मैं उसके पास से भागना चाहता था। एक दिन मन में संकल्प करके कि भाई का घर छोड़ दूंगा, मैं घर से निकलने वाला था कि तुम भाई के शयनागार से निकल आयीं। मैं समझ गया कि अन्य अनेकों उस शयनागर में आने-वालियों की भांति तुम भी एक हो। इस कारण जब मैं घर के द्वार की ओर जाने लगा तो तुमने आवाज दे दी। 'ए ! किधर जा रहे हो ?'

'मैंने बताया पैरिस को।'

'हम उस समय रोम के मुख्य गिरजाघर में पादरी के मकान में थे। तुमने कहा, 'तो मैं भी साथ चलूंगी !'

'मैंने बताया, मैं तो पैदल जा रहा हूं।'

'तुम मेरा मुख देखती रह गयीं। रोम पेरिस से डेढ़ सौ मील से अधिक दूर था। तुमने पूछा, 'क्यों ?'

'मेरा उत्तर था, मेरे पास गाड़ी में जाने के लिये भाड़ा नहीं है।'

'वह मेरे पास है।'

'वह तुम्हारे परिश्रम का मूल्य है। मेरा उस पर अधिकार नहीं है।'

'तुमने कहा, 'तो क्या मैं अपने परिश्रम को जहां चाहूं व्यय नहीं कर सकती ?'

'मैं जानता था कि तुम वेश्या-वृत्ति करती हो और उससे पैदा धन तुम्हारे पर्स में है। मैं उस वृत्ति को एक मजदूर की वृत्ति के समान ही समझता था। इस कारण मैं यह नहीं कह सका कि तुम अपने परिश्रम से प्राप्त धन को जहां चाहो व्यय नहीं कर सकतीं। परन्तु प्रश्न तो यह था कि तुम मेरे

लिये क्यों व्यय करोगी ? मैंने तुमको अपने मन का संशय बताया तो तुमने कहा, 'भद्र पुरुष ! इस कारण कि तुम मुझे बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे हो ! सुन्दर वस्तुओं को देखने की लालसा के अधीन ही तुम पर कुछ फ्रैंक व्यय करने की इच्छा करने लगी हूं ।'

'मैंने कह दिया, पर मुझे तो तुम बहुत ही बदसूरत मालूम पड़ रही हो ।' मेरा अभिप्राय था कि तुम्हारा काम बदसूरत था । इस पर तुम्हारा सतर्क उत्तर था, 'पर तुम तो मुझ पर कुछ नहीं व्यय कर रहे । मैं ही व्यय कर रही हूं और मुझे इसके व्यय करने का फल तो मिलेगा ही ।'

'यद्यपि तुम्हारी बात युक्ति-युक्त थी । परन्तु मुझे भय था कि तुम मुझ पर बलात्कार करोगी । इस कारण मैंने कह दिया, 'वह ठीक है परन्तु मैं तुमसे प्रयोग किया जाना पसन्द नहीं करता ।'

"इस पर तुम हंस पड़ीं और बोलीं, 'इसकी न तो मैंने इच्छा व्यक्त की है और न ही मैं दुर्बल और तुम जैसे युवक पर बलात्कार कर सकूंगी । मेरा तुमको साथ ले जाने का प्रयोजन एक सुन्दर युवक के साथ यात्रा करनी ही है ।'

'मैंने मन में विचार किया कि जब तुम इस दिशा में यत्न करोगी और मैं अपने पर नियंत्रण रखूंगा तो तुम क्या कर सकोगी ? इस कारण मैं तैयार हो गया । तुम मकान से निकलीं और मेरे साथ द्वार पर खड़ी एक भाड़े की गाड़ी के पास जा खड़ी हुईं । तुम्हारे कहने पर मैं गाड़ी में बैठ गया । तीन दिन लगे पेरिस पहुंचने में और तीन दिन तक हम मार्ग में सराओं में ठहरते रहे । प्रायः एक ही कमरे में रहते थे । पहली रात तो तुमने मेरे बिस्तर पर आने का यत्न किया, परन्तु तुमने मुझे सर्वथा शान्त और नियंत्रित अवस्था में देखा तो लज्जित हो अपने बिस्तर पर ही सोयीं । उसके उपरान्त दो रातों में तुमने यत्न नहीं किया । तुम कदाचित् समझ रही थीं मैं सर्वथा प्रंयुत्वहीन हूं । परन्तु जब मैंने अपने भाई का घर छोड़ पेरिस जाने का कारण बताया तो तुम चकित मेरे मुख पर देखने लगीं । मैंने बताया था कि मैं वहां अपनी प्रेमिका से विवाह करने जा रहा हूं ।'

'इस पर तुमने पूछा था, 'विवाह क्यों नहीं करोगे ? तुम तो विवाह के योग्य हो ही नहीं ?'

'मैं हंस पड़ा और बोला, 'तुम्हारा अनुभव मिथ्या है। यथार्थ बात यह है कि तुम इतनी बदसूरत हो कि तुमसे संबन्ध बनाने की इच्छा तो दूर रही, तुमसे मेरी अरुचि ही उत्पन्न हुई है।'

'इस पर तुम्हारा प्रश्न था, 'तो तुम्हारी मंगेतर बहुत सुन्दर है ?'

'तुम चाहो तो उसे स्वयं देख सकती हो। मैं सीधा उसी के घर जा रहा हूं।'

एकाएक स्वामी जी ने संतोष के पूर्व जन्म की बात बदल कर कह दिया, 'अच्छा देखो, रात के साढ़े दस बज रहे हैं। अब सो जाओ। मैं तो प्रातः तीन बजे ही उठता हूं। इस कारण पांच घंटे सोने के लिए हैं। तुम जब तक चाहो सो सकते हो। परन्तु मुझे और नित्यानन्द को सोना चाहिए। हमें प्रातः साढ़े तीन बजे उठना है।'

उस डिब्बे में चार सोने के बर्थ थे। संतोष स्वामी जी की कहानी पर विस्मय करता हुआ ऊपर की बर्थ पर चढ़ कर लेट गया।

संतोष कुमार की नींद खुली, अब गाड़ी हरिद्वार स्टेशन पर पहुंची। उस समय स्वामी ब्रह्मानन्द और नित्यानन्द गाडी से निकलने के लिए तैयार थे। कुली और पांडे डिब्बे को घेरे खड़े थे।

पांडे सन्यासियों को गाड़ी से निकलते देख पीछे हट गए परन्तु नित्यानन्द की नींद खुली और वह अपने 'बर्थ' से नीचे उतर ब्रह्मानन्द जी के चरण स्पर्श कर डिब्बे से बाहर निकल प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया।

पंडों ने समझा कि यह कोई गृहस्थी है। उसका सामान उतारा जा रहा है और सन्यासी तो इसके साथ हैं। एक पंडे ने साहस पकड़ संतोष के पास आकर पूछा, 'सेठ जी। कहां से आना हुआ है ?'

'नरकधाम से।' संतोष के मुख से निकल गया। उसे हवालात की याद आयी थी। फिर एकाएक पांडे के प्रश्न का अभिप्राय समझ उसने कह दिया, 'भाई। मैं सेठ नहीं हूं। मैं तो इन स्वामी जी के पांव दबाने वाला सेवक हूं।'

वह पण्डा संतोष की बात पर विश्वास न करता हुआ उसका

मुख देखता रह गया । स्वामी जी निकले और नित्यानंद को कह



कि सामान ले आओ, हम चलते हैं । संतोष को साथ ले स्टेशन से बाहर की ओर चल पड़े ।

स्टेशन में तांगे में सवार हो स्वामी जी भीमगोडा के समीप गंगा के किनारे बने साधु आश्रम पर जा पहुंचे । वहां के अध्यक्ष ने स्वामी जी को देखा तो चरण स्पर्श कर हाथ जोड़ स्वास्थ्य इत्यादि के विषय में पूछने लगे ।

स्वामी जी ने कहा, 'सब ठीक है । नित्यानंद सामान लेकर आ रहा है । सामान भीतर रखवा देना ।' इतना कह स्वामी जी संतोष को लेकर अपने कमरे में चले गये ।

उस दिन मध्याहृन के भोजन के उपरान्त स्वामी जी गंगातट पर बैठे थे । संतोष उनके समीप बैठा तो स्वामी जी बोले, 'तो तुम्हारे उस जन्म की कथा सुनाता हूं जिस जन्म में तुम एक सुन्दर स्त्री थीं ।

'पर स्वामी जी ।' संतोष कुमार ने पूछ लिया,'इसका प्रमाण क्या है ?'

'प्रमाण तुम आज से छः सात मास उपरान्त पूछना तो बताऊंगा । इस समय तो यह वृतान्त इस कारण बता रहा हूं कि तुमको भविष्य कैसे निर्माण करना है, इसका पता चल जाए ।'

'जब हम पैरिस पहुंचे तो तुमने कहा कि तुम मुझे मेरी प्रेमिका के घर पहुंचा देती हो ।

'मैंने मुस्कराते हुए पूछा, 'तुम उसके दर्शन करना चाहती हो ?'

'हां, तुम्हारा उत्तर था, 'मुझे उससे ईर्ष्या होने लगी है ।'

'देखो संतोष ! ीवन से असंतोष और भविष्य को जानने की उत्सुकता जीवात्मा की प्रगति के लक्षण हैं । तुम्हारी यह जानने की अभिलाषा है कि मैं दूर बैठे व्यक्ति से बात कर सकता हूं और उसके मन की बात कैसे जान सकता हूं । इसका अभिप्राय है कि तुममें उन्नति करने के लक्षण हैं । मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं । जानते हो क्यों ?

'यह इस कारण कि तुम ने 'रोम' से पेरिस तक मुझे गाड़ी में पहुंचाया था और फिर उसके अनन्तर तुम मेरे साथ बहुत काल तक रहती रही थीं ।

'तुम मेरे साथ ही मेरी प्रेमिका के घर पर पहुंचीं । मैंने द्वार पर लगी घंटी की डोरी खैंची तो मकान में एक लड़की भागती हुई आई और द्वार खोल, मुझे देख लपक कर मुझ से गले मिलने लगी और फिर मेरे गालों को चूमने लगी ।

'वह मेरी मंगेतर थी । प्रातःकाल की उषा की भांति खिलती हुई वह आकर मिली थी । जब मिल चुकी तो उसका ध्यान तुम्हारी ओर गया । तुम अभी तक गाड़ी में बैठी हमारी ओर देख रही थीं । मैंने ऐना, यह मेरी मंगेतर का नाम था, को बताया, 'यह भगिनी मुझे 'रोम' से यहां तक अपनी गाड़ी में लायी हैं ।

'इस पर ऐना गाड़ी की ओर गयी और तुम से बोली, 'आइये भीतर लंच तैयार है ।'

'और भीतर कौन है ?' तुम्हारा प्रश्न था ।

'मेरे भाई, भाभी और मां है । हम इनकी अभी छः सात दिन बाद आने की आशा करते थे । इन्होंने बताया है कि इनको आप अपनी गाड़ी में ही जल्दी ले आयी हैं । आइए, मां और भाभी आपका धन्यवाद करेंगी ।'

'तुम गाड़ी से उतरीं और हमारे साथ भीतर मकान में डाइनिंग रूम में जा पहुंची । ऐना ने उनको तुम्हारा वही परिचय करा दिया जितना मैंने दिया था । इस पर ऐना की मां उठी और तुमको दोनों बांहों से पकड़ अपने पास की कुर्सी पर ले जा कर बैठा लिया । वह कुर्सी ऐना ने खाली की थी । ऐना दो और कुर्सियां एक कमरे में उठा लायी और हम बैठ गए । ऐना की भाभी उठी और अलमारी से प्लेट निकाल हमारे सामने खाने के सामान की 'डिशिज' रख कर बोली, 'आप ये लीजिए, मैं आपके पीने के लिए ड्रिंक्स ला रही हूं ।'

इस प्रकार केवल उतने परिचय पर संतोष कर, जितना मैंने तुम्हारा दिया था, सब लंच लेते रहे और इधर-उधर की बातें होती रहीं । भोजन समाप्त हुआ तो तुम उठ खड़ी हुईं और ऐना तथा उसकी मां का धन्यवाद कर जाने लगीं तो तुमने मुझसे पूछा 'अब आप से कब और कहां भेंट हो सकेगी ?'

'मैंने बताया, 'मैं एक माह तक पैरिस में रहूंगा । इस काल में मेरा विवाह होगा । उस दिन मैं आपको गिरजाघर में आमं-

त्रि[illegible] परन्तु आपका पता तो मुझे मालूम होना चाहिये ।

'हां ।' तुमने ऐना से कागज मांगा । वह मिला तो अपना पता लिखकर मुझे दे तुम चली गयीं ।

'देखो संतोष । उसके उपरान्त तुम मुझसे नित्य मिलते रहे थे । मेरे विवाह पर भी तुम आए थे । और पीछे मैं वहां से इटली रोम के लिए जाने लगा तो तुम हमारे साथ रोम को चल पड़ीं ।

'उस शरीर में मैं अस्सी वर्ष की वयस तक जीवित रहा था । रोम, नेपल्स और वियाना में हम रहे थे । तुम मेरी और ऐना की बहिन के रूप में हमारे साथ रही थीं ।

'मैं तुमसे पहले उस शरीर को छोड़ कर हिन्दुस्तान में उत्पन्न हुआ था । तुम मेरे पिता के घर में मुझसे तीन वर्ष उपरान्त आयीं । पिता जी का नाम विश्वनाथ रानाडे था । इस बार एक लड़के के शरीर में तुम्हारा जन्म हुआ था । हम एक-दूसरे को पहिचानते नहीं थे । परन्तु जब मैं दस वर्ष का हुआ तो मुझे अपने पूर्व जन्म की बात स्मरण आने लगी । मुझे यह स्मृति आयी जब मेरे पिता जी ने मुझे योग की क्रियायें सिखानी आरम्भ कीं । जैसे प्रातः शीत ऋतु में कोहरा छाया होता है और ज्यों-ज्यों सूर्य ऊपर उठता जाता है वह कोहरा छिन्न-भिन्न होकर आस पास की वस्तुएं दिखाई देने लगती हैं, इसी प्रकार धीरे-धीरे मुझे रोम, पेरिस, वीनस वियाना, नेपल्स इत्यादि स्मरण आने लगे । उस जन्म में तुम्हारा एक लड़की होना और बहिन बनकर हमारे साथ रहना स्पष्ट दिखाई देने लगा । यहां तक कि तुमसे पहली भेंट भी ऐसे स्मरण आ गयी जैसे दूर अंधकार में कोई चमकदार वस्तु दिखाई देती है ।

'इस जन्म में मैं वकील बना था, परन्तु विवाह से पूर्व ही मैं सन्यासी हो गया । पहले मन से और पीछे शरीर से भी । तब हमारे पिता का निधन हो चुका था और मां मेरे विवाह का प्रबंध कर रही थीं । मैंने मां से कहा था कि मैं विवाह करना नहीं चाहता परन्तु वह मेरे विवाह की हठ करने लगीं । इस पर मैंने घर से भाग जाने का विचार किया । मैंने तुम्हें अपने पास बैठा कर पूर्व जन्म की बात बतायी और फिर मैं तुम्हारे बिना ही घर से चला आया । मैं नेपाल में पहुंचा और वहाँ साधुओं की एक

मण्डली के अध्यक्ष स्वामी पूर्णानन्द से योग की क्रियाएं सीखता रहा। तब मुझे दूर स्थित व्यक्ति से सम्पर्क बना उससे बात करने का ढंग आ गया। मैंने तुमसे सम्पर्क बनाया और तुम मुझे पुनः गृहस्थ में आ जाने की प्रेरणा देते अनुभव हुए थे।

'मैं हिमालय की ऊंचाइयों को छोड़ पूना पहुंचा तो मां मुझे एक साधु के रूप में देख मेरे पांव पकड़ मुझे पुनः गृहस्थ में आने के लिए कहने लगीं। मैं इतना मान गया कि मैं पूना में ही रहूंगा और समय-समय पर उससे मिलता रहूंगा।

'मैंने अपने कुछ भक्तों की सहायता से वहां से बाहर जंगल में एक आश्रम बनाया और स्वयं वहां का अध्यक्ष बन रहने लगा मैं वहां तब तक रहा जब तक माता जी जीवित रहीं। उस समय तक तुम्हारी कई संतान हो चुकी थीं। यद्यपि मैं तुम्हें अपने पूर्व जन्म में स्त्री के शरीर में होने का विश्वास नहीं दिला सका, परन्तु तुम यह अनुभव करते थे कि तुम मुझसे विशेष लगाव रखते हो।

'पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण और मेरी संगत के कारण पूना में तुम्हारा जीवन एक सात्विक पुरुष का सा रहा था। मेरे पूना में रहते-रहते ही तुम्हारा देहावसान हो गया और तुम्हारा उत्तराधिकारी तुम्हारा बड़ा लड़का रामेश्वर रानाडे परिवार का स्वामी बन गया।

'मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे पूना के जन्म और अब दिल्ली के जन्म के बीच में एक अन्य जन्म भी हुआ है। मैं उसके विषय में कुछ नहीं जानता। मैंने तुम्हें उन दिनों देखा नहीं था।

तुमसे इस जन्म में तो मेरा कल ही साक्षात्कार हुआ था। तुम्हें देखते ही रोम की मेरी और पूना के रानाडे की याद आ गयी। और इस समय मैं तुम्हें यह सब ऐसे सुना रहा हूं जैसे कोई अपने बाल्यकाल की बात किसी मित्र को बता रहा हो।

'देखो संतोष। ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रांस में हुए, तुम्हारे जन्म में भी तुम्हारी आत्मा तत्कालीन सामान्य व्यक्तियों से अधिक उन्नत था। यही कारण है कि मेरे किंचित मात्र के संकेत से तुम मेरे साथ अपना हीन जीवन छोड़ चल पड़ी थीं। जीवन-भर हम इकट्ठे रहे और मैंने तुम्हारे सात्विक जीवन को देखा और तुमसे

अपनी बहिन की भांति आदर और स्नेह करता रहा था।


पूना में मास्टर रानाडे के शरीर में तुम्हारी आत्मा तो उन्नत थी परन्तु तत्कालीन पूना की शिक्षा के कारण तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं आया। इस पर भी तुम मेरे साथ आदर और निस्पृहता का व्यवहार करते थे।

इसी श्रेष्ठ व्यवहार और विचार के कारण तुम मनुष्य का भोग करते रहे हो। पिछले जीवन में तुम्हारी आत्मा ने कुछ लाभ नहीं उठाया। कदाचित् वह कुछ हीन ही हुआ है। इसी कारण तुम विधवा मां के पुत्र और दूसरों की दान-दक्षिणा पर पलते रह हो। मैं अब देखता हूं कि तुम एक बहिन समान लड़की को फुसलाकर उसे पत्नी बनाने लगे थे। इसी कारण तुम कैद किए गये थे। यह भी तुम्हारे जीवन की एक विडम्बना है कि तुम्हें बंदीगृह से छुड़ाने वाला वह व्यक्ति है जिसकी लड़की के साथ तुमने व्यभिचार किया है।

मैंने जब कल तुम्हें दिल्ली साधु आश्रम में देखा और तुम्हें पहिचाना तो पुनः तुम्हें कीचड़ से उठा बाहर करने का सकल्प कर लिया। अपनी तुममें रुचि का कारण बताने के लिए ही मैंने तुम्हें यह इतिहास बताया है। मैं चाहता हूं कि एक आत्मा जो उन्नति के मार्ग पर चल रहा था पुनः उसी मार्ग पर चल सके।

अब तुम अपने विषय में स्वयं निर्णय करो। तुम स्वेच्छा से दिल्ली के साधू आश्रम में आए थे और मैं चाहता हूं कि तुम स्वेच्छा से ही अपने भविष्य के विषय में निर्णय करो।'

'परन्तु महाराज। इस एकाकी और सुखों से रहित जीवन में रहने से लाभ क्या होगा ?'

'लाभ मैं अनुभव करता हूं। परन्तु उस लाभ का वर्णन इस शरीर और इन्द्रियों का विषय न होने के कारण मानवीय भाषा में नहीं किया जा सकता। मैं अनुभव तो करता हूं। तुम भी यदि इस जीवन में रहोगे तो अनुभव करने लगोगे।'

'तब ठीक है। मुझे अवसर दीजिये कि अपने विषय में विचार कर निश्चय करूं। मैं आपके आश्रम में ही रहूंगा। मेरे पास अपना कुछ नहीं जिससे जीवन व्यतीत कर सकूं।'

'ठीक है, तुम जब तक चाहो मेरे साथ रह सकते हो। और हां, यदि मेरा मार्ग स्वीकार हो तो मेरी दिनचर्या को स्वीकार

कर लो। तब तुम मेरे पीछे-पीछे मार्ग पर दूर तक चल सकोगे।'

इस कथा को सुनते-सुनते तीसरा प्रहर हो गया तो स्वामी जी उठे अपने कमरे में जा एक ग्रन्थ निकाल पढ़ने लगे।

## दो

दो दिन हरिद्वार रहकर तीनों, ब्रह्मानन्द, नित्यानन्द और संतोष ऋषिकेश जा पहुंचे। वहां स्वर्गाश्रम में कुछ दिन रह वे बद्रीनारायण के मार्ग पर जोशीमठ में जा पहुंचे।

जोशीमठ आश्रम में बीस-पचीस लोग रहते थे। इनमें कुछ भगवे वस्त्र पहने हुए थे और कुछ गृहस्थी पहरावे में थे। इस समय तक संतोष कुमार प्रातः साढ़े तीन बजे, उठ शरीर की आवश्यकताओं से अवकाश पा स्वामी ब्रह्मानन्द जी की कुटिया में आ उनकी क्रियाओं को देख उनका अनुकरण करने लगा था।

एक दिन वह आया तो वह भी भगवे वस्त्र पहने हुए था। स्वामी ब्रह्मानन्द उसे नये परिधान में देख मुस्कुरा दिए।

उस दिन के दस बजे जब ब्रह्मानन्द, नित्यानन्द और सन्तोष दैनिक क्रियाओं से अवकाश पा उठे तो ब्रह्मानन्द ने पूछ लिया, 'अब क्या नाम है महाराज!'

महाराज संन्यासियों को सम्बोधन करने का ढंग है। सन्तोष ने कहा, 'यहां के अध्यक्ष ने कल तीसरे प्रहर मुझ यह बाना दिया है और मेरा नाम सर्वदानन्द रखा है। मैंने यह जीवन स्वेच्छा से स्वीकार किया है।'

जोशीमठ के आश्रम में तीन मास तक रहने के उपरान्त ब्रह्मानन्द, नित्यानन्द और सर्वदानन्द ऋषिकेश स्वर्ग आश्रम में रहने चले आये।

यहां रहते-रहते स्वामी ब्रह्मानन्द के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि ऋषिकेश में भी एक आश्रम बनाना चाहिए। यह विचार उन्होंने अपने प्रवचनों में प्रकट किया तो इसके लिए प्रथम दान गोरखपुर के एक धनी व्यापारी ने दिया। उसने महकमा जंगल से पांच एकड़ भूमि खरीदकर ब्रह्मानन्द जी के नाम करवा दी इसके उपरान्त ब्रह्मानन्द जी दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई में

अपने भक्तों को पत्र लिखने लगे। दिल्ली में व्यापार एवं उद्योग के सचिव से ब्रह्मानन्द जी का परिचय था। उसने स्वामी जी को लिख दिया कि अपना कोई प्रतिनिधि यहां भेज दें तो मैं दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई से आपके आश्रम के लिए धन एकत्रित करवा दूंगा। इमारत पर अढ़ाई लाख लगने का अनुमान था। पचास हजार दिल्ली से प्राप्त हुआ। सचिव ने कलकत्ता तथा बम्बई में अन्य परिचितों के नाम पत्र देकर नित्यानन्द और सर्वदानन्द को वहां भेज दिया।

दिल्ली में सर्वदानन्द ने एक दिन राधा के पति श्रवणकुमार को देखा, परन्तु आत्मा की वर्तमान अवस्था में उसे श्रवण कुमार सर्वथा अन्धकार में भटकता हुआ व्यक्ति प्रतीत हुआ। इस कारण उससे मिल अपना समय व्यर्थ गंवाने से बचने के लिए उसने श्रवण कुमार की ओर घ्यान नहीं दिया। पीछे वह सचिव से मिला तो उसने बताया कि वह रामलोक को पहचानता है।

जब सेठ जी को पता चला कि जिस साधु पर श्रवण को सन्तोष होने का सन्देह है, वह सन्तोष ही है तो उन्होंने हरिद्वार अपनी धर्मशाला के मुंशी को पत्र लिख दिया कि यदि शान्ता वहां हो अथवा उसका पता विदित हो तो उसे सूचित कर दें कि वह दिल्ली चली आए। उसके लड़के का पता चल गया है।

इस पत्र के भेजने के दो मास उपरान्त शान्ता दिल्ली आ पहुंची।

सुमति ने उसे सब बात बतायी तो वह बोली, 'मैंने उत्तराखण्ड के सब तीर्थ छान डाले हैं और अब हताश हो उत्तर काशी में ठहरी हुई थी, जब धर्मशाला के मुंशी का पत्र मिला। उसका पत्र मिलते ही दिल्ली चली आयी हूं।'

अब मैं स्वामी ब्रह्मानन्द जी के आश्रम की खोज में जाऊंगी।

सुमति ने बताया, 'हम भी वहां जाने की तैयारी कर रहे हैं। सेठजी ने दुकान का सब कारोबार बन्द कर दिया है। दुकान का कुछ लेना-देना अभी कुछ लोगों से चल रहा है। हमने विचार किया है कि वर्षा ऋतु के उपरान्त हम ऋषिकेश स्वर्ग आश्रम में रहने चले जायेंगे। वहां के अध्यक्ष से बात हो रही है। हम सदा के लिए वहीं रहना चाहते हैं।'

'तो मैं आपके साथ ही चलूंगी। कब तक यहां से चल सकेंगे?'

'अभी,' सुमति ने बताया, 'जुलाई मास का अन्त है। सितम्बर के अन्त तक जा सकेंगे।'

शान्ता प्रातः की गाड़ी से हरिद्वार से आयी थी और सेठजी की दुकान से चले जाने के उपरान्त घर पहुंची थी।

मध्याह्न के समय सेठ रामलोक आया तो शान्ता को देख प्रसन्नता प्रकट कर बोला, 'ठीक किया है जो तुम आ गयी हो। मैंने एक व्यक्ति को ऋषिकेश पता करने भेजा था। वह समाचार लाया है कि स्वामी जी के शिष्य बम्बई और अहमदाबाद में आश्रम के लिए धन एकत्रित कर रहे हैं। आश्रम की नींव रखी जा चुकी है और चारदीवारी बन चुकी है। अब वर्षा ऋतु के उपरान्त भीतर की इमारत बनेगी।

'यह पता चला है कि अभी से स्वामी जी की ख्याति आस-पास के लोगों में फैल रही है और लोग उनके दर्शन को आने लगे हैं।'

रात राधा और श्रवण कुमार आये। वे अपने लड़के को साथ नहीं लाये थे। जब आये तो वे सन्तोष कुमार की माता शान्ता को वहां उपस्थित देख पूछने लगे, 'सन्तोष आपको मिला है ?'

'नहीं, अभी नहीं। यहां आकर पता चला है कि वह ब्रह्मानन्द जी के आश्रम में साधु बना बैठा है।'

'तो उससे मिलने कब जाएगी ?' श्रवण कुमार का प्रश्न था।

'सेठजी कह रहे हैं कि वह भी अब वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत करने के लिए ऋषिकेश जायेंगे। मैं भी इनके साथ ही जाने का विचार रखती हूं।'

और लड़के को वापस लाने का विचार नहीं है ?' श्रवण कुमार का प्रश्न था।

'उससे मिलने को तो जी चाहता है, परन्तु यदि उसने संन्यास ले लिया है तो उसे वापस गृहस्थ में आने के लिए मैं नहीं कहूंगी।'

'क्यों ? अब उससे प्यार नहीं रहा ? जब वह हवालात में था तब तो तड़फ रही थीं।'

'हां भैया !' शान्ता का कहना था—'वह गृहस्थ में प्रवेश कर रहा था। मैं इसी में उसका कल्याण समझती थी। और फिर उसको बन्दी बनाकर हवालात में भेज दिया गया। सेठजी

ने सहायता की और वह छूट गया, परन्तु हवालात में ही उसके

मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया प्रतीत होता है, जो वह कुछ घंटे ही यहां रह साधु बनने चल पड़ा था। अब मैं उसे अपने स्वीकार किये जीवन से विचलित नहीं करूंगी।'

'तो मौसी! तुम्हारा जीवन एक रुण्ड-मुण्ड पेड़ की भांति ही रहेगा।'

'यह तो है ही, प्रत्येक स्त्री अपनी सन्तान और सन्तान की सन्तान का मुख देखने की लालसा रखती है। परन्तु मैं इतनी स्वार्थी नहीं हूं कि इस लालसा के लोभ में अपने पुत्र का अहित करूं।'

'तो यह भी स्वार्थ है कि सन्तान की कामना की जाये?'

'हां स्वार्थ तो अपने लिए चिन्तन मात्र में भी है, जिसमें अपने से अतिरिक्त किसी दूसरे का लाभ न हो, वह स्वार्थ ही है।'

इसपर श्रवण कुमार हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'तब तो मुझसे बड़ा कोई स्वार्थी नहीं है।'

सुमति और शान्ता हस पड़ीं। उनके हंसने पर श्रवण कुमार कुछ कहने लगा ही था कि इस समय सेठजी भी आ गये।

श्रवण कुमार और रमण की कोठी देख सेठ रामलोक के घर के फर्नीचर में भी परिवर्तन होने लगा था। अभी दो स्थानो पर वह परिवर्तन विशेष रूप से हुआ था। एक तो बैठक घर में था। वहां सोफा और कुर्सियां लग गयी थीं। दरी चादर तकिए उठवा दिए गए थे। और दूसरे भोजनालय में। वहां खाने के लिए मेज कुर्सियां तथा क्रोकरी आ गयी थी।

जब सेठजी आए थे तो सब कुर्सियों पर ही बैठे थे। श्रवण कुमार और राधा सोफे पर बैठे थे। सेठजी भी औरतों के हंसने पर विस्मय करते हुए एक कुर्सी पर बैठ गए।

उन्होंने पूछ लिया, 'हंस क्यों रही थीं?'

उत्तर सुमति ने दिया, 'श्रवण जी और शान्ता बहिन में स्वार्थ के विषय में बहस हो रही है।' इतना कह उसने दोनों में हुई बात बता दी।

'मैं समझता हूं,' सेठजी ने कहा, 'तुम दोनों ही गलत समझे मालूम होते हो। भला श्रवण जी आप किसको स्वार्थी कहते हैं?'

श्रवण ने अपनी विचारित बात बता दी, 'मैं उस व्यक्ति को

स्वार्थी मानता हूं जो दूसरे के धन का लोभ करे और फिर उस लोभ को मन में छुपा न सके।'

अब सेठजी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अर्थात् लोभी होते हुए कुछ मूर्ख भी हो तो उसे लोभी कहा जा सकता है।'

'और शान्ता बहिन ! तुम लोभी किसको कहती हो ?'

'मैं समझती हूं कि अपने अधिकार से अधिक की लालसा करने वाला लोभी होता है।'

शान्ता एक वर्ष तक साधु सन्त महात्माओं के आश्रम में भटकती हुए लौटी थी। इस कारण जो कुछ वहां समझकर आई थी, वही बता रही थी।

पूर्व इसके कि सेठजी कुछ कहें, श्रवण कुमार बोल उठा, 'सन्तोष की माता जी के कथन का अर्थ यह बनता है कि मैं वकालत करता हूं तो उसमें भी मैं स्वार्थ सिद्ध करता हूं।'

सेठजी हंस पड़े। हंसते हुए कहने लगे, 'मैं समझता हूं कि इस संसार में रहते हुए हमारा स्वार्थ सिद्ध करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। मां के पेट में बीज पड़ने के समय से लेकर मनुष्य के मरणपर्यन्त प्राणी स्वार्थ सिद्धि करता रहता है। अतः स्वार्थ सिद्धि करना पाप नहीं है। परन्तु जहां स्वार्थ सिद्धि किसी दूसरे के स्वार्थ का हरण करे, वह दूषित है। स्वार्थ की सिद्धि बिना किसी दूसरे के स्वार्थ का विरोध किये चलती जाए, यह एक सामान्य कर्म है।'

'और यह किस प्रकार पता चला कि किसी व्यक्ति का कोई कर्म किसी दूसरे के स्वार्थ का विरोध कर रहा है।'

'यह जानना एक पृथक् बात है। इसपर भी यह तो है ही कि बिना किसी के हितों का हनन किये अपना कल्याण करना पुण्य ही है।'

सेठजी के इस कथन को सुन श्रवण कुमार और शान्ता अपने कथनों पर विचार करने लगे कि उनके कथन और सेठजी के कथन में भेद कहां है।

सेठजी ने बातों के विषय को बदल दिया और कहा, 'राधा तुम बच्चे को साथ नहीं लायीं ?'

राधा उत्तर देने के स्थान पति का मुख देखने लगी। श्रवण कुमार ने सेठजी का समाधान करने के लिए कहा, 'यहां बातों-

ही बातों में रत हो जाती है और बच्चा सो जाता है। फिर सोये हुए को उठाकर ले जाना बोझा ढोने के समान ही होता है।'

'पर पिताजी !' राधा ने पति की बात को सारहीन बताने के लिए कह दिया, 'मैं तो यहां रहने के लिए आई हूं और विष्णु के बावा जी ने अपनी घोड़ा गाड़ी हमारे आने के लिए दे दी है।'

यह कथन पति-पत्नी में मतभेद को प्रकट करता था। सेठजी नहीं चाहते थे कि किसी प्रकार का पति-पत्नी में झगड़ा पत्नी की मां के घर में हो। इस कारण उन्होंने कह दिया, 'तो इसका अर्थ यह है कि विष्णु हमारे घर रहने नहीं आया ?'

'जी ! मैं यही कह रही हूं।' राधा ने कहा, 'मैं इस वार अकेली ही मां के घर रहने आयी हूं।'

'तो बच्चा अपनी दादी के पास रहेगा ?'

श्रवण ने इस व्यवहार की सफाई दे दी। उसने कहा, 'पिता जी !' यह इस कारण कि राधा को अब एक अन्य की देखभाल करने का काम मिल गया है।'

सेठजी इसका अर्थ समझ मुस्कराते हुए राधा की ओर देखने लगे। सुमति को यह बात समझ नहीं आयी। उसने पूछ लिया, 'और किसकी देखभाल करने लगी हो ?'

सेठजी ने बात बदल दी, 'देवी ! भूख लग रही है। मोहिनी से पता करो कब तक भोजन मिल सकेगा ?'

सुमति बैठक घर से निकल रसोईघर में चली गयी।

## तीन

सुमति के जाने के उपरान्त सेठजी गुसलखाने में चले गए और शान्ता भी अपने कमरे में जा राधा के कथन पर विचार करती रही। बैठक घर में श्रवण कुमार ने कहा, 'मैं तुम्हें यहां इस कारण छोड़े जा रहा हूं कि तुम पिताजी को मेरे मन की बात बता दो।'

'बता दूंगी।'

'हां, यही हमारे सुखी जीवन का आधार है।'

राधा जानती थी कि इस धमकी का क्या अर्थ है; परन्तु वह

चुप रही और उसने उत्तर नहीं दिया ।

श्रवण कुमार को जब से पता चला था कि सेठजी वानप्रस्थ ले रहे हैं और अपनी सम्पत्ति का प्रबन्धक मुंशी को बनाकर पीछे छोड़ रहे हैं तब से ही वह पत्नी को प्रेरणा दे रहा था कि पिता को अपने दामाद की कार्य-कुशलता पर अधिक विश्वास करना चाहिए । नित्य की प्रेरणा से तंग आकर राधा ने कहा था, 'मुझे कुछ दिन माता जी के घर में भेज दें तो मैं उनको यह प्रेरणा दे सकूंगी । इसी प्रयोजन के लिए श्रवण कुमार राधा को लेकर आया था ।

राधा की मां से बात भोजनोपरान्त हुई । श्रवण कुमार भोजन के उपरान्त अपनी कोठी को लौट गया था । सोने से पूर्व सुमति राधा के कमरे में आयी और पूछने लगी, 'क्या विशेष बात हुई है ? पति से लड़कर आई हो क्या ?'

'नहीं मुझे पिताजी से झगड़ा करने के लिए यहां भेजा गया है ।'

'सत्य ? तो तुम अपने पिता से झगड़ा करने आयी हो ?'

'नहीं ! मैं झगड़ा करने नहीं आयी । मैंने कहा है कि मुझे झगड़ा करने के लिए यहां भेजा गया है । परन्तु मैं झगड़ा करूंगी अथवा नहीं, यह मेरे विचार करने की बात है ।'

'हां ! तो पहले यह बताओ, किस विषय में झगड़ा करने के लिए भेजी गयी हो ? पीछे पूछूंगी कि तुम झगड़ा करती हो अथवा नहीं ?'

राधा ने गम्भीर भाव में कहा, 'जब से पिताजी ने अपनी सम्पत्ति का प्रबन्धक मुंशी जी को बनाने का विचार प्रकट किया है, तब से ही विष्णु के पिता कह रहे हैं कि मुंशी सब गड़बड़ कर देगा । वह पहले ही बहुत मुटिया रहा है । वह सोखता बन सब कुछ चूस जायेगा । वह चाहते हैं कि मैनेजर उनको बनाया जाए ।'

'तो श्रवण वकालत का काम छोड़ मुंशीगिरी करने लगेगा ?'

'वह कहते हैं कि जायदाद का प्रबन्ध तो आधा घंटा नित्य का काम है और इतने से काम के लिए एक दो सौ रुपये महीने का मुंशी रखना ठीक नहीं । साथ ही विष्णु के पिता जैसा कोई अन्य विश्वस्त नहीं हो सकता ।'

'बात तो तुम ठीक कहती हो, परन्तु सेठजी भी कुछ इस दिशा में विचार कर चुके हैं और उनकी युक्ति यह है कि उनका दामाद एक सफल वकील अधिक शोभायुक्त और उपकारी जीव होगा, एक मुंशी बनने की अपेक्षा वकील का परिवार में होना अधिक प्रतिष्ठा युक्त होगा। मुंशी का काम आधा घंटा रोज का नहीं वरन् दिन में बारह तेरह घंटे का है।'

'मां ! मैंने आपको उनकी बात बता दी है। अब पिताजी से जो उचित समझो कह दो।'

'और तुम क्या उचित समझती हो ?'

'मैंने एक बात अनुभव की है। वह यह है कि जब से मैं ससुराल में गयी हूं पति सुख के अतिरिक्त अन्य किसी बात में मुझे लाभ नहीं हुआ। जितना यहां खाती थी, उतना ही वहां खाती हूं। जो यहां पहनती थी वही वहां पहनती हूं। मां ! वहां जो मेरा पृथक् कमरा है उसमें यहां के कमरे से कुछ अधिक सुख सुविधा नहीं है।

'बस अन्तर पति-संगत के सुख का है। उस सुख के साथ कभी-कभी डांट भी पड़ जाती है। अब तो विष्णु को भी मुझ से नाराज हो एक-आध चपत लग जाती है।'

'अरे,' सुमति के मुख से निकल गया, 'इसमें उसका क्या दोष है ? एक डेढ़ वर्ष के बच्चे ने क्या अपराध किया है कि उसे चपत लगाने की नौबत आ गयी है।'

'मां ! उसको नहीं, यह दण्ड उसकी मां को मिलता है।'

सुमति गम्भीर हो उठकर बोली, 'अब सो जाओ। कल प्रातः बात करेंगे।'

अगले दिन स्नान के उपरान्त सेठ, सुमति और राधा तीनों इस नई परिस्थिति पर विचार करने लगे। पूर्ण बात सुन सेठ रामलोक ने कह दिया, 'शान्ता का बेटा सन्तोष तो लिखा रहा था कि वह मेरा उत्तराधिकारी होगा। मुझे श्रवण के पिता ने ही कहा था कि लिख दूं क्योंकि यदि मैं चाहूं तो बाद में लिखा रद्द भी कर सकता हूं। और वह वकील का बेटा कहता है कि जीवित ही सब कुछ उठाकर उसे दे दूं।'

'देखो राधा ! तुम मुझे कहो तो मैं सब कुछ छोड़ घर से निकल सकता हूं। तुम बताओ, क्या चाहती हो। श्रवण मुझे एक

निपट स्वार्थी व्यक्ति समझता आ रहा है। मुझे उसकी युक्ति ठीक प्रतीत नहीं हो रही।'

राधा ने सतर्क उत्तर दिया, 'मैं तो यह निश्चय कर चुकी हूं कि आपको ऐसा करने से रोकूं। इसपर भी मैं अपने विचार से पहले आपके विचार जानना चाहती थी। मैं समझती हूं कि मैं अपने सुख का विचार कर भी आपसे यही कहूं कि आप अपनी वसीयत लिख डालिए और उसमें यदि कुछ मुझे देना चाहते हैं तो दे दीजिए। मुझे इसी में सुख प्रतीत हो रहा है।'

'तब ठीक है। जब तुम भी इसी में अपना कल्याण समझती हो तो मैं भी उसे अपना उत्तराधिकारी नहीं समझ रहा।'

'और पिताजी! मैं आपके साथ ही ऋषिकेश चलूंगी।'

'श्रवण जी से पूछ लेना!'

'मैं ऐसा समझ रही हूं कि मैं उस घर से सदा के लिए निकाल दी गई हूं। यद्यपि मुझे इन शब्दों में तो नहीं कहा गया, परन्तु विष्णु को मेरे साथ न भेजना इसी बात का सूचक है।'

'और यह ठीक है कि तुम्हें दिन चढ़ गए हैं?'

'हां! मुझे रजस्वला हुए दो महीने हुए हैं। मेरी सास अनुभव कर रही हैं कि मैं निर्माण कर रही हूं।'

'देखो राधा! यदि तुम कहो तो मैं उसे रामनाथ की जगह पर अपना मुख्त्यार बना सब कुछ उसके हवाले कर सकता हूं। मेरे यहां से जाने में अभी दो महीने हैं। तब तक तुम अपना निश्चय कर लो। रही बात तुम्हें पति के घर रहने की अथवा अपनी मां के घर रहने की, उसमें तुम स्वतन्त्र हो। हमने तुम्हें अपनी लड़की मानने से कभी भी इन्कार नहीं किया और लड़की हम पर बोझा प्रतीत नहीं होती।'

बस इतनी ही बात हुई और सेठजी अल्पाहार ले दुकान को चले गये। मध्याह्न भोजन के समय इस विषय पर पुनः बात नहीं हुई। रात सेठजी के आने से पूर्व श्रवण कुमार आया और दो घंटा भर पत्नी से बात कर सेठजी के आने के पूर्व ही चला गया।

श्रवण के चले जाने के उपरान्त सुमति राधा के कमरे में गई तो राधा आंखें मूंदे आराम कुर्सी पर लेटी हुई थी। उसे मां के कमरे में आने का पता नहीं चला। वह गम्भीर विचार में मग्न थी।

मां दो मिनट तक लड़की को देखती रही। जब उसका ध्यान भंग नहीं हुआ तो उसने आवाज दे दी, 'राधा !'

राधा चौंककर सावधान हो गयी।

मां एक दूसरी कुर्सी पर समीप बैठ पूछने लगी, 'क्या विचार कर रही हो ?'

'मां ! आज से मैं अपना नया जीवन आरम्भ हुआ अनुभव करने लगी हूं और उसके विषय में ही विचार कर रही थी।'

'क्या मतलब ?'

'विष्णु के पिता कह गये हैं कि मैं उनके घर में पिताजी की पूर्ण सम्पत्ति का हिब्बा नामा लेकर ही आ सकूंगी।'

'मैं समझती हूं कि तुम्हारे पिताजी इतना करने की सामर्थ्य रखते हैं।'

'पर मां ! मैंने उनको कहा है कि यदि पिताजी ऐसा लिखकर देने के लिये तैयार हुए तो मैं भूखी रह कर जीवन का अन्त कर लूंगी। पिताजी को उन पर विश्वास नहीं रहा।'

'किस पर विश्वास नहीं ?' सुमति ने पूछा।

राधा ने बताया, 'विष्णु के पिता ने भी पूछा था और मैंने उनको कह दिया है उनकी नेक नीयती पर। इस पर वह नाराज हो चले गयेहैं।'

'तब ?'

'अब मैं एक पति वाली परन्तु विधवा की भांति अपनी मां के घर में हूं।'

सुमति मौन बैठी रह गयी। सेठ जी रात घर पर आये तो सुमति ने राधा से सुनी सब बात उनको बता दी। राधा आज भी अपने कमरे में ही बैठी थी। सेठ जी, सुमति तथा शान्ता तीनों राधा के कमरे में आये तो राधा बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी।

सेठ जी ने उसे पढ़ते देख पूछा, 'क्या पढ़ रही हो ?'

'पिताजी ! यह भगवद्गीता है। इसे पढ़ने से चित को शान्ति मिलती है।'

'तुम्हारी मां ने सब बात बताई है। मैं अब भी कहता हूं कि यदि तुम कहो तो मैं सब जायदाद श्रवण के नाम पर लिखा सकता हूं। यह तुम विचार कर लो कि तुम क्या चाहती हो ?'

राधा ने पुस्तक में निशानी रख बंद कर दी और पिताजी के मुख पर देखते हुए कहा, 'मैंने जो कुछ कल कहा था वही ठीक समझ रही हूं। अब तो उन पर उतना भी विश्वास नहीं रहा जितना कल था। आप कब तक दिल्ली छोड़ने वाले हैं ?'

'मेरी जायदाद का तो सब प्रबन्ध हो गया है। बस ऋषिकेश जाने के लिये वर्षा ऋतु के व्यतीत होने की प्रतीक्षा में हूं।'

'मैं कहूंगी कि तब तक कहीं अन्यत्र चल दें तो अधिक ठीक होगा।'

'सेठ जी गम्भीर विचार में निमग्न हो गये और बोले, 'ठीक है। तुम तैयार हो जाओ। मैं कल ही दिल्ली छोड़ दूंगा। परन्तु कहां जाना है कल बताऊंगा। अब चलो भोजन का समय हो गयाहै।'

दो दिन उपरान्त जब श्रवण कुमार पता करने सेठ जी के घर पर आया कि उसकी धमकी का क्या प्रभाव हुआ है तो उसने देखा कि घर को ताला लगा है और घर के बाहर सेवक नन्दन खड़ा है।

श्रवण कुमार ताले को देख रहा था और फिर नन्दन को पूछने लगा, 'यह क्या है ?'

'वकील साहब ! घर को ताला लगा है।'

'घर वाले कहां हैं ?'

'पता नहीं चला। कल दोपहर तीन बजे सब घर से चले गये थे। सेठ जी कह गये हैं कि सायंकाल मैं डाक का डिब्बा देख जाया करूं। वह मुझे पत्र लिखेंगे कि घर कब आयेंगे।'

'और तुम रहते कहां हो ?'

'संतोष की माता जी के मकान में एक कमरा मेरे लिये खोल दिया गया है। उन्होंने प्रातः सायं आकर, डाक का डिब्बा देखने के लिये कहा है। वही देखने आया हूं।'

'और राधा।'

'वह भी उनके साथ ही चली गयी है।'

अगले दिन श्रवण सेठ जी की दुकान पर पहुंचा। अब वहां दुकान नहीं थी। वहां मुंशी रामनाथ का कार्लालय था। इस कार्यालय में बैठ मुंशी सेठ जी की सम्पत्ति का प्रबन्ध करता था।

श्रवण ने मुंशी जी से पूछा, 'मुंशी जी ! सेठ जी कहां गये हैं ?'

'तीर्थ यात्रा पर गये हैं।'

'किधर के तीर्थों की यात्रा ?'

'यहां से उदयपुर गये हैं वहां से आबू जाने का विचार है। फिर अहमदाबाद, द्वारकापुरी, सोमनाथ का मंदिर इत्यादि स्थान देखते हुए जहाज से बम्बई जाने की बात कह रहे थे।'

'कुछ मेरे विषय में कह गये हैं ?'

'यह कि आप आयें तो उनका समाचार आपको देता रहूं। आपकी पत्नी भी उनके साथ है।'

श्रवण को समझ आया कि उसे सम्पत्ति का मैनेजर बनाने से इनकार करने से बचने के लिये सेठ जी भाग गये हैं। इस विचार से उसके मन में क्रोध तो बहुत आया, परन्तु मुंशी के सामने कुछ न कहता हुआ वह वहां से लौट आया।

चार-चार पांच-पांच दिन के उपरान्त वह मुंशी रामनाथ से पता करता रहा। पहले तो यह समाचार आता रहा कि वे कहां हैं। पन्द्रह दिन उपरान्त वे बम्बई में पहुंचे तो समाचार आया कि राधा के बीमार होने के कारण वे वहां रुक गये हैं।

अकस्मात श्रवण कुमार के मुख से निकाल गया, 'मुझसे पूछे बिना राधा को ले गये हैं। उन्होंने यह ठीक नहीं किया।'

'तो वकील साहब ! आप जाकर अपनी पत्नी को बम्बई से ले आइये। उनका पता मेरे पास है।'

'क्या पता है ?

'वे मारवाड़ी धर्मशाला में ठहरे हुए हैं।'

श्रवण मुंशी की बात का उत्तर दिये बिना चला आया।

उसी रात रमण कुमार के घर पर सेठ जी के व्यवहार पर गोष्ठी हुई। गोष्ठी में रमण कुमार, उसकी पत्नी कृष्णा के अतिरिक्त भूषण देव और उसकी पत्नी नंदिनी भी थे। श्रवण कुमार अपनी वह सब सूचना, जो वह नन्दन चौकीदार और रामनाथ मुंशी से एकत्रित कर सका था, बता कर पूछना चाहता था कि उसे अब क्या करना चाहिये ?

श्रवण की मां का कहना था, 'बम्बई के पते पर तार कर दो कि तुम आ रहे हो और वे तुम्हारी वहां प्रतीक्षा करें। और कल की डाक गाड़ी से रवाना हो जाओ।'

'और वहां जाकर क्या करूं ?'

इस पर रमण कुमार ने कहा, 'जो एक पति को पत्नी के लिये करना चाहिये। उसकी अवस्था देख उसे किसी अच्छे होटल में रख कर उसकी चिकित्सा कराओ। जब ठीक हो जाये तो घर ले आओ।'

'परन्तु पिताजी ! मैंने उसे कहा था कि कहीं हमारे घर में उसने पांव रखा तो टांगें तोड़ दूंगा।'

'तो फिर हमसे क्या पूछ रहे हो ?' नंदिनी ने कहा, 'भैया ! पहले अपनी यह आज्ञा रद्द करो, तब उसे यहां ला सकोगे।'

'परन्तु वह मेरा कहा नहीं मानती।' श्रवण का कहना था।

'नहीं मानती तो फिर उसके लिये चिन्ता किस कारण करते हो ? जब उसके मर जाने का समाचार आयेगा तो नया विवाह कर लेना।'

'और सेठ जी की जायदाद ?'

'उसमें से एक कोठी और एक लड़का तो तुम्हें मिल चुका है। शेष के लिये नये श्वसुर से बात करना।' यह भी नंदिनी ने ही कहा।

श्रवण कुमार की परेशानी यह थी कि सेठ जी कि लाखों की सम्पत्ति हाथ से निकलती प्रतीत हो रही थी। इस कारण वह परेशानी अनुभव कर रहा था। उसकी परेशानी का अर्थ समझ भूषण ने कहा, 'यदि पत्नी के पिता की सम्पत्ति का लोभ है तो पत्नी को प्रसन्न रखना चाहिये। इस कारण पत्नी को मुहब्बत प्यार से दिल्ली ले आओ।

अब रमण ने कह दिया, 'श्रवण ! तुम मूर्खता कर रहे हो। जो उसके मुंशी से बार-बार मिलने जाते हो। इससे तो सेठ जी को पता चल जायेगा कि तुम उनके अनुकूल हो रहे हो। वह यह समझेंगे कि उनकी नीति सफल हो रही है और वह अधिक और अधिक रूठते जायेंगे। वे आशा करेंगे कि श्रवण को टरका सकते हैं।'

'तो आप क्या सम्मति देते हैं ?' श्रवण की मां ने कहा।

'इसने मुंशी के पास बार-बार जाकर गलती की है। और गलती का प्रतिकार यह है कि अब इसे एक तार मारवाड़ी धर्मशाला बम्बई के पते पर सेठ जी को भेजनी चाहिये और राधा के स्वास्थ्य का समाचार मांगना चाहिये। उसका उत्तर आने

पर पुनः विचार कर लिया जायेगा।'

'इस तार के दो में से कोई एक उत्तर हो सकता है। एक यह कि वह बीमार है और उसकी चिकित्सा हो रही है। दूसरा यह कि वहां अब ठीक हैंऔर वे अपनी यात्रा पर जा रहे हैं अथवा चले गये हैं। जो उत्तर आयेगा उस पर विचार कर अपना व्यवहार निश्चय करना।'

भूषण देव समझ रहा था कि यह उपाय पर्याप्त नहीं है। श्रवण को यह भी तार द्वारा कहना चाहिये कि बम्बई से आगे न जायें। वह राधा का समाचार लेने बम्बई आ रहा है।

दोनों स्त्रियां, कृष्णा और नंदिनी समझती थीं कि श्रवण ने भूल की है जो पत्नी को घर से निकाल दिया है और लड़के को अपने पास रख लिया है। इस व्यवहार से यह प्रकट होता है कि पति ने पत्नी को तो घर से निकाल दिया है और विष्णु को अपने पास रखा है। केवल उसकी कोठी पर अधिकार रखने के लिये।

श्रवण का कहना था, 'मां! मैं तो केवल सेठ जी पर दबाव डालना चाहता था, जिससे वह मुझे अपनी सम्पत्ति का प्रबन्धक नियुक्त कर दें।'

भूषण ने कहा, 'यह तुम्हारे मन में था। इसका ज्ञान तुम्हारी मां को भी नहीं था कि तुम पत्नी से रूठने का नाटक कर रहे हो। वे तो वास्तव में ही तुम्हारा रूठना समझ रहे थे। कम-से-कम मैं और तुम्हारी बहन यही समझे थे। सेठ जी भी यही समझे प्रतीत होते हैं। अब इस प्रभाव का निराकरण करने के लिये यही उपाय है कि तार दो और बम्बई चल दो। इससे तुम यह प्रकट करोगे कि तुम पत्नी के स्वास्थ्य की चिन्ता करते हो।'

'और यदि मेरे वहां पहुंचने से पहले वे वहां से कहीं चल दिये तो?'

'तो धर्मशाला से पता करना कि वे कहां गये हैं और वहां उनको जा पकड़ो। मेरा अभिप्राय यह है कि जितनी मूर्खता तुमने पहले की है उसका प्रतिकार अब देना चाहिये।'

श्रवण ने अगले दिन प्रातःकाल मारवाड़ी धर्मशाला में सेठ रामलोक दिल्ली वाले को तार दे दिया और तार के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

## चार

तार का उत्तार नहीं आया। इस कारण श्रवण कुमार मुंशी रामनाथ से पता करने दुकान पर जा पहुंचा। रामनाथ ने बताया, 'जिस दिन आप सेठ जी का पता करने आये थे, उसी दिन वे बम्बई से पूना जा पहुंचे थे। वहां से वे उसी दिन बंगलौर जाने वाले थे।

'तो मेरा तार उनको मिला होगा ?'

'आपने तार कब और कहां भेजा था ?'

'मारवाड़ी धर्मशाला के पते पर। उस दिन अगस्त की आठ तारीख थी।'

'मेरे पास सात तारीख को पूना से लिखा पत्र आया है। उसमें ही यह लिखा था कि वे सायं की गाड़ी से बंगलौर जा रहे हैं।'

इस दिन श्रवण के घर पर पुन: गोष्ठी हुई। नंदिनी ने सब बात सुनकर भाई से कह दिया, 'भैया ! तुमने वकालत की परीक्षा क्या देकर पास की है।'

'क्यों ?'

'जब मुंशी ने कहा है कि उसे सेठ जी के यात्रा पर कब कहां जाने का ज्ञान रहता है तो फिर उससे पता पूछकर तुम वहां क्यों नहीं पहुच जाते ?'

श्रवण मुंशी की बात सुन चिढ़ा हुआ बैठा था, इस कारण बोल उठा, 'नंदिनी ! मैं सब समझता हूं और जानबूझ कर राधा को अभी यहां न लाने का विचार रखता हूं।'

इस पर तो नंदिनी को भी क्रोध चढ़ गया, 'तब ठीक है। जब उसे लाने का विचार होगा तो हमसे पूछना किस प्रकार लाना चाहिये। मैं समझती हूं कि इस बात को समाप्त कर अब कुछ और बात की जाये।'

'तो नाराज हो गयी हो ?'

नंदिनी ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैंने तुम्हें वकालत की परीक्षा में फेल कर दिया है।'

रमण कुमार हंस पड़ा। उससे कहा, 'तो भूषण जी ने घर

पर विश्वविद्यालय खोल रखा है।'



'हां ! भूषण देव ने कहा, 'परन्तु इस विश्वविद्यालय में अभी एक ही प्रोफेसर है और उसमें एक ही विद्यार्थी है।'

इस पर सब हंसने लगे। कृष्णा ने पूछ लिया, और नंदिनी ! तुम कौन-सी परीक्षा पास कर प्रोफेसर बनी हो ?'

'मां ! एक पुस्तक है भगवद्गीता। वह राधा पढ़ा करती थी। उस पर बाल गंगाधर तिलक ने एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिखा है। कुछ महीने हुए राधा बाजार से खरीद कर लायी थी। बस इसी पुस्तक के भरोसे मैं प्रोफेसर बन गयी हूं और आपके दामाद मेरे विद्यार्थी हैं। ये हिन्दी नहीं पढ़े। मैं पढ़ती हूं और इनको मतलब समझाती हूं। यह कहते हैं कि इनको सुनने में रस आता है।'

'हां !' श्रवण कुमार ने कह दिया, 'राधा उसे पढ़ा करती थी और कहा करती थी, उसके पढ़ने से चित्त को शान्ति मिलती है।'

'इस पर कृष्णा ने श्रवण को कह दिया, 'तो बेटा ! तुम भी पुस्तक को ले आओ और चित्त की शान्ति प्राप्त कर लो।'

रमण हस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'शान्ति पुस्तक में नहीं रखी। उसमें कागज और कुछ छपा मैटर है। वे शान्ति देने वाले नहीं। शान्ति उसमें लिखे को पढ़कर समझने में है। इस कारण श्रवण को भी नंदिनी के विश्वविद्यालय में दाखिल हो जाना चाहिये।'

'हां।' भूषण ने कह दिया, 'तब मैं वहां सोलिटरी विद्यार्थी नहीं रहूंगा।'

इस प्रकार उस दिन गोष्ठी में आगे बात नहीं चली।

इस प्रकार राधा की बात समाप्त हो गयी। श्रवण पुनः मुंशी से पता करने नहीं गया।

नौ महीने उपरान्त मुंशी रामनाथ सेठ रामलोक का श्रवण के नाम आया एक पत्र उनकी कोठी पर देने आया। वह रमण कुमार के कार्यालय में पहुंच पूछने लगा, 'छोटे वकील साहब कहां हैं ?'

'क्यों क्या काम है ?' रमण ने पूछ लिया।

'सेठ जी का एक पत्र है। साथ ही मुझे भी एक पत्र आया है

कि मैं यह बंद लिफाफे को अपने हाथ से श्रवण जी को दे दूं।'


'मुझे दे दो। मैं उसे दे दूंगा।'

'जी नहीं। मैं उनके हाथ में ही दूंगा। ऐसी ही सेठ जी की आज्ञा है।'

'तो चले जाओ। श्रवण यहां नहीं है।'

'वह कहां गये हैं और कब तक आने वाले हैं ?'

'मैं नहीं जानता। निकल जाओ यहां से, नहीं तो जूतों से पिटवा दूंगा।'

रामनाथ एक भी शब्द कहे बिना कमरे से निकल कोठी के फाटक के बाहर जाकर खड़ा हो गया। उसे रात के दस बजे तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। श्रवण अपनी घोड़ा गाड़ी में आया। गाड़ी को आते देख रामनाथ समझ गया कि छोटे वकील आये हैं। इस कारण उसने फाटक में खड़े हो हाथ खड़ा कर गाड़ी रोक ली। गाड़ी के रुकते ही उसने कहा, वकील साहब। यह आपके लिए है।'

गाड़ी मे मिस सरोज बैठी थी और श्रवण शराब के नशे में अर्द्ध चेतनावस्था में उसके कंधे पर सिर रखे हुए बैठा था। श्रवण ने मुंशी को देखा तो पूछ लिया, 'किसलिए आये हो ?'

'आपके लिये पत्र है,' इतना कह उसने लिफाफा आगे कर दिया। लिफाफा सरोज ने पकड़ लिया और मुंशी से पूछा, 'और कुछ ?'

'जी। बस इतना ही। पर यह पत्र छोटे वकील साहब के लिये हैं।'

'हां हां। उनको मिल जायेगा।'

'अच्छा तो नमस्ते। यह कहकर रामनाथ अपने घर को लौट पड़ा। श्रवण ने सरोज से पूछा, 'डीयर ! क्या है ?'

'एक बंद लिफाफा है। उस पर आपका नाम लिखा है।'

'तो मेरी जेब में रख दो। प्रातःकाल पढ़ूंगा।'

गाड़ी कोठी की 'पोर्च' में जा खड़ी हुई। घर के प्राणी जानते थे कि छोटे वकील कहां से आये हैं और उनके साथ कोई अन्य भी हो सकता है। इस कारण वकील साहब की अगवानी करने कोई नहीं आया। श्रवण का मुंशी तो प्रातःकाल छः बजे आया करता था और उस समय श्रवण अपने मुकद्दमों की स्टडी

किया करता था।



इस समय तो उसका मार्ग सीधा अपने बैडरूम को होता था। सरोज के अतिरिक्त भी अन्य औरतें भी उस बैडरूम में आया करती थीं। आज सरोज मिल गयी तो श्रवण ने उसे निमंत्रण दे दिया।

अगले दिन श्रवण कुमार पौने छः बजे उठा तो जल्दी-जल्दी शौचादि से अवकाश पाने लगा। सरोज कपड़े पहन अपने होटल को जाने की तैयारी में थी।

कार्यालय में जाने से पूर्व सरोज ने हाथ बढ़ा लिया तो श्रवण कुमार ने जेब में हाथ डाला और कुछ दस-दस रुपये के नोट निकाल सरोज की ओर कर दिये। उसने वे गिने नहीं और वैसे ही लपेटकर अपने पर्स में रखे और कोठी के द्वार की ओर चल पड़ी।

कार्यालय में मुंशी आया तो वह काम देखने लगा। लगभग नौ बजे रमण उसके कमरे में आया और कहने लगा, 'सेठ जी का मुंशी रात आया था और तुम्हारे लिए एक पत्र लाया था।'

श्रवण कुमार को भी स्मरण आ गया। उसने कहा, 'हां, वह मुझे मिला था और एक पत्र दे गया है। मेरे कोट की जेब में रखा है।'

इतना कह वह अपने सोने के कमरे में चला गया और क्लब में पहन कर जाने वाले कोट की जेब में से पत्र निकाल पढ़ने लगा। पत्र राधा का था। उसने लिखा था, 'श्रीमान जी, मेरा निवेदन है कि विष्णु को आप यहां मेरे पास भेज दें। वह आप और मेरे दोनों के प्रयास का फल है। इस कारण उस पर मेरा भी उतना ही अधिकार है जितना आपका है।

आपके अधिकार का मूल्य खंबर-पास वाली कोठी का प्रबन्ध आपके पास है। यदि आप विष्णु पर अपना अधिकार छोड़ दें तो वह कोठी आपके नाम भी हो सकती है। अथवा आप लिखें कि उसके अतिरिक्त आप विष्णु पर अपना अधिकार छोड़ने का क्या मूल्य चाहते हैं। वह आपको मिल जायेगा।

उत्तर की प्रतीक्षा में···राधा।'

रमण लड़के के समीप ही खड़ा था और चाहता था कि जाने कि सेठ जी ने क्या लिखा है। श्रवण ने पत्र पढ़कर मुंशी के वहां

बैठा होने के कारण कह दिया, चलिये। माता जी के सामने सुनाता हूं।

पिता पुत्र दोनों घर के भीतर चले आये। कृष्णा को बुला उसके सामने श्रवण कुमार ने राधा का पत्र सुना दिया।

कृष्णा ने पत्र सुना तो पुत्र से पूछ लिया, 'क्या करना चाहते हो?'

'पत्र फाड़ कर रद्दी की टोकरी में फैंक देना चाहता हूं।'

'क्यों?'

'वही तो मेरे हाथ में उनकी नाड़ी है। जब चाहूं अपनी बात मनवा सकता हूं।'

'ऐसा प्रतीत होता है, 'रमण ने कह दिया, 'उसके इस बार लड़की हुई है। इसी कारण उसे लड़के की याद आ गयी है।'

'मेरा चित करता है कि उससे मिल कर उसे अपने घर में ले आऊं।' कृष्णा का कहना था।

'किसको मां?' श्रवण का प्रश्न था।

'राधा को। उसके आने से घर की रौनक बहाल हो जायेगी।'

'मेरे लिये तो अब भी रौनक ही है।' श्रवण ने कहा।

कृष्णा ने नाक चढ़ाते हुए कहा, 'रात वाली चुड़ैल की रौनक मानते हो। उस बदसूरत औरत में तुम क्या देखते हो? उसका मुकाबला कभी राधा से किया है?'

'मां। यदि पूरा रुपया प्राप्त न हो तो अठन्नी पर भी संतोष किया जा सकता है।'

'परन्तु वह तो एक दमड़ी-भर भी राधा के मुकाबले में नहीं है।'

'वह औरत तो है।'

'श्रवण। शराब पीने से तुम्हारा दिमाग खराब हो रहा है। मेरी राय मानो तो विष्णु को लेकर वहां चले जाओ, जहां वह है। मुझ विश्वास है कि राधा यहां आ जायेगी। कहो तो मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूं।'

'रात को' रमण ने कह दिया, 'राधा के पत्र पर विचार करेंगे। अब तैयार हो कचहरी भी जाना है।'

मध्याह्न के समय रमण ने भूषण को उसके कार्यालय में

टेलीफून किया। भूषण को जब रमण ने रात आने को कहा तो उसने इसमें कारण पूछा। रमण ने कारण बताया तो भूषण ने इतना कहा, 'मैं नंदिनी को कह दूंगा।'

'हां और तुम भी आना।'

'ठीक है।' भूषण ने कहा और टेलीफून बंद कर दिया। सांयकाल भूषण और नंदिनी की प्रतीक्षा होने लगी। वे नहीं आये। भोजन के समय तक उनकी प्रतीक्षा की गयी। उनके घर पर टेलीफून नहीं था। इस कारण प्रतीक्षा करते हुए आठ बजे के स्थान रात दस बजे भोजन किया गया। उस समय मां की पुत्र और उसके पिता से बात हो गयी। रमण और श्रवण एक राय थे कि राधा को उसके पत्र के उत्तर में लिख दिया जाये कि वह शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली चली आये। उसका उचित स्थान उसके पति के साथ है।

इस पत्र में यह भी पूछा जाये कि उसके बच्चा किस दिन उत्पन्न हुआ है और वह क्या है, लड़का है, अथवा लड़की? इस पत्र में सेठ जी की सम्पत्ति की कुछ चर्चा न की जाये।

अगले दिन श्रवण सेठ जी के मुंशी रामनाथ से मिलने जा पहुंचा। मुँशी ने बताया, 'सेठ जी पिछले छः मास से स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में रह रहे हैं। वहां ही राधा बीबी के बच्चा हुआ है।'

'और राधा के क्या हुआ है, लड़का अथवा लड़की?'

'यह उन्होंने नहीं लिखा। मैंने पूछा भी नहीं। मैं कभी उनसे पारिवारिक बातों के विषय में पूछता नहीं। वह स्वयं ही जो उचित होता है बता देते हैं। आज चौबीस वर्ष हो चुके हैं। जब मैं सेठ जी की दुकान पर काम करने लगा था, मेरी उम्र सोलह वर्ष की थी और अब मैं चालीस वर्ष का हूं।'

श्रवण ने अब मतलब की बात पूछ ली, 'सेठ जी की किस-किस सम्पत्ति का प्रबंध करने के लिये आप नियुक्त हुए हैं?'

उनकी सम्पत्ति में उनके मकान हैं तथा कुछ कम्पनियों के हिस्से हैं।'

'कितनी आय होती है उस सम्पत्ति से?'

'इस विषय में मैं बिना सेठ जी की आज्ञा के नहीं बता सकता।'

'तो यह उन्होंने किसी को न बताने की आपको आज्ञा दे

रखी है ?'

'वैसे आज्ञा तो कोई नहीं। परन्तु यह नियम है कि जिसकी सम्पत्ति है वह ही उसको बताने का अधिकार रखता है।'

श्रवण ने सेठ जी की अनुपस्थिति में उनकी सम्पति के विषय में आज पहली बार ही पूछा था और नपा-तुला इंकार सुन चुप कर रहा।

किसी प्रकार की सूचना न पा श्रवण कुमार निराश हो घर पहुंचा। राधा के पत्र को आये पांच दिन हो चुके थे। श्रवण ने घर पर मुंशी से मिली जानकारी दी तो मां ने निश्चय कर लिया कि वह ऋषिकेश जाकर बहू को ले आयेगी।

अगले दिन श्रवण कचहरी से लौटा तो मां का बिस्तर और सूटकेस तैयार घर की ड्योढ़ी में पड़ा देख श्रवण ने नौकर से पूछा, 'यह किसका सामान है ?'

'भगवती ने बताया, 'माता जी का है।'

'कहां जा रही हैं वह ?'

'पता नहीं। मुझे उन्होंने बताया नहीं।'

'पिता जी कहां हैं ?'

'घूमने गये हुए हैं। अभी तक लौटे नहीं।'

श्रवण कुमार भीतर चला गया। मां बैठी भोजन कर रही थी।

'मां। कहां जा रही हो ?'

'ऋषिकेश। बहू को लेने जा रही हूं।'

'पिताजी से पूछा है ?'

'उनको बताकर जा रही हूं। पूछने की आवश्यकता तो नौकरों को होती है। मैं इस घर में नौकर नहीं हूं।'

श्रवण कुमार इसका उत्तर नहीं जानता था। वह मां को आज्ञा नहीं दे सकता था। उसने पूछ लिया, 'कितने बजे गाड़ी जाती है ?'

'ठीक दस बजे तक छूट जाती है। मैं घर से नौ बजे जाऊंगी। तुम्हारे पिताजी भोजन देरी से करते हैं। इस कारण मैंने भोजन पहले ही कर लिया है। यह राम मेरे साथ जा रहा है।' राम नंदिनी का बड़ा लड़का था और वह भी भोजन कर रहा था।

'और उसका स्कूल ?'

'वहां से एक सप्ताह की छुट्टी ले आया है।'

'जब मां ने कहा कि वह घर में नौकर नहीं तो श्रवण मां को कुछ कह नहीं सका। वह स्वयं क्लब जाने वाला था। परन्तु इस नयी परिस्थिति को देख क्लब को नहीं गया। वह पिताजी की प्रतीक्षा करने लगा।

रमण कुमार भ्रमण से आठ बजे लौटा और अपने स्टडीरूम में चला गया। वहां अलमारी से 'ला जर्नल' की एक 'वाल्यूम' निकाल पढ़ने लगा। उसने अभी पुस्तक खोली ही थी कि श्रवण कमरे में आ गया। रमण ने समझा कि वह भी कुछ पढ़ने के लिये आया होगा। प्रश्नभरी दृष्टि से वह उसकी ओर देखने लगा। श्रवण पिता के समीप रखी कुर्सी पर बैठते हुए कहने लगा, 'माता जी जा रही हैं।'

'मुझे पता है।' पिता का उत्तर था। 'वह ऋषिकेश स्वर्गाश्रम में राधा को मिलने जा रही हैं।'

'तो आपने मना नहीं किया।'

'कहा था कि उसे नहीं जाना चाहिये। उसने कहा है कि इस विषय में मुझसे मतभेद रखती है।'

'तो आपने मना नहीं किया?'

'जब से तुम्हारी पत्नी ने बगावत की है, वह भी समझती है कि वह भी बगावत कर सकती है। मैं तुमसे कुछ अधिक बुद्धि रखता हूं कि उससे लड़ नहीं रहा। लड़ता भी तो उसको राधा की भांति घर से निकाल नहीं सकता था। उसके माता-पिता का कोई घर नहीं है।'

'तो आपने राधा को घर से निकालने से मुझे मना क्यों नहीं किया?'

'इसलिये कि मैं घर का कोतवाल नहीं हूं। मैं आज्ञा नहीं दे सकता। वैसे तो तुमने भी राधा को बिना उसके लड़के के घर से निकाला था, तो मुझसे पूछा नहीं था। पूछा होता तो मैं भी तुम्हें उसे निकाल देने के लिये न कहता।'

'तो अब विष्णु को उसके पास भेज दूं?'

'तुम्हारी मां ने पूछा था कि वह विष्णु को साथ ले जाये। मैंने उसे कहा है कि तुमसे पूछ ले। भेजना चाहते हो तो तुम उसे भेज सकते हो। मैं तुम्हारे काम में अब हस्तक्षेप नहीं

करूंगा।'

श्रवण इस बदलती परिस्थिति पर पिता के मुख पर विस्मय में देखता रह गया। बात रमण ने ही की। उसने कहा 'मैंने राधा के मुकद्दमे में अपनी हार मान ली है।'

'किस मुकद्दमे में ?'

'उसकी सम्पत्ति पर अधिकार पाने के मुकद्दमे में। मैं समझता हूं कि मेरी पराजय मूर्खता के कारण हुई है।'

'मैंने तो एक स्वाभाविक बात ही कही है।'

'तुम्हारा स्वभाव मेरे स्वभाव से भिन्न प्रतीत हो रहा है। मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुआ और स्वभाववश मैं हार को स्वीकार कर चुका हूं। उस पराजय की बात को तुम्हारे तक पहुंचने से रोक रहा हूं।'

## पांच

तीर्थ यात्रा के उपरान्त सेठ जी, सुमति, राधा और संतोष की मां शान्ता ऋषिकेश पहुंचे तो स्वामी ब्रह्मानन्द का आश्रम बन चुका था और स्वामी जी शिष्यों सहित वहां रहने लगे थे। उनकी सबसे पहली भेंट सर्वदानन्द से ही हुई। सर्वदानन्द ने मां को देखा तो कह दिया, 'मैं अब गृहस्थाश्रम में जाने की इच्छा नहीं रखता। इस कारण उस विषय में आप कुछ कहने की इच्छा रखती हों तो यहां मत रहिये, अन्यथा मुझे यहां से कहीं अन्यत्र भाग जाना पड़ेगा।'

शान्ता ने कहा, 'मैं तुमसे कुछ भी आकांक्षा नहीं रखती। तुम अपना जीवन जैसा चाहो चलाओ। तुम्हें देख कर मुझे प्रसन्नता होती है, दुःख नहीं।'

'हम तुम्हारे गुरुजी से मिलने आये हैं। उनकी बहुत महिमा सुनी है।'

'तो मिल सकती हो। मध्याह्नोत्तर दो बजे वह सबसे मिलते हैं। कोई भी उनके पास आ सकता है।'

'तुम लोगों के भोजन का क्या प्रबन्ध है ?'

'एक अहमदाबाद के सेठ हैं, उन्होंने यहां का प्रबन्ध अपने

खरीद लिया हुआ है। वह सेठ यहां के ट्रस्ट के प्रबन्धक हैं और वे ही सब आश्रमवासियों की व्यवस्था देखते हैं।'

जब सेठ जी इत्यादि आश्रम से लौटने लगे तो सर्वदानन्द भी उनको छोड़ अपनी कुटिया की ओर चल पड़ा। शान्ता अपने पुत्र के लिये कुछ फल लेकर आयी थी, परन्तु देखती रह गयी। सेठ जी ने समीप के पेड़ पर बैठे बन्दरों की ओर संकेत कर कह दिया, 'स्वामी जी यह उनके लिये छोड़ गये हैं।'

'यह तो कुछ न हुआ।'

'तो क्या बन्दर जब फल खायेंगे तो उपकार न होगा।'

'पर मैं तो संतोष के लिये लायी थी।'

'वह कहां है? वह तो कहता था कि वह सर्वदानन्द है। इनको अब यहीं रहने दो। ये जीव भी तो आश्रमनिवासी हैं। ये भी खायेंगे तो स्वामी जी का उपकार मानेंगे।'

सुमति हंस पड़ी और शान्ता की बांह में बांह डाल उसे आश्रम के बाहर ले जाने लगी। फल वहीं पड़े रहे।

मध्याह्नोत्तर पर दो बजे सेठ जी इत्यादि आये तो अब उनके साथ राधा भी थी। राधा इस समय तीन मास के गर्भ से थी। दस-बारह स्त्री पुरुष वहां चबूतरे के नीचे भूमि पर बैठे हुए थे। स्वामी जी पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे थे। जब सेठ जी वहां पहुंचे तो स्वामी जी ने सेठ जी को चबूतरे पर बैठने का संकेत कर दिया। सेठ जी अकेले ही आगे जाने लगे तो स्वामी जी ने सुमति की ओर संकेत कर कहा कि उन माताजी को भी कह रहा हूं। ये माताजी तो दिल्ली में भी आती रही हैं।'

सुमति समझ गयी कि स्वामी जी ने उसे पहिचान लिया है। यद्यपि वह दिल्ली से स्वामी जी का प्रवचन सुनने कभी-कभी ही जाया करती परन्तु स्वामी जी को दिल्ली की बात कहते सुन मुस्कुराई और आगे आ चबूतरे के समीप बैठ गयी। उसके पीछे शान्ता और राधा भी बैठी थीं।

स्वामी जी उपदेश दे रहे थे। उन्होंने अपना प्रवचन जारी रखा। उन्होंने कहा, 'सब जीवात्माएं एक-दूसरे के इतने समान हैं कि एक को दूसरे से पृथक् पहिचानना अति कठिन है। इस पर भी प्रत्येक की अपनी कुछ विशेषता रहती है। उस विशेषता से ही वह पहिचाना जा सकता है। जो उस विशेषता को समझता है और

फिर दूसरे में देखने का अभ्यास रखता है वह फिर सबसे ऊपर

जो महान्, आत्मा सर्वव्यापक है और घट-घट में उपस्थित है, को भी पहिचान जाता है। उसको पहिचान कर योगी जन उससे योग अर्थात् उसमें विलीन होने का यत्न करते हैं। जैसे नमक जल में घुलकर जल समान ही तरल दिखाई देने लगता है, उसी प्रकार यह जीव उस महान् तरलता में घुल मिल जाता है। तब नमक के डले की भाँति वह पूर्ण जल में विचार सकता है। मुक्तावस्था की यही विशेषता है।

स्वामी जी ने आगे बताया, 'यह जगत् प्रकृति का बना है। प्रकृति के दो रूप हैं। एक अव्यक्त और दूसरा व्यक्त रूप अव्यक्त में यह निस्तेज हो अपनी शक्ति को समेटकर अपने में ही निमग्न हो जाती है। और व्यक्त अवस्था में स्थूल रूप बन जाती है। तब यह प्रकृति का स्थूल रूप जीवात्मा को लपेट में लेता है। तब जीवात्मा भंवर में फंसा हुआ उस भंवर के साथ चक्कर काटने लगता है। उस भंवर से बाहर निकलने के लिये परमात्मा की अर्चना एक मार्ग है।

'अर्चना का अभिप्राय पूजा लिया जाता है। पूजा तो है परन्तु पूजा का अर्थ किसी की प्रशंसा करना नहीं होता। पूजा का अर्थ होता है परमात्मा में रम जाना। यह रमना स्थूल प्रकृति के भंवर को छोड़े बिना नहीं हो सकता। उस भंवर से छूटने के लिये प्रकृति का ज्ञान आवश्यक है। प्रकृति,के ज्ञान का अर्थ है प्रकृति,जिसमें भंवर पड़ा है, के गुण, कर्मस्वभाव को जानना अर्थात् प्रकृति के मूल नियमों को जानना। मूल नियम हैं कृत। प्रकृति का सबसे बड़ा नियम है इसकी त्रिगुणात्मक स्थिति। त्रिगुणात्मक स्थिति का अर्थ है प्रकृति के इन्द्रियों को प्राप्त होने वाले रसों का स्वाद। इन रसों को भोगते हुए भी रसों में लिप्त न होना ही इन गुणों से छुट्टी पाना है। जो इन रसों के पीछे भागते हैं वे प्रकृति रूपी संसार में पड़ रहे भंवर से बाहर नहीं हो सकते।

'अतः संसार में रहते हुए इन्द्रियों के विषयों से मुक्ति प्राप्त कर इस त्रिगुणात्मक भंवर से बाहर हुआ जा सकता है। इसी को निष्काम भावना से कार्य करना कहते हैं।'

इस प्रकार संसार के बंधनों के विषय में स्वामी जी एक घंटा भर बताते रहे।

तब प्रवचन समाप्त कर स्वामी जी उठ खड़े हुए तो लोग भी उठ-उठकर स्वामी जी के चरण स्पर्श करने आने लगे। सेठ जी ने चरण स्पर्श किये तो स्वामी जी ने कहा, 'आप ठहरिए।'

'मैं ?' सेठ जी ने विस्मय में पूछा।

'आप सब !'

सेठ जी विस्मय करते थे कि स्वामी जी उनके विषय में क्या जानते हैं। सुमति समझ रही थी कि स्वामी जी दिल्ली के विषय में कुछ पूछना चाहते हैं।

जब सब भक्तजन चरण स्पर्श कर जा चुके, तब स्वामी जी राधा की ओर संकेत कर बोले, 'मैं इस मां को कुछ कहना चाहता हूं।'

इस पर चारों रामलोक, सुमति, शान्ता और राधा स्वामी जी के मुख पर विस्मय में देखने लगे।

स्वामी जी चबूतरे से चलकर गंगातट की ओर चल पड़े। तट तक आने के लिये मार्ग ढालू परन्तु साफ बना हुआ था। मार्ग था तो पगडण्डी मात्र ही, परन्तु पगडण्डी चौड़ी थी जो कूट-पीटकर समतल की गयी थी। इस पर भी ऊंचाई से नीचे गंगातट तक का मार्ग बना हुआ था।

स्वामी जी उस मार्ग पर सेठ जी के साथ चल दिये। मार्ग में ही स्वामी जी ने पूछा, 'आपकी लड़की गर्भ से है। इसकी बहुत सावधानी रखनी चाहिये। इसके पेट में एक महान पुण्य आत्मा है। वह जीव अति श्रेष्ठ कर्मों के बल से इसके पेट में आया है। यह बच्चे की मां भी एक पुण्यात्मा है।'

'महाराज ! आप इसे कब से जानते हैं ?' सेठजी ने पूछ लिया।

परन्तु स्वामी जी ने उसके गर्भ के आत्मा के विषय में बताया, 'यह आत्मा मेरे पूर्वजन्म का परिचित है। वह अपने पुण्यकर्मों का फल भोगकर इस पुण्यमयी मां के गर्भ में आया है। मैं इस आत्मा के सम्पर्क में इसके पूर्वजन्म में आया था। मैं तो इस पृथ्वी पर ही भटक रहा हूं और यह देवलोक के झूले-झूलकर आ रहा है।'

इस समय वे घाट पर जा पहुंचे थे। वहां एक शिला पर स्वामी जी बैठे तो ये चारों उनके सामने भूमि पर बैठ गये। बात

सेठ जी ने कहा, 'महाराज ! मैं उस आत्मा के विषय में नहीं पूछ रहा जो इस लड़की के पेट में है। मैं लड़की के विषय में पूछ रहा हूं।'

'इस लड़की के विषय में अभी इतना ही समझ लो कि यह पूर्वजन्म की तपस्या के फलस्वरूप एक लखपति के घर में उत्पन्न हुई है। इसके जीवन में एक काला साया उभरा था। परन्तु वह निकल गया है और अब पुनः यह प्रकाश में आ गयी है। यह इसके पुण्य कर्मों का फल ही है कि एक अन्य पुण्यात्मा इसके आश्रय इस लोक में आ रहा है।

'देखिये सेठ जी ! आपकी आयु एक सौ दस वर्ष की है। और अभी आप चालीस वर्ष के हैं। इस कारण आपका जीवन अभी सत्तर वर्ष और है। आप अपने अन्तकाल तक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें, इसके लिये एक बात का विचार करना होगा। वह यह कि प्रकृति के नियमों का पालन करते रहें। अब आप वानप्रस्थ में प्रवेश कर रहे हैं। पत्नी से पृथक् रहिये तो इस लम्बे जीवन में सुखी रहेंगे।

'बहुत विचित्र बात है।' सुमति ने बातों में दखल देते हुए पूछ लिया, 'महाराज आपने सेठ जी के विषय में इतना लम्बा जीवन बता दिया और मेरे लिये कुछ नहीं बताया। मैं कब तक इनकी सेवा में रहूंगी।'

'माताजी !' ब्रह्मानन्द ने कहा, 'आपका जीवन अधिक लम्बा नहीं। आप साठ वर्ष तक भोग करेंगी। यदि पति को छोड़ भगवान के भजन में लग जायेंगी तो जीवन सुखी रहेगा। अन्यथा स्वयं भी कष्ट भोगेंगी और अपने पति के जीवन को भी कष्टप्रद बना देंगी।'

स्वामी जी ने बात बदली और राधा को कहा, 'इस उत्पन्न होने वाले बालक के पिता से सम्बन्ध छोड़ दो। वह तुम्हारी टांग पकड़कर तुम्हें नरक में ले जाने का यत्न करेगा। तुम्हारा उससे विवाह एक भूल का परिणाम है। वह भूल अब प्रभावहीन हो चुकी है। वैसी भूल मत करना। इसका पिता तुम्हारे कल्याण में बाधक है।'

सब स्वामी जी का मुख देखते रह गये। स्वामी जी गंगा के बहते जल की ओर देख रहे थे। एकाएक सेठजी ने कहा, 'महा-

राज ! मैं आपके इस आश्रम के विषय में क्या सेवा कर सकता हूं ?'

'सेठ कृष्णकान्त देसाई कुछ दिन में यहा आ रहे हैं। वे इस आश्रम के अध्यक्ष हैं। उनसे मिलकर बात करिए।'

इस प्रकार बात समाप्त हो गई।

कुछ देर तक स्वामी जी गंगा की ओर देखते रहे। फिर वह उठे और इन सबको वहीं छोड़ अपनी कुटिया की ओर चल पड़े।

दूसरे तीसरे दिन सेठजी और सुमति इत्यादि स्वामी जी के दर्शन करने आते रहे। परन्तु जो कुछ पहले दिन की भेंट में हुआ वैसे फिर कभी नहीं हुआ। एक दिन कृष्णकान्त देसाई आये और स्वर्गाश्रम में सेठ रामलोक को मिलने चले आये।

सेठजी सायंकाल गंगा तट पर भ्रमण कर लौट रहे थे कि देसाई ने समक्ष आ हाथ जोड़ प्रणाम कर कहा, 'आप दिल्ली के सेठ रामलोक है ?'

'जी, मैं वही जीव हूं।'

देसाई मुस्कुराया और बोला, 'आप जीव तो हैं, परन्तु मैं आपके शरीर से बात कर रहा हूं। नाम शरीर का ही अंग है। आपके विषय में स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने कहा है कि आप आश्रम की कुछ सेवा करना चाहते हैं।'

'हां, मैंने उनसे कहा था। आप कौन हैं ?'

'मेरा नाम कृष्णकान्त देसाई है। मैं उनके आश्रम के ट्रस्ट का अध्यक्ष हूं।'

रामलोक ने कहा, 'कुछ दिन हुए स्वामी जी ने कहा था कि आप बतावेंगे कि मैं आश्रम की क्या सेवा कर सकता हूं।'

'मुझे स्वामी जी ने बताया है कि स्वर्गाआश्रम में सेठ रामलोक ठहरे हैं। मैं आप से मिलकर इस विषय में बात करूं।'

'तो भगवन् ! बताइए, मैं क्या कर सकता हूं ?'

'हम आश्रम में उपासना गृह बनवाना चाहते हैं। मैंने उसका प्लान अहमदाबाद के एक 'आर्किटेक्ट' से बनवाया है। उसपर अढ़ाई लाख की लागत का अनुमान है।'

'स्वामी जी ने वह प्लान स्वीकार कर लिया है और मैं आपके पास उसी सम्बन्ध में आया हूं।'

'आप ठीक स्थान पर आए हैं। आप इस भवन को बनवाना आरम्भ कर दीजिए। मैं अभी पचास हजार का एक चैक आपको

कल प्रातःकाल दे दूंगा । इस इमारत पर सब खर्च मैं ही दूंगा । आपको इसके लिए भाग दौड़ करने की आवश्यकता नहीं रहेगी ।

देसाई ने हाथ जोड़ सेठजी का धन्यवाद करते हुए कहा, 'स्वामी जी को कल मध्याह्न के समय बता दूंगा और रुपये के मिलते ही काम आरम्भ हो जाएगा ।'

इस प्रकार सेठ रामलोक और देसाई में परिचय बढ़ा तो फिर सेठजी का स्वामी ब्रह्मानन्द से सम्बन्ध सुदृढ़ हो गया ।

देसाई तो एक सप्ताह वहा रहकर अहमदाबाद लौट गया और आश्रम में निर्माण कार्य की देख-रेख रामलोक के हाथ में होने लगी । पहले स्वामी जी अथवा उनके शिष्यों को उसमें भाग दौड़ करनी पड़ती थी । सेठजी के प्रबन्ध में सक्रिय सहयोग से स्वामी जी को बहुत सुविधा हो गयी ।

जब तक राधा प्रसव के लिए तैयार हुई ब्रह्मानन्द जी के आश्रम में उपासना भवन और साधुओं के रहने के लिए बीस कुटियां बन चुकी थीं ।

राधा को गंगा के दक्षिण तट पर एक मकान में प्रसव कराया गया । देहरादून से एक लेडी डॉक्टर और दो नर्सें आयी थीं और प्रसव सुखपूर्वक हो गया । दो दिन तक डॉक्टर वहां रहा । नर्स तो उसके उपरान्त भी रही थी । बच्चे के उत्पन्न होने के चालीस दिन उपरान्त राधा ने ही श्रवण कुमार को पत्र लिखा था । पत्र भेजने के दस दिन उपरान्त कृष्णा राम के साथ आश्रम में पहुंच गयी ।

छः

उपासना गृह एक बड़ा सा भवन ही था । वहां नित्य मध्याह्न दो से तीन बजे तक स्वामी जी का अपने भक्तों से मिलने का समय होता था । वह समय ही उपासना में बदल दिया गया । मिलने आने वालों को स्वामी जी सामान्य योगाभ्यास की शिक्षा देते थे और दस मिनट तक उपदेश देते थे ।

इस पौने दो घंटे के कार्यक्रम के उपरान्त दस मिनट तक निजी वार्तालाप भी होता था ।

जब श्रवण कुमार की मां सेठ रामलोक की कुटिया पर

पहुंची तो राधा कुटिया में अपने नवजात शिशु को लिए हुए एक चारपाई पर बरामदे में बैठी थी।

कृष्णा उसके सामने आयी तो वह बच्चे को खाट पर डाल उठ हाथ जोड़ सास का सत्कार करने लगी। फिर उसने ही पूछा, 'तो आप विष्णु को नहीं लायीं ?'

'उसके पिता ने नहीं भेजा।'

'तो वे उसपर अपना अधिकार मानते हैं ?'

'वह चाहता है कि तुम दिल्ली चलो और विष्णु की देख-रेख करो।'

'तो माताजी ! अब झूठ भी बोलने लगी हैं ?'

'इस समय तक शान्ता भीतर से दो कुर्सियां उठा लायी। उनको बरामदे में खाट के समीप लगा आने वालों को उनपर बैठा दिया।

राधा के इस सतर्क कथन से कि माताजी अब झूठ भी बोलने लगी हैं, कृष्णा एकदम घबरा उठी। उसके मन में यह बात प्रस्फुटित हुई कि राधा ने शत-प्रतिशत सत्य ही कहा है कि वह झूठ बोल रही है।

सास की घबराहट को राधा ने देखा और कह दिया, 'माता जी ! यह आपने नीति के विचार से भी कहा हो सकता है। इससे मुझे रोष नहीं। आखिर वह आपके पुत्र हैं और मां पुत्र का सम्बन्ध प्रकृति का बना है और सास-बहू का सम्बन्ध तो कृत्रिम है।'

कृष्णा, इस प्रकार के स्वागत से सर्वथा परेशान हो नवजात शिशु को देखने लगी। शिशु डेढ़ मास का हो गया था और अपने आप में भी प्रसन्न हाथ-पांव मारता हुआ खेल रहा था। राधा ने ही प्रश्न किया, 'आप कहां ठहरी हैं ?'

कृष्णा ने बातों का विषय बदलते देख सुख की सांस ली और उत्तर में कहा, 'अभी तो सामान ऋषिकेश में पंजाब सिंध क्षेत्र के एक कमरे में रखा है। वहां हम आठ बजे के लगभग पहुंच गए थे। वहां शौचादि कर बाजार से पूरी खा पेट भरकर हम इधर को चल पड़े।'

'तब ठीक है। यहां भोजन का समय एक बजे मध्याह्न होता है। तब तक पिताजी भी आ जायेंगे और तब आप अपने आने

का प्रयोजन बताइएगा।

'वह तो मैं तुमको लेने आयी हूं।'

'मैं अब आपके सुपुत्र के घर नहीं जाऊंगी।'

'क्यों ?'

'मेरा विवाह उनके साथ एक भूल थी। यदि उस भूल में मेरा हाथ था, परन्तु मैंने बड़ों द्वारा की गयी भूल को वरदान समझ स्वीकार किया था। इस कारण मुझे उस दुर्घटना का शोक नहीं। इसपर भी भूल का ज्ञान होते ही मैंने उसका निराकरण करने का प्रयास किया है। उस प्रयास में विष्णु का मांगना एक अंग है।'

'परन्तु तुम स्वयं वहां क्यों नहीं चलतीं ?'

'उस पिंजरे से बाहर का स्थान अधिक हितकर समझ आ रहा है। वहां रहते हुए मैं ऐसा अनुभव करती थी कि पांव में पत्थर बांधे और संसार सागर में उन पत्थरों के कारण मैं सागर के तल की ओर डूब रही थी।

'ईश्वर कृपा से मैं उन पत्थरों को खोलने में सफल हो चुकी हूं और अब पुनः उन पत्थरों से बंधने का विचार नहीं है।'

कृष्णा समझ रही थी कि वह उसके पुत्र पर आरोप लगा रही है। इस कारण उसने स्त्री को पति से प्राप्त होने वाले सुख की ओर संकेत कर दिया। उसने कहा, 'यह समाज का विधान है कि पति पत्नी की संगत में रहे।'

'यह विधान है पत्नी पति के विषय में। परन्तु मैं पत्नी पर लगे बन्धन से बंधी नहीं रही। मैं अब उनकी पत्नी नहीं रही।'

इस समय तक सुमति और शान्ता भी एक चटाई बिछा उस पर आ बैठी थीं।

कृष्णा अभी परेशानी में बहू का मुख देख रही थी कि सुमति ने कहा, 'बहिन जी! आपने तो इस लड़की को घर से निकाला नहीं था। इस कारण आपका इसे लेने आना कुछ भी अर्थ नहीं रखता।

'आप यहां आयी हैं तो आपको यहां के दर्शनीय स्थान दिखाने हम ले चलेंगी। आप बताइए कि यहां कितने दिन तक रहने का विचार कर आयी हैं ?'

'मैं राधा बेटी को लेने आयी हूं।'

'और उसे कहां ले जाना चाहती हैं ?'

'अपने लड़के के घर ।'

'आपका लड़के के घर से क्या सम्बन्ध है ? उसके विषय में आप क्या जानती हैं ? उस घर की दुर्गन्धि तो यहां तक पहुंच रही है । वहां यह लड़की जाना नहीं चाहती ।'

इस समय सेठ रामलोक ब्रह्मानन्द आश्रम से लौट आया । उसने राधा की सास को बैठे देखा तो सुमति को कह दिया, 'देखो ! बहिनजी का मुख सूख रहा है । कुछ चाय-पानी इनको पिलाना चाहिए ।'

कृष्णा ने कहा, 'हम ऋषिकेश से खा-पी कर आए हैं ।'

'वह यहां से बहुत दूर है । वहां से आने में दो घंटे से ऊपर लग जाते हैं । फिर गंगा पार भी तो करनी पड़ती है और उसके लिए नौका की प्रतीक्षा करनी होती है । तभी तो होंठ सूख रहे हैं ।'

शान्ता उठी और समधिन के लिए चाय बनाने चली गयी ।

कृष्णा को समझ आया कि औरतों से पुरुष अधिक अनुकूल प्रतीत होता है । इस कारण उसने अपने आने का उद्देश्य सेठजी के सामने वर्णन करना उचित समझा । उसने कहा, 'भाई साहब ! राधा को विदा कर दीजिए । मैं इसे ससुराल ले चलने के लिए आई हूं ।'

'ओह ! तो यह बात है ? मैं समझा था कि आप भी तीर्थ यात्रा पर आयी हैं ।'

'नहीं । यह राम मेरे साथ एक सप्ताह की छुट्टी लेकर आया है । इसकी छुट्टी के भीतर ही हमें वापिस पहुंच जाना चाहिए ।'

अब सेठजी ने भी सतर्क हो पूछा, 'तो राधा को कहा है ?'

'हां ! मगर वह अभी तक पति से रूठी हुई है ।'

'क्यों राधा ! तुम माता जी से रूठी हुई हो ?'

'पिताजी ! नहीं । मं तो किसी से भी रूठी हुई नहीं । परन्तु अपने स्वार्थ से मोह अधिक हो गया है । मुझे अपना स्वार्थ यहां रहने में सिद्ध हो रहा प्रतीत होता है ।

'मैंने माता जी से कहा है कि मैं भूल से इनके घर पहुंच गयी थी । अब मैंने वह भूल सुधार ली है । मैं चाहती थी कि अपनी भूल के परिणाम अर्थात् विष्णु को यहां बुला लूं, जिससे

विष्णु के पिता बिना किसी झंझट के अपना जीवन अपने ढंग से चला सकें।

'माताजी विष्णु को साथ नहीं लायीं। इन्होंने बताया है कि विष्णु को उसके पिता ने नहीं भेजा।'

कृष्णा बोल उठी, 'जी! श्रवण समझता है कि बछड़े की मां बछड़े के पास स्वयं ही पहुंच जाएगी।'

'परन्तु माता जी! मैं गाय नहीं हूं। न विष्णु बछड़ा है। हम मनुष्य हैं और अपने हक-हकूक और दूसरे के हक-हकूक में भेद समझते हैं।

'बस इसीलिए मैं वहां जा नहीं रही। क्यों मेरा विष्णु के पिता से इसी बात से मतभेद है कि वह अपने को एक पशु के तुल्य मानते हैं। मैं अपने को मनुष्य मानती हूं। इस कारण हमारा सहयोग नहीं चल सका।

'सबसे बड़ी बात इस सहयोग के टूटने में यह हुई है कि पशु की भांति वे शारीरिक सुविधाओं को चाहते हुए उनको प्राप्त करने की विधि पर भी विचार नहीं कर सकते।'

इस समय शान्ता एक ट्रे में छः प्याले और एक बड़े से 'पॉट' में काफी का पानी बनाकर ले आयी। साथ ही एक जग में दूध था। दक्षिण भारतीयों की भांति काफी का जल अधिक और दूध किंचित मात्र डाल कर राधा सबके लिए कॉफी बनाने लगी।

'बहुत तेज कॉफी पीती हो?' कृष्णा ने राधा से पूछ लिया।

'इसकी यही रीति है।' राधा का कहना था।

कॉफी पी गयी और स्त्री वर्ग तथा राम स्वर्गाश्रम तथा गीता भवन इत्यादि देखने चले गये।

एक बजे सब लौटे और बना रखा दलिया गर्म कर सबको खाने को मिला। दलिए के साथ दूध भी था।

कृष्णा इस प्रकार के भोजन में रुचि नहीं रखती थी। इस पर भी वह चुपचाप दलिया लेती रही। भोजन के उपरान्त दो बजे उपासना में सम्मिलित होने के लिए वे उपासना-गृह में जा पहुंचे। उपासना भवन प्रायः श्रोतागणों से भर जाता था। आज भी वहां का कमरा श्रोतागणों से भरा हुआ था।

सेठजी और सेठजी के घर के अन्य लोग एक कोने में जा बैठे। स्वामी जी आये और वह भी श्रोतागणों में बैठ गये। सब मौन

बैठे थे। भवन में सर्वथा शान्ति थी।

स्वामी जी के आते ही कहीं दूर सितार पर धुन बजने लगी। भवन की शान्ति में सितार पर बजती हुई धुन एकाग्रता उत्पन्न करने में सहायक होने लगी।

चार-पांच मिनट तक सितार पर एक धुन बजती रही। सितार वादन के बन्द होते ही स्वामी जी ने पहले वेद मंत्र और पीछे कुछ स्तोत्र पढ़े। तदनन्तर स्वामी जी ने उपदेश दिया। उस दिन स्वामी जी ने ईश्वर की उपासना पर ही प्रवचन दिया। स्वामी जी ने कहा, परमात्मा प्रार्थना करने से प्रसन्न नहीं होता। न ही याचना करने से द्रवित हो कुछ देता है। वस्तुस्थिति यह है कि परमात्मा साक्षी मात्र है और दण्ड अथवा पुरस्कार तो कर्म फल देते हैं।

'अत: प्रश्न यह उठता है कि कौन सा कर्म ठीक है और कौन सा कर्म गलत है। इसमें प्रकृति और रचना कार्य के कुछ नियम हैं जिनसे उचित-अनुचित का निश्चय होता है। प्रकृति के नियम परमात्मा से ही चलाए जा रहे हैं। अत: जब कोई व्यक्ति अथवा जाति उन प्रकृति के नियमो का उल्लंघन करती है तो वे नियम ही उनका दण्ड देते हैं।

'इस कारण सबको प्रकृति के नियमों को समझ उनके अनुकूल अपना व्यवहार रखना चाहिए।'

स्वामी जी ने उस दिन मन के विकारों में से लोभ का विश्लेषण कर बताया—'लोभ क्या होता है? संसार के पदार्थ न तो किसी मनुष्य के बनाये हुए हैं न ही किसी राज्य अथवा धनी व्यक्ति के। इस कारण प्रकृति की किसी वस्तु पर अपना एकाकी अधिकार जमा लेना लोभ है।

'प्राकृतिक पदार्थों को उपलब्ध करने में किसी प्रकार का प्रयत्न करना पड़ता है। उस प्राकृतिक पदार्थ को उपकारी रूप देने के लिए परिश्रम किया जाता है। जितना परिश्रम बुद्धि, मन अथवा इन्द्रियों द्वारा किया जाता है वह ही उस वस्तु का मूल्य होता है।

'यह भी एक तथ्य है कि मनुष्य जितना परिश्रम करता है, उसके परिश्रम के द्वारा अपनी आवश्यकता से अधिक ही पैदा करता है। आवश्यकता से अधिक जो प्राप्त होता है उसपर भी

मनुष्य का अपना अधिकार नहीं। उसपर अधिकार उसका है जिसने मनुष्य शरीर की ऐसी बनावट की है कि आवश्यकता से वह अधिक परिश्रम कर सके। अतः अपने पर व्यय करने से जो बचे, वह परमात्मा का ही है और परमात्मा के कार्यों पर ही व्यय होना चाहिए।

'यही दान-दक्षिणा का आधार है।'

इस प्रकार प्रवचन समाप्त हुआ तो पुनः किसी अदृश्य स्थान से सितार बजने लगी। उसके उपरान्त उपासना समारोह विसर्जित हुआ।

सेठ रामलोक, सुमति, तथा शान्ति और उसके साथ राधा की सास और राधा तथा राम भी उठ खड़े हुए। डेढ़ मास का राधा का बालक घर की सेविका के पास छोड़ा हुआ था।

स्वामी जी तो गंगा तट को चले गए। सेठजी राधा की सास को उपासना गृह दिखाते हुए, उसकी दीवारों पर चित्रकारी तथा लिखे मंत्रों तथा श्लोकों का अर्थ समझाते हुए उपासना-गृह के बाहर लाये तो द्वार के एक ओर एक पत्थर पर लिखे की ओर उन्होंने संकेत कर दिया। कृष्णा उस पत्थर पर ही खड़ी थी। वह पीछे हट पढ़ने लगी। हिन्दी भाषा में श्वेत संगमरमर के पत्थर पर लिखा था—इस भवन पर कुल लागत २,६०,५२०) रुपये आया है। यह भवन श्रीमती राधा रानी धर्मपत्नी दिल्ली निवासी श्री श्रवण कुमार एम० ए०, एल-एल० बी० ने अपने पिता सेठ रामलोक से प्राप्त धन से सर्वजन हितार्थ बनवाया।

कृष्णा पत्थर को पढ़कर चकित खड़ी रह गयी। जब वह इसको समझी तो सुमति की ओर देखकर पूछने लगी, 'यह आपकी लड़की राधा ही का तो नाम है।'

'हां, उसके पिता ने अपनी पूर्ण सम्पत्ति राधा को देने का संकल्प किया हुआ है। राधा से बात हुई थी। उसका कहना है कि उसके भोजन वस्त्र का खर्च तो बीस-तीस रुपये मासिक ही है। यदि पिताजी नहीं भी देंगे तो यह उतना कहीं भी काम कर पैदा कर लेगी।'

और, कृष्णा वहां खड़ी-खड़ी उस पत्थर पर लिखे पर विचार करती हुई पूछने लगी, 'जो देहरादून के डाक्टर तथा नर्सों पर खर्च हुआ है···?'

'वह भी उसी राधा को दिए धन में से था ।'



'और सेठजी जो अपने पर व्यय कर रहे हैं ?'

'सेठजी ने अपनी आय में से कुछ सम्पत्ति चांदनी चौक दिल्ली में खरीदी है । उसकी आय में से खर्च कर रहे हैं ।'

कृष्णा ने मुस्कुराकर पूछा, 'और वह मकान लड़की के नाम की गयी सम्पत्ति में नहीं था ?'

सेठ रामलोक दोनों के वार्तालाप को मुस्कुराता हुआ सुन रहा था । सुमति ने बताया, 'राधा के विवाह पर जितनी उनकी सम्पत्ति तथा धन था, उसका ही संकल्प किया गया था । वह चांदनी चौक वाली सम्पत्ति उसके उपरान्त की आय में से क्रय की है ।'

ये सब लोग उपासना गृह से निकलकर स्वर्गाश्रम की ओर जा रहे थे कि स्वामी जी का एक शिष्य नित्यानन्द लम्बे-लम्बे पग भरता हुआ उनके सामने आकर बोला, 'सेठजी ! स्वामी जी गंगा तट पर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं । वह दिल्ली से आज ही आई माता जी से मिलना चाहते हैं ।'

'मुझसे ?' कृष्णा ने नित्यानन्द की ओर देखकर पूछ लिया, 'वह मेरे विषय में क्या जानते हैं ?'

'माता जी ! यह तो गुरु जी ही बतायेंगे । हम उनके ज्ञान की सीमा नहीं जानते ।'

## सात

'महाराज ! आपको किसने मेरे विषय में सूचना दी है ?'

'स्वामी जी ने कहा, 'जो मेरे और तुम्हारे में सांझा प्रेरणा का स्रोत है । मेरा अभिप्राय है । वह सब स्थान पर व्यापक है और सबके अन्तरात्मा में मच रही हलचल को देख रहा है । मैंने उसकी कृपा से यह शक्ति प्राप्त की है कि जब मैं अन्तर्ध्यान होता हूं तो उस सर्वव्यापक के पूर्ण प्रांगण की सूचना मुझे मिलती रहती है । मुझे पता चला है कि तुम अपने दुहते के साथ यहां आयी हो और एक आत्मा को उन्नति के मार्ग से विचलित करने का यत्न करने वाली हो । मेरे मन में आया कि तुम्हें एक श्रेष्ठ

सम्मति दूं। इस कारण तुम्हें बुला भेजा है।


'देखो मां ! राधा को ले जाना चाहती हो तो ठीक है, परन्तु भगवान के जिस भक्त को तुम अपने घर में जाकर रखना चाहती हो उसके योग्य स्थान वहां बनाकर आना चाहिए था। उसके योग्य स्थान नहीं है। इस कारण मेरी सम्मति है कि राधा के योग्य अपने घर में स्थान बनाकर आओगी तो राधा निसंकोच तुम्हारे साथ चल पड़ेगी।'

'महाराज ! कैसा स्थान बनाना चाहिए ?'

'जो कुछ तुमने यहां देखा है और जो कुछ तुम्हारे घर पर हो रहा है, दोनों की तुलना कर स्वयं विचार करो कि दोनों में कुछ अन्तर है अथवा नहीं। यदि कुछ अन्तर दिखाई दे तो उसे मिटाकर आओगी तो राधा स्वयं दिल्ली चली आयेगी।'

'परन्तु महाराज ! यह कैसे कहते हैं कि वहां स्थान इसके अनुकूल नहीं है ?'

'मैं क्या जानूं। मैं तो तुम्हारे घर कभी गया नहीं। मैं वहां के किसी प्राणी के विषय में जानता नहीं। यह तुम्हारे अपने समझने-समझाने की बात है।'

'अब तुम जा सकती हो। मैं तो तुम लोगों को मार्ग दिखा सकता हूं। उस पर चलना तो तुमको स्वयं ही पड़ेगा।'

इतना कह स्वामी जी गंगातट से अपनी कुटिया की ओर लौट पड़े। सेठ रामलोक का परिवार भी स्वर्गाश्रम की ओर चल पड़ा। ब्रह्मानन्द आश्रम से सेठ जी की कुटिया पर पहुंचते हुए कृष्णा मन में विचार कर रही थी। यह अभी किसी निश्चय पर नहीं पहुंची थी कि कुटिया आ गयी। वहां पहुचते ही उसने सुमति को कहा, 'मैं अब ऋषिकेश पंजाब सिन्ध क्षेत्र को लौट रही हूं। जाते-जाते सायंकाल हो जायेगी। मैं कल पुनः आऊंगी और यदि इसने वहां जाने की कुछ शर्तें रखी तो वह सुनना चाहूंगी।'

कृष्णा गयी तो पुनः नहीं आयी। सेठ रामलोक भी स्वामी जी के कथन पर विचार करते रहे थे। राधा भी मन-ही-मन विचार कर रही थी कि यदि वह ससुराल जाये तो वहां क्या है जिसका वह तिरस्कार कर आयी है और जिसको वह वहां बदलना चाहती है।

परन्तु जब कृष्णा अगले दिन नहीं आयी और उसके उपरान्त जब दिन-भर व्यतीत होने लगा तथा वह नहीं आयी तो उसका विचार छोड़ अपने काम में लीन हो गये।

कृष्णा अगले दिन ही ऋषिकेश से हरिद्वार और हरिद्वार से दिल्ली जा पहुंची। इस प्रकार हरिद्वार से चलने के तीसरे दिन ही वह पुन: दिल्ली आ पहुंची।

दिल्ली गाड़ी प्रात: छ: बजे पहुंची थी और वह भाड़े के तांगे में सात बजे से पहले ही कोठी पर जा पहुंची।

कोठी में पिता पुत्र कचहरी के काम की तैयारी कर रहे थे। रमण की दृष्टि अपने कमरे से बाहर गयी तो उसने पत्नी को राम के साथ तांगे से उतर उसे भाड़ा देते देखा। भगवती चौकीदार सूटकेस और बिस्तर उठा कोठी के भीतर ले जा रहा था।

रमण अपना काम छोड़ बाहर आ गया और उसको राधा के बिना आते देख मुस्कुराते हुए कहने लगा, 'तो तुम भी मुकद्दमा हार कर आ गयी हो?'

कृष्णा ने पति के कथन का भाव समझ कह दिया, 'नहीं हारकर नहीं, अभी तारीख लेकर आयी हूं। इतने काल में कुछ यहां ठीक-ठाक करना चाहती हूँ?

यद्यपि कृष्णा ने उसकी उपमा को ही आगे बढ़ाया था, परन्तु उसमें दो बातें विलक्षण थीं। एक तो यह कि यहां कुछ ठीक-ठाक करना है पीछे ही अपील पर बहस करने जायेगी। वह विचार करता था कि यहां क्या ठीक-ठाक करना चाहती है?

दूसरी बात यह थी कि वहां उसकी पेशी किसके सामने उपस्थित हुई है? और यह ठीक-ठाक करने का राधा ने कहा है, अथवा उसके पिता ने।

इस कारण वह गम्भीर विचार में लीन कृष्णा के पीछे-पीछे कोठी के ड्राइंगरूम में चला गया।

कृष्णा ने बैठते ही घर की सेविका सुलेखी को कहा, 'चाय बना लाओ।' सुलेखी गयी तो उसने वहां जो कुछ देखा सुना था सब बता दिया। साथ ही उसने कहा—

'मैं उसे ही यहां ठीक करना चाहती हू। ऐसा करके मैं

राधा को लेने जाऊंगी। वह अभी तक श्रवण को अपना पति मानती है। परन्तु ऐसे पति को स्वीकार नहीं कर सकती जो बाजारू औरतों को अपने कमरे में बुलाता रहता है।'

प्रातः का अल्पाहार लेते हुए श्रवण कुमार ने मां से पूछ लिया, 'मां कितना कुछ व्यय कर आयी हो ?'

'कुछ अधिक नहीं। कुछ पंजाब सिंध क्षेत्र में दान देना उचित समझा है। सब एक सौ रुपये से कम ही व्यय हुआ है।'

'व्यर्थ खर्च किया है।'

'और जो रात क्लब से साथ आयी थी उसे क्या दिया है ?'

श्रवण हंस पड़ा और हंसते हुए बोला, 'यह राधा के अभाव के कारण हीं है।'

'मैंने यह नहीं पूछा। वैसे तो मैं भी एक सौ के लगभग व्यय कर आयी हूं वह राधा के अभाव के कारण ही किया है। मैं तो यह पूछ रही हूं कि उसको क्या दिया है ?'

'मां ! कुछ अधिक नहीं। पचास रुपये उसे दिये थे और रात क्लब में खाने पर साठ रुपये व्यय किये थे। परन्तु मां ! तुम्हें तो ऋषिकेश जाने में कष्ट हुआ है और मुझे एक सौ रुपये खर्च करने से सुख मिला है।'

'सुखी तो राधा भी प्रतीत होती थी। वह कह रही थी कि उसके भोजनादि का मासिक खर्च बीस रुपये से कम ही बैठता है। इससे वह बहुत प्रसन्न थी।'

'और मां ! यहां घर पर प्रति-प्राणी मासिक व्यय क्या करती हो ?'

'कोठी का खर्चा न गिनूं तो खाने-पीने में लगभग दस-पन्द्रह रुपये प्रति व्यक्ति बैठता है।'

'और वह इसी कारण यहां नहीं आयी।'

'नहीं। वह उस एक रात में सौ रुपये ले जाने वालियों के कारण नहीं आयी।'

'तो तुमने उसे बताया था कि यहां कोई आता है ?'

'मैंने कुछ नहीं बताया। इस पर भी उसे यहां की दुर्गन्धि का ज्ञान है।'

'दुर्गन्धि का अथवा सुगन्धि का। कदाचित् वह सुगन्धि और दुर्गन्धि में अन्तर नहीं जानती।'

कृष्णा पुत्र की बात सुनकर चुप कर गयी।

सायंकाल रमण कुमार ने पत्नी को बताया कि रात भोजन पर भूषण और नंदिनी आ रहे हैं। इससे कृष्णा को सुख अनुभव हुआ।

रात सात बजे भूषण और नंदिनी आये तो वे भी घर की गोष्ठी में बैठ गये। रमण और श्रवण सायं भ्रमण पर नहीं गये।

कृष्णा ने ऋषिकेश की सब अवस्था वर्णन कर दी। उसने स्वामी ब्रह्मानन्द के प्रवचन का भी वर्णन किया और उपासना गृह के बाहर लगे पत्थर का भी वृत्तान्त बताया।

भूषण के मस्तिष्क पर इस विवरण का प्रभाव हुआ। उसने कह दिया, 'मैं दफ्तर से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर स्वयं जाकर देखना चाहता हूं।'

'ठीक है, 'श्रवण कुमार ने कह दिया, 'आप भी सौ-दो सौ रुपये फूंक देंगे तो बात पता चलेगी।'

'क्या बात पता चलेगी ?'

'यही कि सेठ रामलोक कितना बड़ा 'फ्राड' है।'

'क्या फ्राड किया है उसने ?' नंदिनी ने पूछ लिया।

'राधा के विवाह पर वह मुझे अपनी पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाने का वचन दे मुकर गया है।'

नंदिनी हस पड़ी। हंसते हुए बोली, 'भैया ! मैंने आपके जीजा जी की शराब छुड़ा दी। जब से इन्होंने शराब छोड़ी है।' इनकी बुद्धि सजग हो गयी है। इसी से मैं कहती हूं कि तुम भी शराब का सेवन छोड़ोगे तो भाभी घर पर आयेगी।'

श्रवण और रमण दोनों हंसने लगे। बात रमण ने ही की, 'और नंदिनी ! अपनी भाभी को पत्र में लिखोगी कि भैया ने शराब छोड़ दी है और फिर राधा भाभी भैया के सोने के कमरे में आ जायेगी।'

सब हंसने लगे। नंदिनी ने हंसते हुए कहा, 'मैं क्यों लिखूंगी ? उसे तो वह ही बता देगा जिसने उसको यह बताया कि भैया यहां आवारा औरतों की संगत में रहता है।'

'मैं समझता हूं कि वह स्वामी भी एक 'फ्राड' है।' श्रवण ने कह दिया।

'बस यही देखने तो मैं वहां जाना चाहता हूं। मेरे मन में

कुछ है जिसकी मैं जांच करना चाहता हूं।'



'और आपके मन में क्या है ?'

'वह किसी को नहीं बताऊंगा, जिससे उसे यहां से कोई पत्र में लिख न दे।'

अब श्रवण कुमार ने पूछा, 'और कब जाओगे ?'

'अगले मास क्रिसम्स की छुट्टियों में। मेरे दिल में एक बात है। वह मैं उस साधु बाबा से पूछना चाहता हूं।

'तब ठीक है, हमें चुपचाप क्रिसमस की छुट्टियों की प्रतीक्षा करनी चाहिये।'

भूषण ने कहा, 'उसकी परीक्षा का एक ढंग है। एक दिन एक ज्योतिषी से मेरी बहस हो गयी थी। मैंने उसे यह कहा था कि उसकी विद्या छलना है, तो उसने एक ढंग बताया था। वह यह कि उसने कहा था कि मैं दूसरे कमरे में जाकर कुछ प्रश्न लिखकर लिफाफे में बंद कर अपनी मुहर लगाकर यहां उसके सामने रख दूं और यदि वह उस प्रश्न और उसके उत्तर को बता दे तब तो उसकी विद्या को छलना नहीं कहा जा सकता।

'मैं मान गया। मैंने उसे कहा कि यदि वह इस बात को समझने में सफल हुआ तो मैं उसे भरपूर इनाम दूंगा।'

'मैं अपने कमरे में गया। वहां मैंने कुछ लिखा, और उसे लिफाफे में बंद कर, उस पर मैंने अपने कार्यालय की सील लगा दी। वह लिफाफा मैंने ज्योतिषी के सामने रख दिया। वह हाथ में घड़ी ले समय देख रहा था। उसने वर्ष दिन, पल, घड़ी और क्षण एक कागज पर लिखकर गणना आरम्भ कर दी।

गणना करने के उपरान्त उसने भी एक कागज लिया और उस पर लिखकर कहा, 'आपने यह पूछा है कि आपके घर अगला बच्चा लड़का होगा अथवा लड़की, यह तो प्रश्न है। इसका उत्तर मैं कागज पर लिखकर लिफाफे में रख देता हूं और वह तब ही खोल कर देखा जाये, जब बच्चा हो जाये।'

इस प्रकार वह कागज पर लिख लिफाफे में बंद कर नंदिनी को दे गया। उसके मेरे प्रश्न को ठीक बताने पर प्रसन्न हो उसे एक सौ एक रुपया देना चाहा। उसने कहा, 'उसकी गणना करने

की फीस केवल पांच रुपये है । वह मुझे दे दीजिये । शेष मैं नहीं लूंगा ।'

'मैंने पूछा, 'क्यों ?'

'उसने कहा, मैं भिखारी नहीं हूं । नहीं मैं बाजीगर हूं, जो अपने करतब का इनाम लेता हूं । मैं अपने परिश्रम से अधिक कभी स्वीकार नहीं करता ।'

'इस पर नंदिनी ने कहा, 'आप तब आइयेगा जब आपके पत्र को खोलकर देखने का समय होगा । तब हम दक्षिणा देंगे और मैं देखूंगी कि आप दक्षिणा को कैसे इनकार कर सकते हैं ।'

'नंदिनी के दूसरे लड़के के चालीस दिन होने पर ज्योतिषी स्वयं आया और मुझसे बोला, 'यदि आपने मेरा पत्र नहीं खोला तो मैं चाहता हूं कि अब खोलकर पढ़िये ।'

'मैंने नंदिनी से कहा तो वह उस पत्र को अपने भूषणों के डिब्बे में से निकाल कर ले आयी । उस पर लिखा था, 'कमल समान प्रफुल्लित पुत्र होगा ।'

'मैं उसके लिखे पर चकित रह गया । उसने इस लिखे की भी फीस पांच रुपये ही ली और कहा, बाबू साहब ! शराब पीनी बंद कर दो । इससे बुद्धि में विकास होगा और आपको ज्योतिषी विद्या की सत्यता प्रतीत होने लगेगी ।'

'अब स्वामी ब्रह्मानन्द जी के विषय में भी कुछ वैसी ही परीक्षा करना चाहता हूं ।'

'क्या लिखकर रखना चाहते हो ?'

'यह यहां कह दूंगा तो अगले दिन श्रवण भैया बात क्लब में कह देंगे और फिर वहां से कोई ऋषिकेश में स्वामी जी को लिख देगा । मुझे संदेह हो रहा है कि क्लब में कोई है जो जान-बूझ कर अथवा अनजाने में दिल्ली के समाचार वहां पहुंचता रहता है ।'

श्रवण कुमार हंस पड़ा और हंस कर बोला, 'जीजा जी ! आप समझते हैं कि वह स्वामी का बच्चा मिस सरोज अथवा उस जैसी किसी से सम्बन्ध रखता है ?'

'इस विषय में मैं क्या बता सकता हूं !' भूषण ने कहा, 'मैं न तो क्लब का सदस्य हूं, न ही कभी वहां गया हूं । इस कारण वहां के किसी प्राणी की बात मैं नहीं जानता, परन्तु श्रवण की बात

जानता हूं कि इसने मद्य के नशे में वहां की बात किसी से की होगी और फिर वहां का कोई मद्य नशे में बकने लगा होगा।

'इस कारण मैं कुछ नहीं बताऊंगा। हां, यदि पिताजी कहें तो लिखकर बंद लिफाफे में इनके पास जमा करा सकता हूं, जिससे मेरे वहां से लौटने पर ही बतायें कि उस पर मैंने क्या लिखकर इनके पास रखा है।'

रमण इस परीक्षा को रुचिकर समझता था। उसने कहा, 'भूषण! मेरे कार्यालय में जाकर अपना प्रश्न लिखकर लिफाफे में बंद कर नंदिनी की मां के पास रख दो। इससे तुम्हारे मन और स्वामी जी की विद्या की परीक्षा हो जायेगी।'

भूषण उसी समय उठा और वकील साहब के दफ्तर में जा अपना प्रश्न लिखकर लिफाफे में बंद कर उस पर मुहर लगा ले आया। उसने लिफाफा मां को देते हुए कहा, 'माताजी! इसे सुरक्षित रखें। यह किसी को मत बतायें। मैं यहां से छब्बीस दिसम्बर को जाऊंगा और हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मंसूरी होता हुआ दो जनवरी को लौटूंगा। उसी दिन सायंकाल मैं यहां स्वामी जी का उत्तर लेकर आऊंगा।'

जब कृष्णा भूषण के लिफाफे को अपनी निजोरी में बन्द कर आयी तो श्रवण ने कहा, 'मां! वह पत्र वहां उस छली के पास मत भेज देना।'

कृष्णा को श्रवण के व्यवहार पर क्रोध आ गया। उसने कहा, 'तुम अपनी मां को फरेबी और छलना मानते हो।'

नंदिनी ने आगे कहा, 'भैया ऐसे नहीं थे। तब से ही हीन बुद्धि हुए हैं जब से क्लब जाने लगे।'

'पर नंदिनी!' श्रवण कुमार ने कहा, 'मैं जब से क्लब में जाने लगा हूं और शराब लेने लगा हूं, मेरी प्रेक्टिस उन्नति करने लगी है।'

'यह उन्नति इसलिये हो रही है कि मैजिस्ट्रेट और जज भी मद्य का सेवन करते होंगे और तुम्हारे समान ही बुद्धि रखते होंगे।'

'परन्तु उनका निर्णय तो ठीक ही होता है।'

'और आप समझते हैं कि सब मुकद्दमों में सत्य की ही जीत होती है?'

श्रवण विचार करने लगा कि उसके जिन मुकदमों में हार हुई है वे क्या झूठे थे ?'

इस पर भूषण ने कह दिया, 'परन्तु श्रवण के विषय में विख्यात है कि यह झूठे मुकद्मे ही लेता है। इसी कारण इसे फीस दूसरे वकीलों से अधिक मिलती है।'

इस पर श्रवण हंस पड़ा। और बोला, भूषण जी भी नजूमी हो गये हैं।'

'नहीं श्रवण! यह तुम्हारी ख्याति बहुत विस्तार पा रही है।'

## आठ

उस दिन घर पहुंचे तो नंदिनी ने पति से पूछ लिया, 'तो सत्य ही आप ऋषिकेश जा रहे हैं ?'

'मैं उस साधु बाबा की बात सुन चकित रह गया हूं। विशेष रूप में उसका माता जी के विषय में यह जान लेना कि वह राधा को दिल्ली लाने के लिये वहां पहुंची है और जब तक यहां का घर शुद्ध पवित्र नहीं कर लेती राधा दिल्ली आएगी नहीं।'

'मुझे तो,' नंदिनी ने कहा, 'राधा का यह व्यवहार बहुत पसंद आया है कि उसने उपासना गृह पर पत्थर पर अपने को भैया की पत्नी लिखाया है। यदि मैं उसके स्थान पर होती तो वर्तमान स्थिति में अपना नाम बिना पति के लिखाती। उस लेख से दो बातें प्रकट होती हैं कि वह और उसका पिता मानते हैं कि सेठ जी की पूर्ण सम्पति जो राधा के विवाह के समय थी वह उन्होंने लड़की को दे रखी है। उसमें से पांच लाख के लगभग तो वह राधा की रुचि के अनुकूल ही व्यय कर चुके हैं और शेष को भी वह देने के लिये तैयार हैं।'

'हां, परन्तु श्रवण चाहता था कि वह रुपया उसे नकद मिल जाता और वह क्लब की पेशेवर औरतों पर व्यय कर देता।'

क्रिसमस की छुट्टियां आयीं तो भूषण, नंदिनी और उसके दोनों लड़के राम तथा सुरेश हरिद्वार के लिये तैयार हो गये। उनको स्टेशन पर छोड़ने रमण, कृष्णा और श्रवण भी गये थे।

[illegible] में [illegible] आश्रम में ठहरा। वहां उसने नाम तथा पता भी गलत लिखाया। वह अपनी सूचना ब्रह्मानंद आश्रम में अपने से पहले जाने देना नहीं चाहता था।

उसने सेठ जी की कुटिया में भी अपने आने की सूचना नहीं दी। नहा-धोकर और खा-पीकर पोने दो बजे स्वामी ब्रह्मानंद के आश्रम पर पहुंच गया और उपासना गृह में जा बैठा। उस दिन उपासना में सेठ जी के घर से कोई नहीं आया था। यह देख भूषण प्रसन्न था। अब वह विचार करने लगा था कि स्वामी जी से पृथक् में भेंट किस प्रकार प्राप्त करे। वह अपना सम्बन्ध सेठ रामलोक से बताना नहीं चाहता था।

उस दिन उपदेश हुआ इस विषय पर कि अंग्रेजी शासक से क्या दोष हिन्दू समाज में आ रहे हैं। दस-पंद्रह मिनट में ही स्वामी जी ने मूल की बात बता दी। उन्होंने कहा, 'अंग्रेजी पढ़े, लिखे विशेष रूप में वे जो सरकारी नौकरिया पा जाते हैं, अब अपने वस्त्र जो यहां भारत की जलवायु के अनुकूल भी नहीं हैं, पहनने लगे हैं। मैं इसे भी इतना बुरा नहीं मानता परन्तु मनुष्य की विशेषता वस्त्र और शरीर की साज सज्जा से नहीं है। मनुष्य की विशेषता उसके मन, बुद्धि तथा आतमा में है। इनसे सम्बन्ध रखने वाली बातों में भी अंतर आ रहा है। मन ज्ञान संचय का स्थान है। स्कूलों कोलिजों में पढ़े शिक्षित लोग अपनी हिन्दू मीमांसा को भूल रहे हैं। हिन्दू जीवन-मीमांसा और पाश्चात्य जीवन मीमांसा में बहुत अन्तर है। रात को देर से सोना तथा प्रातःकाल देर से उठना यह पाश्चात्य सभ्यता का अंग है और इसका दुष्प्रभाव बुद्धि पर पडता है।

पाश्चात्य ढग की शिक्षा यह बताती है कि अपने देश का इतिहास चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के काल से ही आरम्भ होता है। उससे पूर्व भारत में अंधकार था, भारत देश के इतिहास का जो उज्जवल काल है उसे अंधकार का काल मानना यह हमें पढ़ाया जा रहा है। इस प्रकार हम अपने पूर्वजों को मूर्ख मानने लगे हैं।

'मज़हबों को व्यक्तिगत बात न समझ, इसे परस्पर झगड़े का विषय समझना, यह दूषित बात भी हमने अंग्रेजों से सीखी है। प्राचीन काल में गुरु शिष्य में और पिता पुत्र में विचारों में

मतभेद हो सकता था, परन्तु यह निजी व्यवहार में विद्वेष उत्पन्न

नहीं करता था।

हमारे प्राचीन साहित्य में वेद की भारीं महिमा गायी गयी है। अंग्रेजी स्कूल-कालिजों में वेदों को गड़रियों के गीत कहकर उनकी निन्दा की जाती है।

जीवन के उद्देश्यों में भी अंग्रेजी शिक्षा से अन्तर आया है। हम आत्मोन्नति को एक काल्पनिक बात मानते हैं और शरीर को सुन्दर सुदृढ़ बनाकर ही जीवन का लक्ष्य बना रहे हैं।

उपासना के उपरान्त अब भूषण उपासना गृह के द्वार पर लगा पत्थर पढ़ रहा था और नंदिनी तथा बच्चे उस भीड़-भाड़ को देख चकित हो रहे थे तो सर्वदानंद भूषण के समीप आ बोला, 'स्वामी जी आपसे मिलना चाहते हैं।'

'कौन स्वामी ?' भूषण का प्रश्न था।

सर्वदानंद ने मुस्कुराते हुए कहा, 'आश्रम के अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानंद।'

'किसके पास आये हैं ? मैं कौन हूं ?'

'आप दिल्ली से आए हैं न ?'

'कहां मिलेंगे ?'

'आइये, मैं आपको वहां ले चलता हूं।'

विवशता प्रकट करते हुए और मन से इस भेंट से प्रसन्न होते हुए भूषण सर्वदानंद के साथ चल पड़ा।

गंगा तट पर स्वामी जी अपनी निश्चित शिला पर बैठे थे। भूषण ने स्वामी को नमस्कार कर पूछा, 'महाराज ! आज्ञा करिये।'

स्वामी जी ने एक क्षण भूषण के मुख पर देखा और फिर कहा, 'आज्ञा नहीं, वह एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को करने का अधिकार नही रखता। हां, कुछ सीखने, की बात कहता है। मानना न मानना आपके अधिकार में है।

'देखो बाबू साहब ! आप यहां मेरी परीक्षा लेने आये हैं न ?'

'परन्तु महाराज ! मेरे आने की सूचना आपको किसने दी है ?'

'जिसने तुम्हारे मन में यहां आने की प्रेरणा दी है। देखो,

मैं बताता हूं कि तुम कुछ जानने के लिये यहां आये हो। इस विषय को तुम अपनी पत्नी की मां के पास कुछ लिख कर रख आए हो। तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूं। यदि मैं भी उसी प्रकार उत्तर दूं जिस प्रकार तुम पूछ रहे हो तो कैसा अनुभव करोगे ?'

'महाराज ! मैं समझा नहीं।'

'इसमें कुछ न समझने की क्या बात है? तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते हो और वह तुम एक बंद लिफाफे में अपनी सास के पास रख आये हो। मैं उस प्रश्न का उत्तर भी एक बंद लिफाफे में तुम्हें दे रहा हूं। तुम उसको दिल्ली जाकर उसी प्रश्न से मिला लेना। मैं समझता हूं कि यह ढंग ठीक रहेगा।'

भूषण इतनी स्पष्टता से बात सुन स्वामी जी का मुख देखता रह गया। इस पर स्वामी ब्रह्मानंद ने अपने अंगरखे के भीतर की जेब से एक बंद लिफाफा निकाल कर भूषण के सामने रखकर कहा, 'इसमें तुम्हारे प्रश्न की प्रतिलिपि है। इसको तो तुम दिल्ली जाकर दोनों को मिला कर देखना। हां, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं देता हूं।

'हम सन्यासी लोग भी शहरों की उपज ही हैं। मैं दक्षिण के नगर का रहने वाला हूं। मेरे पिता जी ने मुझे कुछ योग क्रियायें सिखायी थीं। उनके बले पर मैं गृहस्थ जीवन में नहीं गया और अब तक इस सन्यास मार्ग का अवलंम्बन करता आ रहा हूं।

'मेरी वय्स इस समय एक सौ दस वर्ष है। दो वर्ष हुए मेरे मन में भी वही विचार आया है जो तुम्हारे मन में आया है। मैंने उसका उत्तर अपने उपासना के प्रवचन में दे दिया है। वह काम मैं सेठ रामलोक और उनके कुछ साथियों पर छोड़ रहा हूं।'

'मेरा यह कहना है कि हममें अर्थात सन्यासियों में अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति हैं। यह तो भाग्य की बात है कि मैं इतने लम्बे काल का जीवन भोग रहा हूं और अब मैंने उस जीवन के अनुभवों के प्रयोग का संकल्प किया है। उसमें सेठ रामलोक तथा उन जैसे कुछ अन्य सज्जन मिल गये हैं और मेरी विचार की हुई योजना चलने लगी है। शेष तुम्हारे प्रश्न का उत्तर उपासना में ही दिया जा चुका है।'

[illegible] सेठ जी की लड़की राधा को समझाकर दिल्ली उसके पति के घर में ले जाना है। उसमें भी हम आपसे राय करना चाहेंगे।'

'नहीं, वह मेरी राय से यहां नहीं आयी। यहां आने से पहले उसके पति ने उसे घर से निकाल दिया था। यह तो ईश्वरीय संयोग है कि वह यहां आ गयी है, जिससे भविष्य में मनुष्य जाति का भारी कल्याण हो सकता है।'

'परन्तु महाराज ! मुझे यह सब गोरख-धंधा समझ नहीं आ रहा।'

'तो कुछ दिन यहां ठहर जाओ। धीरे-धीरे बात समझ में आने लगेगी।'

'मुझे अपने कार्यालय से केवल सात दिन की छुट्टी मिली है। और अब दूसरी जनवरी को मुझे काम पर हाजिर होना है।'

'तो ऐसा करो। यदि कुछ छुट्टी तुम्हारी जमा है तो लम्बी छुट्टी लेकर यहां आ जाओ और तब तुम यहां की गतिविधि देखने से समझ सकोगे कि यहां का कार्य कैसे चल रहा है।'

'परन्तु आप कहते हैं कि आपकी वय्स एक सौ दस वर्ष की है। इतनी देर तक आप कहां भटकते रहे हैं?'

'अपने में सामर्थ्य बटोर रहा था। आज से तीन वर्ष पहले अपने में इस सामर्थ्य का ज्ञान हुआ। अतः उस सामर्थ्य के प्रयोग पर विचार करना आरम्भ किया। उसमें पहला पग यहां अपना केन्द्र बनाना उचित जान पड़ा। अतः इस आश्रम की कल्पना बनते ही उस संचित सामर्थ्य से सहयोगी निर्माण किये और इस समय ट्रस्ट के पास इन भवनों के अतिरिक्त अपनी शिक्षा कार्य चलाने के लिये चालीस लाख रुपये है। धनवान सुदृढ़ हाथ सहायक भी मिल गये हैं और कार्य चल रहा है।

'देखो बाबू साहब। आप यहां ठहरिये। स्वर्ग आश्रम की धर्मशाला में स्थान मिल जायेगा। सेठ जी से कहेंगे तो वे कुछ प्रबंध कर देंगे।'

'महाराज ! अभी तो मैं कैलाश आश्रम में ठहरा हुआ हूं।'

स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'और वहां झूठा नाम पता लिखाकर आये हो। यह तो पाप किया है। इसका निराकरण यही है कि वहां से चले आओ। और सेठ जी को कहकर यहीं ठहरने

का प्रबंध करो और अपना ठीक ठीक नाम लिखाओ।

भूषण देव मुख देखता रह गया। एकाएक स्वामी जी उठ खड़े हुए और बोले, 'अब तुम जा सकते हो। यदि कल यहां उपासना में आये तो शेष बातचीत हो सकेगी।'

स्वामी जी अपनी कुटिया को चल दिये। भूषण उनको जाते देखता रह गया। कुछ विचार करता हुआ वह नंदिनी और बच्चों के साथ आश्रम से बाहर को चल पड़ा।

आश्रम से निकलते ही भूषण ने अपनी पत्नी से पूछा, 'अब···?'

'राधा का निवास स्थान ढूंढना चाहिये।'

'अब तीन बज रहे हैं। वापिस ऋषिकेश चलते हैं।'

'वह देख लेंगे। राधा को मिले बिना जाने का चित्त नहीं करता।'

'तो ठीक है चलो। माता जी कहती थीं कि उसकी कुटिया आश्रम के पिछवाड़े में है।'

वे स्वर्गाश्रम में पहुंचे तो सबसे पहले हलवाई की दुकान पर चले गये। वहां चाय, बिस्कुट तथा मिठाई मिल गयी। चारों ने गुलाब-जामुन लेकर खाये और चाय पी। वे खा-पीकर दुकान से बाहर निकले ही थे कि सेठ जी और उनके परिवार के अन्य व्यक्ति खड़े उनकी ओर मुस्कराते हुए दिखाई दिये।

भूषण ने हाथ जोड़ नमस्ते कही तो सेठ जी ने पूछ लिया; 'आप कब आये हैं?'

'हम आज ही ऋषिकेश में पहुंचे हैं। वहां स्नानादि करने में देर हो गई थी, और हम सीधा उपासना में चले गये थे। हमारा विचार था कि वहाँ आपके दर्शन होंगे।'

सेठ जी ने कहा, 'हम स्वामी जी की उपासना में बहुत कम जाते हैं। मुझे तो नित्य ट्रस्ट के कार्यालय का काम देखने जाना पड़ता है। सप्ताह में एक आध बार स्वामी जी से योग की सरल क्रियायें सीखता हूँ।

'कार्यालय से मैं ग्यारह बजे के लगभग लौटता हूं। वहां एक कुशल सहायक मिल गया है। दिन-भर का काम वह करता है।'

'कौन है वह?'

'एक सर्वदानन्द है। आपको भली भांति जानता है। वह

दिल्ली का संतोषकुमार ही है।'


'ओह ! सब समझ गया हूं। एक सन्यासी हमको स्वामी जी के कहने पर बुलाने आया था। नाम तो हमने पूछा नहीं, परन्तु अब आपके बताने से समझ में आने लगा है।'

'अब किधर जा रहे हैं ?"

'हम अब आपके निवास स्थान को ढढ़ने चल रहे थे। राधा से मिलना है।'

'तो आइए। यदि आपने वहां जाना था तो यहां पेट भरने नहीं बठ जाना था। दिल्ली का सेठ अपनी पूर्ण सम्पत्ति का संकल्प कर भी इतना दाम रखता है कि आपकी सेवा कर सके।'

'हमने पेट नहीं भरा।' नन्दिनी ने कह दिया। वह राधा की बांह में बांह डालकर खड़े दोनों पुरुषों में बात सुन रही थी। उसने कहा, 'कुछ थोड़ा गला गीला किया है जिससे आपके यहां खाने में कष्ट न हो।'

सब हंसने लगे। उत्तर सेठ जी ने ही दिया। उन्होंने कहा, 'तब ठीक है।'

## नौ

देर हो जाने के कारण भूषण नन्दिनी इत्यादि सेठ जी की कुटिया में रात को रह गए। दिल्ली, आश्रम तथा स्वामी जी की वयस् इत्यादि अनेकानेक विषयों पर बातें होती रहीं। परन्तु नन्दिनी ने राधा को दिल्ली चलने के विषय में नहीं कहा।

अगले दिन प्रातःकाल स्नानादि के उपरान्त अल्पाहार ले सेठ जी आश्रम के कार्यालय को चले गए। भूषण स्वर्गाश्रम में पुस्तकें बेचने के स्थान पर जा पहुंचा। पीछे रह गए नन्दिनी और राधा। सुमति इत्यादि स्वर्गाश्रम में कथा सुनने चली गई थीं।

नन्दिनी ने पूछ लिया, 'तुम्हारा दिल्ली चलने को चित्त नहीं करता ?'

राधा का सतर्क उत्तर था, 'करता तो है, परन्तु विष्णु के पिता के घर जाने को नहीं करता।'

'क्यों ?' नन्दिनी का प्रश्न था।


'आपको यहां आए और मुझे देखे बारह घण्टे ही हुए हैं। इसमें और वहां के जीवन में कुछ अन्तर दिखाई दिया है आपको ?'

नन्दिनी प्रश्न का अभिप्राय समझ गई थी, परन्तु अपने मुख से कुछ कहने के स्थान राधा के मुख से ही जानना चाहती थी। इस कारण पूछने लगी, 'क्या अन्तर है ? खाना-पीना, सोना ही तो देखा है। यह वहां भी होता था।'

'और सोने पर एक पति की सेवा भी करनी पड़ती थी। विष्णु के पेट में आने के समय वह ऐसी सेवा दूसरों से लेने लगे थे।

'तदन्तर पुनः सेवा ली जाने लगी। परन्तु एक दुर्गन्धित पदार्थ पिए होने के कारण सेवा कार्य दुर्गन्ध युक्त ही था। मैंने आपके भैया को कहा भी था कि वह दुर्गन्धित पदार्थ किसलिए पीते हैं ?'

'वह कहने लगे, 'तुम्हारी संगत को अधिक रसयुक्त बनाने के लिए।'

'मैंने कहा, 'मुझे कष्ट होता है।'

'इस पर वह बोले, 'तुम्हारी बुद्धि में विकार उत्पन्न हो गया है।'

'मैं चुप रही परन्तु मैं अनुभव करती रही कि वह मेरी बुद्धि में विकार नहीं था, वरन् आपके भाई साहब की बुद्धि में विकार था।

'इस पर भी वह मैं सहन कर लेती थी। मैंने सहन करने का स्वभाव बना लिया था। परन्तु इस नए जीव के पेट में आते ही उनके मन में लोभ का उद्भव होने लग गया। उनको इस नए का बोझ असह्य होने लगा और कहने लगे कि इसके खर्च के लिए सेठ जी को कहना चाहिए। उनके कहने का अभिप्राय मैं यह समझती थी कि जैसे विष्णु के लिए पिता जी ने एक कोठी बनवा दी है, वैसे ही पिता जी इसके लिए भी कुछ वैसा ही प्रबंध करें।

'मेरा कहना था कि विष्णु के समय मैंने पिता जी से कुछ मांगा नहीं था। उन्होंने स्वयमेव दिया था, इसी प्रकार इसके

लिया मैं कुछ कहूंगी नहीं।'


इस पर वह उद्विग्न हो बोले, 'मैं उनके संकल्प को कार्यान्वित करने की बात ही कह रहा हूं।' उन्होंने कहा था कि मैं उनकी पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी रहूंगा।'

मैंने कहा, 'मुझे ज्ञात नहीं। मुझे यह बात कभी बताई नहीं गई। बताई गई होती तो कदाचित् मैं यहां न आती।'

'इस पर वह भड़क उठे और बोले, 'तो अब वापस जा सकती हो।'

'मैंने कह दिया, 'जैसे वहां से लाए थे उसी प्रकार छोड़ आइए। परन्तु मैं पिता जी को मेरे यहां आने का मूल्य चुकाने को नहीं कहूंगी।'

इस पर वह बोले, 'यह तुम्हारा मूल्य नहीं। यह तो मेरा मूल्य देने की बात थी।'

मेरा यह कहना था, एक ही बात है। मेरा मूल्य अथवा आपका मूल्य। इसमें अन्तर नहीं पड़ता है। यह हमारे सहवास का मूल्य ही है। यह अब नहीं होगा।'

इसका परिणाम यह हुआ कि मुझे एक दिन पिता जी के पास ले गए। मार्ग में ही उन्होंने कह दिया था कि यदि फिर उनके घर आना है तो पिता की पूर्ण सम्पत्ति का हिब्बेनामा लेकर आऊं।'

'बस यह अन्तिम बात उनकी है। मेरा विचार तो नहीं था कि माता-पिता को कुछ बताऊं। परन्तु उनके घर रहने के लिए और वह भी विष्णु के बिना यह बताना पड़ा और मैंने माता जी को पूर्ण बात कह दी।

पिता जी ने उसी मध्याह्न के भोजन के समय बताया कि उन्होंने आपके भाई साहब को उत्तराधिकारी माना था, परन्तु उत्तराधिकारी मरने के उपरान्त होता है, न कि मरने से पूर्व। इस पर भी पिता जी ने कहा था कि यदि मैं चाहूं तो वह हिब्बा नहीं वरन् पूर्ण सम्पत्ति ही आपके भाई साहब को दे सकते हैं।

मैंने इस पूर्ण व्यापार को अत्यन्त घृणित समझा। मैंने कह दिया मैं अपना मूल्य यह सब नहीं समझती। यदि पिता जी ने ऐसे कुछ किया तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। मैं इस सौदे में अपने को नहीं रख सकती। बस तब से मैं पिता जी के घर में हूं।'

'परन्तु तुम,' नन्दिनी का प्रश्न था, 'अपने को उनकी पत्नी तो मानती हो। यह उपासना-गृह के बाहर लगे पत्थर से स्पष्ट होता है।'

'वह तो वेद मन्त्रों से दिए वचन का प्रतीक है। साथ ही पिता जी ने कहा कि जो कुछ आपके भाई को देने की बात थी, वास्तव में वह मुझे देने के लिए थी। मैं उसे चाहूं तो आपके भाई को दे सकती हूं।'

'मैं उसका अधिकारी आपके भाई को नहीं मानती, इस कारण मैंने उसे पूर्ण सम्पत्ति को धर्मार्थ दे देने का संकल्प कर लिया है। उसकी एक किश्त ही यहां दी है। अब इस लड़के के नामकरण पर दूसरी किश्त देने का विचार कर रही हूं।'

'इसका कब नाम रखोगी?'

'जब यह सवा साल का होगा। मैं इसके कुछ गुणों का अनुमान लगा इसका नाम रखूंगी।'

'परन्तु स्वामी जी कहते हैं कि इसका आत्मा अति उन्नत है।'

'हां, मुझे भी उन्होंने कहा है। वह पूर्व जन्म का अति श्रेष्ठ आत्मा है। परन्तु इस जन्म में वैसा न हो यह भी सम्भव है। यह तो कुछ लक्षण देखने पर ही पता चलेगा। इस कारण मेरा विचार है कि कम-से-कम सवा साल की वयस् होने पर नाम रखूंगी। यदि तब तक भी स्पष्ट लक्षण प्रतीत न हुए तो अढ़ाई वर्ष की आयु की प्रतीक्षा करूंगी।'

'तो अब दिल्ली चलने की योजना नहीं है।'

'इच्छा तो है परन्तु योजना नहीं है। योजना के पूर्व कुछ एक बातों पर विचार करना आवश्यक है।'

'कब तक विचार स्थिर कर सकोगी?'

'अभी तो इस दिशा में विचार आरम्भ भी नहीं किया। अभी तक यही निश्चय है कि मेरा मूल्य कोई नहीं लगा सकता। पिता जी ने इसका समाधान इस प्रकार किया है कि पूर्ण सम्पत्ति मेरे नाम संकल्प कर दी है।'

'दूसरी बात यह निश्चय की है कि दिल्ली में सिविल लाइंस वाली कोठी में मेरा स्थान नहीं है। उस स्थान पर कुछ अन्य का वास हो रहा है।

'वस अभी इतना ही विचार किया है। इस प्रकार मैं सोचती हूं कि दिल्ली चलूंगी तो वहां रहूंगी और फिर वहां रहती हुई क्या करूंगी ?'

'जो कुछ करना चाहूंगी उस पर भी विचार करना होगा।'

नन्दिनी राधा के जीवन का विश्लेषण सुन अति प्रसन्न थी। इस पर भी अपने मन की बात न कहते हुए वह बोली, 'उस योजना में विष्णु और उसके पिता का क्या स्थान होगा ?'

'मैंने विष्णु को यहां पर भेजने के लिये कहा था। उन्होंने मेरा निवेदन स्वीकार नहीं किया। इस कारण उसको अभी अपनी भविष्य चित्र के में स्थान नहीं दे सकती। रही विष्णु के पिता की बात। वह मैं धर्म से उनकी पत्नी हूं। इस कारण उससे इनकार नहीं कर सकती। परन्तु सब पत्नियां उस सेवा के लिये विवाही नहीं जा सकतीं, जिसकी लालसा आपके भाई साहब करते प्रतीत होते हैं। यह मैं धर्म-व्यवस्था को समझ निश्चय कर चुकी हूं कि उनकी भोग्या बन नहीं सकती। यहां बच्चों के पालन-पोषण तथा अन्य व्यवहारों में सहायक होने का विचार रखती हूं।'

घर के प्राणी अपने-अपने कार्य से लौट आये तो ननद भाभी में बात बंद हो गयी। सेठ जी ने बताया, 'आज मुझे और भूषण जी को उपासना में चलने का स्वामी जी का विशेष निमंत्रण है।'

'कुछ विशेष बात है ?' भूषण का प्रश्न था।

'उनके मन में कुछ बात अवश्य होगी। उन्होंने बतायी नहीं।'

भूषण ने अपने मन की बात कह दी, 'हम जब दिल्ली से चले थे तो हरिद्वार ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम, देहरादून, मंसूरी स्थानों पर घूमने का विचार कर चले थे। परन्तु नंदिनी कह रही है कि यह तो यहां ही छुट्टियां व्यतीत करेगी। इसने मुझे यह कह दिया है कि यदि मैं चाहूं तो बच्चों को लेकर जा सकता हूं। वह शेष छुट्टियों के दिन राधा के पास रहना चाहती है।

'इस कारण सेठ जी ! अब मैं भी यहीं रहने का विचार कर रहा हूं। यदि आप यत्न करें तो हमें एक कमरा यहां की धर्मशाला में मिल सकेगा।'

सेठ जी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'धर्मशाला में जाने की क्या आवश्यकता है। नंदिनी राधा के कमरे में सो जायेगी। बच्चे राधा की मां की देख-रेख में रहेंगे, और आप मेरे कमरे में सो

सकेंगे। राधा के बच्चे के लिये उसकी दादी के साथ एक कमरा पहले ही पृथक है।'

भूषण चाहता तो यही था, परन्तु वह चाहता था कि यह प्रस्ताव सेठ जी की ओर से हो। इस प्रकार वह अब निश्चिन्त हो छुट्टियां वहाँ ही व्यतीत करने का निश्चय कर बैठा।

मध्याह्नोत्तर पूर्ण परिवार उपासना में चला गया। स्वामी जी ने उस दिन देश की राजनीति के विषय में चर्चा कर दी। उन्होंने कहा, 'विदेशी चाहे बहुत ही भले विचार के हों परन्तु देश में रहने वालों पर शासन करते हुए वे न्याय नहीं कर सकते। इस कारण उनको स्वतः ही शासन त्याग देना चाहिये।

'परन्तु उनका स्वार्थ इसमें बाधक है। स्वार्थ कोई बुरी बात नहीं है। मनुष्य जीवन ही स्वार्थ सिद्धि के लिये है। परन्तु स्वार्थ की दिशा और सीमा है। दिशा यह है कि वह किसी दूसरे के स्वार्थ का हनन न करे और सीमा यह है कि स्वार्थ को आत्मसात् करने के लिये अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही इसका सेवन करना चाहिये।

'एक विख्यात अंग्रेजी लेखक ने एक कहानी कही है। किसी देश में बहुत-सी भूमि वीरान पड़ी थी। इस कारण वहां के राजा ने अपने देश और पड़ोस के देशों में घोषणा करा दी कि प्रत्येक व्यक्ति को उतनी भूमि बिना मूल्य के दी जायेगी जितनी वह पैदल एक दिन में चक्कर काट कर चल सकेगा। बहुत लोग आये और उस राज्य में अपनी-अपनी भूमि की उपज का भोग करने लगे। एक दिन एक लोभी मनुष्य वहां के प्रबन्धक के पास पहुंचा और भूमि मांगने लगा। राजा की शर्त उसको सुना दी गयी और वह अपने लिये भूमि का घेरा डालने पैदल चल पड़ा। प्रत्येक पग पर यह विचार करता था कि अभी और आगे चलना चाहिये। उसी प्रकार दिन का चला वह चलता ही गया। मध्याह्नोत्तर चक्कर पूरा करने के लिये लौटने का विचार किया तो उसे पता चला कि वह बहुत दूर निकल आया है। उसको सूर्यास्त से पूर्व प्रबन्धक के पास पहुंच जाना चाहिये। वह बहुत सी भूमि को अपने घेरे में लेता हुआ वापस आया। परन्तु सूर्यास्त होने वाला था और उसे बहुत मार्ग तय करना था। इस कारण वह भाग खड़ा हुआ। परिणाम यह हुआ कि जब वह वापस स्थान

पर पहुंचते ही अचेत हो गिर गया। वह घेरा पूरा करते ही दम तोड़ गया। उसने अपनी सामर्थ्य से अधिक समेटना चाहा था।

'इस कारण लोभ जो व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है उस पर ये दो सीमाएं होती हैं। ये सीमाएं यदि पालन की जायें तो लोभ पुण्य भी हो सकता है।

'यह पाप पुण्य उस लोभ से प्राप्त होने वाले उद्देश्य से विदित होता है। कोई लोभ से भला उद्देश्य सिद्ध करना चाहता है। वैसे तो यहां बैठे बन्धुओं से सबसे अधिक लोभी मैं हूं। मैं अपनी बीस वर्ष की वयस् से लोभ से प्रेरित जीवन व्यतीत कर रहा हूं। परन्तु अपनी बुद्धि से मैंने अपने लोभ की दिशा और सीमा का निश्चय किया है। दोनों बातों में मैं लोभ को ठीक दिशा में ले जाने का यत्न कर रहा हूं। मैं मोक्ष प्राप्ति का लोभी हूं। मैं किसी दूसरे के लोभ में हानि नहीं पहुंचाता।

'विदेशीय अपने अधीन देशों से प्राप्त होने वाले लोभ की न तो दिशा ठीक रख सकते हैं, न ही उस पर सीमा बांध सकते हैं। इस कारण विदेशीय राज्य किसी भी देश में वर्जित है।'

प्रवचन समाप्त हुआ और जब सेठ जी भूषण को लेकर उपासना गृह से बाहर लौटने लगे तो स्वामी सर्वदानन्द नमस्कार कर कहने लगा, 'स्वामी जी गंगातट पर आप सबकी प्रतीक्षा करेंगे।'

भूषण देव ने सर्वदानन्द के मुख पर ध्यान से देखकर कहा, 'तो तुम संतोष कुमार हो ?'

'बहुत जल्दी पहिचाना है। मैं वही हूं। आपने तो षड्यंत्र कर हवालात में डलवा दिया था और ऐसा फंसाया था कि सात वर्ष तक जेल में रहने का प्रबन्ध कर दिया था। परन्तु सेठ जी की कृपा का फल है कि यहां अति श्रेष्ठ और सुखी जीवन व्यतीत कर रहा हूं। मुझे यहां आये तीन वर्ष हो चुके हैं।'

सब गंगातट की ओर जा रहे थे और सर्वदानन्द भूषण देव को बता रहा था, 'मैं यहां अपने को अधिक भाग्यशाली तथा धनवान समझ रहा हूं।'

'कितना कुछ स्वामी जी का चुरा कर जमा कर लिया है।'

सर्वदानन्द हंस पड़ा। हंस कर उसने कहा, 'स्वामी जी से कुछ भी चोरी नहीं हो सकती। आपने भी चोरी से यहां आने की

योजना बनायी थी । परन्तु स्वामी जी को पता चल गया । और फिर कैलाश आश्रम में आपका रजिस्टर पर झूठा नाम देख स्वामी जी मुस्कराये थे ।'

सब गंगा तट पर जा पहुंचे और स्वामी जी के पत्थर के सम्मुख बैठ गये । स्वामी जी ने किसी के कुछ पूछने से पहले ही कहा, 'भूषण जी, मैंने आपको एक सूचना देने के लिये यहां बुलाया है ।

'वह यह कि आपके कार्यालय में आपके विरुद्ध एक षषयंत्र पक रहा है और षड्यंत्र का सरगना श्रवण कुमार ही है । इस कारण मैं चाहता हूं कि आप दिल्ली लौट जायें और अपने कार्यालय से कुछ लोग जो श्रवण के मित्र हैं और उसके कहने पर चल रहे हैं, उनसे बचाव का प्रवन्ध कर लें । मेरी शुभ कामना आपके साथ है ।'

इतना कह स्वामी जी उठ खड़े हुए और बोले, 'मेरा विचार है कि कार्यालय से कुछ लम्बी छुट्टी लेकर यहां चले आइये । आपका कल्याण होगा ।'

स्वामी जी गये तो सब एक-दूसरे का मुख देखते रह गये । भूषण ने कहा, 'हमारे विभाग का सचिव दिल्ली क्लब का एक सदस्य है । कदाचित् उसी की ओर स्वामी जी का संकेत है ।'

वापस लौटते हुए सेठ रामलोक ने पूछा, 'अब ?'

'मैं तुरन्त ही दिल्ली लौट रहा हूं । यत्न करूंगा कि कल वहां पहुंच जाऊं ।'

# तृतीय-परिच्छेद

श्रवण की मां जब ऋषिकेश से लौटकर आई थी और भूषण ने उनको अपना संकल्प ऋषिकेश जाने का बताया तो श्रवण के मन में यह संदेह उत्पन्न हो गया कि भूषण और राधा में किसी प्रकार की सांठ-गांठ है। वह पहले भी भूषण में राधा के लिये सहानुभूति देख चुका था। वह इसका प्रतिकार लेना चाहता था।

एक सांयकाल वह क्लब में गया तो उसके एक मित्र मुकुन्द-लाल ने एक सूचना दे दी। मुकुन्दलाल भूषण के कार्यालय में उसका सहयोगी था। उसने श्रवण को बताया, 'हमारे सचिव मिस्टर वेकेटश्वरन् पर चार्ज सीट लग रहा है।'

'क्या चार्ज-शीट लग रहा है?'

'यह तो मुझे विदित नहीं। परन्तु विभाग का मैम्बर किसी अपने पिट्ठू को उसके स्थान पर लाना चाहता है। इस कारण वह वेंकटेश्वरन् को हटाना चाहता है।'

श्रवण ने कुछ विचार कर कहा, 'तो ऐसा करो। सचिव को कहो कि पिताजी को अपने कागजात दिखा दे। वह उसकी सहा-यता कर देंगे। पहले भी गृह-विभाग के एक सुपरिटैन्डैण्ट पर एक चार्ज-शीट लगने वाला था तो पिताजी ने उसकी सहायता की थी।'

अगले दिन मुकुन्दलाल ने सचिव को श्रवण कुमार का सुझाव दे दिया। वेंकटेश्वरन ने कहा, 'मिस्टर मुकुन्दलाल! मुआमला गुप्त है। वह इसे गुप्त रख सकेंगे क्या?'

मुकुन्दलाल ने कह दिया. 'मेरे हमप्याला का पिता है। आप जैसा चाहेंगे, वैसा ही प्रबन्ध हो जायेगा।'

'तो उसे मेरी कोठी पर मिलने आना चाहिये। मैं किसी वकील के पास जाऊंगा तो बात बिगड़ जायेगी।'

परिणामस्वरूप रमण कुमार रात आठ बजे सैक्रेटरी मिस्टर

वेंकटेश्वरन् के बंगले पर जा पहुंचा। एक घंटा भर सचिव में और रमण कुमार में बातचीत होती रही।

रमण कुमार ने वेंकटेश्वरन् को आरोप पत्र का उस कार्यालय के रूल्ज तथा रेग्युलेशन के आधार पर पूर्ण उत्तर लिखकर उसका पक्ष सिद्ध कर दिया।

वेंकटेश्वरन् स्वयं परेशानी के कारण उन बातों को विचार नहीं सका था जो वकील साहब ने लिखकर दीं।

आरोप पत्र का उत्तर लंदन में बैठे सैक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया को भेजा गया। सैक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया का उत्तर बीस दिसम्बर को भारत पहुंचा और वायसराय की कौंसिल में उपस्थित हुआ। जिस मैम्बर ने वेंकटेश्वरन् को हटा कर एक सिद्धेश्वर मुखर्जी को रखना चाहा था उसको सैक्रेटरी आफ स्टेट ने लंदन में अपने कार्यालय में बुला लिया और वेंकटेश्वरन के विपरीत चार्ज शीट रद्द कर दिया।

वेंकटेश्वरन् ने मुकुन्दलाल को रमण कुमार की सेवा के लिये धन्यवाद किया और कहा, 'अपने मित्र के पिता से पूछना, उसके परिश्रम के लिये क्या कुछ दूं?'

जब मुकुन्दलाल ने श्रवण कुमार से वेंकटेश्वरन् की बात पूछी तो श्रवण कुमार को भूषण का ध्यान हो आया। पिछले दिन ही भूषण ऋषिकेश के लिये रवाना हुआ था। वह उसको पाठ पढ़ाना चाहता था। अतः उसने कह दिया, 'मिस्टर वेंकटेश्वरन् से कहो कि भूषण देव के जरा कान खेंच दें। बस यही हमारी फीस होगी।'

अगले दिन मुकुन्दलाल को वेंकटेश्वरन् ने कहा, 'मेरा मित्र कहता है कि इस थोड़ी सी सेवा के लिये वह कुछ भी फीस नहीं लेगा। परन्तु हमारे विभाग में एक मिस्टर भूषण हैं, तनिक उनके कान खींचने चाहिये।'

वेंकटेश्वरन् ने कार्यालय में जाते ही एक लम्बी चिट्ठी शिकायत की लिखकर मैम्बर साहब के पास भेज दी। उसने अपने विभाग के मैम्बर को यह लिखा है कि उसके खिलाफ पूर्ण षड्यंत्र उसके विभाग के एक मिस्टर भूषण देव का किया हुआ था। मैं उसे अपने विभाग से कहीं अन्यत्र बदलना चाहता हूं।

इस पर सैक्रेटरी ने तुरन्त आज्ञा दी कि भूषण देव को

निर्माण विभाग से बदल कर गृह विभाग में भेज दिया जाये।

यह आज्ञा चौबीस दिसम्बर सायंकाल को जारी की गई। यह आज्ञा वायसराय की कौंसिल के दो सदस्यों का निर्णय था। वास्तव में यह समझा गया था कि भूषण देव ने अपने सैक्रेटरी के विरुद्ध झूठा आरोप पत्र बनवाने में सहायता की है। इस कारण उसे, दण्ड के रूप में, निर्माण विभाग से बदल कर गृह मंत्रालय में भेज दिया जाये। परन्तु पच्चीस दिसम्बर से कार्यालय में छुट्टियां आरम्भ हो गई थीं इस कारण भूषण को इसका ज्ञान नहीं हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द के कहने पर भूषण उनतीस दिसम्बर को दिल्ली पहुंच गया। पहुंचते ही वह वेंकटेश्वरन् से मिलने जा पहुंचा।

उसी दिन भूषण नंदिनी के पिता से मिला और उनको कहने लगा कि मेरा तबादला हो गया है।

'क्यों ?' रमण कुमार ने पूछा।

'यह पता नहीं चला। आजकल दफ्तर में तो छुट्टियां हैं। परन्तु सैक्रेटरी मिस्टर वेंकटेश्वरन् ने बताया है कि उसको मिली चार्ज-शीट के साथ मेरे तबादले का सम्बन्ध जोड़ा गया है।'

'मैं मिस्टर वेंकटेश्वरन् को जानता हूं। कहो तो उससे पता करूं।'

'हां पिताजी ! पता करिए। अभी यह आज्ञा छुट्टियों के कारण गृह विभाग को नहीं गई। इस कारण रुक भी सकती है।'

अतएव तीस दिसम्बर को रमण कुमार भूषण देव को लेकर वेंकटेश्वरन् की कोठी पर जा पहुंचा। वेंकटेश्वरन् ने रमण की बात सुनी और पूछ लिया, 'यह भूषण देव से आपका क्या सम्बन्ध है ?'

'यह मेरे दामाद हैं।'

इस पर वेंकटेश्वरन् आश्चर्य से रमण कुमार का मुख देखने लगा। फिर उसने कहा, 'परन्तु आपके लड़के के मित्र मुकुन्दलाल ने ही कहा था कि इनके कान खींचने चाहिये। मैंने ही इसके विरुद्ध बहुत जबरदस्त शिकायत लिखकर भेजी थी। अब मैं ही उसे अपनी भूल समझ वापस लूं तो मेरा पत्ता तो यहां से कटेगा ही, साथ ही भूषण जी भी बहाल नहीं हो सकेंगे।

इस पर रमण कुमार और भूषण आश्चर्य में वेंकटेश्वरन् का

मुख देखने लगे। वेंकटेश्वरन् ने आगे कहा, 'हां, एक सूरत हो सकती है। यह दो तारीख को आफिस में आयेंगे। ट्रांस्फर की आज्ञा मिलने से पूर्व ही यह एक लम्बे काल के लिये छुट्टी मांग लें। वह मैं स्वीकार कर लूंगा। और उस छुट्टी के काल में इनका तबादला रुका रहेगा। छुट्टी समाप्त होने तक मुआमला रफा-दफा करा दूंगा।'

रमण कुमार ने भूषण की ओर देख कहा, 'अब बताओ।'

भूषण देव के मस्तिष्क में स्वामी ब्रह्मानन्द की बात कि लम्बी छुट्टी लेकर उनके आश्रम में आ जायें, आ गयी। उसने कुछ विचार किया और कह दिया, 'मैं कम-से-कम छः मास की छुट्टी पाने का हक रखता हूं।'

वेंकटेश्वरन् ने कह दिया, 'तब ठीक है। दो तारीख को छुट्टी की अर्जी दे दो। मैं तुम्हारे ट्रांस्फर की आज्ञा एक दिन के लिये रोक दूंगा।'

भूषण अपने तबादले से बहुत परेशान था और अब उसका समाधान सुन,सुख अनुभव करता हुआ अपने चीफ का धन्यवाद कर वहां से चला आया।

परन्तु रमण का मुकुन्दलाल पर बहुत रोष था। उसने मुकुन्दलाल के कहने पर ही वेंकटेश्वरन् के आरापों का उत्तर तैयार किया था। इस कारण घर पहुंचते ही उसने पुत्र से मुकुन्द-लाल की शिकायत कर दी।

श्रवण कुमार मुकुन्दलाल की बात सुन हंस पड़ा। पिता ने पूछा, 'क्यों. हंसे किसलिये हो ?'

इसका उत्तर श्रवण देना चाहता था, परन्तु अपने मन की बात वह कह नहीं सका। भूषण पिता पुत्र की बात सामने बैठा सुन रहा था।

भूषण को स्वामी ब्रह्मानन्द ने संकेत दे दिया था कि उसके कार्यालय में उसके विरुद्ध षड्यत्र का सरगना श्रवण कुमार है। अब श्रवण के हंसने से उसे विश्वास हो गया।

उसने पूछ लिया, 'श्रवण! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मेरे विरुद्ध झूठी शिकायतें करने लगे हो ?'

'तो मैंने आपके विरुद्ध शिकायत की है ?'

'हां, मुझे सन्देह था, परन्तु अब तो बात स्पष्ट हो गयी है

और मुझे विश्वास है कि यह सब तुमने किया है।'

'भूषण जी ! मैं चाहता हूं कि आप मेरे 'डोमैस्टिक' मामले में हस्तक्षेप न किया करें।'

'मैंने क्या हस्तक्षेप किया है ?'

'आप राधा से मिलने गये थे।'

'भैया, नहीं। मैं स्वामी ब्रह्मानन्द की परीक्षा लेने गया था। मेरे जाने का राधा से कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। हां, वहां जाने पर राधा से भेंट तो हुई है। परन्तु मैं तुम्हारे घर के मामले में दखल नहीं दे रहा।'

कृष्णा, श्रवण की माता वहां बैठी सब बात सुन रही थी। उसने भूषण से पूछ लिया, 'तो स्वामी जी से पता कर आये हो ?'

भूषण अपने झगड़े का समाधान छः मास की छुट्टी से प्रसन्न था। इस कारण उसने कृष्णा के प्रश्न का उत्तर दे दिया। उसने कहा, 'मैंने जो प्रश्न लिखकर आपके पास रखा हुआ है उसके विषय में स्वामी जी ने भी एक बंद लिफाफा दिया है और कहा है कि दोनों लिफाफों में लेखों का मिलान कर लूं।'

'तो लाये हैं उनका लिफाफा ?'

'वह नंदिनी के पास है। हम कल आयेंगे और उनके लेख से मैं अपने लेख का मिलान करूंगा।'

भूषण अपनी कोठी को लौट गया। उसके जाने के उपरान्त रमण ने पुत्र से पूछा, 'तुमने अपने ही जीजाजी के विपरीत यह कार्यवाही क्यों की ? वेंकटेश्वरन् मेरे एहसान में दबा हुआ था और उसका लाभ तुमने उठाया और फिर अपने ही जीजाजी को दण्ड देने लगे थे।'

श्रवण कुमार के पास इस आरोप का उत्तर नहीं था। परन्तु पिता को नाराज देख वह बिना उत्तर दिये उठा और अपने कमरे में चला गया।

भूषण घर पहुंचा तो नंदिनी चिन्ता में बैठी पति की प्रतीक्षा कर रही थी। भूषण को देख वह पूछने लगी, 'क्या कर आये हैं ?'

भूषण ने बता दिया, 'स्वामी जी की बात सच निकली है कि श्रवण ने ही मेरे विरुद्ध कार्यवाही की है। मेरे कार्यालय का

सैक्रेटरी किसी कारण तुम्हारे पिता जी के एहसान में था और उसका लाभ उठा श्रवण ने उसको कह मेरा तबादला करा दिया था। अब पिता जी के कहने पर उसने राय दी है कि मैं छः महीने की छुट्टी की अर्जी कर दूं। तब तक बात ठण्डी हो जायेगी और मेरा ट्रांसफर रद्द हो सकेगा।'

इस कथन का प्रभाव नदिनी पर भिन्न हुआ। गम्भीर हो उसने कहा, 'जब यह बात सच है कि श्रवण ने यह किया है तो मैं आपको बताती हूं कि मैं आज से अपने भाई का मुख नहीं देखूंगी। वैसे तो राधा की बात मैं समझ गयी थी कि वह सर्वथा निर्दोष है और श्रवण कुमार लोभवश उसको तंग कर रहा है। अब वह हमें भी तंग करने लगा है। इसका अर्थ यह है कि भाई बहिन का सम्बन्ध टूट गया है। मैं उनके घर पर नही जाऊंगी।'

भूषण अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया।

दो जनवरी को कार्यालय खुला तो भूषण ने छः मास की पूरे वेतन सहित छुट्टी की अर्जी कर दी। अर्जी सैकेटरी के सामने उपस्थित होते ही स्वीकार हो गयी और भूषण अपने काम का चार्ज अपने असिस्टैन्ट को देकर घर चला आया।

घर पहुंचते ही नंदिनी ने कहा, 'चलिये, कल ही यहां से चल दें।'

'कहां?'

'ऋषिकेश! स्वर्गाश्रम में रहेंगे और फिर अपने लिये कोई रहने का स्थान ले लेंगे।'

भूषण का बड़ा लड़का पांचवीं श्रेणी में पढ़ता था और छोटा तीसरी श्रेणी में। उनकी पढ़ाई की चिन्ता थी। भूषण ने कह दिया, 'मैं घर पर इन दोनों को बी० ए० तक की पढ़ाई तो करा ही सकता हूं।'

## दो

कृष्णा प्रतीक्षा कर रही थी कि भूषण स्वामी जी का लिफाफा लायेगा और दोनों में लेखों का मुकाबिला किया जायेगा

परन्तु जब कई दिन तक भूषण और नंदिनी नहीं आये तो उसने

अपने पति से कहा, नंदिनी का समाचार नहीं मिला।

'हां, पहले उसके दफ्तर में टेलीफोन से बातचीत हो जाया करती थी। अब वह दफ्तर जाता नहीं। इस कारण मैं टेलीफोन नहीं कर सका।'

'परन्तु घर में दो-दो गाड़ियां हैं। गाड़ी भेज उसको बुला लीजिये।'

इस सुझाव पर रमण ने अगले दिन अपनी घोड़ा गाड़ी भूषण के क्वार्टर पर भेज दी। गाड़ी खाली ही वापस लौट आयी। कोचवान ने बताया कि क्वार्टर को ताला लगा हुआ है।

इस सूचना पर मां परेशानी अनुभव करने लगी। उसकी परेशानी का विषय यह था कि लड़की बिना मिले ही नगर के कहीं बाहर चली गयी है। रात भोजन के समय विचार होने लगा कि लड़की बिना बताये कहां और क्यों चली गयी है।

रमण का अनुमान था कि श्रवण की करतूत पर बहिन और बहनोई दोनों नाराज हो इस घर से सम्बन्ध तोड़ बैठे हैं।

श्रवण का छोटा भाई मोहन रुड़की से इंजीनियर बन कर लौटा था और भूषण ने उसकी नियुक्ति दिल्ली में अपने विभाग में करवा दी थी। वह नई दिल्ली में ही एस० डी० ओ० नियुक्त हुआ था। यूरोप में हो रहा युद्ध समाप्त हो चुका था और हिन्दुस्तान की केन्द्रीय सरकार ने अपने कार्यालय इत्यादि के लिये नई राजधानी बनवानी आरम्भ कर दी थी। देश भर के ठेकेदार सरकारी कार्यालय के निर्माण कार्य में हाथ रंगने के लिये दिल्ली आ रहे थे और जो भी सरकारी अफसर इस काम पर नियुक्त हुआ, वह मालामाल हो रहा था। मोहन भी उनमें से एक था। उसकी नियुक्ति और उसका संरक्षण भूषण देव के कारण होता रहता था। वह भूषण के छुट्टी पर चले जाने से अपने को अरक्षित अनुभव कर रहा था। वह भी भोजन के समय वार्तालाप को सुन रहा था।

रमण कुमार का कहना था कि श्रवण की करतूत के कारण वे इस घर से नाराज हो गये प्रतीत होते हैं। मोहन ने कह दिया, 'एक दिन क्रिसमस की छुट्टियों से पहले दीदी ने कहा था कि दादा शराब पीने के कारण रात को दिन और दिन को रात

समझ रहा है।'

'मैं भी कुछ ऐसा ही समझती हूं।' कृष्णा का कहना था, 'इस मूर्ख पुत्र ने कुन्दन समान पवित्र और सुन्दर पत्नी के स्थान पर जहां तहां का गंदा जल पीने वालियों को बैठा रखा है।'

रमण कुमार पत्नी की बात सुन कुछ उद्विग्न हो बोल उठा, 'तो तुम इस नालायक लड़के को घर से निकाल दो।'

'मैं उसको निकालने वाली कौन होती हूं ? वह आपका बेटा है, आप जानें।'

'पर तुम मूर्ख तो मान ही रही हो।'

'मूर्ख नहीं तो और क्या ? पत्नी को घर से निकाला और फिर बहिन तथा बहनोई को बरबाद करने लगा है। लोग बड़ी बहनों तथा बहनोइयों की पुजा करते हैं और यह उनको तंग कर रहा है।'

इतना कहते-कहते कृष्णा की आंखों में आंसू आ गये। वह उठकर अपने कमरे में चली गयी। रमण और मोहन आश्चर्य में उसका मुख देखते रह गये।

उस दिन खाने की मेज पर परिवार में कुछ विषमता उत्पन्न हुई तो मोहन को बहिन नंदिनी का कथन याद आ गया। नंदिनी ने कहा था कि दादा शराब के प्रयोग से विचार शक्ति खो बैठा है। उस समय तो उसको बहिन का यह कथन बकवास प्रतीत हुआ था परन्तु आज भोजन के समय के वार्तालाप को वह समझ रहा था। भाई ने बिना किसी कारण बहनोई को नौकरी से निकलवाने का यत्न किया था।

यदि भूषण की नौकरी बची थी तो इस कारण कि वेंकटेश्वरन् एक भला व्यक्ति था और वह किसी अज्ञात दोष के लिये अपने अधीन कर्मचारी को दण्डित नहीं कर सका। परन्तु जिस व्यक्ति ने उसकी नौकरी बचाई थी उसका कहना मान वेंकटेश्वरन भूषण का स्थानान्तरण करने में सफल हो गया था।

एक दिन मोहन ने कुछ विचार कर मां को कह दिया 'मां ! भैया जाने और तुम जानो ! पर मैं अभी से कहता हूं कि मेरा विवाह होते ही मैं अपना पृथक् मकान बना लूंगा।'

इस पर रमण ने पूछा, 'कितना रुपया एकत्रित कर लिया है ?'

'पिता जी ! यह बताना कानून से वर्जित है।'



रमण कुमार हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'बताना वर्जित है अथवा रिश्वत लेनी वर्जित है।'

इस पर श्रवण हंस पड़ा। हंस कर वह बोला, 'देखो मोहन। एक स्थान है। जहां तुम इस गुप्त धन का प्रयोग कर सकते हो और इस ब्लैक मनी को व्हाईट कर सकते हो।'

'कहां ?' मोहन का प्रश्न था।

'क्लब में जुआ खेलोगे तो यह काम हो जायेगा। कानून है कि जूए में जीती हुई रकम पर टैक्स नहीं लगता और उसका प्रयोग 'व्हाइट मनी' की भांति कर सकते हो।'

मोहन गम्भीर विचार में निमग्न हो गया।

## तीन

भूषण कार्यालय से छः मास की छुट्टी लेकर विचार करने लगा कि क्या करे। नंदिनी का सुझाव था कि ऋषिकेश चल कर रहा जाये।

भूषण का कहना था, 'बात तो ठीक है, परन्तु मुझें उस स्वामी जी से भय लगने लगा है जो घर बैठे हुए दूसरों की बात जान लेते हैं।'

'तो आपके मन में भी कुछ है जो आप उन स्वामी जी से छुपा कर रखना चाहते हैं ?'

'अभी तो नहीं है। परन्तु किसी समय कुछ होगा जो मैं छुपा कर रखने की इच्छा कर सकता हूं। भय यही है कि उससे छुपा नहीं सकूंगा।'

'तो इसका भय पहले ही लग गया है ? मन में चोर अभी बना नहीं और उसके प्रकट होने का भय पहले ही आ गया है।'

'देखो नंदिनी ! मैं न तो साधु हूं न ही चोर ठग। परन्तु एक मनुष्य तो हूं। और मनुष्य गुण-अवगुणों से भरे रहते हैं। मैं अपने अवगुण किसी के समक्ष प्रकट होने देना नहीं चाहता।'

नंदिनी विस्मय करती थी कि उसका पति क्या विचार कर

रहा है, जिसको वह छुपा [illegible] है । इस [illegible] भी उसने यह कहा, 'जब कुछ छुपाने योग्य मन में उत्पन्न होने लगे तो वहां से चले जायेंगे । मैं तो वहां की शान्ति और स्वामी जी की विवेकपूर्ण बातों पर मुग्ध हो वहां जाना चाहती हूं ।'

अगले दिन भूषण परिवार सहित पुनः ऋषिकेश जा पहुंचा । इस बार वह कैलाश आश्रम में रहने नहीं गया । वह सीधा स्वर्गाश्रम ही पहुंचा । जब नौका गंगा पार कर स्वर्गाश्रम के घाट पर लगी तो उसने देखा कि सेठ रामलोक और उसकी धर्मपत्नी सुमति घाट पर खड़े, नौका से उधर आ रहे यात्रियों को देख रहे हैं ।

भूषण अपने साथ एक कुली स्टेशन से ही लाया था । जब कुली नौका से सामान उतार रहा था तो सेठ जी भूषण और नदिनी के समीप जा पहुंचे ।

सुमति ने भूषण को कहा, 'आपके लिये यहां हमने एक कुटिया जो खाली पड़ी थी वह अभी ले लीं है । परन्तु स्वामी जी का कहना है कि आपके लिये एक नई कुटिया यहां बनवा दी जाये ।'

भूषण भौचक्क सेठ जी का मुख देखता रह गया । एकाएक उसके मुख ले निकल गया, 'स्वामी जी मुझसे पूछे विना ही कुटिया बनवा रहे हैं ?'

'मैं समझता हूं कि आप से राय कर ही उन्होंने यह निश्चय किया होगा ।'

'उनसे भेंट होने पर पता करूंगा ।'

'वह कह रहे थे कि अभी आप छः मास की छुट्टी पर आ रहे हैं परन्तु यह छुट्टी अब आपकी सरकारी सेवा से मुक्त होने के पूर्व की है ।'

'बस यही स्वामी जी का दोप है । वह अपने मन में दूसरों के मन को प्ररणा देकर उनको अपने अनुकूल कार्य करने के लिये विवश कर देते हैं ।' भूषण का कहना था ।

इस समय तक वे सब उस कुटिया की ओर जाने लगे थे जो सेठ जी ने भूषण इत्यादि के लिये अस्थाई रूप में ली थी । कुटिया पर शान्ता और राधा पहुंच उसकी सफाई करवा रही थीं । वहां रसोईघर में आग जल रही थी और जाने वालों के लिये चाय

इत्यादि बन रही थी।



नंदिनी राधा से गले मिली और बोली, 'तुमने हमें भी यहां रहने के लिये बुला लिया है ?'

'नहीं बहन जी ! मैंने नही बुलाया। यह तो वहां के आपके भाई साहब ने आपको अपने प्रतिकूल देख वहां से निकाल दिया है।'

'किसने बताया है यह तुम्हें ? हमें दिल्ली से यहां आने के लिये किसी ने नहीं कहा। अभी तक सरकारी क्वार्टर हमारे ही अधिकार में है और हमारा सहस्रों रुपयों का सामान वहां रखा है।'

'वह यहां किसी काम का नहीं होगा। उसे तो आप वहीं किसी को दे आयेंगी तो ठीक करेंगी।'

'वहां कौन लेगा ?'

'जिसे आवश्यकता होगी।'

इस समय शान्ता सबके लिये चाय और कुछ साथ खाने के लिए ले आई।

उपासना के उपरान्त गंगा तट पर स्वामी जी से भेंट हुई। स्वामी जी ने स्वयं ही कहा, 'मैं अपने ज्ञान से यह अनुमान लगा रहा हूं कि आप यहां से कभी नहीं जायेंगे। यहां ही रहना चाहेंगे। इस कारण मुझे आपके लिये कुछ कार्य ढूंढना पड़ेगा। मैंने उसका विचार कर लिया है। मेरा अनुमान है कि वह कार्य आपके अनुकूल रहेगा।'

'क्या कार्य आपने विचार किया है ?'

'हम यहां एक शिक्षा केन्द्र चलाना चाहते हैं। उस शिक्षा केन्द्र में कुछ तो व्यवसाय की शिक्षा का प्रबन्ध होगा और कुछ व्यवसाय के पीछे उद्देश्य की शिक्षा एव प्रेरणा हो सकेगी।'

'मैं पूर्ण योजना को सुन कर ही इसमें रुचि ले सकूंगा।'

'हां, वह तो होगा ही। परन्तु मनुष्य की बुद्धि मन द्वारा प्रस्तुत कार्य करने की ही योजना बनाती है। वह कार्य जब आपकी समझ में जायेगा तब उसकी योजना श्रेष्ठ बुद्धि बनायेगी, श्रेष्ठ बुद्धि ईश्वरीय देन होती है। इससे योजना में मतभेद नहीं होगा। आपकी बुद्धि भी वही योजना बनायेगी जिसकी मैंने मन में कल्पना की है।'

मधुसूदन के लिये यह सब विस्मयजनक और उसकी बुद्धि को चकरा देने वाला सिद्ध हो रहा था। वह चुपचाप स्वामी जी का मुख देख रहा था। स्वामी जी ने आगे कह दिया, 'अब इस विषय पर बातचीत किसी अन्य दिन करेंगे। तब तक आपका मन तैयार भी हो जायेगा।'

उसी रात अपनी कुटिया में सोने से पूर्व नंदिनी ने अपने पति से पूछ लिया, 'अब ?'

'मुझसे पूछ कर तो कुछ हो नहीं रहा। यहां तो बनी बनायी खीर की भांति प्लेट में सम्मुख रख दी गयी है। खीर पर पिस्ता, बादाम इत्यादि पड़ा होने से खाने को चित कर रहा है।''

'देवी ! यह सब यहां का 'मास्टर माइण्ड' मेरे सामने प्रस्तुत कर रहा है। अभी छः सात घंटों में मैं केवल इतना ही समझ सका हूं कि इस बहती गंगा में कूद पड़ूं और फिर अपने को इसमें बहने दूं।'

'मैं कुछ दूसरी बात समझी हूं।' नंदिनी ने कहा, 'वह यह कि हम गंगा में गोते खाते हुए सागर की ओर बहते जा रहे थे। किसी भले व्यक्ति ने हमारी दयनीय अवस्था को देखकर हमें बचाने के लिये हमारी ओर रस्सा फेंक दिया है और कहा है कि इस रस्से को पकड़ लो तो तुमको किनारे पर खैंच लिया जायेगा। तुम नदी में बहते हुए संसार सागर में डूबने से बच जाओगे।'

'तो इस रस्से को पकड़ लूं ?'

'मेरे कहने से आप पकड़ लेंगे क्या ?'

'और यहां किसके कहने से आया हूं ?'

नंदिनी को दिल्ली में दो दिन पहले हुई बात स्मरण आ गयी और वह हंस कर बोली, 'हां, परन्तु यदि अभी तक किसी के लिये बुरा विचार मन में नहीं आया तो यहां रहने का विचार बना लीजिये। यह विचार सदा के लिये तो हो सकता नहीं। अभी हमारी डोर दिल्ली के उसी सरकारी कार्यालय से बंधी है।'

'हां ! अभी मैं किसी स्थाई योजना के विषय में विचार नही कर सकता। मैंने स्वेच्छा से बारह वर्ष की पुरानी नौकरी छोड़ने का विचार नहीं किया।'

'उस विषय में भी अभी विचार नहीं कर सकते। हां, इन छः महीनों के लिये तो गंगा तट पर फेंके रस्से को पकड़ कर

आप अब यह स्थिर भमि पर खडे हो कर विचार करें कि यह नदी हमें किस ओर ले जा रही है।


वहां दिल्ली में एक अन्य खिचड़ी पक रही थी। मोहन जो भूषण के प्रयत्न से एक बहुत ही लाभदायक सरकारी नौकरी को पा गया था, अपने बड़े भाई श्रवण कुमार के व्यवहार को देख मन में उसके प्रति ग्लानि अनुभव कर रहा था।

श्रवण का यह कहना कि रिश्वत का एकत्रित धन सार्थक किया जा सकता है जुआ खेलकर। वह मन में कल्पना कर रहा था कि यदि वह एक दो लाख से कोई कोठी नई दिल्ली में बनवा लेता है तो आय कर विभाग को कोठी में लगाये धन की प्राप्ति का स्रोत बताना पड़ेगा। यदि न बता सका तो यह सिद्ध हो जायेगा कि धन रिश्वत का है। तब ? तब बहुत ही मोटे मोटे अक्षरों में उसको सामने लिखा दिखाई देने लगा, 'डिसमिसल।'

एक दिन उसने भाई की राय पर अमल भी किया। वह उसके साथ क्लब गया और जुआ खेलने में लीन हो गया। उस दिन उसने कई सदस्यों से बाजी लगाई और दो सहस्र हार कर घर लौट आया। आते हुए मार्ग में श्रवण ने ही पूछा, 'क्यों मोहन ! कैसा रहा ?'

'भैया ! एक रात में दो सहस्र रुपये के लगभग हार कर घर जा रहा हूं।'

'तो तुम्हें इस अनियमित आय को व्यय करने का ढंग मिल गया है।'

'हां, परन्तु जिस मतलब के लिये रिश्वत लेता हूं वह तो पूर्ण नहीं हुआ। विपरीत उसके मैं कुछ हारने से खिन्न मन से घर लौट रहा हूं।'

'परन्तु आज हारे हो तो कल जीत भी सकते हो। यही तो जुआ खेलने से लाभ है। व्यर्थ का काले धन का बोझा कम हो जाता है।'

मोहन हंस पड़ा। उसने कहा, 'हां, कुछ हल्का तो प्रतीत होता है। परन्तु वह स्वर्णलता जिसने मेरा अधिकांश धन जीता है, कह रही थी कि मैं उसके होटल में रात रहने चल सकता हूं। वहां का सब खर्चा वह देगी।'

'अर्थात् !' श्रवण कुमार ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुम से जीता

हुका तुम पर ही व्यय करने का प्रस्ताव कर रही थी ?'



'हां, परन्तु ! मैंने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था ।'

'क्यों ? क्या स्त्री संगत की इच्छा नहीं होती ?'

'होती तो है । उसके लिये मां मेरे विवाह का प्रबन्ध भी कर रही है । मैं विचार कर रहा था कि जब बिना विवाह के स्त्री प्राप्त हो सकती है तो फिर विवाह की क्या आवश्यकता है ? कुछ तो बात होगी ही । इसी कारण आज उसको टाल दिया था ।'

'देखो, मैं तुम्हें एक राय देता हूं । किसी औरत के साथ उसके निवास स्थान पर जाना उचित नहीं । इसमें जीवन जाने का भय भी हो सकता है । वहां उसके दूसरे चाहने वाले तुम से ईर्ष्या करने लगेंगे और फिर कभी तुम्हारी लाश होटल के पिछवाड़े झाड़ियों में पड़ी मिलेगी ।'

मोहन विस्मय से भाई का मुख देखता रह गया । दोनों भाई घर पर पहुंचे । श्रवण ने शराब पी थी । आधी बोतल पीकर भी वह सुदृढ़ पगों से कोठी में पहुंचा था । मोहन ने मद्य नहीं पी थी ।

मां जानती थी कि मोहन को श्रवण अपने साथ ले गया है । उसे संदेह था कि दोनों लड़के शराब के नशे में बदमस्त हो घर लौटेंगे । एक बात का उसे विश्वास था कि मोहन के साथ होने के कारण श्रवण किसी लड़की को अपने साथ नहीं लायेगा । इस पर भी उसने रात के समय मोहन से मिलना उचित नहीं समझा ।

अगले दिन मोहन उठा तो घर की सेविका उसके लिये चाय दे आई । कृष्णा ने उससे पूछ लिया, 'क्या कर रहा था मोहन ?'

'वह अपनी मेज कुर्सी पर बैठे कुछ लिख रहे थे ।'

मां यह समझ कि वह अपने होश हवास में है, उसके कमरे में चली गयी । उसने पूछ लिया, 'सुनाओ मोहन ! क्या देखा है रात क्लब में ?'

मोहन का मुख लज्जा से लाल हो गया ।

कृष्णा उसका अभिप्राय यह समझी कि वह जीवन के भोग विलास में डुबकी ले आया है । इससे उसने बात बदल दी । उसने पूछा, 'कितना जीतकर आये हो ?'

'मां ! दो सहस्र से ऊपर हार कर आया हूं ।'

'तब श्रवण की बात ठीक ही हुई है कि रिश्वत की कमाई को हलाल करने के लिये जुआ खेलो।'

'हां!' मोहन ने कह दिया, 'जितना जेब में रह गया है वह वहां व्यय किया जा सकेगा। परन्तु मां! मैं यह विचार कर रहा था कि रिश्वत लेने का अपराध किया मैंने, उसका लाभ उठा रहा है कोई अन्य? तो फिर उस पाप कर्म से मुझे लाभ ही क्या हुआ?'

'तो इस कर्म को छोड़ दो।'

'पर मां! वेतन तो केवल तीन सौ मिलता है। इससे जीवन नहीं चल सकता।'

'परन्तु तुम्हारे जीजा जी तो पत्नी और दो बच्चों का निर्वाह पांच सौ रुपये में मजे में करते थे।'

'हां! परन्तु एक क्लर्क के जीवन में और एक इंजीनियर के जीवन में अन्तर तो है ही।'

'क्या अन्तर है?'

'मेरे अधीन इस समय पांच सौ मजदूर काम करते हैं। पांच छः ओवरसीयर हैं और छः सात स्थानों पर काम हो रहा है। मैं अभी से एक मोटर गाड़ी रखने का विचार कर रहा हूं। भूषण जी को ऐसा कोई झझंट नहीं।'

'तो तुम्हें इन सब कामों पर जाने के लिये खर्चा नहीं मिलता?'

'जो मिलता है उससे कहीं अधिक टैक्सी का भाड़ा लग जाता है। मैं अभी एक अर्जी कर रहा हूं कि मुझे पांच हजार का ऋण मिल जाये तो मैं एक मोटर खरीद लूं।'

मां हंस पड़ी और बोली, 'यह खूब नौकरी है। रुपया तो है परन्तु प्रत्यक्ष काम पर खर्च नहीं किया जा सकता और जितना खर्च होता है उतना वसूल नहीं किया जा सकता।'

'हां मां! यह सरकारी नौकरी ऐसी ही है।'

'तो तुमने भी वकालत क्यों नहीं पढ़ ली? इंजीनियर बनने से क्या लाभ हुआ?'

'और वकील बनने का लाभ भैया उठा रहे हैं।'

'तुम कुछ अन्य काम नहीं कर सकते क्या? राधा का पिता

भी तो मामूली जायदाद वाला था, परन्तु अब लाखों का स्वामी है।'

'वह भी तो सट्टे की आमदन है। सट्टा भी एक प्रकार का जुआ ही है। माल खरीदने के समय न माल होता है, न ही इस बात का ज्ञान होता है कि कब और कितना लाभ अथवा हानि होगी।'

'तब तो तुम्हारे पिता और भैया का काम सबसे अच्छा है।'

'पर उसमें बहुत हेराफेरी है।'

'क्या हेराफेरी है?'

'प्रायः मुकद्दमे झूठे होते हैं। जिनके विरुद्ध मुकद्दमे होते हैं वे ईमानदार व्यक्ति उतनी फीस नहीं दे सकते जितनी झूठा मुकद्दमा करने वाले देते हैं। इस कारण जो सत्य पक्ष का मुकद्दमा लेते हैं वे मुश्किल से ही अपनी रोटी पैदा कर सकते हैं।'

## चार

मां चुप कर गयी। वह यह समझने लगी थी कि बिना हेराफेरी के धन पैदा नहीं हो सकता।

इस वार्तालाप का मोहन पर भारी प्रभाव पड़ा। कई दिन से वह रिश्वत के लिए धन को छुपाने के विषय में विचार कर रहा था और वह कोई मार्ग पा नहीं सका था। बड़े भाई के व्यवहार को देख वह समझा था कि इस प्रकार की बिना लिखत पढ़त की आय के व्यय करने का केवल एक ही उपाय है। वह यह कि किसी क्लब में जाकर जुआ खेलकर और शराब तथा औरतो पर धन व्यय किया जाये। वह विचार करता कि जब उसका भाई अपनी नेक आय को भी व्यय करने में सुरा तथा सुन्दरी की सहायता ले रहा है तो फिर छुपी आय को तो इसके अतिरिक्त व्यय करने का कोई उपाय है ही नहीं। इस पर वह सोचने लगा कि वह कोई अन्य काम नहीं कर सकता? यह मां का ही प्रश्न था।

इस दिशा में विचार करने का परिणाम हुआ। उसने इंजीनियरों तथा स्कूल-कालिजों में सांइस का सामान बेचने की

दुकान करने का विचार बना लिया ।

इस पर अपने ज्ञान के अनुसार उसने ऐसी वस्तुओं की एक सूची बनायी, जो प्राय: स्कूलों कालिजों में बिक सकती थीं । साथ ही मशीन से काम करने वालों के सामान की सूची और फिर उतका दाम लगी पूंजी का अनुमान लगाकर समझ गया कि चालीस पचास हजार की पूंजी से एक अच्छी-सी दुकान खोली जा सकती है ।

उसने एक दिन अपनी इच्छा अपने पिता को बतायी तो पिता ने पूछ लिया, 'और जो रुड़की कालेज में पढ़ाई की है, उसका क्या हुआ ?'

'उसका सदुपयोग करने के लिए ही तो इस प्रकार की दुकान का विचार किया है ।'

'इस प्रकार के सामान की दुकान पर इतनी आय नहीं हो सकती जितनी ठेकेदार चुपचाप घर पर आकर दे जाते हैं ।

'पिता जी ! यह तो ठीक है । परन्तु उस चुपचाप की आय को व्यय कहां करूं ?'

'जब मौका मिले तो विदेश भ्रमण के लिए चले जाना ।'

'वहां भी यह सब व्यय नहीं हो सकेगी । दादा को अपनी आय को सद्गति देने के लिये सुरा-सुन्दरी का आश्रय लेना पड़ता है ।'

'और तुमको वह पसंद नहीं ?'

'परन्तु मां मेरे विवाह का प्रबन्ध कर रही है । मैंने लड़की देखी है और मुझे क्लब में कोई भी उस जैसी सभ्य तथा सुन्दर दिखाई नहीं दी ।'

'तो फिर ?'

'मैं उस आय से कुछ लाभ भी नहीं समझता जिसमें से अपनी नियमित आवश्यकताओं पर व्यय न कर सकूं ।'

'आय तो तुम्हारे काम में अनायास ही हो रही है । उसके व्यय करने का उपाय तुम विचार करो । पत्नी के लिये भूषण बनवा लेना ।'

परन्तु मोहन को व्यय करने का यह ढंग भी उपयुक्त प्रतीत नही हुआ । धीरे-धीरे उसका निश्चय अपना काम करने का दृढ़ होता गया । उसने जामा मस्जिद के पीछे एक दुकान किराये पर

ले ली और फिर उसमें माल भरने लगा। दो महीने लगे उसे सब प्रबंध करने में और फिर उसने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। साथ ही उसने स्कूल-कालिजों तथा मशीनों का प्रयोग करने वाले कारखानों से सम्बंध बनाना शुरू कर दिया।

इस प्रकार का सामान पहले लोग कलकत्ता से मंगवाते थे। अब दिल्ली में ही दूकान खुली तो उसे आर्डर भी मिलने लगे।

इस बीच उसके विवाह का निश्चय हो गया। कृष्णा ने निमंत्रण-पत्र भूषण तथा सेठ रामलोक को भेजे परन्तु ऋषिकेश से बधाई तथा आशीर्वाद के पत्र ही आए। विवाह में सम्मिलित होने के लिए कोई नहीं आया।

विवाह के पश्चात् एक दिन मोहन ने नंदिनी को पत्र लिखा। पत्र सेठ जी की मार्फत था। सेठ जी ने पत्र भूषण देव को पहुंचा दिया। इस समय तक गंगा के दक्षिणी तट पर मुनि की रेती पर एक पाठशाला प्रौढ़ावस्था वालों के लिये चालू की जा चुकी थी। स्वामी ब्रह्मानन्द से यह निश्चय हुआ था कि जब तक भूषण देव वहां है तब तक वह पाठशाला का काम करे और जब वह दिल्ली जाना चाहेगा, वहां स्वामी सर्वदानन्द कार्य करने लगेगा।

प्रौढ़ शिक्षा के दो अंग थे। एक अंग की शिक्षा दिन-भर चलती थी और दूसरे की केवल दो घंटे सायंकाल।

तो जो अनपढ़ कुली इत्यादि दिन-भर काम पर जाते थे वे भाषा, भूगोल और इतिहास की शिक्षा लेने सायंकाल वहां आते थे और जो दिन में काम नहीं करते थे उनको किसी प्रकार की दस्तकारी के काम सिखाये जाते थे।

दिन-भर काम करने वालों को दिन-भर खाने-पीने का प्रबन्ध स्कूल में ही होता था और उनके कुछ उपकारी कार्य कर सकने पर उसकी उजरत भी मिलती थी। भोजन वस्त्र के अतिरिक्त काम की उजरत भारी प्रलोभन था। इस कारण स्कूल में दिन-भर की पढ़ाई के लिये एक पर्याप्त संख्या में प्रौढ़ावस्था के विद्यार्थी मिलने लगे थे।

भूषण का विचार था कि यह काम चलेगा नहीं। इस कारण वह अभी-अभी छुट्टियों भर में वहां काम करने का विचार रखता था।

इस बीच मोहन का पत्र आया। उस पत्र में मोहन ने तो केवल इतना लिखा था, "दीदी ! मैंने मरकारी सेवा से त्याग-पत्र दे दिया है और जामा मस्जिद के पीछे एक साइंस के सामान और मशीन टूल्ज की दुकान खोल ली है। पिताजी ने इसके लिये दस हजार की पूंजी दी है। उस दस हजार में अपने पास से चालीस हजार लगाकर कार्य आरम्भ कर दिया है। दुकान करते हुए एक महीना ही हुआ है और फल उत्साहवर्धक प्रतीत हो रहा है।'

मोहन के विवाह का निमंत्रण नंदिनी के माता-पिता की ओर से आया था परन्तु यह पत्र मोहन की ओर से था। इससे भूषण देव ने इसका उत्तर दिया। उसने उत्तर में लिखा, 'मोहन भैया ! तुम्हारा पत्र अपनी बहन के लिये यहां मिला है। तुम्हारे जीवन मे यह करवट आश्चर्यजनक लगी है। इस पर भी बुरी प्रतीत नहीं हुई।'

'मैं दिल्ली कार्यालय से पांच सौ पचास रुपये वेतन पाता था। यहां हम 'मुनि की रेती' में आश्रम के मकान में रहते है और भोजन वस्त्र आश्रम से प्राप्त होता है। मुझे और नंदिनी को भत्ता आश्रम की ओर से एक-एक सौ रुपये महीना मिलता है। यहां की स्थिति तथा जीवन को देखकर यह दो सौ रुपया भी बहुत अधिक होता है। दिल्ली की बात दूसरी थी। तुम बताओ दुकान से क्या मिल जाता है ?'

इस पत्र का उत्तर आया। मोहन ने लिखा, 'दुकान चल रही है और दो-तीन सौ मासिक की आय होने लगी है। स्कूल और कालिजों में माल की मांग तो है ही। साथ ही मशीनों के पुर्जे भी बिकने लगे हैं।'

'अब मैं दुकान में छोटी-छोटी मशीनें भी बेचनी आरम्भ कर रहा हूं। आशा है शीघ्र ही यह काम काफी लाभदायक बन जायेगा।'

नंदिनी को मोहन का पत्र मिला। वह इस बात से प्रसन्न थी कि मोहन की दुकान उन्नति कर रही है। इस पर भी वह अपने कार्य को मोहन के कार्य से अधिक उपकारी समझती थी। उसने यह बात अपने पति को स्पष्ट कर दी। उसका कहना था,

'मोहन का व्यापार है और हमारा शिक्षा का कार्य पुण्य का काम है।'

मोहन ने अपने पत्र में एक बात विशेष लिखी थी। वह यह कि वह पिता से पृथक ऐस्प्लेनेड रोड पर एक मकान पर भाड़े को लेकर रहने लगा था।

रमण कुमार की कोठी छोड़ शहर में भाड़े के मकान में आकर रहने के समाचार ने बहिन और जीजा के मन में यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न कर दी कि मोहन पिता से पृथक क्यों हुआ है।

बात इस प्रकार हुई थी। मोहन के विवाह की तिथि निश्चित होने लगी तो मोहन ने घोषणा कर दी कि वह विवाह से पहले अपना निवास घर से पृथक कर लेगा।

श्रवण कुमार का प्रश्न था, 'यह क्यों ?'

'भैया! इसमें दो कारण हैं। एक तो मुझे मद्य की गन्ध सर्वथा पसन्द नहीं और दूसरा यह कि आपकी मित्र मण्डली से मैं अपनी पत्नी को पृथक रखना चाहता हूं।'

इस पर कृष्णा ने कह दिया, 'विवाह के उपरान्त कुछ दिन के लिये मैं मोहन के साथ जाकर रहने लगूंगी।'

'क्यों ?' रमण का प्रश्न था।

'उसकी पत्नी की सहायता के लिये, जिससे उसमें और उसके पति में सहचारिता बन सके।'

'इसकी आवश्यकता नहीं।' रमण का कहना था, 'जो हमारे पास रहना नहीं चाहता उसकी पत्नी की चिन्ता मुझे पसन्द नहीं।'

'यह ठीक है। आपको यह पसन्द नहीं। परन्तु मुझे उसके पथ-प्रदर्शन में रुचि है।' कृष्णा का कहना था।

रमण चुप कर गया। जब विवाह का कार्यक्रम बना और मोहन ने एसप्लेनेड रोड वाले मकान पर जाने का कार्यक्रम बनाया तो मोहन की ससुराल वालों ने इसमें आपत्ति नहीं की। इस पर रमण को विस्मय भी हुआ और क्रोध भी आया। उसने पत्नी से पूछा, 'यह निश्चय तुमने मोहन के ससुराल वालों से विचार लिया है ?'

'नहीं। मोहन ने अपनी पत्नी के पिता से मिलकर स्वयं इसका निश्चय किया है।'

और वह मान गये हैं ?'

'जी ! पर क्यों, मैं नहीं जानती । मैंने केवल इतना कहा है कि मैं कुछ काल के लिये मोहन के घर पर रहूंगी । इस पर मधु के माता-पिता को सुख अनुभव हुआ प्रतीत हुआ था ।'

'तो तुमने मुझे तलाक देने का प्रबन्ध किया है ?'

'जी नहीं ! मैं आपकी पत्नी वैसे ही हूं जैसे राधा श्रवण को अपना पति समझती है ।'

'ओह ! राधा की बीमारी यहां पर भी आ गई है । तुम जाओ जहन्नुम में । मैं तुम दोनों मां पुत्र से अपना सम्बन्ध विच्छेद करता हूं ।'

'ठीक है, मेरा सम्बन्ध तो आपसे जीवन पर्यन्त का है । वह छूट नहीं सकता ! मैं तो अपने को आपकी पत्नी ही मानूंगी और रहूंगी ।'

'विवाह में लड़के का पिता कौन बनेगा ?' रमण ने पूछ लिया ।

'मोहन की यह सगाई उसके एक मित्र की माता ने कराई है । और उसके मित्र के माता-पिता ही उसका विवाह का प्रबन्ध कर रहे हैं । आप नहीं जायेंगे तो वे उसके संरक्षक बन कार्य करेंगे ।'

इस पर तो रमण बौखला उठा । उसने कहा, 'मालूम होता है कि मोहन को ससुराल से बहुत कुछ मिलने वाला है ?'

'लड़की के माता-पिता ने बताया नहीं कि क्या कुछ देने वाले हैं और मैंने पूछा भी नहीं ।'

इस प्रकार मोहन विवाह के उपरान्त डोली लिये हुए ऐस-प्लेनेड रोड जा पहुंचा । और कृष्णा उसके साथ रहने लगी ।

इस प्रकार की स्थिति दिल्ली में थी ।

'छुट्टी समाप्त होने से एक सप्ताह पहले भूषण ने स्वामी जी से कहा, 'मैं अगले सोमवार दिल्ली में अपने काम पर जा रहा हूं ।'

स्वामी जी ने एक क्षण विचार कर कहा, 'जहां तक मुझे पता चला है, तुमको 'डिसमिस' किया चुका जा है ।'

'बिना नोटिस के यह नहीं हो सकता ।'

'यह ठीक है । परन्तु तुम इस विषय पर चाराजोई करोगे ?'

'जी, मेरा यही विचार है।'

'तुम सफल नहीं होगे।'

'इसमें मेरे सर्विस रूल मेरी सहायता करेंगे।'

'मेरी शुभ कामना तुम्हारे साथ है।' स्वामी जी ने कह दिया।

'मुनि की रेति' पर चल रहे प्रौढ़ावस्था शिक्षा केन्द्र से छुट्टी लेकर भूषण नंदिनी और बच्चों सहित दिल्ली आ पहुंचा।

वहां पहुंच उसने अपना क्वार्टर छः मास के उपरान्त खोला और उसकी शुद्धि की। जब सफाई की जा रही थी तो उसे सरकारी बंगलों के कार्यालय विभाग के सुपरिन्टेंडेंट का नोटिस मिला कि क्योंकि आप अब सरकारी सेवा में नहीं हैं, इसलिये क्वार्टर कब छोड़ेंगे, इसकी सूचना दें।'

यह नोटिस लेकर भूषण अपने कार्यालय में पहुंचा तो अपने सचिव वेंकटेश्वरन् के सामने उपस्थित हो अपने मिले नोटिस को दिखा पूछने लगा, 'इसका अर्थ मैं नहीं समझा।'

'अर्थ तो स्पष्ट ही हैं। तुम्हारा मुआमला जो मैंने तुम्हारे बदली के समय लिखा था, उसके सन्दर्भ में ही सेवामुक्त किया जा चुका है और इस विषय का नोटिस तुम्हारे क्वार्टर पर लगा दिया था।'

'परन्तु मुझे नहीं मिला ?'

'परन्तु तुम थे कहां ?'

'मैं दिल्ली से बाहर पहाड़ पर गया हुआ था।'

'यह पता तुमने कार्यालय में दिया हुआ नहीं था। अब उस नोटिस की नकल तुमको अपने कार्यालय से मिल जायेगी।'

'तुमको सेवा से मुक्त किये हुए तो तीन महीने हो चुके हैं परन्तु वह लागू आज से अर्थात तुम्हारी छुट्टियां समाप्त होने के समय से होगा।'

'सर !' भूषण देव ने कहा, 'यह तो बहुत अन्याय हो गया है।'

'मुझे इसका बहुत शोक है। परन्तु हमारे विभाग के मैम्बर का यह निर्णय है कि तुमको सरकारी नौकरी में नहीं रहने देना चाहिये।'

'मैं जानता हूं कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है और मेरी एक

भूल के कारण हुआ है, परन्तु यह भूल तुम्हारे श्वसुर ने करवाई थी। मैं उसके एहसान के नीचे दबा हुआ था और उसके कहने को टाल नहीं सका।


भूषण को विदित था कि इसमें उसके श्वसुर रमण कुमार का इतना हाथ नहीं था जितना श्रवण और मुकुन्दलाल का था।

## पांच

भूषण ने अपने क्वार्टर में पहुंच नंदिनी को सब बात बतायी तो वह बोली, 'यह सब स्वामी जी ने वहां ही बता दिया था।'

'हां ! परन्तु बहुत विचित्र है।'

'विचित्र बात तो यह है कि पिताजी और श्रवण को अपनी करनी का शोक भी नहीं है।'

भूषण का कहना था, 'कदाचित् उनको अपनी इस करनी के फल का ज्ञान नहीं है।'

'मैं इसका पता करना चाहती हूं।' नंदिनी ने कह दिया।

'कैसे पता करोगी ?'

'अभी आज तो हम दिल्ली आये हैं। मैं अपने माता-पिता से मिलने जाऊंगी ही। बस बातों-बातों से पता कर लूंगी कि उनकी इस करनी का उन्हें ज्ञान है अथवा नहीं और अपनी बात का इतना बड़ा परिणाम देख उनको दुख हुआ है अथवा नहीं।'

भूषण हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'ठीक है श्रीमती जी ! आप यह जांच पड़ताल कहां से आरम्भ करना चाहती हैं ?'

नंदिनी इस बात से हंस पड़ी। उसने कहा, 'मैं यह जांच अपने ज्ञान कोष में वृद्धि के लिये कर रही हूं। एक दिन स्वामी जी कह रहे थे कि संसार का भी ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और अनादि तत्त्वों का भी। संसार का ज्ञान प्राप्त कर संसार को सुगमता से पार किया जा सकता है और अनादि तत्त्वों के ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है।'

'तब ठीक है, करो।' भूषण ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं तो अपने ज्ञान की वृद्धि कर वापस ऋषिकेश जाने की बात विचार करने लगा हूं।'

‘देखिये, आप इस क्वार्टर में अपने समान को ठिकाने लगाने का प्रबन्ध कीजिए और मैं पहले मोहन के घर जाऊंगी, पीछे पिता तथा माता जी से मिलने उनकी कोठी पर जाऊंगी।’



‘और अपने बड़े भाई से मिलने नहीं जाओगी ?’

‘कुछ आवश्यकता अनुभव नहीं करती। इस पर भी आशा है कि माता जी से मिलने कोठी पर जाऊंगी तो वहां उसके दर्शन भी हो जायेंगे।’

‘मैं भी माता जी को मिलने जाऊंगा। तुम्हारे पिता अथवा भाई से मिलने को जी नहीं करता।’

नंदिनी बच्चों को लेकर मोहन की दुकान को चल दी। उसे यह ज्ञात था कि दुकान जामा मस्जिद के पीछे दरीबा के किनारे पर है। इस कारण वह तांगें में बैठ वहां जा पहुंची।

मोहन दुकान पर नहीं था, परन्तु दुकान पर कोठी का चौकीदार भगवती था। वह नंदिनी को पहिचान दुकान से नीचे उतर हाथ जोड़ नमस्ते कर पूछने लगा, ‘आप ऋषिकेश से कब आयी हैं ?’

‘आज प्रातःकाल की गाड़ी से ही आयी हूं। तो तुम मोहन के साथ हो ?’

‘हां बहिनजी ! छोटे वकील साहब ने एक दिन कान से पकड़ कोठी से निकाल दिया। उस समय मेरा दो मास का वेतन बकाया था, वह भी नहीं दिया।’

‘क्यों ?’

‘बहनजी ! बड़े लोगों की बात कहने की नहीं होती। मैंने किसी से कहा भी नहीं। इस पर भी निकाला गया हूं। उनको सन्देह था कि मैं कह दूंगा।’

‘मोहन कब तक दुकान पर आने वाला है ?’ नंदिनी ने पूछा।

‘वे यूनिवर्सिटी की ओर गये हैं। चार बजे तक अवश्य आ जायेंगे। दुकान बंद करने का समय पांच बजे होता है।’

‘मोहन का घर किधर है ?’

‘यहां से दो तीन सौ गज के अन्तर पर चांदनी चौक की ओर जाते हुए है। नीचे डयोढ़ी पर मोहन बाबू के नाम का बोर्ड लगा है।’

'तब ठीक है। मोहन आये तो उसे बता देना कि मैं उसके घर आकर उसकी प्रतीक्षा कर रही हूं।'



नंदिनी के विस्मय की सीमा न रही जब उसने देखा कि मोहन के घर पर उसकी मां विराजमान है। नीचे द्वार पर लैटरबक्स था। उस पर मोहन का नाम लिखा था और द्वार के साथ घंटी का बटन लगा था।

नंदिनी ने बटन दबाया तो ऊपर की मंजिल पर घंटी बजी और मां ही नीचे दरवाजा खोलने आयी।

'मां ! तुम यहां हो।'

'हां आओ, आ जाओ।' कृष्णा ने बच्चों की पीठ पर प्यार देते हुए पूछा, 'मुझे पहिचानते हो ?'

बड़े राम ने कह दिया, 'नानी जी को भूल नहीं सकते। आपके साथ ही तो मैं पिछले साल ऋषिकेश गया था।'

छोटा तो चकाचौंध नानी को देख स्मरण कर रहा था कि यह कौन है। नंदिनी ऊपर बैठक में गयी तो कृष्णा ने बहू मधु को आवाज दे दी। मधु अपने कमरे से बाहर आयी तो नंदिनी समझ गयी कि वह गर्भवती है। कृष्णा ने ही परिचय कराया, 'यह मोहन की बड़ी बहिन है, जो ऋषिकेश में रहती थी।'

मधु ने नंदिनी के चरण छूकर हाथ जोड़ते हुए पूछा, 'इस समय क्या लेंगी ?' आज गर्मी है। इस पर भी यदि शरबत न लेना चाहें तो काफी अथवा चाय भी बन सकती है।'

'भाभी !' नंदिनी ने मुस्कराते हुए कहा, 'जो तुम सुगमता से पिला सको। मैं तो दुकान पर गयी थी। वहां मोहन नहीं मिला। वहां कह आयी हूं कि मैं उसकी यहां प्रतीक्षा कर रही हूं। वह पांच बजे तक आयेगा और अभी दो बजे हैं।'

मधु रसोई घर में चली गयी। उसने एक बड़े से जग में शर्बत बनाया और ट्रे में जग तथा साथ ही पांच गिलास रख कर ले आई। उसने बताया, 'मैं चाय के लिये जल गर्म करने रख आई हूं। तब तक शर्बत पीते हैं।'

कृष्णा, नंदिनी, दोनों बच्चे और मधु शर्बत पीने लगे। मधु ने कहा, 'मैंने अपने श्वसुर जी की कोठी के दर्शन नहीं किये। किसी ने वहां आने का निमंत्रण ही नहीं दिया।'

'मेरी डोली इसी मकान पर आयी थी और तब से ही यहां

रह रही हूं।'



'और माताजी !' नंदिनी ने अपनी मां से पूछ लिया, 'आप यहां कब से हैं ?'

मां ने कहा, 'मैं बहू के इस घर में आने से चार-पांच घंटे पूर्व आयी थी। तब से ही यहां पर हूं। किसी ने कोठी में ले जाने का यत्न भी नहीं किया। श्रवण तथा उसके पिता मोहन के विवाह में भी शामिल नहीं हुए।'

नंदिनी विस्मय में मां का मुख देखती रह गयी। आखिर उसने बताया, 'मैं तो यह विचार कर आयी थी कि यहां भैया और मम्मी से मिलकर माताजी को मिलने कोठी पर जाऊंगी। परन्तु अब वहां जाने का विचार छोड़ बैठी हूं। आप तो यहीं मिल गयी हैं।'

कहते-कहते नंदिनी की आंखें तरल हो उठीं। कृष्णा और मधु उसका मुख देखती रह गयीं। नंदिनी ने आंखें पोंछते हुए अपने पति के कार्यालय से निकाले जाने की कथा सुना दी। इस पर कृष्णा ने कहा, 'मैं समझती हूं उस कोठी में आजकल भूतों और प्रेतों का राज्य है। तुम्हें वहां नहीं जाना चाहिये।'

पांच बज कर पांच मिनट पर मोहन आया और नंदिनी को वहां बैठा देख संतोष अनुभव करते हुए पूछने लगा, 'जीजाजी नहीं आये ?'

'घर से यह सोचकर निकली थी कि मैं भाभी से यहां मिल कर कोठी पर जाऊंगी। तुम्हारे जीजाजी वहां मुझे लिवाने पहुंच जायेंगे। परन्तु जिस प्रयोजन से वहां जाना था, वह तो यहां ही पूर्ण हो गया है। माताजी यहीं मिल गयी हैं।'

'माताजी का कहना है कि मुझे वहां नहीं जाना चाहिये। इस कारण अब वहां नहीं जाउंगी।'

'परन्तु दीदी ! उनको यहीं साथ में ले आतीं।'

'हमें क्वार्टर शीघ्रातिशीघ्र खाली करने का नोटिस मिल गया है और तुम्हारे जीजाजी अपने सामान का प्रबन्ध करने वहां ठहर गये थे।

'क्वार्टर क्यों खाली करने की आज्ञा हुई है।'

नंदिनी मुस्करायी और बोली, 'तुम्हारे जीजाजी को कार्यालय से सेवामुक्त किया जा चुका है। वे अब सरकारी सेवा में नहीं हैं।'

'यह क्यों ?'



इस पर नंदिनी ने जितना कुछ वह जानती थी बता दिया।

'तो अब जीजाजी क्या करेंगे ?' मोहन ने पूछा।

'जहां तक मैं जानती हूं, हमारे लिये काम तो ऋषिकेश में है। मेरे लिये भी और तुम्हारे जीजाजी के लिये भी। इस कारण यहां क्वार्टर के सामान से छुट्टी पाते ही हम ऋषिकेश को चल देंगे।'

'परन्तु जीजाजी ने लिखा था कि वहां उनको एक सौ रुपये वेतन मिलता है।'

नंदिनी मुस्कराकर बोली, 'वेतन तो कुछ भी नहीं मिलता। हमारा रहने का स्थान, खाने पहनने के लिये भोजन, वस्त्र और एक सेवक हमें मिला हुआ है। सब प्रकार की आवश्यकताओं का प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त एक सौ रुपये तुम्हारे जीजाजी को कुछ ऊपर के फुटकर खर्च के लिये मिलते हैं।'

'तो इतने में जीजाजी प्रसन्न हैं ?'

'वहां खाने पहनने के अतिरिक्त अन्य कुछ खर्च करने को है ही नहीं। न पिक्चरें हैं न सिनेमा है। न होटल हैं न रैस्टरां हैं। भोजन के लिये भी सब सामग्री आवश्यकतानुसार मिल जाती है। यह एक सौ रुपया भी हमारा बच जाता है।'

'वहां का खर्चा कौन देता है ?'

'एक ट्रस्ट है स्वामी ब्रह्मानन्द जी के नाम पर। उनके पास लाखों की सम्पत्ति है। वह ट्रस्ट ही सब खर्चा करता है। 'मुनी की रेती' पर दो स्कूल हैं। एक पुरुषों के लिये और एक स्त्रियों के लिये। एक में तुम्हारे जीजाजी और एक पण्डित पढ़ाते हैं और स्त्रियों के स्कूल में मैं अकेले ही अध्यापिका हूं।'

'और तुम वहां क्या पढ़ाती हो ?'

'जो स्त्रियां दिन भर वहां पढ़ने आती हैं तो उनको कुछ काम सिखाती हूं और साथ में उनको हिन्दी पढ़ाती हूं। वहां दो काम औरतों से करवाये जाते हैं। एक तो टोकरियां बनवाना और दूसरे मौजे बनवाने। दोनों आय देते हैं। इनके बेचने से जो कुछ मिलता है उसमें से उन स्त्रियों को मजदूरी दी जाती है।'

'इसी प्रकार पुरुषों के स्कूल में भी काम और शिक्षा दोनों चलते हैं। काम की उजरत उनको भी मिलती है।'

'मैं एक दिन वहां आपका स्कूल देखने आऊंगा।' मोहन ने कहा।

'कब आओगे?'

'यह विचार कर रहा हूं कि किन दिनों हम दुकान बंद कर सकते हैं। मेरा विचार इस वर्ष विजयदशमी के दिनों में है। तीन दिन दुकान बंद कर आपको मिलने आऊंगा। परन्तु ···।'

'परन्तु क्या?'

'यही कि यह मधु अपने आप से तबतक फुरसत नहीं पा सकेगी।'

नंदिनी ने सुझाव दे दिया, 'तो नवरात्रों के स्थान होलियों में छुट्टी पर आओ। मधु एक से दो होकर आ सकेगी।'

मधु मुस्कराई! उसने मुस्कराते हुए कहा, 'एक ज्योतिषी ने कहा है कि यह लड़का होगा।'

'कौन है वह?'

'एक तांत्रिक है।'

'तो ज्योतिषी नहीं। वह भी कोई हमारे स्वामीजी की भांति परमात्मा से योग रखता होगा।'

नंदिनी सांयकाल सात बजे तांगा कर अपने क्वार्टर पर पहुंची। भूषण वहां नहीं था और क्वार्टर को ताला लगा हुआ था। वह वहां स्क्वेयर में लगे टेलिफोन से पिता की कोठी पर टेलिफोन करने चली गयी। हैवलोक स्क्वेयर में सरकारी पी० डब्ल्यू० डी० का कार्यालय था। वहां टेलीफोन लगा था।

जब टेलीफोन का सम्बन्ध बना तो उधर से श्रवण कुमार बोला। नंदिनी ने पूछा, 'कौन बोल रहे हैं?' उसने आवाज नहीं पहचानी थी।

उत्तर मिला, 'श्रवण कुमार।'

'मैं नंदिनी बोल रहीं हूं।'

'और भूषण जी तुम्हारी यहां प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'भैया! उनसे कहो कि मैं यहां क्वार्टर पर पहुंच गयी हूं।'

'तुम हमारे यहां नहीं आयीं?'

'अब थक गयी हूं। कल अवकाश मिलने पर आ जाऊंगी।'

'कहां घूमती रही हो जो थक गई हो? देखो नंदिनी! अब पिताजी ने मोटर ले ली है और मैं उसे तुम्हारे क्वार्टर पर भेज

रहा हूं। तुम बच्चों सहित यहां आ जाओ।'



'तो ठीक है। फिर रात को वापस भी भेजने का प्रबन्ध करना होगा।'

'उह तो पिताजी से आकर कहना। भूषण जी कह रहे हैं कि वे चार-पांच दिन में वापस ऋषिकेश जा रहे हैं।'

'मैं पिताजी की मोटर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रही हूं।'

टेलिफोन बंद हुआ। इस पर भी आधा घंटा नंदिनी क्वार्टर के बरामदे में बैठी रही। मोटर आयी तो श्रवण साथ आया।

'आओ नंदिनी !' श्रवण ने मोटर से उतर बहिन को निमंत्रण दे दिया। नंदिनी तो प्रतीक्षा में बैठी थी। इस कारण वह और बच्चे मोटर में बैठे तो मोटर गाड़ी सिविल लाइन्स को चल पड़ी।

'भैया ! यह मोटर कितने की ली है ?'

'यह पिताजी ने कलकत्ता की एक लाटरी में जीती है। वैसे यह घोड़ा गाड़ी से मंहगी है। कहते हैं इसका मूल्य तेईस सौ रुपये है। चालीस मील तक एक घंटे में चलती है।'

'तब तो कहना चाहिये कि पिताजी का सितारा उच्च का है ?'

'हां ! परन्तु मेरा सितारा राहूग्रस्त प्रतीत हो रहा है।'

'क्यों, क्या हुआ है ?'

'मेरी वकालत का लाईसैंस जब्त हो गया है और मुझे दस वर्ष के लिये वकालत करने से रोक दिया गया है।'

'यह क्यों ?'

'यह एक लम्बी कहानी है। फिर कभी बताऊंगा।'

नंदिनी ने समझा कि ड्राइवर के कारण श्रवण नहीं बता रहा। इस कारण वह चुप कर रही।

श्रवण ऋषिकेश की बातें पूछता रहा। नंदिनी अपने वहां काम के विषय में बताती रही। राधा के विषय में न तो श्रवण ने पूछा, न ही नंदिनी ने बताया।

भूषण देव रमण जी के पास बरामदे में बैठा हुआ था। बिजली के पंखे कोठी में लग गये थे और वे उसकी हवा का स्वाद ले रहे थे।

नंदिनी ने पिताजी को हाथ जोड़ नमस्ते कही तो रमण ने

पूछ लिया, 'तुम्हारा जी नहीं किया बूढ़े पिता को मिलने के लिये ?'



'पर पिताजी ! आप बूढ़े हैं क्या ?'

'जब से तुम्हारी मां घर से भागी है, मैं बूढ़ों में सम्मिलित हो गया हूं ।'

'कहां भागी है ?'

'जहां उसे अधिक स्वाद मिल रहा है ।' रमण ने कह दिया ।

नंदिनी समझ तो रही थी, परन्तु वह बताना नहीं चाहती थी कि वह मां से मिल आयी है । इस कारण उसने पूछ लिया, 'तो आपने उसे बहुत कष्ट दिया प्रतीत होता है ?'

'केवल उतना ही, जितना एक पति को पत्नी को देने का अधिकार प्राप्त है। परन्तु मैल के कीड़े तो मैले में ही आनन्द पाते हैं ।'

मोहन के घर की तुलना मल से की जाती सुन नंदिनी गम्भीर हो गयी । इस पर श्रवण ने बताया, 'परन्तु नंदिनी ! तुम वहां गयी तो थीं ।'

नंदिनी समझ गयी कि उसके पति ने बताया होगा कि वह मोहन के घर गयी है । इस कारण वह कहने लगी, 'मैं अपना अनुभव तो पीछे बताऊंगी पहले पिताजी का अनुभव जानना चाहती हूं । मां ने मुझे बताया है कि यहां से पिछले चार मास से उसे कोठी से लेने कोई नहीं गया ।'

इस पर रमण ने कहा, 'यह इसलिये कि वह वहां हमसे पूछ कर नहीं गयी ।'

'तो मां यहां पर बंदी-गृह में थी, जो पूछे बिना नहीं जा सकती थी । उसने बताया है कि वह मोहन के घर गयी थी नई वहू के लिये उचित व्यवस्था करने और तब से ही यहां से लिवाने की प्रतीक्षा कर रही है ।'

'क्यों ?' उत्तर रमण ने ही दिया, 'जिन पांवों से चल कर गयी थी, वे टूट गये हैं क्या ? उन्हीं पांवों से वह आ सकती थी ।'

नंदिनी ने अभी भी उत्साह नहीं छोड़ा और कहा, 'पिताजी ! वह आपकी पत्नी है । आपको उन्हें लेने के लिये जाना चाहिये था । वह आपके लड़के की सुख-सुविधा देखने ही वहां गयी थीं ।'

'तो तुम मां की वकालात करने आयी हो ?'

'तो नहीं करनी चाहिये ?' नंदिनी का प्रति प्रश्न था ।

इस पर श्रवण कुमार ने कह दिया, 'भोजन तैयार है भीतर चलना चाहिये ।'

## छह

भोजन करते हुए नंदिनी ने श्रवण कुमार से पूछ लिया, 'भैया ! तुम्हारी वकालात का लाईसैंस किसलिये छिन गया है ?'

'यह एक लम्बा किस्सा है। उस बदामश वेंकटेश्वरन के असिस्टेंट मुकुन्दलाल की बदमाशी है ।'

'हम एक स्वर्णलता के विषय में रफीक भी हैं । एक दिन हम दोनों में उसके लिये बाजी लग गई । बाजी मैं हार गया परन्तु स्वर्णलता ने कह दिया कि बाजी दो मित्रों में थी । वह उस बाजी में अपने को नहीं समझती । इस कारण वह मेरे साथ आ गई ।'

'इसका बदला लेने के लिये उसने मुझे मुकद्दमे में गवाही देने के लिये बुलवाया । झूठी गवाही देनी पड़ी । पीछे उसी ने मेरी शिकायत करवा दी और मैजिस्ट्रेट के सामने झूठी साक्षी भरने के कारण लाहौर चीफ कोर्ट से मेरा लाईसैंस जब्त करवा दिया है ।

'तो अब क्या करते हो ?'

इस पर पिता हंस पड़ा । हंसते हुए बोला, 'बहुत कमा चुका है और अब उसका भोग हो रहा है ।'

नंदिनी चुप कर गयी । उसने और कुछ नहीं पूछा । भूषण तो सब कहानी पहले ही सुन चुका था । इस कारण वह इस वार्तालाप में मजा नहीं ले रहा था ।

रात के ग्यारह बजे मोटर भूषण और नंदिनी तथा बच्चों को उनके क्वार्टर पर छोड़ गयी ।

अगले दिन भूषण ने बताया, 'मैं शीघ्रातिशीघ्र यहां से ऋषिकेश भाग जाना चाहता हूं । यहां के पूर्ण नगर से दुर्गन्ध आ रही है और मैं आज यहां दम घुट रहा अनुभव करता हूं ।'

'परन्तु इस क्वार्टर के सामान का क्या करेंगे ?'

'पंचकुइयां रोड़ पर एक नीलामिया से कहा है कि आगामी रविवार व० क्वार्टर के सामान की नीलामी कर दे। वह इसका इश्तिहार भी देगा और नीलामी भी करेगा। जो दाम वसूल होगा उसका दस प्रतिशत वह लेगा।'

'तब ठीक है।'

'वह आया थ.। सब सामान देखकर कह गया है कि दो कुली लाकर मैं सब सामान बाहर लान में रखवा दूं। रविवार प्रात:काल नीलामी होगी।'

'यह तो बहुत अच्छा किया है। मेरे सिर से बोझा हल्का हो गया है।'

'मैं आज कार्यालय जा रहा हूं और अपना पिछले छ: मास का वेतन ले आऊंगा। साढ़े चार हजार रुपये होगा।'

'देखो देवी। अपने कार्यक्रम के विषय में पिता जी और श्रवण इत्यादि को कुछ नहीं बताना चाहिये। वे अब विश्वस्त व्यक्ति नहीं है। मेरा कार्यालय से निकाला जाना श्रवण की शरारत से हुआ है। वह कहता था कि उसको संदेह हो गया था कि मेरा राधा से अवैध सम्बंध है।'

'बड़ा मूर्ख है।'

'यह सब शराब पीने का फल है। भगवान की कृपा है कि मुझे इस पाप से बचा लिया।

'जानती हो मेरे मन में तब क्या आता था ?'

'कब ?'

'जब मैं पीता था ?'

'क्या आता था ?'

'शराब के नशे में यही तबीयत करती थी। यही कि तुम्हें चीर फाड़कर खा जाऊं। परन्तु जब से शराब छोड़ी है, बुद्धि निर्मल दिखाई देने लगी है।'

उस दिन नंदिनी वह सामान पृथक् करती रही, जो नीलाम करने का विचार नहीं था। भूषण अपने कार्यालय चला गया। वह अपनी छुट्टियों के दिनों के वेतन का बिल बनवा चैक बनवाता रहा। इस काम मे उसे मुकुन्दलाल के सामने होना पड़ा। मुकुन्दलाल भूषण से उसकी नौकरी छिन जाने पर शोक प्रकट करने

तब तो भूषण ने कह दिया, 'मुझे इस नौकरी के छूट जाने का शोक नहीं है। यहां पर अपने साथ अन्याय होते देख ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि इस विभाग से पृथक हो रहा हूं।'

'पर भूषण। तुम इस आज्ञा की अपील कर सकते हो?'

'और तुम्हें तथा सचिव को झूठा सिद्ध करने का यत्न करूं?'

'मैं तो तुम्हारी सहायता करूंगा।'

'जैसी अपने मित्र श्रवण कुमार की की है।'

'क्यों मैंने उसको कोई हानि पहुंचाई है क्या?'

इस पर भूषण ने वह सब कहानी बता दी जो श्रवण ने पिछली रात सुनायी थी।

इस पर मुकुन्दलाल हंसता हुआ बोला, 'तो अपने गुनाहों का जिम्मेदार मुझे बता रहा है?'

'मुझे उसने यही कहानी बतायी है।'

'वह झूठा है। असल बात यह थी कि स्वर्णलता जब भी किसी के घर रात सोने जाती है एक सौ रुपया लेती है। उस दिन श्रवण ने उसे कुछ दिया नहीं। उसने स्वर्णलता को कह दिया कि उस रात वह स्वेच्छा से उसके पास आयी थी। इस कारण वह कुछ नहीं देगा।

इस बात से चिढ़कर स्वर्णलता ने ही उसे फंसाया है। अब वह भागदौड़ कर रहा है कि उसका लाइसैंस वापिस मिल जाये परन्तु स्वर्णलता और मैजिस्ट्रेट की मित्रता है और वह श्रवण को उस रात का दण्ड देने पर तुली हुई है।'

भूषण को यह कहानी भी झूठी समझ आयी। वह चुप रहा। दफ्तर से साढ़े चार हजार का चैक लेकर वह मोहन से मिलने चला गया। मोहन ने पूछा, 'आपने अपने घर के फर्नीचर का क्या किया है?'

'उसकी नीलामी करने का प्रबंध कर दिया है।'

'कब होगी नीलामी?'

'आज आसपास के स्वर्णघरों में डुग्गी पिट गयी है और कल प्रातः अखबार में इश्तिहार भी छप जाएगा। नीलाम करने वाले को दस प्रतिशत देना पड़ेगा।'

'यह ठीक किया है आपने।'

इस पर मोहन ने बताया कि आगामी होलियों के दिनों में मधु के साथ मैं ऋषिकेश में आपका मेहमान बनकर देखूंगा कि आपको वह स्थान क्यों इतना अच्छा लगता है ?

मोहन ने आगे कहा, 'यहां तो मुझे दुकान आरम्भ किये अभी पांच महीने हुए हैं और दुकान का खर्चा निकाल कर डेढ दो सौ महीना पैदा कर रहा हूं। आशा तो है कि शीघ्र ही नौकरी जितना वेतन प्राप्त करने लगूंगा।'

भूषण ने कहा, 'ठीक है, आने के पहले यदि पत्र लिख दोगे तो हरिद्वार आकर तुम्हें ले जाऊंगा। हमारे आश्रम का घोड़ा-गाड़ी है। वह भी तुम्हारी पत्नि और तुम्हारे लिये ला सकूंगा।'

अब तो अवश्य पत्र लिखूंगा।

भूषण अभी मोहन से नमस्ते ही कह रहा था कि रमण भी अपनी मोटर गाड़ी में दुकान के सामने आ खड़ा हुआ। मोहन ने ही पिता को पहले देखा। वह लपक कर उठा और पिता जी का स्वागत करने मोटर के पास जा खड़ा हुआ।

'मैं तुम्हारी माता को लेने आया हूं।'

'तो मुझसे पूछने की आवश्यकता है क्या ? पिता जी। वह मां है, जब तक मेरे घर में रहना चाहे रह सकती है। जब जाना चाहे तो मैं रोक कैसे सकता हूं ?'

'परन्तु वह कहती है कि मधु के दिन बढ़ गए हैं। इस कारण वह जा नहीं सकती।'

'तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं ? मां पुत्र पर कृपा करे तो पुत्र कैसे इंकार कर सकता है ?'

'घर चलो।'

'और दुकान ?'

'भगवती है। वह देख लेगा।'

विवश मोहन भूषण को कहने आया कि वह पिता जी के साथ अपने घर चल रहा है।

भूषण ने भी उठते हुए कहा, 'मैं फिर किसी समय आऊंगा।'

'तुम भी हमारे साथ मोटर में चलो। अपनी सास को तुम ही सम्मति दे सकोगे।'

भूषण देखना चाहता था कि पति-पत्नि के साथ कैसा व्यवहार करता है। वह यह तो समझ गया था कि पहली रात

नंदिनी के कथन का प्रभाव हुआ है। इस कारण वह भी मोटर में बैठ गया। तीनों मोहन के घर पर जा पहुंचे।

जब ये ऊपर पहुंचे तो मां ने पुत्र को कह दिया, 'मोहन ! तुम्हारे पिता जी मुझे अपने घर ले चलने के लिए आये हैं परन्तु मैं तुम्हारी पत्नी को इस अवस्था में अकेली छोड कर नहीं जा सकती। इस कारण मैं समझ नहीं सकी कि क्या करूं ?'

'क्यों मधु। रह सकोगी अकेली ?' कहो तो तुम्हारी माताजी के घर पर ले जा सकता हूं।'

'जी नहीं।' मधु ने कहा, 'मैं अप- आप मां के घर नहीं जाऊंगी। जब यहां कष्ट होने लगेगा तो विचार कर लूंगी। देखूंगी कि मां क्या कहती है।'

'और तुम भी हमारी कोठी में क्यों नहीं चल सकतीं ?' रमण ने पूछ लिया।

मधु ने हा, 'यह आप अपने सुपुत्र को कहिए। मेरे माता-पिता ने इनके साथ रहने के लिए भेजा है।'

'क्यों मो न। क्या कहते हो ?'

'पिता जी। उस कोठी में जाकर रहने को चित्त नहीं करता। वहां नगर-भर की गन्दगी पहुंचती रहती है।'

'तुम अपना कमरा बंद रखो। आखिर मैं भी तो वहां रहता हूं और तुम्हारी मां भी वहां रहती रही है और अब भी वहां जाना चाहती है।'

इस पर भूषण ने प्रस्ताव कर दिया, 'मोहन मधु को अपनी ननद के घर भेज सकता है। वहां इसके प्रसव का यथासम्भव प्रबंध कर दिया जाएगा।

मधु पति का मुख देखने लगी। मोहन ने विचार किया और कह दिया, 'यदि दीदी कहेगी तो भेज दूंगा। आखिर बोझा उस पर ही होगा।'

'तो कल वह स्वय मधु को निमंत्रण देने आ जाएगी।'

'तो कृष्णा। अब चलो।'

मां ने बहू को कह दिया, 'देखो मधु ! ऐसा करो कि आज तुम मेरे साथ कोठी पर चलो। और जब तक नंदिनी दिल्ली में है तब तक वहां रहकर देखो कि कैसा जीवन वहां पर है। यदि पसंद न आए तो नंदिनी के निमंत्रण पर ऋषिकेश चली जाना।'

बात बन गयी। कृष्णा मधु को लेकर पति की कोठी पर चली गयी। मोहन ने कह दिया, 'मैं साढ़े पांच बजे वहां पहुंच जाऊंगा।'

'और भूषण। तुम भी नंदिनी सहित जब तक दिल्ली में हो वहां चले आओ।' रमण ने दामाद से कहा।

'नंदिनी से पूछना होगा।'

'तो मैं श्रवण को सायंकाल अपनी गाड़ी में भेज दूंगा। बच्चों सहित तैयार रहना। देखो नंदिनी को मना न कर देना। उसको अपने मन से आने जाने के लिये स्वतंत्रता दे देना।'

'ठीक है।'

## सात

रविवार के दिन नंदिनी और भूषण अपने क्वार्टर पर प्रातः आठ बजे ही जा पहुंचे। जो सामान नीलाम होने वाला था, वह उन्होंने कुलियों से उठवा क्वार्टर के बाहर लॉन में रखवा दिया। दस कुर्सियां थीं, दो मेजें थीं, एक डाइनिंग टेबल और उसके साथ की छः कुर्सियां, एक सोफासेट, दो दरियां तथा एक कालीन था। कुछ श्वेत चादरें, तकिये और रसोईघर के बर्तन थे। भूषण को विस्मय हुआ जब नीलाम पर पचास के लगभग खरीदार वहां एकत्रित हो गये।

ठीक आठ बजे नीलामी आरम्भ हुई और ग्यारह बजे खत्म हो गयी। सब मिल मिलाकर साढ़े तीन हजार रुपये का सामान बना। भूषण को आशा नहीं थी कि इतना दाम वसूल होगा। परन्तु इस ऊंची कीमतों का रहस्य उसे सायंकाल वकील साहब से पता चला। उसके क्वार्टर का सामान बैलगाड़ियों पर लदा हुआ उनकी कोठी पर ही पहुंच गया था।

नंदिनी और भूषण बच्चों सहित उस दिन मध्याह्न का भोजन नई दिल्ली के रेस्टोरां में लेकर कोठी पर पहुंचे तो अपनी ही कोठी का सामान श्वसुर की कोठी पर गाड़ी से उतरते देख चकित रह गये।

नंदिनी को पहले समझ आया कि क्या हुआ है। उसने पति

[illegible] 'तो यह [illegible] सामान पिता जी ने खरीद लिया है ?'

'पर क्यों ? यदि मुझे पहले बता देते तो मैं वैसे ही सब यहां पहुंचा देता ।'

'इस क्यों का उत्तर तो पिता जी से पूछने पर ही पता चलेगा ।'

रमण कुमार कोठी पर नहीं था । कोठी का नया चौकीदार एक पर्चे पर लिखे सामान की सूची से सामान मिला रहा था ।

भीतर गये तो कृष्णा ड्राइंग रूम में बैठी मधु से बातें कर रही थी । नंदिनी ने ही बताया 'हमारी कोठी का सामान यहां इस कोठी पर आ गया है । कौन लाया है ?'

कृष्णा हंस पड़ी और बोली, 'तो उसके यहां आने पर तुम्हें कुछ कष्ट हुआ है ?'

'नहीं मां ! कष्ट की बात नहीं । यदि हमें पता होता कि इसके ग्राहक पिता जी हैं तो फोकट में साढ़े तीन सौ नीलामी की कमीशन तो न देनी पड़ती ।'

'और कितना दाम पड़ा है ?'

'पर मां ! किसने खरीदा है ?'

'मैंने खरीदा है । मेरा ही एक आदमी वहां गया हुआ था और बोली देकर सामान खरीद लाया है ।'

'पर मां ! तुमने यह सामान किसलिये खरीदा है ?'

'मधु के लिये ।'

'परन्तु तुमने बताया नहीं ?'

'बताती तो तुम मोल लेती ही नहीं ।'

'वह तो अब भी वापस करने का विचार कर रही हूं ।'

'परन्तु जिसने दाम दिया है वह तुमसे नहीं लेगा ।'

'कौन हैं वह !'

'तुम्हारे पिता जी हैं । कल हमने राय की थी कि मोहन के लिये एक कोठी यहां किराये पर लेकर मधु को उसमें रख लिया जाये और उनके लिये बना बनाया फर्नीचर खरीद लिया है । शेष कोठी में चल कर देखेंगे कि और कितना चाहिये ।'

मोहन और मोहन की पत्नी, नंदिनी तथा भूषण का मुख देख मुस्कुरा रहे थे । अब मोहन ने कहा, 'जीजा जी ! मेरे और पिता जी में एक समझौता हो गया है ।'

'क्या ?'

'यह बगल वाली कोठी किराये पर ली है। पिता जी उसके मालिक के पास किराये का फैसला करने गये हुए हैं। वह कहते थे कि जब तक मैं अपनी धर्म की कमाई में से अपने लिये कोठी नहीं बनवाता तब तक यह कोठी किराये पर हमारे लिये ले रहे हैं।'

नंदिनी और भूषण विचार कर रहे थे कि यह पिता जी के दिमाग का कांटा कैसे बदला है। इस नई परिस्थिति से वे प्रसन्न थे।

भूषण ने कहा, 'माता जी ! तब तो मुझे वह सब रुपया जो इस फर्नीचर का प्राप्त हुआ है पिता जी को वापस करना पड़ेगा।'

'वह आयें यो यत्न कर लेना। मैं तो चाहूंगी कि तुम्हें एक पैसा भी वापिस नहीं करना चाहिये। यह सब वह रुपया है जो मोहन के पिता मोहन के विवाह पर व्यय करना चाहते थे। वह मैं उनसे निकलवा रही हूं।'

नंदिनी और भूषण तो चाय पी कर ही आये थे। इस कारण वह अपने ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बताने लगे।

भूषण ने कहा, 'मैं कल क्वार्टर की चाबी विभाग के चौकोदार को देकर रसीद ले लूंगा। तब दो दिनों में हम ऋषिकेश के लिये रवाना हो जायेंगे।'

'मेरा विचार है रात श्रवण के पिता से बात कर अपना कार्यक्रम बनाना।'

इस नयी परिस्थिति पर तो भूषण और उसकी पत्नी विस्मय में मुख देखते रह गये।

बात रात भोजन पूर्व जब परिवार ड्राइंग रूम में एकत्रित हुआ तो हो गयी। भूषण, नंदिनी, मोहन, मधु, रमण, कृष्णा और श्रवण उपस्थित थे। रमण ने कृष्णा को सम्बोधन कर कहा था, 'देखो कृष्णा। यह बगल वाली कोठी की चाबी ले आया हूं और तीन महीने का किराया जमा करा आया हूं। अब यह तुम्हारा काम है कि तुम मोहन को उसमें आकर रहने के लिये तैयार कर लो।'

कृष्णा ने कहा, 'मैंने मधु को तैयार कर लिया है और मोहन तो उसके पीछे पीछे स्वयं हो आ जायेगा।'

मोहन ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, 'आप इतना कुछ मुझ पर व्यय कर रहे हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्यों ?'

'और यह समझ आ गया है,' रमण ने मुस्कराते हुए कहा, 'कि मैंने तुम्हारे बी० एस-सी० करने तथा रुड़की में जा कर इंजीनियरिंग पढ़ने पर क्यों व्यय किया था ?'

'आपके छः मास पूर्व के व्यवहार को देखकर तो समझ नहीं आता। मैं तब आपके प्रत्येक कार्य का विश्लेषण कर यही समझा था कि मुझ पर व्यय किये धन पर आपको पश्चात्ताप लग रहा होगा। अब पांच महीने के उपरान्त ही मैं तीन दिन हुए इस कोठी में आया हूं और अब आप में परिवर्तन देख तो कुछ भी समझ नहीं रहा। आज आपने यह कोठी तीन सौ रुपये प्रति मास पर किराये पर ली है; उसमें लगाने के लिये फर्नीचर साढ़े तीन हजार का मोल लिया है और मैं समझता हूं कि अभी कुछ और भी खर्च होगा, तब ही वह कोठी रहने योग्य हो सकेगी। यह सब क्यों, मैं समझ नहीं सका।'

'तो समझ लो। तुम इस कृष्णा देवी के पुत्र हो और उसके पुत्र से मेरा स्नेह है। जब तुम पढ़ते थे, तब भी यही विचार था और अब भी वही विचार है। हां, बीच में कुछ हो गया था। वह क्या था, यह तुम्हारी मां ने परसों यहां आने के उपरान्त समझाया है। उस समझने से ही कांटा बदला है।'

'तब तो,' भूषण ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'माता जी के इस चमत्कार पर माता जी को बधाई देनी चाहिये। परन्तु पिता जी ! यदि आपने वह फर्नीचर खरीदना ही था तो पहले बता दिया होता। तब मैं यह सब कुछ बिना एक पैसा भी व्यय किये यहां पहुंचा देता।'

'इस विषय पर विचार हुआ था। मैं ऐसा ही कुछ करने का विचार रखता था परन्तु नंदिनी की मां ने एक बात कही थी। उसने पूछा था कि क्या मैंने नंदिनी और नंदिनी के पति को पहले ही पर्याप्त हानि नहीं पहुंचाई, जो अब गीध की भांति उनकी कमाई पर लोभ दृष्टि रखे हुए हूं ?'

'मुझे यह जान कि तुम्हारा सरकारी सेवा से मुक्त होना श्रवण की किंचित् मात्र हरकत से हुआ है, अपने अभी तक मौन बैठे रहने पर पश्चात्ताप लगने लगा है और मैं उसका प्रायश्चित

करने का विचार करने लगा हूं। इस प्रायश्चित में प्रथम पग मैंने यह उठाया है कि तुम्हारा फर्नीचर अच्छे दाम पर बिक जाय।



'अन्यथा मुझे बताया गया है कि नगर के कबाड़ियों का एक टोला वहां पहुंचा हुआ था जो तुम्हारी जीवन भर की कमाई कौड़ियों के दाम पर ले जाने वाले थे। यदि मेरे कारिन्दे वहां बोली देने न पहुंचे होते तो यह साढ़े तीन हजार का माल एक डेढ़ हजार से भी कम पर एक दो तीन हो जाता।'

'पर,' नंदिनी ने कहा, 'हम तो यह विचार कर रहे थे कि आप का एहसान हम पर पहले ही इतना कुछ है कि वह अभी भी हमारे में अन्दर खलबली मचा रहा है। हमने उसका बहुत सा अंश तो ब्रह्मानन्द ट्रस्ट को दे दिया है। शेष अब जाकर देने का विचार था।'

'तो तुम मेरे दिये धन को दूषित समझती हो?'

'पिता जी! हम तो ठीक समझ ही प्रयोग कर रहे थे, परन्तु वहां के स्वामी जी ने आपके कारोबार की कुछ बातें बतायी हैं, जिसको सुन हमारे मन में आपसे प्राप्त हुए पर ग्लानि अनुभव होने लगी है।'

'क्या बताया था उन्होंने? वह मुझे कैसे जानते हैं? मैं तो उनकी सूरत से भी परिचित नहीं।'

'उन्होंने, अब भूषण ने बातों में दखल देते हुए कहा, 'एक घटना आपके जीवन की बतायी हैं जिसे सुन कर तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये थे।' मैंने स्वामी जी को कहा था कि मुझे उनकी इस कहानी पर विश्वास नहीं आता। इस पर वह मुस्कुरा कर बोले, 'कभी वकील साहब से मिलोगे तो पूछ लेना। यदि वह इससे इनकार करेंगे तो उनसे पीड़ितों के परिवारों को लाकर सामने खड़ा कर सकता हूं।'

'बहुत बदमाश है वह!'

'तो ऐसा करिए, एक दिन उनके सम्मुख इस आरोप से इनकार कर दीजिये। तब उनको अपने कथनानुसार अपनी बात का प्रमाण देना होगा।'

'मैंने अपनी जानकारी में ऐसा कोई काम नहीं किया जो प्रायः वकील नहीं करते।'

'परन्तु वह वकालत के व्यवसाय से बाहर की बात है।

यद्यपि आपका उसके साथ सम्पर्क वकील होने के कारण ही हुआ था।


'और भूषण ! तुमने उस ठग की बात को सत्य मान मेरे दिये धन को व्यर्थ गंवाना आरम्भ कर दिया है ?'

'परन्तु पिता जी ! वह ठग प्रतीत नहीं होते। उन्होंने कई अन्य बातों की जानककारी के विषय में अकाट्य प्रमाण दिये हैं। इससे अनुमान है कि आपके विषय की बात भी सत्य ही होगी।'

रमण बात तो कर रहा था अदालत में झूठे मामले को लेकर बहस करने की भांति, इस पर भी नंदिनी और भूषण के आरोप को सुन उसके मुख का रंग विवर्ण हो रहा था।

एकाएक कृष्णा ने बात बदल दी। उसने कहा, 'यदि कुछ भूल हो जाये तो उस पर पश्चात्ताप और प्रायश्चित करने पर परमात्मा भी क्षमा कर देता है। और तुम तो उस अपरिचित व्यक्ति की बात सुन उसे विधाता का रूप समझ रही हो।'

'नहीं मां !' नंदिनी ने कहा, 'कोई भी कर्म ऐसा नहीं जिसके निराकरण का उपाय नहीं। परन्तु यह तो कर्म करने वाला ही कर सकता है। मेरा आज इस विषय पर चर्चा करने का अभिप्राय यही है कि पिता जी इस ओर से अपने पग वापिस करने आरम्भ कर दें। अभी समय है। बहुत कुछ इसी जीवन में किया जा सकता है।'

'उसके लिये भी मैं यत्न कर रही हूं।' कृष्णा ने कहा, 'यह तो भगवान् के अधीन ही है कि यह इनको सुमति दे। मैंने इनसे एक बात कही थी और उस बात का ही परिणाम है कि आज यह मधु के लिये कुछ करने पर तैयार हुए हैं।'

इस पूर्ण वार्तालाप को सामने बैठा श्रवण भी सुनता रहा था। वह बोला कुछ नहीं। यह बात समाप्त हुई जब नौकर ने आकर कहा कि भोजन तैयार है। सब उठकर खाने के कमरे में चले गये। वह अप्रिय बात समाप्त हो गयी।

अपने सोने के कमरे में रमण कुमार ने अपनी पत्नी को कहा, 'मुझे अब अपने सगे सम्बन्धियों से ही भय लगने लगा है।'

'मैं समझती हूं कि डरने की आवश्यकता नहीं। मुझे विश्वास है कि वहां ड्राइंग रूम में बैठे हुओं में श्रवण के अतिरिक्त अन्य कोई भी मन से आपका शत्रु नहीं है। इस कारण वह पूर्ण

वार्तालाप इस रूम से बाहर नहीं जायेगा। साथ ही जो कुछ नंदिनी और भूषण बता रहा था, वह ब्रह्मानन्द से प्राप्त ज्ञान का वर्णन कर रहा था। उनको स्वामी जी के कहने पर विश्वास है। इसी कारण वह कह रहा था, अन्यथा उनके पास आपके कर्म का कोई प्रमाण नहीं है।'

'देखिये जी !' कृष्णा ने अपनी सम्मति थी—'दोषों को प्रकट हो जाना और उनको स्वीकार कर उनके लिये पश्चात्ताप और प्रायश्चित करना दण्ड भोगने के समान ही है। इससे पाप का बोझा हल्का होता है।'

'मुझे दिल्ली से भय लगने लगा है।'

'तो दिल्ली छोड़ दीजिये। इतना कुछ जमा कर लिया है। वह शेष जीवन को चलाने योग्य पर्याप्त नहीं है क्या ?'

'नंदिनी तो बता रही थी कि उनको जो एक सौ रुपये मासिक 'ऐलाऊंस' ट्रस्ट की ओर से मिलता था, उसके व्यर्थ करने के लिये वहां अवसर ही नहीं होता था और उनका यह एक सौ रुपया भी जमा हो रहा है।'

'यह ठीक है, परन्तु मुझे तो ट्रस्ट की ओर से भोजन, वस्त्र, मकान नहीं मिल रहा।'

'परन्तु आपने ही तो उस दिन कहा था कि इतना कुछ आपके पास है कि शेष जीवन में कमाई की आवश्यकता नहीं। तो सब बैंक में जमा करा दीजिये और चलिये किसी एकान्त स्थान पर बैठ अपने पूर्व कर्मों के प्रायश्चित का उपाय करें।

रमण चिन्ता में डूबा हुआ अपने बीते जीवन को याद करने लगा।

नंदिनी ने स्वामी जी को जो बात बताई थी उस पर रमण का ध्यान चला गया।

घटना इस प्रकार थी। जब रमण कूचा बल्ली मारान में रहता था उनके पड़ोस में एक करीमबख्श रहता था। करीमबख्श चांदनी चौक में एक बरसाती का सौदागर था। उसने एक कमसिन लड़की से शादी करने के लिये अपनी पहली बीवी को तलाक तो दिया, परन्तु उसे 'हक-मेहर' नहीं दे रहा था।

जब रमजानिन ने 'हक-मेहर' का मुकद्दमा किया तो उसने रमण को अपना वकील नियुक्त किया। अदालत में यह सिद्ध

कहना था कि करीमबख्श ने शादी के समय यह इकरार किया था कि पांच गवाहों के सम्मुख दस हजार रुपये 'हक-मेहर' का देकर तलाक दे सकेगा। रमजानिन ने रमण कुमार को दो सौ रुपये मेहनताना देना मंजूर किया था, परन्तु पड़ोसी होने के नाते रमण ने नहीं लिये। इस पर भी मौका मिलने पर वह रमजानिन का भोग प्राप्त करने में पीछे नहीं हटा।

गवाह बनाये गये तो दूसरी ओर करीमबख्श ने वकील साहब को प्रत्येक गवाह को तोड़ने के लिये पांच-पांच सौ रुपये देना मंजूर किया और रमण साहब ने यह कार्य अपने हाथों से किया। उन्होंने प्रत्येक गवाह को एक-एक सौ रुपये दिये और शेष अपनी जेब में डाल लिये।

दो-तीन पेशियों पर भी जब गवाह हाजिर नहीं हुए तो रमजानिन परेशान हो उठी। उसे खबर मिली कि गवाहों को बरगलाया गया है और वकील साहब ने ऐसा किया है। वह वकील साहब से मिलने आई। वकील साहब उसका भोग करना चाहते थे। परन्तु रमजानिन उस दिन गुस्से में थी। दोनों में तकरार हुई, गाली-गलौज हुआ और भेद खुल जाने के भय से वकील साहब ने उसकी वहीं हत्या कर दी।

बाद में वकील साहब ने कमरे में फर्श खोदकर उसे वहीं दफना दिया।

मुकद्दमें की अगली पेशी में जब रमजानिन भी नहीं आयी तो वकील साहब ने खुद ही यह अपील कर दी कि फिलहाल मुकद्दमा फाइनल कर दिया जाये, जब दावा करने वाला आयेगा तो मुकद्दमा पुनः चालू किया जा सकेगा।

रमजानिन का एक भाई था। हुसैन! वकील साहब ने उसे करीमबख्श के विरुद्ध बहकाया और उसकी मदद से करीमबख्श की हत्या करवा दी। इस प्रकार मियां बीवी दोनों की सफाई करा वकील साहब एक दिन बल्ली मारां वाले मकान को आग लगा वहां से भाग खड़े हुए। उस समय कृष्णा अपने बच्चों के साथ मकान में ही थी। वकील साहब का विचार था कि यदि उसने कृष्णा को बताया तो व्यर्थ में वह सन्देह करेगी और फिर बात खुल जायेगी। इस कारण वह अकेले ही घर से भागे। बाद में पड़ोसियों ने वकील साहब की पत्नी और बच्चों को बचाया।

स्थान में सिविल लाइन्स वाली कोठी मोल ली हुई थी। वह स्वयं उसमें पहुंचा तो उसके एक घंटा उपरान्त बल्ली मारां के पड़ोसी, कृष्णा और श्रवण इत्यादि को ले वहां पहुंच गये। वकील साहब ने विस्मय में पूछ लिया, 'तो तुम बच गये हो ?'

कृष्णा ने कहा, 'आपने वहां से भागते समय हमें साथ लाने का यत्न ही नहीं किया।' वकील साहब ने कह दिया, 'मैं इतना घबरा गया था कि मेरे होश ठिकाने नहीं रहे थे।'

कृष्णा को पूर्ण घटना की यह अन्तिम बात ही विदित थी और रमजानिन तथा करीमबख्श के विषय में उसने अफवाहें ही सुनी थीं। अब नंदिनी के बात को उठाने पर वकील साहब को वे दिन स्मरण हो आये थे।

उस दिन भोजन से पूर्व जब इस घटना का उल्लेख नंदिनी पिता से कर रही थी तो वकील साहब के पसीना छूट रहा था। इस बात को बीस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। रगण तब की बात स्मरण कर भयभीत था और कृष्णा उसको सान्त्वना दे रही थी कि उसके अपने परिवार के लोग उसकी मुखबरी नहीं करेंगे।

अगले दिन एक विशेष बात यह हुई कि श्रवण अपने सोने के कमरे में नहीं मिला। प्रातःकाल बैड-टी ले जाने के उपरान्त सेवक ने घर की मालकिन को बताया, 'छोटे वकील साहब अपने कमरे में नहीं हैं।'

'तो कहीं घूमने गये होंगे।' कृष्णा का कहना था।

'परन्तु माताजी ! उनका बैड और वार्डरोब भी खाली पड़ा हुआ है।'

इस पर कृष्णा को चिन्ता लग गयी और वह उठ श्रवण के कमरे में जा पहुंची। उसने देखा कि उसका लड़का कोठी छोड़ गया। उसके कपड़े तथा अन्य बहुत-सा सामान भी नहीं था। कृष्णा ने चौकीदार को बुलाकर पूछा, 'छोटे साहब कब गये हैं ?'

रात दो बजे के लगभग वे कोठी से बाहर गये थे और एक तांगे में सामान लादकर चल दिये थे।'

'तो तुमने उस समय क्यों नहीं बताया ?'

'परन्तु माताजी ! यह मैं कैसे जान सकता था कि आपको बताये बिना जा रहे हैं ?'

कृष्णा समझ गयी कि चौकीदार से झगड़ा करने के स्थान

श्रवण के पिता को बताना चाहिये। वह उनके स्टडीरूम में जा

पहुंची। रमण किसी मुकद्दमे के कागजात देख रहा था। कृष्णा ने बताया, 'श्रवण कोठी छोड़ गया मालूम होता है।'

'मुझे मालूम है।'

कहां गया है?'

'उसने कहा है कि वह बतायेगा नहीं। हां, यदि कहीं किसी जगह पक्का रहने का प्रबन्ध हो गया तो लिखेगा। उसने जाते हुए यह कहा है कि वह अब इस कोठी में रहने नहीं आयेगा।'

'कृष्णा चिन्ता व्यक्त कर रही थी। रमण कुमार ने कहा, 'मैं समझता हूं कि उसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। उसके पास नकद काफी रुपया है और बैंक में भी पर्याप्त है।'

कृष्णा चुप कर गयी। रमण कुमार ने आगे बताया, 'श्रवण ने सायंकाल ही मुझे बता दिया था कि वह अब इस कोठी में नहीं रहेगा।'

'मैंने पूछा था, 'कहां जा रहे हो?'

'उसने कहा, अभी विचार नहीं किया। जब कहीं रहने का प्रबन्ध हो गया तो लिखूंगा।'

'मैं समझता था कि वह ठीक ही कर रहा है। मेरे इस पाश्चात्ताप के जीवन में वह न तो विश्वास रखता है न ही मैं उसके यहां रहने में कुछ भी लाभ समझता था।'

प्रातः का अल्पाहार लेते हुए जब यह सूचना भूषण देव और नंदिनी ने सुनी तो बात नंदिनी ने ही की, 'तो मां! अब?'

'देखो नंदिनी! मैं तो तुम्हारे पिताजी से जीवन-भर के लिये बंधी हूं और यह अभी दिल्ली छोड़ नहीं सकते।'

'माताजी!' नंदिनी का कहना था, 'हम कल रात की गाड़ी से हरिद्वार को जा रहे हैं।'

'जाना ही चाहिये। मैं परमात्मा से प्रार्थना किया करूंगी कि मैं भी वहां आ सकूं।'

बात समाप्त हो गयी। मोहन ने कहा, 'दादा हम सबसे नाराज हो चला गया है।'

'नहीं! भूषण का कहना था, 'मैं ऐसा नहीं समझता। उसका यहां से चला जाना किसी अन्य कारण से है। यह पीछे पता

चलेगा।'


इस पर रमण कुमार ने कहा, 'अपने स्वामी जी से पूछना कि पता करें कि वह कहां गया है और क्यों गया है। फिर मुझे लिखना। मैं उसे वापस लेने जाऊंगा। मैंने तो मोहन को पृथक् कोठी इसी कारण ले दी थी कि कहीं दोनों भाई लड़ न पड़ें।'

'देखिये! यत्न करूंगा। स्वामी जी मूड में हुए तो उनसे कहूंगा कि पता करें।'

'हां, और मुझे लिखना।'

दिल्ली आकर भूषण ने अपनी नौकरी के छूट जाने पर सन्तोष कर लिया था, परन्तु जाने से पूर्व श्रवण कुमार के भाग जाने का दुःख सब के मुख पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

इस पर ही भूषण ने यह उचित समझा था कि उनको शीघ्रातिशीघ्र ऋषिकेश में अपने काम पर पहुंचना चाहिये।

तीसरे दिन मध्याह्न तीन बजे के लगभग भूषण, नंदिनी इत्यादि मुनि की रेती पर पहुंचे। स्वामी सर्वदानन्द जो भूषण के स्थान पर पढ़ाता था तांगे पर भूषणादि को आते देख स्कूल से बाहर आ उनका स्वागत करने लगा। उसने भूषण से पहली ही बात यह कही कि स्वामी जी का सन्देश आया है कि आप कल दस बजे दिन के उनके आश्रम के कार्यालय में मिलें।'

'क्यों, क्या बात है?'

'उन्होंने बताया नहीं। सेठ जी ने भी कहा है कि वह आपकी प्रतीक्षा अपने कार्यालय में करेंगे।'

नंदिनी ने कहा, 'ठीक है। मैं और बच्चे भी चलेंगे। हम राधा और मौसी सुमति से मिलेंगे।'

सर्वदानन्द तो सायंकाल गंगा पर ब्रह्मानन्द आश्रम में रहने चला जाया करता था। इस कारण वह गया तो स्कूल के पढ़ने वाले अपने पुराने मास्टर से मिलने आने लगे। बच्चे 'मुनि की रेती' से ऋषिकेश नगर में स्कूल में पढ़ने जाया करते थे। आश्रम का तांगा उनको लेकर जाया करता था और उनको वापस चार बजे ले आया करता था।

अगले दिन जब बच्चे ऋषिकेश स्कूल को गये तो भूषण और नंदिनी गंगा तट पर जा पहुंचे। वहां से वे सीधे ब्रह्मानन्द आश्रम के कार्यालय को चले गये। वहां सेठ जी के साथ स्वामी जी बैठे थे।

'तो आ गये हो ?' स्वामी जी ने मुस्करा कर पूछा ।

'जी, आपका ज्ञान सत्य था । मुझे सेवा-मुक्ति की आज्ञा जारी हुए तीन महीने हो चुके थे । मेरा पता वहां के कार्यालय में नहीं था । इस कारण यह आज्ञा क्वार्टर के बाहर लगा दी गयी थी । इतना संतोषजनक है कि मुझे कार्यालय से छुट्टी उस दिन से हुई है जिस दिन मेरी छुट्टी समाप्त होती थी ।'

'हम आशा कर रहे थे कि तुम ,मुनि की रेती' पर कल पहुंच जाओगे । इसी कारण मैंने कल प्रातः काल ही सर्वदानन्द को कह दिया था कि तुम को यहां आना चाहिये ।'

'और मैं आ गया हूं ।'

'मैं देख रहा हूं कि आश्रम के कार्यालय का काम बहुत बढ़ रहा है, इस कारण अकेले सेठ जी के मान का नहीं रहा । मैंने ट्रस्ट के अध्यक्ष देसाई जी को लिखा है कि वह आपकी नियुक्ति यहां कार्यालय में अध्यक्ष के रूप में कर दे । मैं समझता हूं कि उनकी आज्ञा एक दो दिन में पहुंचने वाली है । इस कारण आपको स्कूल का चार्ज नहीं लेना चाहिये ।'

भूषण ने इस परिवर्तन पर न तो हर्ष प्रकट किया, न ही शोक । उसने पूछा, 'नंदिनी तथा बच्चों की बात है । उनके लिये क्या आज्ञा है ?'

'बताइये माताजी ! आप 'मुनि की रेती' पर अकेली रहेंगी अथवा बच्चों का आने-जाने का यहां से प्रबन्ध किया जाये ?'

'स्वामी जी !' नंदिनी ने कहा, 'आप जो भी उचित समझें करें ।'

'तो ठीक है आप लोग 'मुनि की रेती' वाले मकान में ही रहें । भूषण जी यहां नौ बजे आकर सांय पांच बजे यहां से चले जाया करेंगे । आप स्त्रियों का स्कूल चलायेंगी । आपकी सहायता के लिये एक अन्य सहायक का प्रबन्ध कर दिया गया है । वह भी वहां प्रातःकाल जायेगी और सांयकाल इस तट पर लौट आया करेगी ।'

'वर्षा के दिनों में कठिनाई होगी परन्तु तब तक मैं दूसरा प्रबन्ध कर लूंगा ।'

'वह उन दिनों देख लिया जायेगा ।' नंदनी ने कहा, 'मेरी सहायता के लिये कौन बहनजी मिल रही हैं ?'

'सेठ जी की लड़की राधा आपके काम में सहायता करेगी। वह मान गयी है।'

'और उनका लड़का।'

'उसके लिये एक सेविका का प्रबन्ध है।'

अब भूषण जी ने कहा, 'मैं आपको एक कष्ट देना चाहता हूं।'

'हमें मालूम है। आप चाहते हैं कि पता किया जाये कि नंदिनी का भाई कहां है?'

भूषण ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, 'यदि पता हो तो बता दीजिये।'

'वह बम्बई में है। धोबी तलावों में सोमानी भवन में एक स्वर्णलता नाम की स्त्री के पास वहां पहुंच गया है।'

'आप उसके पिता को लिख दें कि यदि वह उस औरत के पास रहा तो वह एक दिन उसकी हत्या कर देगी।'

भूषण भौचक्का मुख देखता रह गया। उसने कहा, 'मैं नंदिनी के पिता को आज ही लिख देता हूं।'

'लिख दें। उनको लड़के को वहां से शीघ्रातिशीघ्र वापस ले आना चाहिये।'

'तो अब मेरे लिये क्या आज्ञा है?'

'आपको कल से कार्यालय में नौ बजे से आ जाना चाहिये और पांच बजे वापस 'मुनि की रेती' पर जा सका करेंगे।'

भूषण स्वामी जी से छुट्टी ले सेठ जी के साथ उनकी कुटिया पर जा पहुंचा। वहां पति पत्नी तीन बजे तक रहे। राधा ने बताया, 'स्वामी जी ने एक दिन आश्रम में बुलाया था और मेरी परीक्षा ली थी। तदन्तर उन्होंने अपनी एक पुस्तक मुझे दे दी है। उसके अनुसार ही पढ़ाने के लिये मैं कल से आपके स्कूल में पहुंच जाया करूंगी।'

भूषण ने 'मुनि की रेती' पर पहुंचते ही अपने श्वसुर को एक पत्र में जो कुछ स्वामीजी ने कहा था लिख दिया। पत्र लिखने के उपरान्त नंदिनी और भूषण दोनों दिल्ली से समाचार की प्रतीक्षा करने लगे।

अगले दिन से स्वामी जी के विधानानुसार भूषण नंदिनी और राधा काम करने लगे।

राधा प्रातः का अल्पाहार लेकर गंगा तट पर स्वर्गाश्रम घाट पर आ जाया करती थी। उस समय स्वर्गाश्रम के सेवक आदि रहने वाले जिनको ऋषिकेश जाना होता था, नाव से गंगा पार करने के लिये घाट पर एकत्रित होते थे।

आश्रम की डाक भी गंगा पार 'मुनि की रेती' डाकखाने में जाया करती थी। इस कारण नौका ठीक समय पर जाया करती थी। सांयकाल के चार बजे आश्रम के सेवक आश्रम की डाक लेकर आया करते थे। इस कारण चार बजे की नौका मिल जाया करती थी। राधा ठीक समय पर पढ़ाने स्कूल में आने लगी थी। भूषण नियम से कार्यालय में जाया करता था। और ब्रह्मानन्द ट्रस्ट की गतिविधियों का निरीक्षण करता था।

भूषण उत्सुकता से अपने पत्र की प्रतिक्रिया में दिल्ली में सूचना की प्रतीक्षा कर रहा था परन्तु वहां से कुछ भी सूचना नहीं आ रही थी।

पन्द्रह दिन की प्रतीक्षा के उपरान्त वह ऋषिकेश से तार देने का विचार कर सांय पांच बजे ऋषिकेश जाने के लिये घर से निकला तो ऋषिकेश के तारघर का एक डाकिया उसके नाम की तार ले आया।

भूषण ने पर्चे पर हस्ताक्षर कर तार लिया और वहीं खोल पढ़ने लगा। तार बम्बई से रमण कुमार का था। इसमें लिखा था, 'देरी से पहुंचा हूं। श्रवण यहां से जा चुका है।'

तार पर रमण ने बम्बई का पता नहीं लिखा, इस कारण भूषण अपने श्वसुर को बता नहीं सका कि वह श्रवण का पीछा किधर को करे।

रमण कुमार का पत्र चार दिन पीछे मिला। उसी दिन भूषण स्वामी जी से मिल श्रवण का पता पूछने लगा। स्वामी जी ने एक दो सैकिण्ड तक आंखें मूंद कर कह दिया, 'अब व्यर्थ है। श्रवण की हत्या हो चुकी है और उसका शव समुद्र में फेंका जा चुका है और स्वर्णलता अब वहां नहीं है।'

'महाराज! यह घटना कहां घटी है?'

'कन्याकुमारी पर।'

'और स्वर्णलता किधर गयी है?'

'मैं जान तो गया हूं परन्तु बताऊंगा नहीं। मैं दण्ड दिलवाने

वाला नहीं बसूंगा। हां, मेरे प्रयास से यदि कोई ... सके तो उसमें सहायक हो सकता हूं।

'देखो भूषण ! तुम्हारा तार दिल्ली गया, परन्तु श्रवण के पिता का लड़के के पीछे जाने का कुछ लाभ नहीं हुआ। वह बम्बई जाता ही नही, यदि नंदिनी की माताजी जाने के लिये हठ न करतीं। परन्तु वे एक दिन देरी से पहुंचे। जिस दिन नंदिनी के पिता बम्बई पहुंचे उससे पहली रात वे मद्रास के लिये रवाना हो चुके थे। फिर अनुभवी वकील होने पर भी उन्होंने अपनी तार में अपना पता नहीं भेजा। परिणाम यह हुआ कि मैं स्वर्ण-लता का पीछा करने में उनका सहायक नही हो सका। यह उनके कर्म फलों का परिणाम ही था।

'अब तुम लिख दो कि वे कन्याकुमारी के मंदिर के पुजारी से मिल लें। उनके पास श्रवण के कागज-पत्र रखे हैं।'

भूषण ने तुरन्त एक लम्बा तार श्वसुर को बम्बई के पते पर भेज दिया।

इस पत्र भेजने के दस दिन उपरान्त एक दिन भूषण गंगा पार कर अपने कार्यालय से लौटा ही था कि घर पर कृष्णा और रमण शोक मुद्रा बनाये बैठे मिले। राधा उनके पास गम्भीर भाव बनाये बैठी थी।

भूषण ने कन्याकुमारी का समाचार पूछा तो रमण ने बताया 'हमारे वहां पहुंचने से पाँच दिन पूर्व समुद्र की लहरों पर तैरता हुआ श्रवण का शव मिला था। पुजारी ने पहिचाना कि यह दिल्ली के वकील का है। तब तक स्वर्णलता पुलिस में अपने बयान दे वहां से जा चुकी थी। उसने बयान दिये हैं कि श्रवण कुमार रमण कुमार का लड़का उसे बम्बई में मिला था। वह उसकी दिलजोई कर रही थी। इसके लिये वह उसे बम्बई से यहां समुद्र तट पर लायी थी।

उसने बताया कि उसके सब प्रयत्नों पर भी वह शोकग्रस्त था। एक दिन पहले से वह लापता था और अब शव को पहिचान वह कह रही है कि उसका साथी ही है। स्वर्णलता ने श्रवण कुमार का दिल्ली का पता पुलिस में लिखाया है।

हमारे वहां पहुंचने से पहले स्वर्णलता वहां से जा चुकी थी। वह हमें नहीं मिली।'

भूषण ने बताया, यहां स्वामी जी ने बताया है कि स्वर्णलता ने श्रवण को विष देकर मारा है और फिर वहां के मछेरों को पचास रुपये देकर शव समुद्र में बहा दिया था।'



'तो वह यह सिद्ध कर सकते हैं ?'

'यह तो मैं कह नहीं सकता कि वे कोई प्रमाण दे सकते हैं अथवा नहीं। परन्तु उन्होंने यह कहा है कि वह किसी को दण्ड नहीं दिलवायेंगे। वह बचाने का यत्न कर सकते हैं। वह भी यदि मरने वाले के भाग्य में बचना लिखा होगा।'

राधा ने बताया, 'मैं गंगा पा जा रही हूं। यदि आपने भी चलना हो तो चलिये।'

कृष्णा ने कहा, 'हम कल स्वामीजी से मिलने आयेंगे। आज हम नंदिनी के साथ रहेंगे।'

राधा गयी तो कृष्णा ने भूषण को बताया, 'राधा ने एक शब्द भी शोक का पति की मृत्यु पर नहीं कहा है।'

नंदिनी का कहना था, 'वह इतनी देर आपके साथ सहानुभूति प्रकट करती रही। उसने आपके पुत्र की मृत्यु पर सहानुभूति प्रकट की है परन्तु अपने पति के मर जाने पर उसे दुःख हुआ प्रतीत नहीं होता।'

## नौ

अगले दिन उपासना के समय कृष्णा तथा रमण वहां पहुंचे हुए थे। सेठ रामलोक और सुमति भी आज वहां आये थे। वे भी श्रवण के निधन पर शोक प्रकट करना चाहते थे।

सुमति ने राधा को भी ठहरने के लिए कहा था, परन्तु उसने कहा था, 'मां!' अपने काम पर जा रही हूं। उनके पुत्र के निधन पर शोक प्रकट कर चुकी हूं। मैं नहीं चाहती कि मुझसे कोई विष्णु के पिता की मृत्यु का शोक प्रकट करे। मेरा उनसे सम्बन्ध भूल थी।

उपासना के उपरान्त रमणादि सब स्वामी जी से गंगातट पर मिले। रमण ने स्वामी जी के चरण स्पर्श कर कहा, 'इस दुर्घटना में स्पष्ट कारण मैं ही हूं। मुझे आपके ज्ञान पर विश्वास नहीं था। जब भूषण का पत्र आया था कि श्रवणकुमार बम्बई में

सोमानी भाग गये हैं तो मैंने यह समझा कि यह सूचना इतना मात्र है। मैं बम्बई जाकर श्रवण को समझाने का विचार नहीं रखता था। श्रवण की मां आग्रह कर रही थी कि मैं जाऊं। जब तीन दिन तक भी मैं तैयार नहीं हुआ तो अन्न-शन्न कर दिया और मैं विवश हो बम्बइ गया। मैं समझता हूं कि यदि पहले ही दिन दिल्ली से चल पड़ता तो निःसन्देह हम उसे बम्बई में मिल जाते। और सम्भव है कि हम उसको स्वर्णलता की संगत छुड़ा सकते। वह हमारे वहां पहुंचने से पहलो रात ही उस औरत के साथ मद्रास के लिये चला गया था।

इस पर मुझसे यह भूल हुई कि मैंने आपसे उसका पता जानने का यत्न नहीं किया। मैं ताज होटल में ठहरा हुआ था। मैंने थोड़े-से पैसों की कंजूसी के कारण भूषण को अपना पता तार में नहीं भेजा। अतः एक सप्ताह तक हमें उन दोनों के त्रिवेन्द्रम जाने का समाचार नहीं मिला। जब मिला तो हम गए और वहां भी हम पांच दिन देरी से पहुंचे।

'यह सब मेरी मूर्खता का परिणाम है। मुझे इस अपनी मूर्खता के कारण अपने पर ग्लानि अनुभव हो रही है।'

स्वामी जी ने कहा, 'देखिए वकील साहब! इसे होनि अर्थात कमफल कहते हैं। जब कर्मफल प्रबल होते हैं तो मनुष्य के यत्न उसको टालने में सफल नहीं होते।

'वास्तव में मुझ पर आपका अविश्वास श्रवणकुमार के कर्म फलों की प्रेरणा के कारण ही था। वह अति प्रबल था। और यदि उसका जीवन अभी कुछ लम्बा होता तो आपकी बुद्धि उचित दिशा में कार्य करती। आप मुझ पर अविश्वास करते हुए भी मेरे कथन की परीक्षा करने चल पड़ते।'

स्वामी जी ने आगे कहा, 'उसके मन में लोभ की भावना अति उत्कट थी और वह लोभ स्वार्थयुक्त था। लोभ और उससे उत्पन्न होने वाला स्वार्थ मानव के स्वाभाविक कर्म हैं। परन्तु इसकी सीमाएं होती हैं।

किसी दूसरे के हितों का अपने स्वार्थ से विरोध नहीं होना चाहिए। यह श्रवण समझ नहीं सका। उसका सेठ जी की सम्पत्ति का लोभ उसमें किसी अभाव के कारण नहीं था। उसकी निजी आवश्यकता सुगमता से पूर्ण हो रही थी। यद्यपि उन आवश्यक-

ताओं की अधर्मयुक्त होना स्पष्ट ही था। तब भी उन आवश्यक-ताओं को पूर्ण करने का सामर्थ्य उसमें था। अतः सेठ जी की सम्पत्ति उसे पहले मिलती अथवा कुछ वर्ष उपरान्त मिलती, यह भी सम्भव था कि उसके अपने जीवन काल में न मिलती। उसके लड़कों को उसकी सम्पत्ति का फल प्राप्त होता, परन्तु अपने स्वार्थ में अन्धे हो वह अनावश्यक को आवश्यक, अधर्म को धर्म समझने लगा। इसी कारण वह अपनी पत्नी को घर से निकालने में लीन हो गया। उस देवी के पुण्य कर्म उसकी पाप की नौका के बोझ को हल्का करने वाले थे, परन्तु वह समझ नहीं सका। स्वार्थ से अन्धा हुआ अपनी बाल बुद्धि से वह काम करता रहा।

'अब क्या हो सकता है जब चिड़िया चुग गयीं खेत ! पश्चाताप से कुछ लाभ नहीं।'

'मेरी सम्मति है कि आप अपना शेष जीवन धर्म अधर्म की तुला पर तोल कर चलाइए।

'देखिये, मैं बताता हूं कि धर्म अधर्म में पहिचान का सुगम उपाय प्रकृति के नियमों को ठीक-ठीक समझने से होता है। प्राकृतिक नियम ही धर्म है। जितना आवश्यक हो उतना ही अर्जन को ऐसे व्यय करो जिससे कोई दूसरा अपने अधिकार से वंचित न हो जाये।

'प्रकृति के नियमों को जानने के लिए विवेक बुद्धि की आवश्यकता होती है। वह परमात्मा की कृपा से प्राप्त होती है। इस कारण परमात्मा का चिंतन इस दिशा में चलने का प्रारम्भिक बिन्दू है।'

एकाएक स्वामी जी उठ खड़े हुए और बोले, 'जो कुछ मैंने कहा है। उस पर विचार करिये। फिर उसके अनुसार काम करने का यत्न करिये।'

सेठ रामलोक ने रमन को बांह पकड़ उठाया और अपनी कुटिया को ले गया। वहां उनको चाय पानी पिलाया और फिर 'मुनि की रेती' को विदा कर दिया।

रमण और कृष्णा तीन दिन वहां रहे और फिर एक दिन वह जो कुछ श्रवण का बैकों अथवा कम्पनियों के शेयरों में था जिसके कागज पत्र कन्याकुमारी के मदिर के पुजारी से मिले थे वह सब उन्होंने ब्रह्मानन्द ट्रस्ट को दान में दे दिया।

मोहन को पता चला कि माता तथा पिता जी कन्याकुमारी से लौट ऋषिकेश पहुंचे हुए हैं तो वह पत्नी सहित आया और उनको दिल्ली ले गया।

रमण के जीवन ने करवट ली। उसने वकालत छोड़ दी और कोठी पर अपने कमरे में बंद रहने लगा। केवल प्रातः सायं एक घंटे के भ्रमण के लिए कोठी से बाहर निकलता था। जब भी वह बाहर जाता, कृष्णा उसके साथ होती। दोनों सर्वथा सन्तुष्ट प्रतीत होते थे।

इस पर भी रमण के परिचित तथा मित्र यही समझते थे कि दोनों सठिया गये हैं और उनकी वृद्धावस्था खराब हो गई है।



# श्री गुरुदत्त की रचनाएँ

**दर्शन एवं विज्ञान**

अद्वैत मीमांसा
न्याय दर्शन (भाष्य)
ब्रह्मसूत्र सरल भाषा-भाष्य-१
ब्रह्मसूत्र सरल भाषा-भाष्य-२
माण्डूक्य—मुण्डक-उपनिषद् (भाष्य)
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
विश्वे देवा
विज्ञान और विज्ञान
वेद और वैदिक काल
वेद प्रवेशिका
श्रीमद्भगवद् गीता (अध्ययन)
श्रीमद्भगवद् गीता (भाष्य)
सायंस और वेद

**राजनीति**

धर्म तथा समाजवाद

**राजनीति**

प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम-व्यवस्था
प्रजातांत्रिक समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
भारत गांधी नेहरू की छाया में
भारत में राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान —हिन्दू राष्ट्र

**इतिहास**

इतिहास में भारतीय परम्पराएं अप्राप्य

**संस्मरण**

भाग्य-चक्र
भाव और भावना
मैं हिन्दू हूं

**उपन्यास**

अंधकार
अंधे की लाठी
अग्नि परीक्षा
अनदेखे बंधन
अंधेर नगरी
अपने पराये
अमानत
अमृत मंथन

**उपन्यास**

अवतरण
असमंजस
आकाश पाताल
आशा-निराशा
आह्वान
इबलीस
उलझती राहें
उल्टी बही गंगा

परिमल
पाणिग्रहण
परित्याग
परिवर्तन
पत्रलता
पाप और पुण्य
पिंजरे का पंछी
पुष्यमित्र
पूर्वग्रह
प्रगति के पथ पर (मंजिल)
प्रगतिशील
प्रतिशोध
प्रवृत्ति
प्रवंचना
प्रभात वेला
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेरणा
प्रेयसी
फैलती छाया
बहती रेती
बनवासी
बाहर और भीतर
बसन्त राग
बीती बात
भग्नाश
भाग्य रेखा
भैरवी चक्र
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भावुकता का मूल्य
भूल
मधु
मनीषा
ममता

महाकाल
महानगर
मानव
मायाजाल
मेघवाहन
मैं न मानूं
मौजमेला
मृगतृष्णा
यह क्यों है (पुकार)
यह सब झूठ है (झूठ है)
यह संसार
यात्रा का अंत
युद्ध और शान्ति (२ भाग)
रानी साहिबा
रीति रिवाज
लकीर के फकीर
लालसा
लुढ़कते पत्थर
लेख नाल शाहा दे
लोक परलोक
वसन्त राग
वसुन्धरा
वाम मार्ग
विकार
विकृत छाया
विडम्बना
विधुर
विवेक
विद्यादान
विश्वास
विनाशाय च दुष्कृताम्
विलोम गति
विश्वासघात
वीर पूजा

उन्मुक्त प्रेम
उमड़ती घटाएं
ऊंचे मकान
एक और अनेक
एक मुंह दो हाथ (दो हाथ)
कला
कामना
काल चक्र
कुंकुम
कुमार संभव
कौमुदी
खण्डहर बोल रहे हैं ३-भाग
खेल और खिलौने
गगन के पार
गंगा की धारा
गिरते महल
गुण्ठन
गोरखधंधा
गृह संसद
घर की बात
चंचरीक
चितेरे
चौराहा
छलना
छोटी सी बात (लाड़-प्यार)
जनम-जनम तुम
ज़माना बदल गया ६-भाग
जग इक सपना
जन प्रवाह (दो भाग)
जयदमन
जागृति
जात न पूछे कोय (परिग्रह)
झरोखे
जीवन ज्वार

डाल डाल के पंछी
ढकोसला (संस्कार)
डूबती नौका
तब और अब
तबेला
दस साल बाद
दायरे
दिग्विजय
दीन दुनिया
दो भद्र पुरुष
दो लहरों की टक्कर २-खण्ड
दासता के नये रूप
देश की हत्या
द्रष्टा
धरती और धन
धूप छांह
नगर परिमोहन
नई दृष्टि
नवरंग
नदी तीरे
नारी नटेश्वर
नास्तिक
नये विचार नयी बातें
निर्मल
निर्लेप
निष्णात (जंजाल)
न्यायाधिकरण
पड़ौसी
पतन का मार्ग
पथिक
पंकज
परदे के पीछे
परम्परा
परिभव

शादी
सच या झूठ
सदा वत्सले मातृ भूमे
सफर
सब एक रंग
सफलता के चरण
सभ्यता की ओर
सम्पदा सम्बन्ध
सम्भवामि युगे-युगे
सहज सगाई
सीमा बद्ध
सर्वमंगला (मंगला)
सहस्रबाहु
साधना
सागर और सरोवर
सागर तरंग
साहित्यकार
सुख की खोज
सुमति
संगम
संस्कार (ढकोसला)
संस्खलन
स्नेह का मूल्य
सम्पदा
सम्बंध
स्वराज्यदान
स्वार्थ
षड्यन्त्र
हम औरतुम
क्षितिज

**नाटक**

वन्दे मातरम्
मेरी पसंद

**कहानी-संग्रह**

बिखरे चित्र

**किशोरोपयोगी साहित्य**

जगत् की रचना
द्वितीय विश्वयुद्ध
महर्षि दयानन्द
युगपुरुष राम

**विविध**

अन्तिम यात्रा

उपन्यासकार गुरुदत्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : मनमोहन सहगल
श्री गुरुदत्त अभिनन्दन ग्रन्थ : पं० अशोक कौशिक




**भारती साहित्य सदन**
३०/९०, कनाट सरकस, (मद्रास होटल के नीचे), नई दिल्ली-१



## श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

*शिक्षा : एम. एस–सी.*

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।





हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001